d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

19.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, Jalg

SRI AUROBINDO LIBRARY
PONDICHERRY, INDIA

sa i475.3SANSKRIT BHASHA PRADIP

SaBh Sakharam R. Bhatta.

19.

Fumigated SEP 1985

But thought nor word can seize eternal truth

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

ed by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, J

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

संस्कृतभाषाप्रदीप

(नया सचित्र संस्करण)

पुस्तक १ ली

का

हिन्दी अनुवाद

(माध्यमिक शालाओंकी चौथी कक्षाके लिए)

सखाराम रावजी भट, एम्. ए., एम्. एल्. बी.
'मॅट्रिक्युलेशन संस्कृत ग्रामर,' 'संस्कृत वाक्यरचना'
आदि ग्रंथोंके कर्ता

जायसवाल पुस्तक भंडार
सदर बाजार, बिलासपुर (सी. पी.)

मॅक्मिलन और कंपनी लिमिटेड,
हॉर्न्बी रोड, फोर्ट, बम्बई

मूल्य रु. १-१२-०] १९४८ [सर्वाधिकार स्वाधीन

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

First Edition—1939

Second Edition—1948

Printed by V. H. Barve, at the Aryabhushan Press,
915/1 Shivajinagar, Poona 4.

Published by S. C. Fillmore, for Macmillan & Co., Ltd.,
276 Hornby Road, Fort, Bombay.

Sa 155 154

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

श्री

हिन्दी संस्करण की प्रस्तावना

आधुनिक काल में शिक्षा प्रणाली में प्रतिदिन नवीन नवीन आविष्कार किये जा रहे हैं। विभिन्न विषयोंका अध्यापन विद्यार्थियोंको स्वतन्त्र विचारशील और स्वावलम्बी बनाने में किस प्रकार सहायक हो सकता है यह प्रश्न सदा शिक्षा विज्ञान के विद्वानोंका ध्यान आकर्षित किये हुए रहता है। इस दृष्टि-कोणसे भाषाके अध्यापन में भी जिन सुधारों की आवश्यकता है उनके प्रति शिक्षा-वैज्ञानिक तटस्थ नहीं रह सकते। मुख्यतः विभिन्न भाषाएँ दो विभागोंमें विभक्त की जा सकती हैं। प्रथम विभाग में वे भाषाएँ ग्रहण की जाती हैं जो समाज में प्रचलित हैं और द्वितीय भाग की अधिकारिणी वे भाषाएँ मानी जा सकती हैं जिनका व्यवहार समाजमें तो नहीं होता परन्तु जिनको अपने उच्च साहित्य के कारण एक महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। द्वितीय विभाग की भाषाओंका अध्ययन वर्तमान समय में श्रद्धा-पूर्वक किया जाता है। प्राचीन शिक्षा प्रणाली के अनुसार इन भाषाओंके अध्ययन और अध्यापन में विभिन्न शब्दों की रूप-सिद्धि को अधिक महत्त्व दिया जाता था। यही प्रणाली विदेशी भाषाओंके अध्ययन में भी व्यवहृत थी। परन्तु आधुनिक आविष्कारोंने इस प्रणाली को त्रुटि-पूर्ण सिद्ध कर दिया है। अब अनुभवी शिक्षक भाषा का ज्ञान वाक्य-रूपसे कराना अधिक उपयोगी समझते हैं। रूप-सिद्धि के मार्ग में विद्यार्थी को अनेक नियम और उपनियम कण्ठाग्र करना पडते हैं। विषयका अध्ययन एक नीरस रूप धारण कर लेता है। इसका परिणाम यह होता है कि आरम्भ से ही उस विषयके प्रति विद्यार्थी के हृदय में रुचि नष्ट हो जाती है। सारांश यह है कि भाषा का अध्यापन वाक्य-रूप से कराना अधिक स्वाभाविक, वैज्ञानिक और उपयोगी सिद्ध हुआ है। संस्कृत के अध्यापन में भी इस सिद्धान्त का यथाशक्ति अनुसरण किया जा सके इस उद्देश्य से इस पुस्तक की रचना की गई है। संस्कृत के सदृश व्याकरणप्रधान नियमबद्ध और सम्मिश्रावस्था को प्राप्त भाषा में पूर्णतः इस सिद्धान्त

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

का पालन असम्भव नहीं तो कठिन अवश्य है। अतएव आंशिक रूप में ही इस सिद्धान्त का अनुसरण करने का प्रयत्न किया गया है।

अनुवाद में कहां तक सफलता हुई है इसका निर्णय अनुभवी शिक्षक स्वयं ही कर सकते हैं। संस्कृत भाषा के जिन पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग इस रचना में किया गया है उसकी सूची वाचकों की सुविधा के लिए प्रथम भाग के अन्त में दी गई है। जिस स्थलपर शब्दशः अनुवाद हिन्दी भाषा की विशेषताओं के कारण या किसी अन्य कारण से सम्भव नहीं था वहींपर भावों को स्पष्टतः व्यक्त करने के लिए वाक्यरचना या शब्दों के प्रयोग में आवश्यक परिवर्तन किए गए हैं। इसके अतिरिक्त विभक्तियाँ शब्दों के साथ मिलाकर लिखना चाहिए या स्वतंत्र शब्दों के सदृश इस विवाद-ग्रस्त प्रश्न को विशेष महत्त्व न देकर उसका प्रयोग दोनों प्रकार से किया गया है जिस के लिए पक्षविशेष के समर्थक विद्वान् क्षमा करेंगे। इति।

अगस्त १९३९ **अनुवादक**

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundatio

प्रस्तावना (प्रथमावृत्ति)

गत अठारह वर्षमें माध्यमिक पाठशालाओंमें संस्कृत पढाते समय जो अनुभव हुआ उसे इस पुस्तकमें मूर्त स्वरूप दिया गया है। इस समयमें व्याकरणप्रधान स्वरूपसे वाङ्मय-प्रधान स्वरूप की ओर संस्कृत के अभ्यासक्रमका कांटा झुकता आ रहा है। उसी प्रकार संस्कृत पढाने की पद्धतिमें भी परिवर्तन होता जा रहा है। गु० प्रो० वोकील इन्होंने संस्कृत भाषा पढानेकी अभिनव पद्धति का दस वर्ष पहले आरंभ किया। उसका बहुत स्थानों प्रसार हुआ और वह सफलता-पूर्वक प्रचलित भी है।

वाङ्मयके साथ ही व्याकरण पढाने की रीतिमें भी परिवर्तन करना क्रम-प्राप्तही था इस लिए प्रथम केवल नियम पढ़ाकर फिर रूपसिद्धि करनेकी प्राचीन पद्धतिके स्थानपर, बहुतसे उदाहरण देकर उनपरसे सामान्य नियम बनानेकी पद्धतिके अवलंबनका आरम्भ हुआ। इससे विद्यार्थियोंको व्याकरण का अध्ययन नीरस सा न लगते मनोरंजक प्रतीत होने लगा और विषय ध्यानमें रहनेमें भी सहायता होने लगी। इस अनुभव का आधार लेकर ही प्रस्तुत पुस्तक की रचना की गई है। अपवाद-प्रचुर ऐसे संस्कृत व्याकरणमें यह पद्धति सर्वतः प्रयुक्त करना अशक्य है, इसका ज्ञान प्रस्तुत लेखक को है यह बात इस पुस्तकके विषयों के प्रतिपादनसे स्पष्ट हो जावेगी।

प्रवेश-परीक्षाके नवीन अभ्यासक्रमानुसार व्याकरण विषयका अध्ययन माध्यमिक पाठशालाओंके पहले तीन वर्षोंमें ही स्थूल स्वरूपमें पूरा करना आवश्यक है। इसी दृष्टिसे इस पहली पुस्तकमें सर्वनाम, संख्या विशेषण इत्यादि विभाग दिये गये हैं।

केवल व्याकरण-पुस्तक नीरस प्रतीत होने की संभावना के भय से व्याकरण क्रमानुसार वाङ्मय विभागभी पुस्तक के दूसरे विभागमें आवश्यक शब्दसंग्रहके साथ दिया गया है।

हिन्दीका संस्कृत रूपान्तर पाँचवी कक्षासे आरम्भ करना चाहिए ऐसा मत-प्रवाह प्रवाहित होने लगा है। परन्तु उसे चौथी कक्षामें ही आरम्भ करना चाहिए

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ऐसी जिनकी इच्छा हो उनके लिए तीसरे विभागमें संस्कृत अनुवादके लिए सूचना के साथ हिन्दी, अवतरण दिये गये हैं। इस पुस्तकके लिखनेमें सिद्धान्त-कौमुदी और दूसरे प्रचलित संस्कृत ग्रन्थोंका मुझे जो उपयोग हुआ उसका यहींपर कृतज्ञतापूर्वक उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है। उसी प्रकार गु० प्रो० वोकील इनके सहवासमें नई पद्धतिसे संस्कृत पढ़ानेका अवसर मिलनेसे मुझे यह पुस्तक लिखनेकी कल्पना सूझी और उनके और दूसरे मित्रोंके प्रोत्साहन से वह कार्यरूप में परिणत की गई। इसके लिए उनके प्रति धन्यवाद व्यक्त करना मेरा कर्तव्य है। पुस्तक की हस्तलिखित प्रति मित्रभावसे पढ़कर मार्मिक, सूचना करने के लिए मेरे मित्र श्री० मो० न० भालेराव, एम्. ए., बी. टी., संस्कृत शिक्षक, सिटी हायस्कूल, धुलिया इनका भी मैं कृतज्ञ हूँ।

मई १९३६ स० रा० भट

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundatio

दूसरी आवृत्तिकी प्रस्तावना

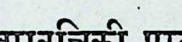

'संस्कृत भाषाप्रदीप' मालाकी पहली पुस्तकका अध्यापक तथा अध्याप्य इनके हार्दिक स्वागत करनेसे इस दूसरी आवृत्तिका योग इतना शीघ्र प्राप्त हुआ है। इस पुस्तकका उपयोग जिन पाठशालाओंमें किया गया उन शालाओं के कुछ पाठकोंने पुस्तक की उपयोगिता बढ़ानेके विषयमें मार्मिक सूचनाएँ कीं इसके लिए उनको जितने धन्यवाद दिए जायँ उतने अपूर्ण ही होंगे। उन सूचनाओंके अनुसार इस आवृत्तिमें नीचे लिखे हुए मुख्य मुख्य परिवर्तन किए गए हैं।

पहला विभाग:—पाठ १ और २ इनके दो दो विभाग करके पहिले विभागमें परस्मैपदके धातु के रूप और दूसरेमें आत्मनेपदके धातु के रूप दिए गये हैं। इसका हेतु यह है कि आरम्भमें केवल परस्मैपदके रूप पढ़ाना चाहिये और उनके भली भाँति ध्यानमें आने के पश्चात् आत्मनेपद के। उसी प्रकार पाठ ८ और ९ इनमें आवश्यकतासे अधिक विषय विद्यमान था। उससे ये पाठ बहुत विस्तीर्ण हो गए थे। इस लिए उन्हें सीमित कर शेष अंश सुविधानुसार पढानेके लिए उन पाठोंके अन्तमें स्वतंत्र रूपसे दिया गया है।

दूसरा विभाग:—इस विभागमें महत्त्व के परिवर्तन ये हैं। बहुतसे पाठोंमें योग्य चित्र दिए गए हैं। उससे विद्यार्थियोंको पाठ समझनेमें सहायता मिलेगी ऐसी आशा है। पद्यपाठोंका क्रम परिवर्तित किया गया है और गद्यपाठमें एक पाठ अधिक बढा दिया गया है।

तीसरा विभाग:—संस्कृत अनुवादके लिए अवतरणोंके साथ साथ हरएक पाठके लिए पाँच पाँच ऐसे हिन्दी वाक्योंके समूह दिए गए हैं। उससे पाठानुसार प्राप्त की हुई विद्यार्थियोंके प्रगतिका अनुमान किया जा सकेगा।

इस प्रकारसे पहिली आवृत्तिका कोईभी अंश कम नहीं किया गया है, प्रत्युत उसमें वृद्धि ही की गयी है। और प्रथमावृत्तिमें के कुछ दोषोंका यथासंभव निराकरणका प्रयत्न इस आवृत्तिमें किया गया है। सारांश यह कि आवृत्तिको यथाशक्ति

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अधिक उपयुक्त और निर्दोष रूप प्रदान करनेका प्रयत्न किया गया है। इस द्वितीया-वृत्तिके बनानेमें श्री० ग० र० दारशेतकर, बी. ए., बी. टी. संस्कृत शिक्षक, सेंट कोलंबा हायस्कूल इन्होंने जो सहाय्यता की उसके लिए उनके प्रति तथा दूसरे पाठक-मित्रोंने जो उपयुक्त सूचनाएँ कीं उसके लिए उन सबके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना मेरा कर्तव्य है। पहली आवृत्तिके सदृश् इस **सचित्र** आवृत्तिकाभी पाठक तथा विद्यार्थी इनके द्वारा योग्य स्वागत किया जावेगा ऐसी इच्छा प्रदर्शित करते हुए यह प्रस्तावना समाप्त करता हूँ।

आक्टोबर, १९३८ — स० रा० भट

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

श्रीः

पुस्तकका उपयोग करनेवाले पाठकोंको सूचना :—

(१) पुस्तकका आरम्भ करने की पद्धतिका अवलम्बन करनेवाले शिक्षकोंको एक महीने तक विद्यार्थिओंको परिचित विषयोंका संस्कृतमें वर्णन करने का अभ्यास कराना चाहिए और तत्पश्चात् पुस्तक के पाठोंको क्रमवार सिखाना चाहिए ।

(२) प्राचीन पद्धतिसे पढानेवाले पाठकोंको प्रथम सरल कर्तृपद, क्रिया और आवश्यकतानुसार कर्मपद इनसे युक्त वाक्योंको विषयक्रमसे तीनों पुरुषों और वचनों में पढ़ाना और विद्यार्थियोंके मुख से कहलाना चाहिए । अर्थ समझाते समय आवश्यकतानुसार हिन्दीका उपयोग करना चाहिए । अनेक क्रियाओंके द्योतक व्यापार लड़कोंसे करवाना चाहिए और उन्हें संस्कृत वाक्योंके रूपसे उनके मुखसे कहलाना चाहिए । तदनंतर पुस्तकों के पाठ सिखाना आरम्भ करना चाहिए । इसमें मुख्य उद्देश्य यही है कि लडकों को संस्कृत का परिचय वाक्य-रूप से हो न कि रूप-सिद्धि के मार्ग से । जो शिक्षक इस मार्गका अनुसरण करनेमें असमर्थ हों, वे पुस्तकके पाठोंका सिखाना ही सहसा आरम्भ कर सकते हैं ।

(३) प्रत्येक पाठ की रचना विद्यार्थीको स्वावलम्बी बनाने की दृष्टि से की गई है । इसलिए विद्यार्थीको विशिष्ट भाग स्वयं पढने के लिए कहकर तत्पश्चात् शिक्षक को उसका विवेचन करना चाहिए । प्रत्येक पाठके अन्त में दिये हुए प्रश्नों के उत्तर विद्यार्थियोंके मुखसे कहला कर उन्हें उनसे लिखवा लेना चाहिए । संस्कृत शब्दोंके रूप-वैचित्र्यके कारण, भिन्न भिन्न शब्दोंके रूप कैसे होते हैं और उनका उपयोग किस प्रकार किया जाता है यह पढ़ाने के पश्चात् उन रूपोंको कण्ठाग्र करवा लेना चाहिए ।

(४) वाक्य-रचना के सम्बन्धमें साधारणतः आवश्यकतानुसार उल्लेख किया गया है और विस्तृत विवेचनके लिए 'संस्कृत-वाक्य रचना' इस पुस्तक के विशिष्ट अंशों का निर्देश किया गया है ।

(५) वाङ्मय भाग के अवतरण व्याकरण के पाठों के साथ ही सिखाना आरम्भ करना चाहिए । वाङ्मय-पाठ सिखाने की पद्धति सामान्यतः नीचे लिखे अनुसार होने पर विद्यार्थियोंको संस्कृत भाषाका ज्ञान सरलतासे प्राप्त हो सकेगा—

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

चित्रों की सहायता से अथवा मुख से वर्णन करके विषय से परिचित करा देना—शिक्षक ने पाठ पढ़ना—विद्यार्थियोंने शब्द-संग्रह का उपयोग करके स्वगत (अपने मनमें) पाठ पढ़ना—पाठ के विषय पर प्रश्न करना और दुर्बोध स्थलोंका अर्थ स्पष्ट करना—शिक्षकने पुनः पाठ पढ़ना और विद्यार्थियों से पढ़वा लेना—पाठके योग्य कुछ अभ्यासार्थ प्रश्न लडकों से हल कराना अथवा पाठ के विशिष्ट अंश का मातृभाषामें भाषान्तर करा लेना ।

शिक्षक से उपर्युक्त सर्व व्यापार संस्कृत द्वारा किये जाने पर भाषा-शिक्षण के लिए आवश्यक संस्कृत वातावरण उत्पन्न हो जावेगा । परन्तु यदि ऐसा करना संभव न हो तो निदान शिक्षक ने पाठके प्रश्नों को ही संस्कृतमें करना चाहिए और विद्यार्थियों को भी संस्कृतमें उत्तर देने के लिये बाध्य करना चाहिए । इससे विद्यार्थियोंका वाक्यरचना का ज्ञान दृढ़ होगा ।

(६) जिन शिक्षकों को चौथी कक्षामें संस्कृत अनुवाद पढ़ाना योग्य प्रतीत होता हो, उनके लिए पुस्तक का तीसरा भाग है । इस लिए उसमें व्याकरण-पाठों के क्रम के अनुसार दिए हुए हिन्दी वाक्य-समूहों का संस्कृत अनुवाद गृह-पाठ के ढंग पर करा लेना चाहिए । इसी प्रकार हिन्दी अवतरणों का अनुवाद चौथी कक्षा के दूसरे छः महीनों में करा लेनेमें सुविधा रहेगी । शब्दशः अनुवाद पर विशेष आग्रह न कर हिन्दी वाक्यों के अर्थको संस्कृत रूपांतरमें व्यक्त करने पर ही विशेष ध्यान देना चाहिए ।

(७) इस पुस्तक के प्रत्येक विभागमें जितने एक वर्षमें पढ़ाये जा सकते हैं उससे अधिक पाठ दिए गए हैं । इस लिए एक वर्षमें नीचे लिखे अनुसार पाठों का पढ़ाना इष्ट है ।

पहिला विभाग—२० पाठ; दूसरा विभाग—१२ गद्य पाठ (प्रथम १० मेंसे ५ और शेष १५ मेंसे ७) और पद्य—पाठोंमेंसे ४० श्लोक; तीसरा विभाग (संस्कृत अनुवाद पढानेवालोंके लिए)—प्रथम २० पाठके वाक्य-समूह और शेष १५ अवतरणों में से ८ ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

संस्कृतभाषाप्रदीप–पुस्तक १ ली

अनुक्रमणिका

भाग १—व्याकरण–पाठ

प्रास्ताविक—वर्णविचार १

१ क्रिया–प्रथमगण–वर्तमानकाल, (अ) परस्मैपद और (आ) आत्मनेपद ४

२ „ चतुर्थ, षष्ठ, दशम गण के अपरिवर्तनशील धातु (पर०) ६

३ संज्ञा–अकारान्त (पुंलिंग और नपुंसकलिंग) १३

४ क्रिया–१-४ ६-१० गण (विकरणके पूर्वमें अनियमित परिवर्तनशील) १८

५ „ „ „ (नियमित परिवर्तनशील) ... २१

६ आकारान्त और ईकारान्त–स्त्रीलिंग की संज्ञाएँ २६

७ उपसर्ग–स्वरसन्धि ३०

८ अव्यय ३५

९ सर्वनाम–अस्मद्, युष्मद्, तद्, एतद्, किम्, इदम्–स्वरसन्धि ... ३९

१० प्रथमभूतकाल (परस्मैपदी और आत्मनेपदी)–व्यञ्जनसन्धि ... ४६

११ विशेषण–अकारान्त–विसर्गसन्धि... ... ... ५३

१२ „ „ (कर्मणि भूतकालिक कृदन्त धातु.) ... ५७

१३ इकारान्त संज्ञा और विशेषण–विसर्गसन्धि ६२

१४ उकारान्त संज्ञा व विशेषण–स्वरसन्धि ६८

१५ कर्मवाच्य और भाववाच्य प्रयोग–व्यंजनसन्धि ७४

१६ कर्मणि भूत० कृन्दत विशेषण और ल्यबन्त कृदन्त अव्यय-व्यं० सन्धि ८०

१७ ऋकारान्त संज्ञा और तृकारान्त शब्द–व्यंजनसन्धि ... ८८

१८ तुमन्त (हेत्वर्थक) कृदन्त अव्यय और तव्य-प्रत्ययान्त कृदन्त विशेषण ९३

१९ आज्ञार्थ–परस्मैपदी और आत्मनेपदी ९७

२० विध्यर्थ „ „ १०१

२१ व्यंजनान्त संज्ञा–विशेषण (जिनका अन्त्य वर्ण त्, द्, च्, ज्) १०५

२२ नकारान्त संज्ञा और–विशेषण १११

२३ सकारान्त - „ „ „ ११५

२४ वर्तमानकालवाचक कृदन्त विशेषण १२०

उपसर्गसहित १-४-६-१० गणके महत्त्वके धातु १२६

कुछ व्याकरणकी संज्ञा १३०

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

भाग २—संस्कृत-पाठ

गद्यविभाग

	ईश्वरः । ...	१३१	१३	मूर्खैः दासः । ...	१५१
१	नारायणः । ...	१३२	१४	यतेः चातुर्यम् । ...	१५३
२	शरीरम् । ...	१३३	१५	वञ्चितः नृपः । ...	१५५
३	हिमालयः । ...	१३४	१६	नागार्जुनकथा । ...	१५७
४	उद्यानम् । ...	१३६	१७	कृतज्ञो नकुलः । ...	१५८
५	विहगाः । ...	१३८	१८	बुद्धिहीना विनश्यन्ति ।	१६०
६	विद्यागृहम् । ...	१३९	१९	यतिद्रव्यनाशः । ...	१६२
७	सागरः । ...	१४२	२०	जामातृसम्भावना । ...	१६४
८	नदी । ...	१४३	२१	विचित्रो दैवयोगः । ...	१६६
९	कृषीवलः । ...	१४५	२२	गन्तव्यं सह मित्रेण ।	१६७
१०	पशवः । ...	१४७	२३	दिलीपस्य पुत्रप्राप्तिः ।	१६९
११	न्यायप्रियः अनङ्गपालः ।	१४८	२४	रघो राज्यप्राप्तिः ।	१७१
१२	मूढशिष्यस्य । ...	१५०	२५	रघुपुत्रस्याजस्य विवाहः ।	१७२

पद्यविभाग

१	गणेशः ।	१७४	८	मूर्खवायसः । ...	१७८
२	पण्डितप्रशंसा । ...	१७४	९	सज्जनप्रशंसा । ...	१७९
३	सामान्यनीतिः । ...	१७५	१०	परोपकारप्रशंसा । ...	१८०
४	भूमिगतं धनम् । ...	१७६	११	उद्योगप्रशंसा । ...	१८०
५	उदारप्रशंसा । ...	१७६	१२	अतिदर्पोऽपि पाताय ।	१८१
६	सुभाषितप्रशंसा । ...	१७७	१३	सत्सङ्गमः । ...	१८२
७	विद्याप्रशंसा । ...	१७७		शब्दसङ्ग्रहः ।	१८३

भाग ३ रा—हिंदी वाक्य (संस्कृतमें भाषान्तर करनेके लिए)

१ हिंदीसे संस्कृत-भाषान्तरके लिए सूचना १९४

२ (अ) हिंदी वाक्यसमूहः (आ) हिंदी अवतरण १९८, २०१

३ हिंदी वाक्योंके संस्कृत भाषान्तरके लिए सूचना ... २०४

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

श्री

प्रथम भाग—व्याकरण पाठ

प्रास्ताविक—वर्णविचार

१ **स्वर**:—अ, इ, उ, ऋ, ऌ—ह्रस्व स्वर
आ, ई, ऊ, ॠ,—दीर्घ स्वर
ए, ऐ, ओ, औ—संयुक्त दीर्घ स्वर.

इनमें 'अ—आ' ये 'सजातीय' और उनके अतिरिक्त सर्व उन्हें विजातीय। उसी प्रकार 'इ—ई' ये सजातीय और उनके अतिरिक्त दूसरे सब उन्हें विजातीय। वैसेही 'उ—ऊ' ये सजातीय तथा अन्य सर्व उन्हें विजातीय। 'ऋ—ॠ' ये सजातीय और अन्य सर्व उन्हें विजातीय।

स्वरोंका उच्चारण स्वतंत्रतासे पूर्णतया किया जा सकता है।

ए, ऐ, ओ, औ, ये स्वतंत्र **दीर्घ संयुक्त स्वर** हैं। इस लिए यह ध्यानमें रखना चाहिए कि 'ऐ' यह 'ए' का दीर्घ स्वर नहीं है और 'औ' यह 'ओ' का दीर्घ स्वर नहीं। ए, ऐ, ओ, औ, इनमेंसे प्रत्येक स्वतंत्र रूप से दीर्घ स्वर है।

२ **व्यंजन**—क्, ख्, ग्, घ्, ङ्,—कवर्ग—कण्ठ्य व्यञ्जन
च्, छ्, ज्, झ्, ञ्,—चवर्ग—तालव्य ,,
ट्, ठ्, ड्, ढ्, ण्,—टवर्ग—मूर्धन्य ,,
त्, थ्, द्, ध्, न्,—तवर्ग—दन्त्य ,,
प्, फ्, ब्, भ्, म्,—पवर्ग—ओष्ठ्य ,,

य् (तालव्य), व् (ओष्ठ्य), र् (मूर्धन्य), ल् (दन्त्य), ये **अन्तःस्थ** व्यञ्जन हैं। ये व्यञ्जन इ, उ, ऋ, ऌ, इन स्वरोंके स्थान पर आ सकते हैं। इसलिए इन्हें 'अर्धस्वर' भी कहते हैं। श् (तालव्य), ष् (मूर्धन्य), स् (दन्त्य), ह् (कण्ठ्य) ये ऊष्म व्यञ्जन हैं। 'ह्' को 'महाप्राणोच्चार' भी कहते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ऊपर लिखे हुए वर्णोंका स्वतंत्रतासे पूर्ण उच्चारण नहीं किया जा सकता। इसलिए इन्हें 'व्यञ्जन' कहते हैं।

३ जोड़ाक्षर:—क् + अ – क, क् + आ – का, क् + इ – कि...। व्यञ्जनमें स्वर मिलानेसे पूर्णाक्षर होता है।

स् + त् + र् + ई – स्त्री, स् + त् + य् + आ – स्त्या।

एकसे अधिक व्यञ्जन एकत्र मिलाकर उसमें स्वर मिलानेसे पूर्ण जोड़ाक्षर होता है। जोड़ाक्षरोंमें उच्चारणके वर्णानुक्रमसे जोड़ाक्षर लिखनेकी रीति है।

ह् + म् + अ – ह्म, ह् + व् + ए – ह्वे, ह् + ल् + आ – ह्ला, ह् + ण् + आ – ह्णा।

जिस जोड़ाक्षरमें 'ह्' यह वर्ण है, उसमें 'ह्' पहिले लिखनेकी रीति है।

क् + ष् – क्ष्, ज् + ञ् – ज्ञ्, इस प्रकार विशेष जोड़ाक्षर लिखे जाते हैं।

४ व्यञ्जनोंके प्रकार:—

क्, ख्, च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ्, प्, फ्, ये प्रत्येक वर्ग के पहिले दो और श्, ष्, स् ये ऊष्म वर्ण ऐसे कुल १३ वर्ण **कठोर** अथवा **अघोष** कहे जाते हैं।

ग्, घ्, ङ्, ज्, झ्, ञ्, ड्, ढ्, ण्, द्, ध्, न्, व्, भ्, म्, य्, व्, र्, ल्, ह् ये २० व्यञ्जन **मृदु** अथवा **घोष** हैं। इसमें हर एक वर्गके अन्त्य तीन, अन्तःस्थ वर्ण और ह् ये आते हैं। इनमें ङ्, ञ्, ण्, न्, म्, ये हरएक वर्गके अन्त्य ५ व्यञ्जन **अनुनासिक** हैं।

स्वर तथा व्यञ्जनके अतिरिक्त और भी २ उच्चारणोंका उपयोग होता है और वे स्वरोंको जोड़कर लिखे जाते हैं। जैसे अं, अः। – यह चिह्न **अनुस्वार** का दर्शक है और ः यह चिह्न **विसर्ग**का सूचक है।

सूचना:—१ संस्कृत भाषामें दीर्घ 'ॡ' यह स्वर नहीं है। उसी प्रकार 'ळ' व्यञ्जन भी नहीं है। वेदोंकी संस्कृत भाषामें मात्र 'ळ' वर्ण पाया जाता है।

२ च, ज, झ, इनका उच्चारण चार, जन्म, झेलना इन शब्दोंमें अक्षरोंके समानही किया जाता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

५ **स्वरादि, व्यञ्जनादि, स्वरान्त, व्यञ्जनान्त :—ईश्वर, आनन्द** इन शब्दोंके आरंभमें स्वर हैं, इस लिए ये शब्द 'स्वरादि अथवा अजादि' * हैं। उसी प्रकार इनके अन्तमें भी स्वर हैं इस लिए ये 'स्वरान्त वा अजन्त' हैं।

मरुत्, राजन् इन शब्दोंके आरंभमें व्यञ्जन हैं, इस लिए ये 'व्यञ्जनादि अथवा हलादि' हैं। उसी प्रकार इनके अन्तमें भी व्यंजन हैं, इस लिए ये 'व्यञ्जनान्त या हलन्त' हैं। 'अन्त्य' (अन्तके) व्यञ्जन अथवा स्वरके पूर्व वर्ण को 'उपान्त्य' वर्ण कहते हैं। जैसे **ईश्वर**, इसमें **र्** और **राजन्** इसमें **अ** ये उपान्त्य वर्ण हैं।

प्रत्येक शब्दके पूर्ण उच्चारोंके अनुसार उस शब्दमें 'अवयव' होते हैं। जैसे **मरुत्**; इसमें २ अवयव हैं, **त्वम्** इसमें एक है।

जब कभी परिवर्तन होता है वा नहीं भी होता है ऐसा प्रदर्शित करना हो तो वह परिवर्तन '**विकल्पसे**' होता है ऐसा कहा जाता है।

प्रश्न

१ निम्न लिखित व्यञ्जन उसके साथके स्वरसहित लिखो :—

ह् + ण् + ई, ह् + ल् + आ, स् + त् + य् + ए, प् + ठ् + य् + ऊ।

२ निम्न लिखित व्यञ्जनोंके वर्ग और जाति बताओ :—

ख्, म्, न्, प्, य्, प्, ट्, म्, ढ्, ज्।

३ निम्न लिखित स्वरोंके सजातीय तथा विजातीय स्वर लिखो :—

इ, ऋ, उ, ऌ, ओ।

४ निम्न लिखित शब्दोंके आद्य, उपान्त्य तथा अन्त्य वर्ण बताओ :—

अधिपति, ईश्वर, विष्णु, वन्द्, प्रतिपद्, त्वम्.

५ निम्न लिखित शब्दोंके अवयव बताओ :—

इच्छति, वनानाम्, आरम्भः, महिमन्, आनन्ददायिन्।

६ स्वरादि, व्यञ्जनादि, स्वरान्त और व्यञ्जनान्त प्रत्येक प्रकारके तीन शब्द लिखो।

---

*अच् + आदि-अजादि. **अच्**-स्वर; **हल्**-व्यञ्जन ये संस्कृत संज्ञा हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पाठ १–क्रिया

(अ) वर्तमानकाल–प्रथम गण–परस्मैपद

१ **उत्तम पुरुष—अहं देवं नमामि ।** (मैं देवको नमस्कार करता हूँ ।)

आवां देवं नमावः । (हम दोनों देवको नमस्कार करते हैं ।)

वयं देवं नमामः । (हम--दोसे अधिक--देवको नमस्कार करते हैं ।)

मध्यम पुरुष—त्वं देवं नमसि । (तू देवको नमस्कार करता है ।)

युवां देवं नमथः । (तुम दोनों देवको नमस्कार करते हो ।)

यूयं देवं नमथ । (तुम--दोसे अधिक--देवको नमस्कार करते हो ।)

अन्य पुरुष—सः देवं नमति । (वह देवको नमस्कार करता है ।)

तौ देवं नमतः । (वे – दोनों – देवको नमस्कार करते हैं ।)

ते देवं नमन्ति । (वे–दोसे अधिक–देवको नमस्कार करते हैं ।)

उपर्युक्त वाक्योंमें **नम्** – (नमस्कार करना) इस धातुके वर्तमानकाल के रूपोंका उपयोग किया गया है । उस परसे निम्न लिखित बातें ध्यानमें आ सकती हैं :--

(१) संस्कृत भाषामें क्रियाके तीनों पुरुष के रूप होते हैं ।

(२) संस्कृत भाषामें, तीन वचन हैं – **एकवचन, द्विवचन, बहुवचन ।** 'अनेकवचन' यह शब्द संस्कृत भाषामें प्रयुक्त नहीं होता; क्यों कि द्विवचन यह भी अनेकवचनही है । 'अनेक' शब्दसे दोकी संख्याका भी (एक नहीं वह) बोध हो सकता है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

(३) उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम—**अस्मद्**, मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम—**युष्मद्**, अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम—**तद्** इन सर्वनामोंके प्रथमा विभक्तिके रूप निम्न लिखित होते हैं—

सर्वनाम	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अस्मद्	अहम्	आवाम्	वयम्
युष्मद्	त्वम्	युवाम्	यूयम्
तद्	सः	तौ	ते

(४) **देवम्** यह **देव** शब्दका कर्मकारक-सूचक द्वितीया विभक्तिके एकवचन का रूप है।

(५) कर्तृपद के पुरुष और वचन के अनुसार क्रिया का रूप प्रयुक्त होता है।

२ **रूपोंका पृथक्करण :—**

(अ) नमति—नम् + अ + ति। नमसि—नम् + अ + सि।

नमथः—नम् + अ + थस्। नमथ—नम् + अ + थ।

नमतः—नम् + अ + तस्।

(आ) नमामि—नम् + अ (आ) + मि। नमावः—नम् + अ (आ) + वस्।

नमामः—नम् + अ (आ) + मस्।

(इ) नमन्ति—नम् + (अ) + अन्ति।

उपर्युक्त पृथक्करणसे निम्न लिखित प्रत्ययोंका बोध होता है।

उत्तम पुरुष—	**मि**	**वस्**	**मस्।**
मध्यम पुरुष—	**सि**	**थस्**	**थ।**
अन्य पुरुष—	**ति**	**तस्**	**अन्ति।**

उसी प्रकार धातु तथा प्रत्यय इनके बीचमें सब दूर '**अ**' यह स्वर आया है। इस गण-सूचक चिह्नको **विकरण** कहते हैं। **नम्** यह प्रथम गणका धातु है और **अ** यह प्रथम गणका विकरण है।

सूचना—संस्कृत भाषामें कुल धातुएँ १० समूह अथवा **गणों**में विभक्त की गई हैं और प्रत्येक गणका कुछ विशेष चिह्न होता है। प्रथम गणका सूचक चिह्न अथवा **विकरण** '**अ**' है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

'(अ)' में के रूप धातुको विकरण तथा प्रत्यय लगानेसे बन गये हैं।

'(आ)' के उत्तम पुरुषके रूपोंमें विकरणके 'अ' का 'आ' हुआ। इसका कारण प्रत्ययके आरम्भमें **व्** अथवा **म्** ये वर्ण हैं।

'(इ)' के रूपमें विकरणके 'अ' का लोप हुआ है। उसका कारण प्रत्ययके आरम्भमें 'अ' यह स्वर है।

नियम १—अन्त्य 'स्' वर्णके आगे दूसरा वर्ण आवे अथवा न आवे तो उसका विसर्ग होता है। जैसे—वस्–वः, मस्–मः, थस्–थः.

नियम २—उत्तम पुरुषके 'व्' या 'म्' से आरम्भ होनेवाले प्रत्ययोंके पूर्व 'अ' का 'आ' होता है।

नियम ३—'अ' से आरम्भ होनेवाले प्रत्ययोंके पूर्व आनेवाले 'अ' का लोप होता है।

ऊपर के सम्पूर्ण विवेचनसे यह स्पष्ट है कि:—

धातु + विकरण + प्रत्यय — इष्टरूप

प्रथम गण—परस्मैपदी धातु

अव् (अवति), **रक्ष्** (रक्षति)–रक्षण (रक्षा) करना	**दह्** (दहति)–जलना, जलाना
क्रीड् (क्रीडति), **खेल्** (खेलति)–खेलना	**धाव्** (धावति)–दौडना
चल् (चलति)–चलना, हिलना	**नम्** (नमति)–नमस्कार करना
जीव् (जीवति)–जीता रहना, जगना	**पच्** (पचति)–पकाना
त्यज् (त्यजति)–छोड देना, त्याग करना	**पत्** (पतति)–गिरना
	वद् (वदति)–बोलना
	वप् (वपति) बीज बोना
	*__वह्__ (वहति)–ले जाना,उठा ले जाना।

ऊपर लिखे हुए सब धातुओंमें विकरण प्रयुक्त करनेके पहिले कुछ परिवर्त्तन नहीं होता।

---

* 'नरः शीर्षेण भारं वहति'–मनुष्य सिरपर बोझा उठा लेजाता है–'वह्' – 'लेजाना, उठाना' इस क्रियाका उपयोग करते समय जिस अवयवसे उठाना हो उस अवयवके अर्थ-बोधक शब्दका उपयोग तृतीया विभक्तिमें किया जाता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ जीव्, क्रीड्, त्यज्, इन धातुओंके वर्तमानकाल के रूप लिखो।

२ वदामः, रक्षन्ति, धावथ इन रूपोंका पृथक्करण करो।

३ निम्न लिखित वाक्योंमें कोष्टकमें लिखि हुई धातुओंके वर्तमानकालके योग्य रूपोंका प्रयोग करो:—

अहं सायङ्काले ——— (क्रीड्)।
नृपौ (दो राजे) राज्यं ——— (रक्ष्)।
पवनः (वायु) गन्धं ——— (वह्)।
आवां मार्गेण (मार्गसे) ——— (धाव्)।
यूयं सुखेन (सुखसे) ——— (जीव्)।
त्वं मुखेन (मुहसे) ——— (वद्)।

(आ) वर्तमानकाल—प्रथम गण—आत्मनेपद

वन्द्—नमस्कार करना

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	अहं देवं वन्दे	आवां देवं वन्दावहे	वयं देवं वन्दामहे
मध्यम पुरुष	त्वं देवं वन्दसे	युवां देवं वन्देथे	यूयं देवं वन्दध्वे
अन्य पुरुष	सः देवं वन्दते	तौ देवं वन्देते	ते देवं वन्दन्ते

रूपोंका पृथक्करण

(१) वन्दसे—वन्द् + अ + से। वन्दध्वे—वन्द् + अ + ध्वे। वन्दते—वन्द् + अ + ते। वन्दे—वन्द् + अ + इ। वन्देथे—वन्द् + अ + इथे। वन्देते—वन्द् + अ + इते।

(२) वन्दावहे—वन्द् + अ (आ) + वहे। वन्दामहे—वन्द् + अ (आ) + महे।

(३) वन्दन्ते—वन्द् + (अ) + अन्ते।

ऊपर लिखे हुए रूपोंमें भी परस्मैपदके प्रत्ययोंका प्रयोग करते समय जो

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

परिवर्त्तन होते हैं वेही यहां भी हुए हैं और परस्मैपदके सदृशही 'अ' यह विकरण धातुओंको प्रत्यय लगानेके पूर्व लगाया गया है।

आत्मनेपदी प्रत्ययः—इ वहे महे। से इथे ध्वे। ते इते अन्ते।

सूचना:—संस्कृत भाषामें कुछ धातु केवल परस्मैपदी, कुछ केवल आत्मनेपदी और कतिपय उभयपदी हैं। जिस क्रियाका फल '**परस्मै**' अर्थात् दूसरोंके लिए होता है वह क्रिया परस्मैपदी, जिस क्रियाका फल '**आत्मने**' अर्थात् स्वयंके लिए होता है वह क्रिया **आत्मनेपदी** और जिस क्रियाका फल **किसीकेभी लिए** हो सकता है वह **उभयपदी** क्रिया ऐसा इन शब्दोंका मूल अर्थ है। किन्तु सामान्यतः क्रियाके रूप निश्चित हैं उन्हें कराठाग्रही करना चाहिए।

प्रथम गण—आत्मनेपदी धातु

ईक्ष् (ईक्षते)–देखना	**लभ्** (लभते)–प्राप्त होना, प्राप्त करना
कम्प् (कम्पते), **वेप्** (वेपते)–कांपना	**वन्द्** (वन्दते)–नमस्कार करना
क्षम् (क्षमते)–क्षमा करना	**शिक्ष्** (शिक्षते)–पढ़ना
भाष् (भाषते)–बोलना	**स्यन्द्** (स्यन्दते)–नीचे गिरना, टपकना
यत् (यतते)–प्रयत्न करना	**स्रंस्** (स्रंसते)–गिरना
रम् (रमते)–खेलना	

प्रश्न

१ ईक्ष्, स्रंस् और भाष् इन धातुओंके वर्तमानकालके रूप लिखो।

२ क्षमेथे, रमामहे, और शिक्षन्ते इन रूपोंका पृथक्करण करो।

३ निम्न लिखित वाक्योंमें कोष्टकमें लिखी हुई धातुओंके वर्तमानकालके योग्य रूपका प्रयोग करो:—

युवां फलं ——— (लभ्)। रामः अपराधं ——— (क्षम्)।
वयं सूर्यं ——— (ईक्ष्)। त्वं कंदुकेन (गेंदसे) ——— (रम्)।
अहं सत्यं ——— (भाष्)। यूयं शीतेन (जाड़ा लगनेसे) ——— (कम्प्)।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पाठ २—क्रिया—(क्रमशः)

(अ) ४, ६, और १० गणके अपरिवर्त्तनशील धातु (परस्मैपदी)

१ (अ) **मयूराः नृत्यन्ति**—मोर नाचते हैं। **रोगः न नश्यति**—रोग नष्ट नहीं होता। **सागरः क्षुभ्यति**—समुद्र क्षुब्ध होता है।

(आ) **बालः गृहं विशति**—लडका घरमें प्रवेश करता है। **योधः बाणं क्षिपति**—योद्धा बाण फेंकता है। **भक्तः देवं स्पृशति**—भक्त देवको स्पर्श करता है। **अहं शब्दं लिखामि**—मैं शब्द लिखता हूं।

(इ) **दूतः वार्तां कथयति**—दूत वार्ता कहता है। **नरः गृहं रचयति**—मनुष्य घर बांधता है। **अहं शरीरं भूषयामि**—मैं शरीरको सजाता हूँ।

सूचनाः—'न–नहीं' ये अव्यय बहुधा क्रियाके पास ही लिखे जाते हैं; अथवा जिस शब्दके संबध में नकारदर्शक अर्थ प्रदर्शित करना इष्ट हो उस शब्दके पास ये लिखे जाते हैं।

पृथक्करण

(अ) नृत्यन्ति–नृत् + य + अन्ति। नश्यति–नश् + य + ति। क्षुभ्यति–क्षुभ् + य + ति।

(आ) विशति–विश् + अ + ति। क्षिपति–क्षिप् + अ + ति। स्पृशति–स्पृश् + अ + ति। लिखामि–लिख् + अ (आ) + मि।

(इ) कथयति–कथ् + अय + ति। रचयति–रच् + अय + ति। भूषयामि–भूष् + अय (अया) + मि।

'(अ)' में नृत्, नश्, क्षुभ्, ये चतुर्थ गणके परस्मैपदी धातु हैं–चतुर्थ गणका विकरण '**य**' है।

'(आ)' में विश्, क्षिप्, स्पृश्, लिख् ये छटे (षष्ठ) गण के परस्मैपदी धातु हैं। षष्ठ (छटे) गणका विकरण '**अ**' है।

'(इ)' में कथ्, रच्, भूष् ये दशम गणके परस्मैपदके धातु हैं। दशम गणका विकरण '**अय**' है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

चतुर्थ गण—परस्मैपद

अस् (अस्यति)–फेंकना	**कुस्** (कुस्यति)–आलिंगन करना
क्रुध् (क्रुध्यति), **कुप्** (कुप्यति)–क्रोध करना	**क्षुभ्** (क्षुभ्यति)–क्षोभ होना, अशान्त होना
तुष् (तुष्यति)–संतुष्ट होना	**नृत्** (नृत्यति)–नाचना
नश् (नश्यति)–नाश होना	**मुह्** (मुह्यति)–मोहित होना, मूर्च्छित होना, पागल बनना
पुष् (पुष्यति)–पोषण करना, पालना	
लुप् (लुप्यति)–लोप होना	**लुभ्** (लुभ्यति)–लोभ करना

षष्ठ गण—परस्मैपद

कृष्—(कृषति)–हल चलाना	**तुद्** (तुदति)–तकलीफ़ देना, पीड़ित करना
विश् (विशति)–प्रवेश करना	
लिख् (लिखति)–लिखना	**नुद्** (नुदति)–हाँकना, आगे चलाना
	स्पृश् (स्पृशति)–स्पर्श करना, छूना

दशम गण—परस्मैपद

कथ् (कथयति)– कहना	**गण्** (गणयति)–गिनना
पूज् (पूजयति)–पूजा करना	**प्रथ्** (प्रथयति)–प्रसिद्ध करना
भूष् (भूषयति)–सजाना, भूषित करना	**रच्** (रचयति) रचना करना, बांधना
स्पृह् (स्पृहयति)–इच्छा करना	

सूचना:—'**अस्, क्षिप्**–फेंकना' इन धातुओंके उपयोगमें जिनके ऊपर कुछ फेंकना हो उनके वाचक शब्द सप्तमी विभक्तिमें रखे जाते हैं। वीरः शत्रौ (शत्रुपर) बाणं क्षिपति। **क्रुध्, कुप्** (क्रोध करना) इन धातुके उपयोगमें जिसपर क्रोध किया जाता है उनके वाचक शब्दका चतुर्थी विभक्तिमें प्रयोग किया जाता है। जनकः पुत्राय कुप्यति–क्रुध्यति। **स्पृह्**–इच्छा करना इस धातुके उपयोगमें जिसकी इच्छा करना हो उसके वाचक शब्दका प्रयोग चतुर्थी विभक्तिमें किया जाता है। बालः मोदकाय (मिठाईकी) स्पृहयति। **कथ्**–कहना, इस धातुका प्रयोग, जिसको कुछ कहना हो उसके वाचक शब्दको चतुर्थी विभक्तिमें रखकर, किया जाता है। कभी कभी द्वितीया अथवा क्वचित् षष्ठीका भी उपयोग किया जाता है। रामः मित्राय कथयति कथाम्। रामः मित्रं मित्रस्य वा.....।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

चतुर्थ गण–नृत्—नृत्यामि नृत्यावः नृत्यामः। नृत्यसि नृत्यथः नृत्यथ। नृत्यति नृत्यतः नृत्यन्ति।

षष्ठ गण–विश्—विशामि विशावः विशामः। विशसि विशथः विशथ। विशति विशतः विशन्ति।

दशम गण–कथ्—कथयामि कथयावः कथयामः। कथयसि कथयथः कथयथ। कथयति कथयतः कथयन्ति।

प्रश्न

१. ४, ६, व १० इन गणोंमेंसे प्रत्येकके दो धातुओंके वर्तमानकालके रूप लिखो।

२. निम्न लिखित रूपोंका पृथक्करण करो—कुप्यतः, मुह्यामः, भूषयन्ति, स्पृशथ।

३. निम्न लिखित वाक्योंमें कोष्टक की धातुओंके योग्य रूपोंका उपयोग करोः—
वयं कंदुकं (गेंद) ——— (क्षिप्)। त्वं हर्षेण (आनन्दसे) ———(नृत्)।
नृपाः (राजा) विजयाय ——— (स्पृह्)। अहं सेवकाय (नौकरपर) ——— (कुप्)।

सः पुत्रं ——— (कुस्)। यूयं धनं ——— (लुभ्)।
आवां क्षेत्रं (खेत) ——— (कृष्)।
युवां फलानि (फल) ——— (गण्)।

(आ) ४, ६ व १० गणोंके अपरिवर्त्तन-शील धातु (आत्मनेपदी)

(अ) **वीरः युध्यते**–वीर लड़ता है। **त्वम् उपायं न मन्यसे**–तू उपायोंका विचार नहीं करता है।

(आ) **योधः बाणं क्षिपते**–योद्धा बाण फेंकता है।

(इ) **दूतः वार्तां कथयते**–दूत समाचार कहता है। **अहं शरीरं भूषये**—मैं शरीरको शोभित करता हूं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

रूपोंका पृथक्करण

(अ) युध्यते—युध् + य + ते। मन्यसे—मन् + य + से।

(आ) क्षिपते—क्षिप् + अ + ते।

(इ) कथयते—कथ् + अय + ते।

'(अ)' में के **युध्** और **मन्** ये चतुर्थ गणके आत्मनेपदके धातु हैं।

'(आ)' में **क्षिप्** इस षष्ठ गणकी धातुके आत्मनेपदके रूप हैं।

'(इ)' में **कथ्-भूष्** इन दशम गणकी धातुके आत्मनेपदके रूप हैं।

सूचनाः—क्षिप् धातुके ऊपर '(अ)' में लिखे अनुसार परस्मैपदके रूप होते हैं; इस लिए 'क्षिप्' यह धातु उभयपदी है। उसी प्रकार कथ्-भूष् इन दशम गण धातुओंके परस्मैपदके रूप होते ही हैं। इस लिए ये उभयपदके धातु हैं। **दशम गणके धातु सामान्यतः उभयपदके होते हैं;** परंतु मन्त्र्, तन्त्र्, और मृग् ये केवल 'आत्मनेपदी' हैं।

चतुर्थ गण—आत्मनेपदी धातु

मन् (मन्यते)-विचार करना, मानना। **विद्** (विद्यते)-होना।
युध् (युध्यते)- लड़ना, युद्ध करना।

षष्ठ गण—आत्मनेपदी (उभयपदी) धातु

क्षिप् (क्षिपते)-फेंकना।

दशम गण—आत्मनेपदी धातु

मन्त्र् (मन्त्रयते)-सलाह करना, मंत्रणा करना।

तन्त्र् (तन्त्रयते)-(राज्य) संचालन करना।

मृग् (मृगयते) ढूँढना, शिकार करना।

युध्-४ गण (आत्मनेपद)			क्षिप्-६ गण (आत्मनेपद)		
उत्तम पुरुष	युध्ये	युध्यावहे युध्यामहे।	क्षिपे	क्षिपावहे	क्षिपामहे।
मध्यम पुरुष	युध्यसे	युध्येथे युध्यध्वे।	क्षिपसे	क्षिपेथे	क्षिपध्वे।
अन्य पुरुष	युध्यते	युध्येते युध्यन्ते।	क्षिपते	क्षिपेते	क्षिपन्ते।

कथ्-१० गण (आत्मनेपद) उत्तम पुरुष—कथये कथयावहे कथयामहे। मध्यम पुरुष—कथयसे कथयेथे कथयध्वे। अन्य पुरुष—कथयते कथयेते कथयन्ते।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१. ४, ६, और १० गणोंमेंसे प्रत्येकके दो आत्मनेपदी धातुके वर्तमानकालके रूप लिखो।

२. निम्न लिखित पदोंका पृथक्करण करोः—मृगयन्ते, मन्यध्वे, विद्येते, युध्ये।

३. निम्न लिखित वाक्योंमें कोष्टक की धातुओंके वर्तमानकालके रूपोंका प्रयोग करोः—

जनाः (जनता) रामं देवं ——— (मन्)।
सैनिकाः (सिपाही) परस्परं ——— (युध्)।
नृपाः (राजा लोग) प्रजाः न्यायेन ——— (तन्त्र्)।
चौरौ धनं ——— (मृग्)।
बालस्य हस्ते (हाथमें) पुस्तकं ——— (विद्)।
वयं शरीरं ——— (भूप्)।

पाठ ३—संज्ञा

Noun

अकारान्त—पुल्लिंग और नपुंसकलिंग*

*सूचनाः—हिन्दीमें पुल्लिंग और स्त्रीलिंग दोही भेद लिङ्गके होते हैं। संस्कृतमें नपुंसकलिंग यह तीसरा भेद भी माना जाता है। इस लिए इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

१ नृपः राज्यं रक्षति—राजा राज्यकी रक्षा करता है।

प्रभाते भक्तः हस्ताभ्यां देवं नमति—प्रातःकालमें भक्त (दोनों) हस्तसे देवको नमस्कार करता है।

वीरः रथात् बाणां क्षिपति—योद्धा रथमेंसे बाण फेंकता है।

उद्याने मालाकारः वृक्षान् जलेन पुष्यति—बागमें माली वृक्षोंका पानीसे पोषण करता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ईश्वरस्य प्रसादेन नरः सुखं लभते—ईश्वरकी कृपासे मनुष्यको सुख मिलता है।

जनकः बालकाय पुस्तकं यच्छति—पिता लडकेको पुस्तक देता है।

छात्राः अध्ययनाय यतन्ते—विद्यार्थी पढ़नेका प्रयत्न करते हैं।

हे वयस्य, बालः कन्दुकेन क्रीडति—हे मित्र, बालक गेंदसे खेलता है।

उपर्युक्त वाक्योंमेंसे अकारान्त संज्ञाओंकी विभक्तियां और उनके अर्थ नीचे लिखे अनुसार हैं:—

शब्द	विभक्ति अर्थ
नृपः, भक्तः, वीरः, मालाकारः, नरः, जनकः, छात्राः, बालः	पु० प्रथमा—कर्तृकारक nominative
राज्यम्, सुखम्, पुस्तकम् देवम् (देवः), वृक्षान् (वृक्षः)	न० पु० द्वितीया—कर्मकारक accusative
हस्तेन (हस्तः), प्रसादेन (प्रसादः), कन्दुकेन (कन्दुकः)	पु० तृतीया—करण अथवा साधन instrumental
बालकाय (बालकः)	पु० चतुर्थी—जिसको दिया जाय वह—संप्रदान dative
अध्ययनाय (अध्ययनम्)	न० चतुर्थी—जिसके लिये व्यापार होता है वह—प्रयोजन
रथात् (रथः)	पु० पंचमी—जिससे दूर व्यापार होता है वह—अपादान ablative
ईश्वरस्य (ईश्वरः)	पु० षष्ठी—संबंध genitive
उद्याने (उद्यानम्)	न० सप्तमी—व्यापारका स्थान—अधिकरण locative
प्रभाते (प्रभातम्)	न० सप्तमी—व्यापारका समय—अधिकरण
वयस्य (वयस्यः)	पु० सम्बोधन—जिसे पुकारा वह vocative

इस परसे यह विदित होगा कि भिन्न भिन्न विभक्तियोंके अर्थ संस्कृत और हिन्दीमें समान ही हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

२ अकारान्तः पुल्लिंगः देव शब्दः । अकारान्तः नपुंसकलिंगः वन शब्दः

एकवचन०	द्विव०	बहुव०		एकव०	द्विव०	बहु०
देवः	देवौ	देवाः	प्रथमा	वनम्	वने	वनानि
देवम्	देवौ	देवान्	द्वितीया	,,	,,	,,
देवेन	देवाभ्याम्	देवैः	तृतीया	वनेन	वनाभ्याम्	वनैः
देवाय	देवाभ्याम्	देवेभ्यः	चतुर्थी	वनाय	,,	वनेभ्यः
देवात्	देवाभ्याम्	देवेभ्यः	पञ्चमी	वनात्	,,	,,
देवस्य	देवयोः	देवानाम्	षष्ठी	वनस्य	वनयोः	वनानाम्
देवे	देवयोः	देवेषु	सप्तमी	वने	,,	वनेषु
हे देव	हे देवौ	हे देवाः	सम्बोधन	हे वन	हे वने	हे वनानि

उपर्युक्त रूपोंको देखनेसे यह दिखाई देगा कि पुल्लिंग और नपुंसकलिंग की संज्ञाओंके रूपोंमें प्रथमा, द्वितीया और सम्बोधन इन विभक्तियोंमेंही अन्तर है अन्य विभक्तियोंके रूप समानही है ।

'अ'कारान्त पुल्लिंग की संज्ञाओं के रूप 'देव' शब्दके समान और नपुंसकलिंगकी संज्ञाओंके रूप 'वन' शब्दके समान होते हैं।

सूचनाः—शब्दसमूहोंके (अ) और (आ) ऐसे दो विभाग किए हैं। अ-में संस्कृत और हिन्दी इन दोनों भाषाओंमें समान प्रयुक्त होनेवाले और आ-में संस्कृत शब्द हिन्दी अर्थके साथ दिए गये हैं ।

देव शब्दके समान रूपान्तरवाले अकारान्त पुल्लिंगी शब्दः—

(अ) अपराधः, उदयः, जनः, जीवः, तटः, बालः, बालकः, देवः, पर्वतः ।

(आ) **अनलः**—अग्नि, **अनिलः**—पवनः—वायु, **अश्वः**—हयः—घोडा, **उद्यमः**—उद्योगः—उद्योग, यत्न, **कायः**—देहः—शरीर, **कृषीवलः**—किसान, **खगः**—विहगः-विहङ्गमः—पक्षी, **चरणाः**—पादः—पांव, **जनकः**—पिता, **सैनिकः**—सिपाही, **वत्सः**—गायका बच्चा, लडका ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

वन शब्दके समान चलनेवाले अकारान्त नपुंसकलिंगके शब्द :—

(अ) अज्ञानम्, अन्नम्, अरण्यम्, आकाशम्, आसनम्, कल्याणम्, ज्ञानम्, तत्त्वम्, दुःखम्, धान्यम्, नखम्, पापम्, पुण्यम्, पुस्तकम्, रत्नम्, वनम्, हृदयम्।

(आ) **उपवनम्-उद्यानम्**-बाग, **कुसुमम्**—फूल, **कुण्डलम्**—कानका अलंकार, **क्रीडाङ्गणम्**—खेलने का स्थान, **गेहम्-सदनम्**—घर, **चित्तम्**—मन, **तीर्थम्**-पवित्र स्थान, **तृणम्**—घांस, चारा, **नयनम्**—आंख, **नीडम्**—घोंसला, **बीजम्**—बीज, **भाषणम्-वचनम्**—बोलना, **मुखम्-आननम्**—मुंह, **सुवर्णम्-काञ्चनम्-हिरण्यम्**—सोना।

३ तृतीया-एकवचन	षष्ठी-बहुवचन		द्वितीया-बहुवचन
(अ) रामः—रामेण	रामाणाम्	परंतु	रामान्
वृक्षः—वृक्षेण	वृक्षाणाम्	,,	वृक्षान्
शेषः—शेषेण	शेषाणाम्	,,	शेषान्
वृकः—वृकेण	वृकाणाम्	,,	वृकान्
(आ) कर्णः—कर्णेन	कर्णानाम्	और	कर्णान्
चरणः—चरणेन	चरणानाम्	,,	चरणान्

'(अ)' में जहां देव शब्दके रूपमें 'न्' था वहां उसके स्थानमें 'ण्' हो गया है। परन्तु '(आ)' में 'न्' ही विद्यमान है। द्वितीयाके बहुवचनका अन्त्य 'न्' दोनों जगह विद्यमान है।

पृथक्करण

वृक्षेण—व् ऋ क् ष् ए + न् + अ
शेषेण—श् ए ष् ए + न् + अ
रामेण—र आ म् ए + न् + अ
} परन्तु कर्णेन—क् अ र् ण् ए + न् + अ

उपर्युक्त रूपोंके पृथक्करणकी तुलना करनेसे दिखाई देगा कि मूल शब्दोंमें ऋ, र्, ष्, इनमेंसे कोई वर्ण हो तो शब्दोंके रूपोंमें आनेवाले 'न्' का 'ण्' होता है; ऋ, र्, ष्, और न् इनके बीचमें कोईभी स्वर, ल्के अतिरिक्त अन्तःस्थ वर्ण

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

(य्, र्, व्), कवर्ग और पवर्ग इन वर्गोंके व्यञ्जन और 'ह्' ये वर्ण आ जायँ तो भी यह परिवर्तन होता है। द्वितीयाके बहुवचनके रूपोंपरसे यह दिखाई देगा कि उपर्युक्त परिवर्तन 'न्' इस वर्णके पदके अन्तमें आनेपर नहीं होता।

उपर्युक्त 'न्' का 'ण्' में परिवर्तन होने का नियम अकारान्त नपुंसक-लिंगकी संज्ञाओंकी प्रथमा, द्वितीया और सम्बोधन विभक्तियोंके बहुवचनोंमें और तृतीया–एकवचन तथा षष्ठी बहुवचनके रूपोंमें प्रयुक्त हो सकता है।

जैसे—पुष्पम्–पुष्पाणि, पुष्पेण, पुष्पाणाम्
नेत्रम्–नेत्राणि, नेत्रेण, नेत्राणाम्

परंतु तृणम्–तृणानि, तृणेन, तृणानाम्
हृदयम्–हृदयानि, हृदयेन, हृदयानाम्.

निम्न–लिखित शब्दोंका रूपान्तर उपर्युक्त शब्दोंके समान ही किया जावेगा।

पुल्लिंग :—

(अ) ईश्वरः, पुत्रः, मूर्खः, चन्द्रः, सूर्यः, स्वर्गः, पुरुषः, शिष्यः, आकारः, शङ्करः, रामः, क्रमः, आर्यः, आश्रमः, समुद्रः, वृत्तः।

(आ) **कूर्मः**—कछुआ, **नृपः**—राजा, **किङ्करः**—नौकर, **भारः**—बोझा, **शरः**—बाण, **सदाचारः**—अच्छा वर्ताव, **छात्रः**—शिष्य, **करः**—हाथ।

नपुंसकलिंग :—

(अ) मित्रम्, शरीरम्.

(आ) **क्षेत्रम्**—खेत, **गृहम्**—घर, **नेत्रम्**—आँख, **पुष्पम्**—फूल, **शीर्षम्**—सिर।

सूचना—संस्कृत भाषामें सामान्यतः शब्दोंके लिंग उनके अर्थसे निश्चित किये जा सकते हैं। परंतु कुछ शब्दोंके लिंग मात्र बिलकुल भिन्न हैं। जैसे–विघ्नः (पु०), मित्रम् (न०), वस्तु (न०), राशिः (पु०), व्याधिः (पु०), अश्रु (न०), देवालयः (पु०), सारः (पु०), इस लिए शब्दोंके लिंग कराठाग्र करना ही ठीक होगा। विशेष विवरण संस्कृत–वाक्यरचना पाठ दो में देखिए।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ निम्न-लिखित वाक्योंमें कोष्टकमें लिखे हुए शब्दोंके योग्य रूपोंकी योजना करो :—

१ नरः (मुख) (अन्न) भक्षयति । २ बालः (आकाश) (चन्द्र) ईक्षते ।
३ जनकः (पुत्र) (सदाचार) तुष्यति । ४ नराः (उद्यम) (धन) लभन्ते ।
५ किङ्कराः (शीर्ष) (भार) वहन्ति । ६ खगाः (वृक्ष) (नीड) रचयन्ति ।
७ कृषीवलाः (क्षेत्र) (बीज) वपन्ति । ८ अन्धकारः (सूर्य) (उदय) नश्यति ।

२ निम्न-लिखित रूप क्या हैं इसका उल्लेख कर उनका नीचे लिखे वाक्योंमें उपयोग करो :—

पुष्पैः, तीर्थेषु, सैनिकान्, पुत्रस्य, पर्णानि, क्रीडाङ्गणे, कर्णयोः, वृक्षान् ।

१ वृक्षाणां ——— पवनेन चलन्ति । २ जनकः ——— अपराधं क्षमते ।
३ कुमाराः ——— सायंकाले क्रीडन्ति । ४ नृपः ——— गणयति ।
५ कुण्डले ——— बालस्य विद्येते । ६ जनानां पापं ——— नश्यति ।
७ पुष्पाणि ——— भूषयन्ति । ८ भक्तः देवं ——— पूजयति ।

पाठ ४—क्रिया

१, ४, ६, १० गण (विकरणके पूर्वमें अनियमित परिवर्तनशील)

१ **बालः शालागृहं गच्छति**—बालक पाठशालामें जाता है ।
धनिकः भिक्षुकाय धनं यच्छति—श्रीमान् मनुष्य भिक्षुकको धन देता है ।

ज्वरः औषधेन शाम्यति—ज्वर दवाईसे कम होता है ।
लोभात् मोहः जायते—लोभसे मोह उत्पन्न होता है ।
नरः धनं विन्दति-विन्दते—मनुष्य धन मिलाता है ।
पुत्रः जनकं प्रीणयति-प्रीणयते—पुत्र पिताको प्रसन्न करता है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ऊपर लिखे हुए वाक्योंमें **गम्, दा** ये प्रथम गणके परस्मैपदके, **शम्** चतुर्थ गणका परस्मैपदका, **जन्** चतुर्थ गणका आत्मनेपदका, **विद्** षष्ठ गणका उभयपदका और **प्री** दशम गणका उभयपदका इन धातुओंका उपयोग किया गया है। इन धातुओंमें विकरणके पहले अनियमित परिवर्तन होता है।

२ इस प्रकारके धातु नीचे दी गये हैं:—

(१) **प्रथम गण—परस्मैपदी—ऋ** (**ऋच्छति**)—जाना, **गम्** (**गच्छति**)—जाना, **घ्रा** (**जिघ्रति**)—सूंघना, **दा** (**यच्छति**)—देना, **दृश्** (**पश्यति**)—देखना, **ध्मा** (**धमति**)—फूंकना, बजाना, **पा** (**पिबति**)—पीना, **स्था** (**तिष्ठति**)—खड़ा रहना।

आत्मनेपद—शद् (**शीयते**) नाश होना।

(२) **चतुर्थ गण—परस्मैपद—क्लम्** (**क्लाम्यति**)—थकना, **क्षम्** (**क्षाम्यति**)—क्षमा करना, **जृ** (**जीर्यति**)—वृद्ध होना, दुर्बल होना, **दम्** (**दाम्यति**)—स्वाधीन रखना, नियंत्रण करना, **भ्रम्** (**भ्राम्यति**)—भटकना, फिरना, (भ्रमति-भ्रम्यति यह रूप भी होता है), **व्यध्** (**विध्यति**)—बींधना, छिद जाना, **शम्** (**शाम्यति**)—शान्त होना, कम होना, **श्रम्** (**श्राम्यति**)—थकना।

आत्मनेपद—जन् (**जायते**)—उत्पन्न होना, जन्म होना।

(३) **षष्ठ गण—परस्मैपद—इष्** (**इच्छति**)—इच्छा करना, **कृत्** (**कृन्तति**)—तोड़ना, कतरना, **कॄ** (**किरति**)—फैलना, फैलाना, **नू** (**नुवति**)—स्तुति करना, **प्रच्छ्** (**पृच्छति**)—पूछना, प्रश्न करना, **मस्ज्** (**मज्जति**)—डूबना, डुबकी लगाना।

आत्मनेपद—मृ (**म्रियते**)—मरना, **धृ** (**धियते**)—रहना।

उभयपद—मुच् (**मुञ्चति-मुञ्चते**)—छोड़ना, छुड़ाना, **लिप्** (**लिम्पति-लिम्पते**)—लेप करना, **लुप्** (**लुम्पति-लुम्पते**)—लूटना, लीपना, **विद्** (**विन्दति-विन्दते**)—मिलना, मिलाना, **सिच्** (**सिञ्चति-सिञ्चते**)—पानी छींड़कना, सिञ्चन करना।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

(४) **दशम गण। उभयपद**—**कृत्** (**कीर्तयति-कीर्तयते**)—कहना, वर्णन करना, **धू** (**धूनयति-धूनयते**)—हिलाना, **प्री** (**प्रीणायति-प्रीणायते**)—संतुष्ट करना, प्रसन्न करना, **मृज्** (**मार्जयति-मार्जयते**)—साफ करना, झाड़ू लगाना।

३ दूसरे गणके कुछ महत्त्वपूर्ण धातुओंके रूप :—

अस्—होना—द्वितीय गण, परस्मैपद।

अस्मि स्वः स्मः। असि स्थः स्थ। अस्ति स्तः सन्ति।

कृ—करना—अष्टम गण, उभयपद (केवल परस्मैपदके रूप यहां दिये गये हैं)।

करोमि कुर्वः कुर्मः। करोषि कुरुथः कुरुथ। करोति कुरुतः कुर्वन्ति।

ज्ञा—जानना—नवम गण उ० प० (केवल परस्मैपदके रूप यहां दिये गये हैं)।

जानामि जानीवः जानीमः। जानासि जानीथः जानीथ। जानाति जानीतः जानन्ति।

ग्रह्—लेना—पकड़ना—नवम गण, उ० प० (केवल परस्मैपदके रूप दिये जाते हैं)।

गृह्णामि गृह्णीवः गृह्णीमः। गृह्णासि गृह्णीथः गृह्णीथ। गृह्णाति गृह्णीतः गृह्णन्ति।

श्रु (**शृ**)—सुनना—पंचम गण, परस्मैपद—

शृणोमि	शृण्वः—शृणुवः	शृण्मः—शृणुमः
शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ।
शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति।

सूचना:—(१) गतिवाचक क्रियाओंके साथ स्थलवाचक शब्दोंका प्रयोग द्वितीया विभक्तिमें किया जाता है।

(२) '**दा**-यच्छ्-देना' इस क्रियाका उपयोग, जिसको देना हो उसके वाचक शब्दको चतुर्थी विभक्ति रखकर, करते हैं।

(३) '**जन्**—जा-उत्पन्न होना' इस क्रियाका उपयोग जिससे उत्पत्ति होती है उसके वाचक शब्दकी पंचमी विभक्तिमें रखकर, किय जाता है।

नए शब्द

(अ) **चोरः**, **धनम्**, **पराक्रमः**, **प्रश्नः**, **बाणः**, **राक्षसः**, **वस्त्रम्**, **शङ्खः**, **हरिणः**

(आ) **गन्धः**—सुवास। | **गानम्**—गाना। | **जालम्**—जाल।
तण्डुलः—चांवल। | **रणाङ्गणम्**—युद्धभूमि।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ निम्न-लिखित वाक्योंमें क्रियाके मूल धातुका उल्लेख कर उनके पुरुष और वचन लिखो और योग्य कर्ताका प्रयोग करो:—

१ ——— बाणैः हरिणं विध्यथ ।	६ ——— ईश्वरं प्रीणयथः ।
२ ——— रणाङ्गणे तिष्ठन्ति ।	७ ——— वृक्षान् जलेन सिञ्चतः ।
३ ——— पुष्पाणि पश्यामि ।	८ ——— अपराधं क्षाम्यामः ।
४ ——— राक्षसेन सह युध्यसे ।	९ ——— कीर्तयामः पराक्रमम् ।
५ ——— तण्डुलान् किरति ।	१० ——— शरीरं भूषयन्ति ।

२ निम्न-लिखित क्रियाओंके योग्य कर्ताओंका प्रयोग करो और दूसरे समूहके शब्दोंमेंसे योग्य कर्मपदकी योजना करो:—

क्रियासमूहः—इच्छन्ति, पृच्छामि, यच्छतः, धमामः, जिघ्रसि, कृन्तावः, मुञ्चथः, प्रीणयन्ति, शृणुथ, धूनयति ।

कर्मपदसमूहः—प्रश्नम्, शङ्खम्, गन्धम्, जालम्, क्षीरम्, जनकम्, सुखम्, धनम्, गानम्, वस्त्रम् ।

पाठ ५—क्रिया (नियमित परिवर्तनशील)

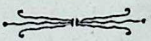

१ गण-प्रथम गण:—

* **ईश्वराय पूजनं रोचते**—ईश्वरको पूजा पसंद है ।

† **ज्ञानं मोक्षाय कल्पते**—ज्ञान मोक्षके योग्य होता है । (मोक्षको ले जाता है) ।

---

* रुच् (पसंद करना) इस क्रियाका उपयोग, जिसे कुछ पसंद होता है उसके वाचक शब्दको चतुर्थी विभक्तिमें रखकर और जो पसंद होता है उसके वाचक शब्दको प्रथमा विभक्तिमें रखकर, किया जाता है ।

† कृप् (योग्य होना, परिणाम होना) इस क्रियाका उपयोग जिसके लिए योग्य उसके वाचक शब्दको अथवा परिणामवाचक शब्दको चतुर्थी विभक्तिमें रखकर, किया जाता है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पर्वते वृक्षाः रोहन्ति—पहाड़पर वृक्ष बढ़ते हैं।
वातः सुगन्धं हरति—वायु सुगन्धको हरण करता है।
योधः विपक्षं जयति—योद्धा शत्रुको जीतता है।
रामः पण्डितः भवति—राम पण्डित होता है।
दानेन पुण्यं वर्धते—दानसे पुण्य बढ़ता है।
नाविकः समुद्रं तरति—मल्लाह समुद्र तैर जाता है।

ऊपरके वाक्योंमें **रुच्, कृप्, रुह, हृ, जि, भू, वृध्, तृ** इन प्रथम गणके धातुओंका उपयोग किया गया है। इनमें विकरणके पूर्व कुछ नियमित परिवर्तन हुआ है।

रुच् – रोच् + अ + ते – रोचते। रुह् – रोह् + अ + ति – रोहति।
वृध् – वर्ध् + अ + ते – वर्धते। कृप् – कल्प् + अ + ते – कल्पते।
हृ – हर् + अ + ति – हरति। जि – जे (जय्*) + अ + ति – जयति।
भू – भो (भव्*) + अ + ति – भवति। तृ – तर् + अ + ति – तरति।

ऊपरके रूपोंमें उपान्त्य ह्रस्व उ, ऋ, ऌ के स्थानमें विकरणके पूर्व क्रमशः ओ, अर्, अल्, ऐसा परिवर्तन हुआ है और अन्त्य इ, ऊ, ऋ – ॠ के स्थानमें ए, ओ, अर् हो जाते हैं। इसे **गुण** कहते हैं।

गुण

मूल स्वर	इ – ई	उ – ऊ	ऋ – ॠ	ऌ
परिवर्तन	ए	ओ	अर्	अल्

* धातूको विकरण लगाते समय ए, ऐ, ओ, औ इनके आगे स्वर आवे तो उनके स्थानपर अनुक्रमसे अय्, आय्, अव्, आव् हो जाते हैं; और उनमेंके य् और व् ये व्यञ्जन आगेके स्वरमें मिल जानेसे वे पूर्णाक्षर हो जाते हैं। इस प्रकारके रूप धारण करनेवाले कुछ धातु :—

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

गै–(गाय् + अ + ति – गायति)—गाना, ग्लै –(ग्लायति)—ग्लानि आना, त्रै – (त्रायते)—रक्षा करना, म्लै – (म्लायति) —म्लान होना, ह्वे – (ह्वयति)—बुलाना, ध्यै–(ध्यायति)—ध्यान करना।

गुण ग्रहण करनेवाले प्रथम गणके क्रियापद:—

परस्मैपद—**कृष्** (कर्षति)—खींचना, **क्षि—क्षे** (क्षयति)—कम होना, क्षीण होना, **जि–जे** (जयति)—जीतना, **तृ** (तरति)–तैरना, **द्रु–द्रो** (द्रवति) पतला होना, **नी–ने** (नयति)—ले जाना, **बुध्** (बोधति) जानना, **भू–भो** (भवति)—होना, **रुह** (रोहति)—बढ़ना, **सृ** (सरति) हिलना, **स्मृ** (स्मरति)—याद करना, स्मरण करना, **हृ** (हरति)—हरण करना, ले जाना।

आत्मनेपद—**क्लृप्, कल्प्** (कल्पते)—योग्य होना, परिणाम होना, **डी—डे—डय्** (डयते)—उड़ना, **द्युत्** (द्योतते)—प्रकाशित होना, चमकना, **मुद्** (मोदते)—आनंदित होना, **वृत्** (वर्तते)—होना, वर्ताव करना, **वृध्** (वर्धते)—बढ़ना, **शुभ्** (शोभते)—शोभा देना।

नियमः—प्रथम गणके विकरणके पूर्व धातुके अन्त्य, इ, उ, ऋ, ऌ इन ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वरोंका और उपान्त्य इ, उ, ऋ, ऌ इन् ह्रस्व स्वरोंका गुण होता है।

२ गुण—दशम गण:—

चोरः धनं चोरयति—चोर धन चुराता है।

सुवर्णकारः सुवर्णं तोलयति—सुनार सोना तोलता है।

सैनिकः नृपस्य शासनं घोषयति—सिपाही राजाका आदेश घोषित करता है।

सूतः अश्वान् चोदयति—सारथि घोडोंको हांकता है।

ऊपरके वाक्योंमें चुर्, तुल्, घुष्, चुद् इन दशम गणके क्रियाओंमें भी उपान्त्य ह्रस्व स्वरका 'अय' इस विकरणके पूर्व गुण हुआ है। जैसे—चुर्—चोर् + अय+ति—चोरयति।

नियमः—दशम गणकी धातुके उपान्त्य ह्रस्व इ, उ, ऋ, ऌ इन स्वरोंका गुण होता है। स्पृह् और मृग्, ये अपवाद हैं। जैसे स्पृहयति, मृगयते।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

सूचना:--चतुर्थ और षष्ठ गणकी धातुमें गुण नहीं होता।

३ वृद्धि—दशम गण:—

बालः मण्डूकं ताडयति—लडका मेण्डकको मारता है।

***बालः हस्तं क्षालयति जलेन**—बालक पानीसे हाथ धोता है।

अलङ्कारान् धारयति बालः शरीरे*—लड़का गहने शरीरपर धारण करता है।

† **नरः रोगेण जारयति**--मनुष्य रोगोंसे जीर्ण (वृद्ध) होता है।

† **नरः दानं पुण्यं भावयति**--मनुष्य दानको पुण्य मानता है।

ऊपरके पांच वाक्योंमें **तड्, क्षाल्, धृ, जॄ, भू**, यह दशम गणकी क्रियाएँ प्रयुक्त हैं। उनके उपान्त्यके 'अ' का 'अय' के पूर्व 'आ' हुआ है, और अन्त्य 'ऋ, ॠ, ऊ,' इनका 'आर्, आर्, औ (आव्)' ऐसा परिवर्तन हुआ है। इस परिवर्तनको **वृद्धि** कहते हैं।

'वृद्धि'

मूल स्वर	अ	इ-ई	उ-ऊ	ऋ-ॠ	ऌ
परिवर्तन	आ	ऐ	औ	आर्	आल्

नियम:--दशम गणकी धातुओंके अन्त्य इ, उ, ऋ और ऌ इन ह्रस्व अथवा दीर्घ स्वरोंकी, तथा उपान्त्य 'अ' इस स्वरकी, विकरणके पहले, वृद्धि होती है; अपवाद-कथ् (कथयति), गण्, रच्, प्रथ्, चि (चपयति, चययति)।

४ दशम गणकी धातुके रूपोंके सदृश मूल धातुसे तयार होनेवाली कुछ क्रियाएं:--

---

* संस्कृतमें एकही सरल वाक्यमें शब्दोंकी रचना सामान्यतः किसीभी रीतिसे की जाती है। संस्कृत वाक्यरचना पाठ ४ देखिए।

† इन क्रियाओंका अधिक उपयोग नहीं होता। नियम समझनेके लिए ही उनका प्रयोग यहां किया गया है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

पुत्रः जनकं कोपयति—पुत्र पिताको क्रोधित करता है।

शिक्षकः छात्रान् शिक्षयति—शिक्षक विद्यार्थिओंको पढ़ाता है।

आलस्यं दारिद्र्यं वर्धयति—आलस दरिद्रताको बढ़ाता है।

ऊपरके वाक्योंमें **कुप्**से **कोपय, शिक्ष्**से **शिक्षय, वृध्**से **वर्धय** इस प्रकार मूल धातुओंको दशम गणके समान 'अय' जोड़कर और 'अय' के पहले सामान्यतः दशम गणके सदृश ही परिवर्तन करके क्रियाएँ बनायी गई हैं। इनका अर्थ मूल धातुसे व्यक्त क्रिया करवाना ऐसा होता है। इन्हें प्रेरणार्थक क्रियाएँ कहते हैं।

सकर्मकके सदृश उपयोगमें आनेवाली अन्य कुछ प्रेरणार्थक क्रियाएँ :—

ऋ-अर्पय (अर्पण करना), **क्षुभ्-क्षोभय** (प्रक्षोभित करना), **तुष्-तोषय** (सन्तुष्ट करना), **दृश्-दर्शय** (बताना), **नश्-नाशय** (नाश करना), **मृ-मारय** (मारना), **स्था-स्थापय** (रखना, स्थापना करना)।

नए शब्द

(अ) इन्द्रः, उपदेशः, गन्धर्वः, तत्त्वम्, दानम्, विम्बम्, मार्गः, मोक्षः, रोगः, वक्त्रम्, वानरः, विजयः, वेगः, सङ्कटम्।

(आ) **अलङ्कारः**—आभूषण, गहना, **आलस्यम्**—आलस, **कृष्णापक्षः**—महिनेका अंधेरा पक्ष, **दराडः**—लकड़ी, **दारिद्र्यम्**—गरीबी, **नाविकः**—नाव चलानेवाला, **न्यायः**—न्यायशास्त्र, **पूजनम्**—पूजा, **मराडूकः**—मेण्डक, **विनोदः**—दिल बहलाना, मनोरंजन, **विपक्षः**—शत्रु, **सुगन्धः**—सुवास, **सुवर्णाकारः**—सुनार, **शासनम्**—आज्ञा, आदेश।

प्रश्न

१ गुण और वृद्धि इनके अर्थ सोदाहरण बताओ। प्रथम गणकी धातुमें गुण कब होता है? दशम गणकी धातुओंमें कौनसे परिवर्तन होते हैं?

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

२ निम्न-लिखित वाक्योंमें कोष्टकके शब्दोंके योग्य रूपोंका प्रयोग करके वाक्य पूर्ण करो :—

१ (वानर) फलानि (रुच्)।
२ नरः (शरीर) वस्त्राणि (धृ)।
३ अहं (जल) पादौ (क्षल्)।
४ यूयं संकटात् (मित्र) (त्रै)।
५ वयं (नृप) विजयं (घुष्)।
६ चन्द्रस्य (प्रकाश) वृद्धाः (युत्)।
७ नृपः (सैनिक) रणाङ्गणं (नी)।
८ त्वं (अलङ्कार) (शुभ्)।
९ स्वर्गे गन्धर्वाः (इन्द्र) विनोदाय (गै)।
१० खगाः (आकाश) वेगेन (डी)।

३ निम्न-लिखित रूप क्या हैं यह बताकर उनका दिए हुए वाक्योंमें उपयोग करो :—स्मरामः, कर्षतः, वर्धते, कल्पसे, क्षयति, बोधथ, नयन्ति, द्रवति, ताडयावः, चोरयति।

१ अश्वौ रथं मार्गेण ———।
२ स्तेनः धनिकस्य धनं ———।
३ कृष्णपक्षे चन्द्रस्य बिम्बं ———।
४ वयं ——— जनकस्य उपदेशम्।
५ उद्यमेन नरस्य धनं ———।
६ त्वं लोकस्य कल्याणाय ———।
७ यूयं न्यायस्य तत्त्वानि ———।
८ कृषीवलाः बलीवर्दान् क्षेत्राणि ———।
९ सज्जनस्य हृदयं दुःखेन ———।
१० आवाम् ——— दण्डेन चोरम्।

पाठ ६—आकारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंगकी संज्ञाएँ

१ वापीषु (बावड़ीमें) जलं वर्तते। जलस्य पानेन तृष्णा (प्यास) शाम्यति। पाठशालायाः (पाठशालासे) कुमाराः कुमार्यः (लड़कियाँ) च गृहं गच्छन्ति। भक्ताः पुष्पाणां मालाभिः (मालाओंसे) ईश्वरं पूजयन्ति। ईश्वरः पूजया (पूजासे) तुष्यति। राज्ञ्याः (रानीकी) सेवा कुर्वन्ति दास्यः (दासियाँ)। गङ्गा ब्रह्मपुत्रा यमुना गोदावरी नर्मदा कृष्णा च (और) नद्यः (नदियाँ) भारतवर्षे विद्यन्ते। कन्याभ्यः (लड़कियोंको) यच्छति अलङ्कारान्

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

जनकः । ज्योत्स्नायां (चांदनीमें) **जनाः उद्याने रमन्ते। हे सरस्वति देवि अहं त्वां नमामि।**

ऊपरके वाक्योंमें **आ**कारान्त और ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाके भिन्न भिन्न विभक्तियोंके भिन्न भिन्न रूप प्रयुक्त हुए हैं। वे निम्न-लिखित माला और नदी शब्दोंके रूपोंके समान होते हैं।

१ आकारान्तः स्त्रीलिङ्गः माला शब्दः।				ईकारान्तः स्त्रीलिङ्गः नदी शब्दः।		
माला	माले	मालाः	प्र०	नदी	नद्यौ	नद्यः
मालाम्	,,	,,	द्वि०	नदीम्	,,	नदीः
मालया	मालाभ्याम्	मालाभिः	तृ०	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
मालायै	,,	मालाभ्यः	च०	नद्यै	,,	नदीभ्यः
मालायाः	,,	,,	पं०	नद्याः	,,	,,
,,	मालयोः	मालानाम्	ष०	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
मालायाम्	,,	मालासु*	स०	नद्याम्	,,	नदीषु*
हे माले	हे माले	हे मालाः	सं०	हे नदि	हे नद्यौ	हे नद्यः

नियमः—'स्' के पहले अ-आ के अतिरिक्त स्वर, क वर्गके व्यञ्जन अथवा र इन वर्णोंके आनेसे 'स्' का बहुधा 'ष्' होता है।

आकारान्त तथा ईकारान्त स्त्री० संज्ञाके रूप माला और नदी शब्दके रूपोंके समान बनाना चाहिये। परन्तु षष्ठी बहुवचनान्त 'न्' का 'ण्' हो सकता है या नहीं यह देख लेना चाहिए।

आकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिङ्ग)

(अ) आज्ञा, इच्छा, कृपा, क्रिया, क्षमा, दया, दशा, पूजा, भाषा, विद्या, सेवा।

(आ) **कथा**–कहानी	**नासिका**–नाक	**प्रमदा**–नवयुवती
क्रीडा–खेल	**निशा**–**क्षपा**–रात्रि	**भार्या**–पत्नी
क्षुधा–भूक	**नौका**–नाव	**माला**–माला
जिह्वा–**रसना**–जीभ	**पाठशाला**–पाठशाला	**लता**–लता, बेल
तृष्णा–प्यास	**बाला**–**कन्या**–लड़की	**ललना**–स्त्री
	वसुधा–**वसुन्धरा**–पृथ्वी	

* सप्तमी – बहुवचनान्त **आ**कारान्त शब्दोंके रूपमें 'सु' यह प्रत्यय है और वही प्रत्यय ईकारान्त शब्दोंके रूपमें 'षु' हो गया है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ईकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिङ्ग)

(अ) दासी, नदी, पृथ्वी.

(आ) **कुमारी**–लड़की	**कौमुदी**–चान्दनी	**जननी**–माँ, माता
भगिनी–बहन	**मही**–उर्वी–पृथ्वी	**रजनी**–विभावरी
राज्ञी–रानी	**वापी**–बावड़ी	**शर्वरी**–रात्रि

सूचनाः—**लक्ष्मी, तरी** (नाव), **तन्त्री** (वीणा, तन्तुवाद्य) इन ईकारान्त शब्दोंकी प्रथमा विभक्तिके एकवचनके रूप लक्ष्मीः, तरीः, तन्त्रीः, ऐसे होते हैं।

नए शब्द

अतिशयः–अतिरेक	**खलु** (अ०)–सचमुच	**भारतवर्षम्**— हिन्दु-स्थान देश, भारतवर्ष
अध्यापकः–शिक्षक	**दूतः**–दूत, सन्देशवाहक	**भृत्यः**–नौकर
आपणः-आपणम्–बाजार	**निशाचरः**–राक्षस	**रसः**–रस, माधुरी
उद्भवः–उत्पत्ति	**पानम्**–पीना	**सूच्** (१० उ. प.) –सूचना करना, सूचित करा
ऊह् (१ प. प. ऊहति) – तर्क करना	**पारितोषिकम्**–इनाम	

सन्धिनियम

संस्कृत भाषामें वाक्योंके शब्द विवक्षित नियमसे जोड़कर लिखनेकी रीति है। दो अथवा अधिक शब्दोंका समूह अथवा समास करते समय भी उन शब्दोंको एक दूसरेसे जोड़कर लिखना चाहिए। इस रीतिको सन्धि करके लिखना ऐसा कहते हैं। उसी प्रकार धातुको उपसर्ग लगाते समय भी सन्धि करना पड़ती है। सन्धि निम्न–लिखित प्रकार की होती है:—

१ स्वर + स्वर, २ विसर्ग + स्वर, ३ विसर्ग + व्यंजन, ४ व्यंजन + स्वर, ५ व्यंजन + व्यंजन।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

१ (अ) दूतः वेगेन आगमनं करोति--वेगेनागमनं ... अ + आ – आ
*भाषया आनन्दं सूचयति नृपः--भाषयानन्दं ... आ + आ – आ
क्रोधेन अनलं क्षिपति गृहे--क्रोधेनानलं ... अ + अ – आ
(आ) राज्ञी ईक्षते उद्यानम्--राज्ञीक्षते ... ई + ई – ई
पृथ्वीं रक्षति ईश्वरः--रक्षतीश्वरः ... इ + ई – ई
दासी इच्छति पारितोषिकम्--दासीच्छति ... ई + इ – ई
(इ) अश्रु उद्भवति नेत्रे--अश्रूद्भवति ... उ + उ – ऊ
† न्यायाधीशः खलु ऊहते अपराधम्–खलूहते ... उ + ऊ – ऊ
शरयू+उद्भवः--(सामासिक शब्द)–शरयूद्भवः ... ऊ + उ – ऊ
(ऋ) पितृ + ऋणम्--(,, ,,)--पितॄणम् ... ऋ + ऋ – ॠ
‡ मित्रं सुमार्गेण गन्तृ ऋच्छति सुखम्–गन्तॄच्छति... ऋ + ऋ – ॠ

नियमः—अ–आ, इ–ई, उ–ऊ, ऋ–ॠ, इन सजातीय स्वरोंमेंसे एकके आगे दूसरा आवे, तो उन दोनोंके स्थान पर दीर्घ स्वर आता है।

प्रश्न

१ निम्न–लिखित वाक्योंमें कोष्टकके शब्दोंके योग्य रूपोंका प्रयोग करो :—

१ भक्ताः देवं (माला) पूजयन्ति।
२ नरः (नासिका) गन्धं जिघ्रति।
३ (निशा) तारकाः द्योतन्ते।
४ वयं (रजनी) (निद्रा) सुखं लभामहे।
५ मालाकारः (लता) जलं सिञ्चति।
६ अध्यापकः (पाठशाला) कुमारान् (कुमारी) च शिक्षयति।
७ (विद्या) अज्ञानस्य नाशः जायते।
८ त्वं सागरं (नौका) तरसि।
९ यूयं (कौमुदी) उद्याने रमध्वे।
१० (जिह्वा) नरः रसं जानाति।

---

*पहले पदके अन्त्य 'आ' में जब आगेके पदका आद्य 'आ' मिलता है तब आगेके 'आ' के स्थानपर दो अवग्रह चिन्ह लिखने की रीति है। जैसे 'भाषयाऽऽनन्दं.....' उसी प्रकार आगे के शब्दका आद्यस्वर 'अ' हो तो उस 'अ' के स्थान पर एक अवग्रह कहीं कहीं लिखा हुआ--पाया जाता है।

† न्यायाधीश सचमुच अपराधका तर्क करता है।

‡ अच्छे मार्गसे जानेवाला मित्र सुख को प्राप्त होता है। (सुख भोगता है।)

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

२ निम्न–लिखित रूपोंको पहिचानो और उनका वाक्योंमें उपयोग करो:—
चाप्याः, गोदावर्याः, ललनानाम्, शर्वर्याम्, सेवया, कथाभिः, विद्यायाः, आज्ञया, कृपया, तृष्णायाः ।

१ ——— तीरे देवालयाः सन्ति ।
२ अलङ्कारैः ——— शरीराणि शोभन्ते ।
३ भृत्यस्य ——— धनिकः तुष्यति ।
४ नराः ——— जलं लभन्ते ।
५ ——— निशाचराः चरन्ति ।
६ ——— अतिशयः दुःखाय कल्पते ।
७ पान्थाः ——— कालं नयन्ति ।
८ ईश्वरस्य ——— सङ्कटानि नश्यन्ति ।
९ ——— देवता सरस्वती ।
१० नृपस्य ——— सेना रणाङ्गणं गच्छति ।

३ सन्धि करो:—

नृपस्य आज्ञा । पश्यति ईश्वरः । शोभते खलु उद्यानम् । कमलानि ईक्षते । लभते पूजया आनन्दम् ।

पाठ ७–उपसर्ग

१ नरः गृहं **गच्छति** (जाता है) ।
बालाः शालागृहात् गृहम् **आगच्छन्ति** (आते हैं) ।
छात्रः अध्ययनेन ज्ञानम् **अधिगच्छति** (प्राप्त करता है) ।
बालः जनकम् **अनुगच्छति** (पीछे जाता है) ।
मालाकारः उद्यानात् **निर्गच्छति** (बाहर जाता है) ।
शिष्यः आचार्यम् **उपगच्छति** (पास जाता है) ।
राजपुरुषाः नृपं **प्रत्युद्गच्छन्ति** (आगे चलते हैं) ।
यमुना गङ्गया **सङ्गच्छते** (मिलती है) ।

ऊपरके वाक्योंमें **गम् (गच्छ्)** इस प्रथम गणकी धातुका उपयोग किया गया है । परंतु उसके पहले जो वर्ण अथवा वर्णसमूह जोड़े गये हैं, उन्हें **उपसर्ग** संज्ञा दी जाती है ।

उपसर्गसे 'गम्' धातुके अर्थमें परिवर्तन हुआ दिखाई देता है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

उपसर्गसे धातुके अर्थमें परिवर्तन होता है अथवा वह अधिक परिणाम करनेवाला होता है। कभी कभी अर्थमें परिवर्तन नहीं होता। अन्तके वाक्यमें केवल अर्थमें ही परिवर्तन नही हुआ; क्रिया का पद भी परिवर्तित हो गया है।

उपसर्गेण धात्वर्थो बलादन्यत्र नीयते।
प्रहाराहारसंहारविहार परिहारवत्॥

इस छन्दका भावार्थ:—धातुके अर्थको उपसर्ग शक्तिपूर्वक दूसरी दिशामें ले जाता है (बदल देता है)। जैसे—**हृ**—हरति—ले जाना; **प्रहृ**—प्रहार करना; **आहृ**—लाना, खाना; **संहृ**—संहार करना, नाश करना; **विहृ**—विहार करना, खेलना; **परिहृ**—टालना।

२ कुछ मुख्य उपसर्ग और उनके अर्थ दिए जाते हैं। उपसर्गको धातुके पहले जोड़ते समय योग्य सन्धि करना चाहिए।

अति—उस पार–अतिगच्छति (उस पार जाता है)
अधि—ऊपर–अधिरोहति (ऊपर चढ़ता है)
अनु—पीछे–अनुगच्छति (पीछे जाता है)
अप—दूर–अपहरति (दूर ले जाता है)
अभि—तरफ–अभिधावति (आक्रमण करता है)
अव—नीचे–अवतरति (उतरता है)
उद्—ऊपर–उद्गच्छति (ऊपर जाता है)
उप—पास– उपगच्छति (पास जाता है)
नि—नीचे–निखनति (गाडता है)
निस्—**र्**—बाहर–निर्गच्छति (बाहर जाता है)
निःसरति (बाहर आता है)
परा—पीछे–परावर्तते (पीछे आता है)
परि—आसपास–परिभ्रमति (आसपास फिरता है)
प्र—आगे–प्रगच्छति (आगे जाता है)
प्रति—विरुद्ध–प्रतियच्छति (बदला चुकता है)
वि—विरुद्ध–विस्मरति (भूलता है)
सम्—एकत्र–सङ्गच्छते (मिलता है)

सूचना:—विशेष ज्ञानके लिए संस्कृत वाक्यरचना पाठ १३ देखो।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

कुछ उपसर्गसहित क्रिया

अय्(परा[ला]-पलायते)-भाग जाना
ईक्ष् (अप-अपेक्षते)-अपेक्षा करना
ऋध् (सम्-समृध्यति)-उन्नति होना, वृद्धि होना
कृ (वि-विकिरति)-फैलना
जि (परा-वि-पराजयते,विजयते) -पराजय करना, जीतना
तॄ (वि-वितरति)-देना, स्वाधीन करना
दिश् (आ-आदिशति)-आज्ञा देना
नम् (अव-अवनमति)-नम्र होना, झुकना
पद् (उद्-उत्पद्यते)-उत्पन्न होना
प्रच्छ् (आ-आपृच्छते)-विदाई, आज्ञा लेना
भाष् (प्रति-प्रतिभाषते)-उत्तर देना
भू (अनु—अनुभवति)—अनुभव करना
मन्(अनु-अनुमन्यते)-संमति देना
मस्ज् (नि—निमज्जति)—डूबना
यम् (नि-नियच्छति)-वशमें रखना
रम् (वि—विरमति)—ठहरना
रुह् (आ—आरोहति)—चढ़ना
विश् (उप—उपविशति)-बैठना
वृत् (नि-निवर्तते)-पीछे फिरना, लौटना ।
स्था (प्र—प्रतिष्ठते)—रवाना होना
स्था (उद्-उत्तिष्ठति)-खड़ा रहना
शंस् (प्र-प्रशंसति)-प्रशंसा करना

सूचना :—अन्य उपसर्गसहित धातुओंकी सूची संदर्भके लिए व्याकरण पाठोंके अन्तमें दी गई है। सम्+गम्, वि-परा + जि, प्र + स्था, आ + प्रच्छ् ये धातु उपसर्गसे आत्मनेपद हो जाते हैं और वि + रम् यह परस्मैपदका है ।

नए शब्द

(अ) आरम्भः, आशा, उपदेशः, उपभोगः, ओघः, औषधम्, किरणः, दुःखम्, नाटकम्, प्रयत्नः, भयम्, राजधानी, संसारः, समूहः, सुखम्, सूत्रधारः, सेवा ।

(आ) उद् + धृ (१प०प०)-उठाना
ऊर्ध्वम् (अ०) ऊपर
ऋणम्-कर्ज
एध् (१आ०प०)-बढ़ना
ऐरावतः-इन्द्रका हाथी
कलङ्कः-दाग
क्रोधः-क्रोध
गजः-हाथी
दरिद्रः-गरीब मनुष्य
निर्+दा (निर्यच्छति) वापिस दे देना, लौटाना
पान्थः-पथिकः -प्रवासी
विवादः-लड़ाई
हर्षः-आनंद

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

सन्धिनियम

२ नयनेन ईक्षते नरः—नयनेनेक्षते.. .....अ + ई–ए
पूजया ईश्वरः तुष्यति—पूजयेश्वरः.....आ + ई–ए
आनन्देन ऊर्ध्वं पश्यति नरः—आनन्देनोर्ध्वं.....अ + ऊ–ओ
हस्तेन उद्धरति पुस्तकं बालः—हस्तेनोद्धरति.....अ + उ–ओ
*मार्गेण ऋच्छति पान्थः—मार्गेणार्च्छति.....अ + ऋ–अर्
*सेवया ऋणं निर्यच्छति दरिद्रः—सेवयर्णं.....आ + ऋ–अर्

नियमः—ऊपरके उदाहरणोंसे यह प्रतीत होगा कि शब्दके अन्त्यके अ अथवा आ के आगे इ–ई, उ–ऊ, ऋ (ऋ), (ऌ) ये स्वर आवें तो दोनोंके स्थान पर अनुक्रमसे गुण वर्ण होता है अर्थात् ए, ओ, अर् और अल् ऐसा अनुक्रमसे परिवर्तन होता है।

३ विद्यया एधते सुखम्—विद्ययैधते ..... आ + ए–ऐ
इन्द्रस्य ऐरावतः गजः—इन्द्रस्यैरावतः..... अ + ऐ–ऐ
मुखेन औषधं पिबति नरः—मुखेनौषधं ..... अ + औ–औ
जलस्य ओघः पतति—जलस्यौघः ..... अ + ओ–औ

नियमः—शब्दके अन्त्य अ–आ के आगे ए–ऐ और ओ–औ ये स्वर आवें तो दोनोंके स्थानमें अनुक्रमसे ऐ और औ हो जाते हैं।

४ *इन पदोंकी सन्धि विकल्पसे 'मार्गेण ऋच्छति' और 'सेवय ऋणं' ऐसी भी होती है; परन्तु इसका विशेष प्रचार नहीं है।

नियमः—ह्रस्व ऋ के पूर्वमें ए, ऐ, ओ, औ के अतिरिक्त कोईभी स्वर आवे तो 'ऋ' की पूर्वके स्वरसे नियम २ के अनुसार विकल्पसे सन्धि करना चाहिए; और जब सन्धि नहीं की जाती तब पूर्वका स्वर यदि दीर्घ हो, तो वह ह्रस्व हो जाता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ अनु, उप, परि, उद् और सम् इन उपसर्गोंसे युक्त तीन तीन क्रियाओंके अर्थ सहित वर्तमानकालके अन्य पुरुषके एकवचनके रूप लिखो।

२ उपसर्गोंका क्या उपयोग है? उपसर्गोंसे धातुओंमें क्या अन्तर होता है यह सोदाहरण लिखो।

३ आगे दिए हुए वाक्योंमें धातुओंके योग्य रूपोंका प्रयोग करो:—

१ सैनिकाः भयेन रणात् (परा + अय्)।
२ छात्रः परीक्षायां पारितोषिकम् (अप + ईक्ष्)।
३ सत्यम् एव (वि + जि)।
४ लोभात् क्रोधः (उद् + पद्)।
५ त्वं मित्रं हर्षेण (प्रति + भाष्)।
६ नरः संसारे सुखं दुःखं च (अनु + भू)।
७ सूत्रधारः नाटकस्य आरम्भे पुष्पाणि (वि + कृ)।
८ वृक्षः फलानां भारेण (अव + नम्)।
९ चन्द्रस्य कलङ्कः किरणानां समूहे (नि + मस्ज्)।
१० वयम् अश्वान् युद्धाय (आ + रुह्)।

४ निम्न-लिखित उपसर्गसहित धातुओंके रूपोंका वाक्योंमें उपयोग करो:—

(अ) आपृच्छते। आदिशथ। समृध्यन्ति। निवर्ते। प्रशंसन्ति।

(आ) योग्य उपसर्ग जोड़कर निम्न-लिखित वाक्योंकी धातुओंके रूप बनाओ।

१ राजपुरुषः चोरं दण्डेन (हृ)———। २ त्वं क्रोधं न (यम्)———।
३ दूतः राजधानीं (स्था)———। ४ वयं विवादं (मन्)———।
५ बालः सायङ्काले शालागृहात् (वृत्)———।

५ संधि करके लिखो:—

कमलानि ईक्षते बालः। सुखस्य उपभोगं लभते नरः। विजयस्य आशया ऋषिं सेवते नृपः। चित्तेन ईश्वरं चिन्तयति भक्तः।

६ संधिका विश्लेषण करके लिखो:—

पुत्रस्यापराधं क्षाम्यति जनकः। ईश्वरस्येच्छयैतानि (ये) दुःखानि नश्यन्ति। त्वरयर्षेः कार्यं करोति शिष्यः। मित्रस्योपदेशं शृणोति रामः। आनन्दस्यातिशयेनाश्रूद्भवति नेत्रे।

———

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

पाठ ८—अव्यय

(अ) **बालः शनैः शनैः** (धीरे धीरे) **चलति । अद्य** (आज) **अहं मित्रं पश्यामि । अत्र** (यहाँ) **क्रीडन्ति बालाः । बालः उच्चैः** (ज़ोरसे) **क्रन्दति ।**

क्रियाविशेषण यथासंभव क्रियाके पासही लिखे जाते हैं। और कालवाचक तथा स्थानवाचक क्रियाविशेषणोंका उपयोग वाक्यके आरम्भ में अथवा क्रियाके पास ही किया जाता है। अव्ययोंके रूपमें कभी भी परिवर्तन नहीं होता।

(१) स्थानवाचकः——**अत्र**—यहाँ, **तत्र**—वहाँ, **इह**—यहाँ इस जगतमें।

(२) कालवाचकः——**अद्य**—आज, **श्वस्**—कल, **ह्यस्**—कल, **इदानीम्**—अभी, **पुरा**—प्राचीन कालमें, **अधुना**—अभी, **प्रातर्**—सुबह, **सायम्**—संध्यासमय, **दिवा**—दिनमें, **नक्तम्**—रात्रिको, **प्रतिदिनम्**—हररोज, **अतीव-भृशम्**—बहुत, **सम्यक्**—भली भाँति । **नीचैः**—नीचे, **एवम्**—इस प्रकारसे, **खलु**—सचमुच। (ये वाक्यके आरम्भमें नहीं आते), **अपि**—भी, (यह जिस शब्दसे सम्बन्ध हो उसके पास लिखा जाता है।)

(३) **चिरम्**—बहुत समय तक, **नित्यम्**—हमेशा, **शीघ्रम्**—जल्दीसे, **मन्दम्**—धीरे धीरे । ये क्रियाविशेषण मूल विशेषणोंके द्वितीय विभक्तिके एकवचनके रूपसे बनाये गये हैं।

(४) **सविनयम्**–विनयसे, **सहर्षम्**–**सानन्दम्**—आनन्दसे, **सत्वरम्**–जल्दीसे। ये अव्यय मूल रूपमें समास हैं और उनके द्वितीयाके एकवचनके रूपोंका उपयोग क्रियाविशेषण अव्ययोंके समान किया गया है।

(५) **अर्जुनः इव शूरः, मुखं चन्द्रः इव,**—**इव**–(सा, समान,) तुलनात्मक अव्ययका उपयोग जिससे तुलना करना हो उसके वाचक शब्दके

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पश्चात् किया जाता है, और जिससे तथा जिसकी तुलना करना होती है उनके वाचक दोनों शब्दोंका प्रयोग समान विभक्तिमें होता है।

(६) **दशरथस्य नाम नृपस्य रामः नाम पुत्रः**—**नाम**–(नामका) यह अव्यय नामवाचक शब्द और जिसका नाम हो वह शब्द इन दोनों शब्दोंके मध्यमें लिखा जाता है और आगेके तथा पीछेके इन दोनों शब्दोंकी एक ही विभक्ति होती है।

सूचनाः—उपर्युक्त अव्ययोंका उपयोग पढ़ाते समय पाठकोंने वाक्योंमें उनका प्रयोग करके दिखाना चाहिए। उसी प्रकारसे आ, ई, उ, इन विभागोंके अव्ययोंका भी वाक्योंमें उपयोग करके दिखाना चाहिए। केवल उदाहरणार्थ ही हरएक विभागमें कतिपय उदाहरण दिए गए हैं।

(आ) **कुत्र–क्व त्वं वससि। कदा अहं जननीं पश्यामि।** इन वाक्योंमें कुत्र–क्व अर्थात् 'कहां और कदा–कब' ये प्रश्नवाचक क्रियाविशेषण प्रयुक्त किये गये हैं। वाक्यके आरम्भमें अथवा कहीं भी उनका उपयोग किया जाता है। अन्य प्रश्नवाचक अव्ययः—**कथम्**–किस प्रकारसे, **किम्–किमर्थम्**—क्यों, किस लिए।

सूचनाः—साधारण प्रश्नके आरम्भमें 'अपि' का प्रयोग होता है अथवा 'किम्' यह वाक्यमें कहीं भी रखा जा सकता है। जैसे–अपि त्वं गच्छसि। अथवा, त्वं गच्छसि किम्।

(इ) **अहो मधुरं दर्शनं बालकृष्णस्य। अहह सङ्कटे पतितं मित्रम्।** इन वाक्योंमें **अहो** यह आनंददर्शक उद्गारबोधक अव्यय है, और **अहह** यह शोकदर्शक उद्गारबोधक अव्यय है; ये वाक्यके आरम्भमें आते हैं।

अहो, अरे, रे, भोः, हे, ये संबोधनार्थक अव्यय हैं।

(ई) १ **रामः च हरिः च क्रीडतः। रामः हरिः च क्रीडतः।**

च–और

२ **रामः वा हरिः वा गच्छति। रामः हरिः वा गच्छति।**

वा–अथवा

३ **बालः चतुरः अस्ति किन्तु उद्यमं न करोति। किन्तु–परंतु**
बालः चतुरः अस्ति उद्यमं तु न करोति। तु–परंतु

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation.

४ अहं गृहं गच्छामि यतः मित्रं माम् आह्वयति । यतः–क्योंकि
अहं गृहं गच्छामि मित्रं हि माम् आह्वयति । हि–क्योंकि
मित्रं माम् आह्वयति अतः अहं गृहं गच्छामि । अतः–इस-
लिए

५ अहं पाठशालां गच्छामि इति बालः जननीं कथयति । इति–ऐसा

ऊपर दिए हुए वाक्योंमें समुच्चयबोधक अव्ययका प्रयोग किया गया है।

१, २ '**च, वा**' ये अव्यय हर एक जोड़े हुए शब्दके पश्चात्, वाक्यके पश्चात् और अन्तमें भी लिखे जाते हैं अथवा केवल एक बार ही अन्तमें रख दिये जाते हैं।

३ '**किन्तु, परम्**' ये समुच्चयबोधक अव्यय विरोध प्रगट करते हैं और उनका उपयोग विरोधदर्शक वाक्योंके आरम्भमें किया जाता है। '**तु**' यह भी विरोधदर्शक है उसका उपयोग वाक्यमें पहले शब्दके पश्चात् किया जाता है।

४ '**यतः**' यह कारणदर्शक अव्यय वाक्यके आरम्भमें लिखा जाता है और '**हि**' यह पहले शब्दके पश्चात्, '**अतः**' यह कारणदर्शक वाक्यके पश्चात् और कार्यदर्शक वाक्यके आरम्भमें रखा जाता है।

५ '**इति**'–'ऐसा' का उपयोग प्रत्यक्ष बोले हुए अथवा विचारोंमें लाए हुए शब्दों अथवा वाक्यके पश्चात् किया जाता है।

कुछ अधिक समुच्चयबोधक अव्ययः—

यदा–तदा (जब–तब), **यदि–तर्हि** (यदि–तो), **यद्यपि–तथापि** (जोभी–तोभी), **यथा–तथा** (जैसे–वैसे), **यावत्–तावत्** (जबतक–तबतक), ये एक दूसरोंपर अवलम्बित रहनेवाले वाक्योंके आरम्भमें रखे जाते हैं। अवलम्बित (गौण) वाक्यके आरम्भमें **यदा, यदि, यद्यपि, यथा, यावत्** इनका उपयोग होता है और जिनपर अवलम्बित रहते हैं उन (मुख्य) वाक्योंके आरम्भमें **तदा, तर्हि, तथापि, तथा, तावत्**, इनका उपयोग किया जाता है।

(उ) **वृक्षस्य समीपे** (पास) **तिष्ठति गोपालः।**
नद्याः उपरि (ऊपर) **नौकाः तरन्ति ।**
वृक्षं परितः (आसपास) **लताः रोहन्ति ।**

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ऊपरके वाक्योंमें **समीपे, उपरि, परितः** ये संज्ञाके किसी विशेष कारकके साथ प्रयुक्त होनेवाले (सम्बन्धवाचक) (शब्दयोगी) अव्ययोंका उपयोग किया गया है।

कुछ महत्त्वके सम्बन्धवाचक (शब्द-योगी) अव्ययः—

सर्वतः (सब वाजूसे), **उभयतः** (दोनों वाजूसे), **परितः** (आसपास), **प्रति** (और) ये अव्यय द्वितीयान्त संज्ञाके साथ आते हैं।

सह (साथ), **अलम्** (पर्याप्त) ये तृतीयान्त संज्ञाके साथ आते हैं।

नमः (नमस्ते), **स्वस्ति** (शुभ हो, कल्याण हो) ये अव्यय चतुर्थ्यन्त संज्ञाके साथ आते हैं।

अनन्तरम् (पीछे, पश्चात्), **बहिस्** (बाहर) इनका उपयोग पञ्चम्यन्त संज्ञाके साथ होता है।

उपरि (ऊपर), **अधः** (नीचे), **कृते** (लिए), **समीपं-समीपे** (पास), **पश्चात्** (पश्चात्, पीछे), **दूरम्** (दूर), इनका उपयोग सम्बन्धकारककी संज्ञाके साथ होता है।

विना (विना) यह द्वितीयान्त, तृतीयान्त अथवा पञ्चम्यन्त संज्ञाके साथ आता है।

नए शब्द

(अ) भूकम्पः, विमानम्।

(आ) **अङ्कुरः**—अङ्कुर, **असत्यम्**—झूठ, **खलः**—दुष्ट आदमी, **बीजम्**—बीज, **क्रन्द्** (१ प०)—रोना, चिल्लाना।

प्रश्न

१ नीचे लिखे अव्ययोंमेंसे योग्य अव्ययोंका उपयोग रिक्त स्थानमें करोः—
प्रातर्, अधुना, शनैः, अहो, अहह, च, किन्तु, शीघ्रम्, यथा, अपि, सह, तथा, अधः।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

१ गजः ——— चलति ——— अश्वः ——— चलति ।
२ वृक्षाणाम् ——— फलानि पतन्ति। ३ कुमारः ——— उत्तिष्ठति अध्ययनं करोति ———। ४ ——— भूकम्पेन मनुजाः अम्रियन्त । ५ ——— विमानानि देशात् देशं सञ्चरन्ति। ६ ——— बीजं ——— अङ्कुरः । ७ जनकेन ——— पुत्राः गच्छन्ति । ८ ——— सज्जनाः खलेषु ——— उपकारं कुर्वन्ति।

१ निम्न-लिखित सम्बन्धवाचक (शब्दयोगी) अव्ययोंको योग्य कारकोंके साथ (विभक्त्यन्त संज्ञाके साथ) लिखो :—

उपरि, नमः, अलम्, बहिस्, इति ।

३ निम्न-लिखित अव्ययोंके विरोधक अव्ययोंका प्रयोग करके वाक्य-रचना करो :—

दिवा, समीपम्, उच्चैः, सत्वरम्, अत्र, इदानीम्।

निम्न-लिखित अव्यय आवश्यकतानुसार पढ़ाए जायँ। केवल संदर्भके लिए उन्हें यहाँ एक जगह दिये जाते हैं। कण्ठाग्र करने के लिए नहीं।

अ—अमुत्र-परलोकमें, तदानीम्-तब, उस समय, अन्येद्युः-अपरेद्युः-दूसरे दिन, सकृत्-एक बार, इत्थम्-इस प्रकारसे, नाम-किल-सचमुच, नियतम्-निश्चित, सचमुच, द्रुतम्-वेगसे, जल्दीसे, शाश्वतम्-चिरकालतक स्थापित ।

इ—अयि यह सम्बोधनार्थक अव्यय विशेष स्नेह व्यक्त करता है। जैसे-अयि वत्स। अहह, अहो, बत, और हन्त यह उद्गार-बोधक अव्यय वाक्यके अर्थानुसन्धानसे आनन्द, शोक अथवा आश्चर्य दर्शाते हैं।

उ—धिक्-धिक्कार, अभितः-आसपास, उद्दिश्य-उद्देशसे, ये अव्यय द्वितीयान्त संज्ञाके साथ आते हैं।

सार्धम्-साथ, यह तृतीयान्त संज्ञाके साथ आता है।

आरभ्य-प्रभृति-से, ऊर्ध्वम्-पश्चात्, पञ्चम्यन्त संज्ञाके साथ आते हैं।

———

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

y eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundatio

पाठ ९–सर्वनाम

१ (अ) रामः वदति—अहं पाठशालां गच्छामि। अस्मान् (हमें) अध्यापकः न ताडयति। अस्मासु* (हमपर) आचार्याः स्निह्यन्ति। अस्माकं (हमारा) हितम् एव ते उपदिशन्ति।

(आ) अध्यापकः शिष्यान् वदति—यूयं मम अतीव प्रियाः। युष्माभिः (तुमसे) अध्ययनं सम्यक् कृतम्। अतः अहं युष्मभ्यं (तुम्हें) पारितोषिकाणि प्रयच्छामि।

ऊपरके 'अ' में 'अस्मद्' इस उत्तम पुरुषवाचक सर्वनामके रूपोंका उपयोग किया गया है, और 'आ' में 'युष्मद्' इस मध्यम पुरुषवाचक सर्वनामके रूप दिए गये हैं। इनके रूप सब लिंगोंमें एकसे ही होते हैं। बोलनेवाला पुरुष हो या स्त्री, वह किसी दूसरेसे बोलते समय अपने खुदके लिए 'मैं', और दूसरेके लिए 'तू' शब्दका ही प्रयोग करेगा।

	अस्मद्			युष्मद्		
अहम्	आवाम्	वयम्	प्र०	त्वम्	युवाम्	यूयम्
मां–मा	,,–नौ	अस्मान्–नः	द्वि०	त्वां–त्वा	युवाम्–वाम्	युष्मान्–वः
मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः	तृ०	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
मह्यं–मे	,,–नौ	अस्मभ्यं–नः	च०	तुभ्यं–ते	,,–वाम्	युष्मभ्यं–वः
मत्	आवाभ्याम्	अस्मत्	प०	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
मम–मे	आवयोः–नौ	अस्माकं–नः	ष०	तव–ते	युवयोः–वाम्	युष्माकं–वः
मयि	आवयोः	अस्मासु	स०	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

सूचनाः—सर्वनामके सम्बोधनके रूप नहीं होते।

'अस्मद्' और 'युष्मद्' इनके द्वि० च० ष० इन विभक्तियोंमें विकल्पसे दो रूप होते। इन विकल्प रूपोंका उपयोग, वाक्यके आरम्भमें, कविताके चरणके आरम्भमें, सम्बोधन के रूपोंके पश्चात्, और च, वा, एव, ह, इन अव्ययोंके साथ नहीं होता है। सं० वाक्य-रचना पाठ १५ नियम ३ देखो।

* स्निह् (४ ग० प० प०)–प्रेम करना–इस धातुके उपयोगमें जिसपर प्रेम किया जाता है वह सप्तमी विभक्ति (अधिकरण) में प्रयुक्त होता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

वयं त्वं रामः च गच्छामः । यूयं ते बालाः च गच्छथ ।
त्वं रामः वयं वा क्रीडामः । वयं त्वं वा क्रीडासि ।
यूयं बालाः वा क्रीडन्ति ।

भिन्न पुरुषके कर्तृपद 'च' से जोड़े हुए हों तो, कर्तृपदोंमें उत्तम पुरुषका कर्तृपद हो तो क्रियाका भी उत्तम पुरुष होता है। उत्तम पुरुषके कर्ताके अभावमें क्रियाका मध्यम पुरुष और अन्य स्थानपर अन्य पुरुष होता है। और वचन सब कर्तृपदोंके वचनके अर्थानुरूपसे होता है।

भिन्न पुरुषके कर्तृपद 'वा' से जोड़े हुए हों तो क्रियाका पुरुष और वचन उसके पासके कर्तृपदके अनुसार होता है।

२ तद्

गोपालः उपवनं गच्छति । तत्र तस्य (उसके) वयस्याः अपि वर्तन्ते । तान् (उन्हें) मालाकारः पश्यति । किन्तु सः तस्मै एव (उसेही) पुष्पाणि यच्छति । तेषां (उनका) गन्धः मधुरः । अतः सः (मालाकारः) तस्मात् (उनसे) धनं लभते । तस्मिन् स्थले (उस जगह) वापी वर्तते । तस्याः (उसका) निर्मलं जलं सः पिबति । तस्याम् (उसमें) मत्स्याः दर्दुराः च इतस्ततः प्लवन्ते ।

ऊपरके वाक्यसमूहमें 'तद्' इस सर्वनामका दोनों प्रकारसे उपयोग किया गया है। (१) अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम। (२) 'वह' इस अर्थका वाचक सर्वनाम। इस सर्वनामके रूप तीनों लिंगमें भिन्न भिन्न होते हैं। जैसे वह वृक्ष— **सः वृक्षः**, वह बेल—**सा लता**, वह फूल—**तद् पुष्पम्** ।

	पुंलिंगी	—	तद्	—	स्त्रीलिंगी	
सः	तौ	ते	प्र०	सा	ते	ताः
तम्	,,	तान्	द्वि०	ताम्	,,	ताः
तेन	ताभ्याम्	तैः	तृ०	तया	ताभ्याम्	ताभिः
तस्मै	ताभ्याम्	तेभ्यः	च०	तस्यै	,,	ताभ्यः
तस्मात्	,,	,,	पं०	तस्याः	,,	,,
तस्य	तयोः	तेषाम्	ष०	,,	तयोः	तासाम्
तस्मिन्	,,	तेषु	स०	तस्याम्	,,	तासु

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

नपुंसकलिंगी:—प्र० द्वि०—तद् ते तानि । दूसरे रूप पुंलिंगके अनुसार।

३ **एतद्:**—जैसे 'तद्' का 'वह' इस अर्थके वाचक सर्वनामके सदृश उपयोग होता है, वैसे ही 'एतद्' इस सर्वनामका भी 'यह' इस अर्थमें उपयोग किया जाता है। उनके रूप सामान्यतः 'तद्' के समानही होते हैं। पु० और स्त्री० प्रथमा एकवचनके रूप **एषः** और **एषा** ऐसे होते हैं, और द्वितीया, तृतीया एकवचन, षष्ठी, सप्तमी इनके द्विवचन, इनमें 'त' के स्थान पर 'न' रखकर भी रूप होते हैं।

	द्वितीया	तृ० ए० व०	षष्ठी-सप्त०द्विव०
पु०—	एतम्-एनम् एतौ-एनौ एतान्-एनान्	एतेन-एनेन	एतयोः—एनयोः
स्त्री०—	एताम्-एनाम् एते-एने एताः-एनाः	एतया-एनया	,, ,,
न०—	एतद्-एनद् एते-एने एतानि-एनानि	एतेन-एनेन	,, ,,

किम् (प्रश्नार्थक सर्वनाम)

४ (१) **कस्मिन्** (किस) **क्रीडाङ्गणे त्वं क्रीडसि ।** (२) **काम्** (कौनसी) **भाषाः यूयं पाठशालायां शिक्षध्वे ।** (३) **तव हस्ते किं** (क्या) **वर्तते ।** (४) **कः** (कौन) **मम कार्यं करोति ।** (५) **कस्य** (किसका) **इदम् गृहम् ।**

ऊपरके वाक्योंमें प्रश्नवाचक सर्वनामका उपयोग किया गया है । उनके रूप तीनों लिंगोंमें भिन्न २ होते हैं । जिस संज्ञाके लिए प्रश्नवाचक सर्वनाम आया हो उसीके अनुसार 'किम्' का लिंग होता है और वाक्यार्थके योग्य कारक होता है (वाक्य ३, ४, ५) । जब किम् का उपयोग प्रश्नार्थक विशेषणका होता है (वाक्य १, २) तब जिस संज्ञासे उसका सम्बन्ध हो उसीके अनुसार उसका लिंग, विभक्ति (कारक) और वचन होते हैं ।

किम्—पुं०—कः कौ के **प्र०**, कम कौ कान् **द्वि०**, केन काभ्याम् कैः **तृ०**, कस्मै काभ्याम् केभ्यः **च०**, कस्मात् काभ्याम् केभ्यः **पं०**, कस्य कयोः केषाम् **ष०**, कस्मिन् कयोः केषु **स०**

न०—किम् के कानि **प्र० द्वि०** दुसरे रूप पुंलिंगके समान ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

स्त्री०—का के काः **प्र०**, काम् के काः **द्वि०**, कया काभ्याम् काभिः तृ०, कस्यै काभ्याम् काभ्यः **च०**, कस्याः काभ्याम् काभ्यः **पं०**, कस्याः कयोः कासाम् **ष०**, कस्याम् कयोः कासु **स०**

सन्धिनियम

५ गच्छति **एकः** बालः–गच्छत्येकः ...इ + विजातीय स्वर = य् + वि०स्व०
नदी **अवतरति** पर्वतात्–नद्यवतरति...ई + „ = य् + „ „
त्वं खलु **अतीव** चतुरः–त्वं खल्वतीव...उ + „ = व् + „ „
रम्यं वस्तु **एतद्**–रम्यं वस्त्वेतद् ...उ + „ = व् + „ „
रात्रिः **एतद्** मित्रम्–रात्रिरेतद्* ...ऋ + „ = र् + „ „
† पितृ + इच्छा–पित्रिच्छा (समास) ऋ + „ = र् + „ „

नियमः—इ–ई, उ–ऊ, ऋ–(ॠ) (ऌ) इनके पश्चात् विजातीय स्वर आवें तो उनके स्थानपर य्, व्, र्, ल्, अनुक्रमसे होते हैं और उनमें आगेका स्वर मिलनेसे वे पूर्णाक्षर हो जाते हैं।

६ पुष्पे **ईक्षते** बालः—पुष्पे ईक्षते ... सन्धि नहीं होती।
फले **आनयति** भृत्यः—फले आनयति ... सन्धि नहीं होती।
बालौ वन्देते **ईश्वरम्**—वन्देते ईश्वरम्... „

नियमः—किसीभी शब्दके द्विवचनके रूपके अन्तमें **ए** यह स्वर आवे तो उसकी आगेके स्वरसे सन्धि नहीं होती।

७ वने **अस्ति** वृक्षः—वनेऽस्ति ..... । ए + अ = एऽ
आकाशे **अरुणस्य** प्रकाशः रक्तः—आकाशेऽरुणस्य... । ए + अ = एऽ

नियमः—शब्दके द्विवचनके रूपोंके अतिरिक्त दूसरे रूपोंके अन्त्य 'ए' इस स्वरके आगे 'अ' यह स्वर आवे तो 'अ' का लोप हो जाता है, और उसके स्थानमें ऽ (अवग्रह) यह चिन्ह लिखा जाता है। इसका उच्चारण नहीं किया जाता।

८ वने **ऋषिः** वसति—वनयृषिः—वन **ऋषिः** ...। अय् + ऋ – अ ऋ
मुखे **औषधं** क्षिपति नरः–मुखयौषधं—मुख **औषधं**। अय् + औ – अ औ
मेघे **इन्द्रस्य** चापः शोभते—मेघयिन्द्रस्य—मेघ **इन्द्रस्य**। अय् + इ – अ इ

---

* रक्षण करनेवाला यह मित्र है। † पिताकी इच्छा।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

नियम:—शब्दोंके द्विवचनान्त रूपोंके अतिरिक्त दूसरे रूपोंके अन्तमें 'ए' यह स्वर आवे और उसके आगे 'अ' के अतिरिक्त दूसरे स्वर आवें, तो 'ए' के स्थान पर 'अय्' होता है; और उसका 'य्' आगेके स्वरमें मिलकर पूर्णादर होता है, अथवा 'य्' का लोप हो जाता है। और ऐसी स्थितिमें एक के आगे आनेवाले दूसरे स्वरमें सन्धि नहीं होती है।

नए शब्द

अभिधानम्–नाम
अरुणः–सूर्यका सारथि
असुरः–राक्षस
आवश्यक (वि०)–जरूरी
इतस्ततः (अ०):–इधर उधर
उद्गमः–उगम
खाद् (१प०प०):–खाना
ग्रामः–गाँव
देवालयः–मंदिर
चापः–धनुष्य
दर्दुरः–मेंडक
निर्मल (वि०) स्वच्छ
पुस्तकालयः–पुस्तकोंका संग्रह
प्लु (१ आ० प०) डुबकी लगाना, तैरना
मर्त्यलोकः–मृत्युलोक
मत्स्यः–मच्छी
रक्त (वि०)–लाल
वि+कस् (१ प० प०) खिलना, विकसित होना
वि+जि (विजयते)–जीतना
विषाणाः–णाम्–सींग
युगलम्–जोड़ी, जोड़ा
शरणाम्–आश्रयकी जगह
सुरः–देव
हितम्–फायदा, लाभदायक
हिमालयः–पर्वतका नाम (बरफ़का घर)

प्रश्न

१ निम्न-लिखित वाक्योंमें योग्य सर्वनामके रूप लिखो :—

जनकः (अस्मद्) वचनं शृणोति।
(युष्मद्) सायङ्काले क्रीडथ।
(किम्) ग्रामात् आगतः दूतः।
(किम्) नदीनाम् उद्गमः हिमालये वर्तते।
(तद्) ग्रामे (एतद्) कविः वसति।
(तद्) बालानां प्रश्नान् (किम्) कथयति।
(एतद्) पाठशालायां पुस्तकालयः वर्तते।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

हे छात्राः (युष्मद्) स्निह्यति अध्यापकः।

अयि बाल किम् (युष्मद्) अभिधानम्।

१ अस्मद् और युष्मद् इनके वैकल्पिक रूप शक्य हो वहाँ लिखिए अन्यथा दूसरे रूपका प्रयोग करो।

एतद् पुस्तकम् (अस्मद्) एव। (युष्मद्) प्रयत्नः सफलः जातः। (अस्मद्) च (युष्मद्) च सख्यम् आवश्यकम्। अहं रामाय (युष्मद्) वा कथां कथयामि। हे ईश्वर (अस्मद्) त्वम् शरणम् असि।

२ संधि विश्लेषण करके लिखोः—

वनयिच्छति निवासं मुनिः। हिमालयेऽतीव शीतम्। नद्युद्भवति। तृणान्यश्वः खादति।

४ संधि करके लिखोः—

विकसतः कमले उदये सूर्यस्य। धर्मः मर्त्यलोके आवश्यकः। मधु[1] एतद्। भागीरथी अवतरति। पापानि एव। विजयन्ते असुरान् सुराः। शोभयितृ[2] एतद् विषाणयुगलम्। (१ मधु–शहद; २ शोभयितृ–शोभादायक)

आगे दिए हुए सर्वनामके रूप संदर्भके लिए दिए हैं। वे कालान्तरमें भी कण्ठाग्र किये जा सकते हैं।

सूचनाः—'यह' के अर्थमें 'इदम्' इस सर्वनामका 'एतद्' की अपेक्षा अधिक उपयोग किया जाता है। बिलकुल पासकी वस्तुका निर्देश करना हो, तो 'एतद्,' उससे कुछ दूरकी वस्तुके लिए 'इदम्' और जो वस्तु सम्मुख नहीं है उसके लिए 'तद्' का उपयोग किया जाता है।

पुंलिंगी			इदम्	स्त्रीलिंगी	
अयम्	इमौ	इमे	प्र० इयम्	इमे	इमाः
इमम्–एनम्	इमौ–एनौ	इमान्–एनान्	द्वि० इमाम्–एनाम्	इमे–एने	इमाः–एनाः
अनेन	आभ्याम्	एभिः	तृ० अनया	आभ्याम्	आभिः
अस्मै	,,	एभ्यः	च० अस्यै	,,	आभ्यः
अस्मात्	,,	,,	पं० अस्याः	,,	,,
अस्य	अनयोः–एनयोः	एषाम्	ष० ,,	अनयोः–एनयोः	आसाम्
अस्मिन्	,,	,, एषु	स० अस्याम्	,, ,,	आसु

नपुं०—इदम् इमे इमानि प्र०, (इदम्–एनद् इमे–एने इमानि–एनानि द्वि०), दूसरे रूप पुंलिंगके समान।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

सर्व

'सर्व (वि०) सब' इस शब्दके रूप सर्वनामके समान होते हैं।

पुंलिंगी०—सर्वः सर्वौ सर्वे प्र०, सर्वम् सर्वौ सर्वान् द्वि०, सर्वेण सर्वाभ्याम् सर्वैः तृ०, सर्वस्मै सर्वाभ्याम् सर्वेभ्यः च०, सर्वस्मात् सर्वाभ्याम् सर्वेभ्यः पं०, सर्वस्य सर्वयोः सर्वेषाम् ष०, सर्वस्मिन् सर्वयोः सर्वेषु स०

नपुं०—सर्वम् सर्वे सर्वाणि प्र० द्वि० दूसरे रूप पुंलिंगके समान।

स्त्री०—सर्वा सर्वे सर्वाः प्र०, सर्वाम् सर्वे सर्वाः द्वि०, सर्वया सर्वाभ्याम् सर्वाभिः तृ०, सर्वस्यै सर्वाभ्याम् सर्वाभ्यः च०, सर्वस्याः सर्वाभ्याम् सर्वाभ्यः पं०, सर्वस्याः सर्वयोः सर्वासाम् ष०, सर्वस्याम् सर्वयोः सर्वासु स०

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

'किम्' इस सर्वनामके रूपोंको 'चित्, चन, अपि' यह प्रत्यय संधिनियमानुसार जोड़ देनेसे उनका अर्थ अनिश्चयवाचक सर्वनामके समान होता है।

जैसे—कः-कश्चित्-कश्चन-कोऽपि नरः; का-काचित्-काचन-कापि-नारी; कस्मिन्-कस्मिंश्चित्-कस्मिंश्चन-कस्मिन्नपि-नगरे।

कान्-कांश्चित्-कांश्चन-कानपि जनान्; कस्याः—कस्याश्चित्-कस्याश्चन-कस्या अपि पाठशालायाः; कैः—कैश्चित्-कैश्चन-कैरपि बालैः।

के—केचित्-केचन-केऽपि जनाः; केषाम्—केषांचित्-केषांचन-केषामपि बालानाम्; केभ्यः—केभ्यश्चित्-केभ्यश्चन-केभ्योऽपि जनेभ्यः।

पाठ १०—प्रथमभूतकाल

१ रामः कृष्णाः गोविन्दः गोपालः च देवालयम् अगच्छन् (गए)। तत्र रामः देवम् अनमत् (नमस्कार किया) कृष्णाः अपि अनमत्। किन्तु गोविन्दः गोपालः च न अनमताम्। सायङ्काले जनकः अपृच्छत् (पूंछा)। अपि यूयं देवम् अद्य अनमत इति। रामः प्रत्यवदत् (उत्तर दिया) वयं सर्वे न अनमाम। अहं देवम् अनमम् इति। जनकः पुनर् अपृच्छत्। हे गोविन्द, गोपाल, अपि युवां देवम् अनमतम् इति। गोविन्दः गोपालः च अवदताम् आवां देवम् आलस्येन एव न अनमाव इति। जनकः कृष्णाम् अपृच्छत्।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अपि त्वं देवम् अनमः इति। कृष्णाः प्रत्यवदत्। अथ किम् (जी हां) इति। पश्चात् पुनः ते सर्वे देवम् अनमन्।

ऊपरके वाक्योंमें '**नम्**' इस प्रथम गणके परस्मैपदकी धातुके प्रथम भूतकाल के रूप दिए हुए हैं। नीचेके कोष्टकमें वे क्रमसे लिखे हुऐ हैं। '**वन्द्**' इस आत्मनेपदी समानार्थक धातुके भी रूप दिए गये हैं।

२ **नम् (१ प० प०)—वन्द् (१ आ० प०)**

अहम् अनमम्–अवन्दे	आवाम् अनमाव–अवन्दावहि	वयम् अनमाम–अवन्दामहि।
त्वम् अनमः–अवन्दथाः	युवाम् अनमतम्–अवन्देथाम्	यूयम् अनमत–अवन्दध्वम्।
सः अनमत्–अवन्दत	तौ अनमताम्–अवन्देताम्	ते अनमन्–अवन्दन्त।

पृथक्करणाः—अ + नम् + अ + त्। अ + वन्द् + अ + त (तृ०पु०ए०व०)
अ + नम् + अ + अम्। अ + वन्द् + अ + इ (प्र०पु०ए०व०)
अ + नम् + अ + व। अ + वन्द् + अ + वहि(प्र०पु०द्वि०व०)
अ + नम् + अ + अन्। अ + वन्द् + अ + अन्त(तृ०पु०ब०व०)

इस प्रकार सब रूपोंका पृथक्करण करनेसे नीचे लिखे हुए प्रत्यय दिखाई देंगे।

प्रत्यय

परस्मैपद			आत्मनेपद		
अम्	व	म	इ	वहि	महि
स्	तम्	त	थास्	इथाम्	ध्वम्
त्	ताम्	अन्	त	इताम्	अन्त

प्रथम भूतकाल के रूप बनाते समय धातुके पूर्वमें 'अ' जोड़ते हैं। उसे 'आगम' कहते हैं। विकरण और प्रत्यय जोड़नेके पहिलेके नियम वर्तमानकालके समानही हैं। प्रथमभूतकालका रूप—आगम + धातु + विकरण + प्रत्यय।

३ दूसरे गणोंकी धातुओंके रूप ऊपर दिए हुए रीतिसेही बनाये जा सकते हैं।
नृत् (४ प० प०) अ + नृत् + य + त् – अनृत्यत्।
जन् (जा ४ आ० प०) अ + जा + य + त – अजायत।
सिच् (सिञ् ६ प० प०) अ + सिञ् + अ + त् – असिञ्चत्।
मृ (म्रिय् ६ आ० प०) अ + म्रिय् + अ + त – अम्रियत।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

प्री (प्रीण् १० उ० प०) अ + प्रीण् + अय + त् – अप्रीणयत् ।

" " " + त – अप्रीणयत ।

नृत् (प० प०) चतुर्थ गण जन् (जा) आ० प०

अनृत्यम्	अनृत्याव	अनृत्याम	अजाये	अजायावहि	अजायामहि ।
अनृत्यः	अनृत्यतम्	अनृत्यत	अजायथाः	अजायेथाम्	अजायध्वम् ।
अनृत्यत्	अनृत्यताम्	अनृत्यन्	अजायत	अजायेताम्	अजायन्त ।

सिच्-सिञ्च् (प० प०) षष्ठ गण मृ-म्रिय् (आ० प०)

असिञ्चम्	असिञ्चाव	असिञ्चाम	अम्रिये	अम्रियावहि	अम्रियामहि ।
असिञ्चः	असिञ्चतम्	असिञ्चत	अम्रियथाः	अम्रियेथाम्	अम्रियध्वम् ।
असिञ्चत्	असिञ्चताम्	असिञ्चन्	अम्रियत	अम्रियेताम्	अम्रियन्त ।

प्री-प्रीणा् (प० प०) दशम गण प्री-प्रीणा् (आ० प०)

अप्रीणयम्	अप्रीणयाव	अप्रीणयाम	अप्रीणये	अप्रीणयावहि	अप्रीणयामहि
अप्रीणयः	अप्रीणयतम्	अप्रीणयत	अप्रीणयथाः	अप्रीणयेथाम्	अप्रीणयध्वम् ।
अप्रीणयत्	अप्रीणयताम्	अप्रीणयन्	अप्रीणयत	अप्रीणयेताम्	अप्रीणयन्त ।

४ **बालः पारितोषिकम् ऐच्छत्**—बालकने इनामकी इच्छा की ।

पान्थः वनम् आटत्—प्रवासी (सारे) जंगलमें फिरा ।

नृपः सुखम् आर्च्छत्—राजा सुखको पहुँचा (सुखी हुआ)।

भिक्षुकः धान्यकणान् औञ्छत्—भिखारीने अनाजके दाने चुने ।

ऊपर दिए हुए वाक्योंमें **इष्, अट्, ऋ, उञ्छ्** इन स्वरसे आरंभ होनेवाले धातुओंके प्रथम भूतकालके रूपोंका उपयोग किया गया है । उनका पृथक्करण नीचे लिखे अनुसार होगा।

आ + इच्छ् + अ + त्–ऐच्छत् । आ + अट् + अ + त्–आटत् ।

आ + ऋच्छ् + अ + त्–आर्च्छत् । आ + उञ्छ् + अ + त्–औञ्छत् ।

इससे यह दिखाई देगा कि स्वरसे आरंभ होनेवाले धातुओंके पूर्वमें ' आ ' यह आगम लगाया जाता है और उसकी धातुके आद्य स्वरसे जो सन्धि होती है वह ' वृद्धि ' के नियमानुसार होती है । जैसे :—

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

आ + इ – ऐ, आ + अ – आ, आ + ऋ – आर्, आ + उ – औ.

५ **रामः रावणम् अभ्यपतत्**—रामने रावणपर आक्रमण किया ।
बालाः जनकम् अन्वसरन्—बालक पिताके पीछे २ गये ।
सैनिकाः उदतिष्ठन् युद्धारम्भे—युद्धके आरम्भमें सिपाही उठे ।

ऊपरके वाक्योंमें **अभि + पत्, अनु + सृ, उद् + स्था** इन उपसर्गसहित धातुओंके भूतकालके रूपोंका उपयोग किया गया है ।

पृथक्करण :—अभि + अ – पत् – अ – त् – अभ्यपतत् ।
अनु + अ – सर् – अ – अन् – अन्वसरन् ।
उद् + अ – तिष्ठ् – अ – अन् – उदतिष्ठन् ।

इस परसे यह दिखाई देगा कि उपसर्गसहित धातुओंके प्रथम भूतकालके रूप बनाते समय प्रथम मूल धातूका रूप तैयार करना चाहिए और पश्चात् उसके पहले उपसर्ग जोड़कर सन्धि करना चाहिए ।

६ कुछ विशेष धातुओंके भूतकालके रूप :—

अस् (२ प० प०)–आसम् आस्व आस्म । आसीः आस्तम् आस्त ।
आसीत् आस्ताम् आसन् ।

कृ (८ प० प०)–अकरवम् अकुर्व अकुर्म । अकरोः अकुरुतम् अकुरुत ।
अकरोत् अकुरुताम् अकुर्वन् ।

श्रु (५ प० प०) – अशृण्वम् अशृण्व–ख्व अशृण्म–अशृण्म ।
अशृणोः अशृणुतम् अशृणुत ।
अशृणोत् अशृणुताम् अशृण्वन् ।

ज्ञा (९ प० प०) – अजानाम् अजानीव अजानीम । अजानाः अजानीतम्
अजानीत । अजानात् अजानीताम् अजानन् ।

ग्रह् (९प०प०)–अगृह्णाम् अगृह्णीव अगृह्णीम । अगृह्णाः अगृह्णीतम् अगृह्णीत ।
अगृह्णात् अगृह्णीताम् अगृह्णन् ।

सन्धिनियम

९ भक्तः देवम् ईक्षते–देवमीक्षते ।
बालः सस्मितम् ऊर्ध्वं पश्यति–सस्मितमूर्ध्वं... ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

नियमः—**म्** इस व्यञ्जनके आगे स्वर आवे तो दोनों के मिलने से पूर्णाक्षर होता है।

१० पुष्पम् पश्यति बालः—पुष्पं पश्यति—पुष्पम्पश्यति...।
यत्नम् करोति नरः—यत्नं करोति—यत्नङ्करोति...।
आनन्दम् जनः अनुभवति—आनन्दं जनः—आनन्दञ्जनः...।

नियमः—'म्' के आगे कोईभी वर्ग-व्यञ्जनके आने पर 'म्' का अनुस्वार होता है; अथवा 'म्' के स्थान पर आगेके व्यञ्जनके वर्गका अनुनासिक वर्ण आता है। साधारण प्रकारसे अनुस्वार करने की रीति प्रचलित है।

११ मित्रम् शंसति रामः—मित्रं शंसति...।
अन्धकारम् सूर्यः नाशयति—अन्धकारं सूर्यः...।
चन्द्रस्य बिम्बम् रात्रौ दृश्यते—बिम्बं रात्रौ...।
मूर्खम् हसन्ति जनाः—मूर्खं हसन्ति...।

नियमः—यदि 'म्' के आगे श्, ष्, स्, ह्, ये व्यञ्जन आवें, तो 'म्' का हमेशा अनुस्वार होता है।

१२ मित्रम् लोचनाभ्यां पश्यति नरः—मित्रं लोचनाभ्यां—मित्रँल्लोचनाभ्याम्...। सत्वरम् यतिं पूजयति नरः—सत्वरं यतिं—सत्वरँय्यतिं....।

नियमः—यदि 'म्' के आगे य्, व्, ल् ये व्यञ्जन आवें तो 'म्' का अनुस्वार होता है अथवा 'म्' का अनुनासिक युक्त य्, व्, ल् होता है। जैसे—व्यँ, व्वँ, ल्लँ। परंतु साधारणतः अनुस्वार ही किया जाता है।

१३ वृक्षान् उदकेन सिञ्चति भृत्यः—वृक्षानुदकेन...।
ऋषीन् अवन्दत बालः—ऋषीनवन्दत...।
परन्तु अवदन् एते बालाः—अवदन्नेते....।
एतस्मिन् उद्याने क्रीडन्ति हंसाः—एतस्मिन्नुद्याने...।

नियमः—यदि 'न्' के पहले दीर्घ स्वर हो और आगे स्वर आया हो, तो उन दोनोंका पूर्णाक्षर होता है। परंतु 'न्' के पूर्वमें ह्रस्व स्वर होने पर आगे कौनसाभी स्वर आवे तो 'न्' का द्वित्व होता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

१४ ग्रामान् चलति भिनुकः—ग्रामांः चलति–ग्रामांश्चलति... ।
उपाविशन् छायायां पान्थाः—उपाविशंः छाया...–उपाविशंश्छाया...।
बलीवर्दान् ताडयति कृषीवलः–बलीवर्दांः ताडयति-बलीवर्दांस्ताडयति ....।
छात्रान् टीकां दर्शयति शिक्षकः—छात्रांः टीकां–छात्रांष्टीकां... ।

नियमः—यदि अन्त्य 'न्' के आगे च्, छ्, ट्, (ठ्), त्, (थ्) इन व्यञ्जनोंमेंसे कोईभी व्यञ्जन आवे तो 'न्' का अनुस्वार और विसर्ग होता है। और उसके आगे च्, छ्, हो तो विसर्गका 'श्' होता है, ट्, (ठ्), हो तो विसर्गका 'ष्' होता है और त्, (थ्), हो तो विसर्गका 'स्' होता है।

१५ एतस्मिन् लोके दुःखं वर्तते—एतस्मिँल्लोके... ।
अवदन् लोकाः वार्ताम्—अवदँल्लोकाः... ।

नियमः—यदि अन्त्य 'न्' के आगे 'ल्' व्यञ्जन आवे तो 'न्' का अनुनासिक युक्त 'ल्' (ल्ँ) होता है।

१६ योधः सैनिकान् शरैः विध्यति—सैनिकाञ्शरैः...।
नृपः देशान् जयति—देशाञ्जयति ... ।

नियमः—यदि अन्त्य 'न्' के आगे च्-वर्गका ज् और श् ये तालव्य वर्ण आवे तो 'न्' के स्थान पर च-वर्गका अनुनासिक (ञ्) होता है।

नए शब्द

अभि + पत्—आक्रमण करना
उदकम्—पानी
उञ्छ् (६ प० प०)—चुनना
आ + छद्—(१० प० प०)
ढांकना, आच्छादन करना
उद् + सृज्—त्याग करना, छोड देना
जमदग्निः (पु०)—ऋषिका नाम
दिव्य (वि०)—तेजस्वी, स्वर्गीय
धान्यकणाः—अनाजका कण
परुष (वि०)—कटु, कठोर
निःसारय (प्रेरणार्थक)—(निः + सृ)
निकाल देना
पीवर (वि०)—मोटा, हृष्ट पुष्ट
रजकः—धोबी
लगुडः–डम्—लकडी, लाठी
लोचनम्—आंख
शरः—बाण
सस्मितम् (अ०)—हंसकर
हस् (१ प० प०)—हँसना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

प्रश्न

१ निम्न-लिखित कहानीमें वर्तमानकालके रूपोंके स्थानमें प्रथम भूतकालके रूपोंका प्रयोग करो :—

एकस्मिन् नगरे क्षुद्धपटः नाम रजकः प्रतिवसति। तस्य एकः रासभः अस्ति। दरिद्रः सः तस्मै खाद्यं न यच्छति। एकदा सः व्याघ्रस्य चर्म * लभते। तदा सः चिन्तयति। अहम् एनं रासभं व्याघ्रस्य चर्मणा आच्छादयामि क्षेत्रेषु च उत्सृजामि इति। एवं सः रासभं क्षेत्रेषु रात्रौ उत्सृजति। क्षेत्रपालाः तं व्याघ्रं मन्यन्ते। अतः ते तं न निःसारयन्ति। अनेन क्रमेण सः रासभः पीवरः भवति। एकदा सः अन्यस्य रासभस्य शब्दं शृणोति। सः अपि उच्चैः शब्दं करोति। क्षेत्रपालाः तं शब्दं शृण्वन्ति। अतः ते तं रासभं मन्यन्ते लगुडैः च ताडयन्ति।

२ निम्न-लिखित वाक्योंमें प्रथम भूतकालके रूपोंका प्रयोग करो :—

जमदग्निः चतुरः पुत्रान् ———— परुषैः वचनैः (निंद् + भर्त्स्)।
अर्जुनः इन्द्रस्य अर्धासने ———— (नि + सद्)।
रामः सीतां स्थाने स्थाने ———— (अनु + इष्)।
अर्जुनः वासुदेवस्य विश्वरूपं ———— दिव्येन नयनेन (ईक्ष्)।
कर्णः कृष्णस्य हेतुम् ———— (ऊह्)।

३ निम्न-लिखित रूपोंको पहिचानो और उनका वाक्योंमें उपयोग करो :—
समपद्यत, अकृन्तन्, व्यकिराम, अधमन्, पराजयामहि।

४ सन्धि करो:— एतस्मिन् उद्याने रोहन्ति वृक्षाः। अगच्छन् अकस्मात् कुमाराः वहिः। अजयन् शूराः युद्धे राक्षसान्।

५ सन्धि विश्लेषण कर लिखो:—भारमवहन्नेते सेवकाः। वृक्षाँल्लोचनाभ्यामैक्षन्त कुमाराः।

---

* चर्म चमडा-(चर्मन् इस नपुं० शब्दकी प्रथमाका एकवचन) चर्मणा यह तृतीयाका एकवचन।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पाठ ११—विशेषण

Adjective

१ (अ) **चतुरेभ्यः बालेभ्यः तथा च चतुराभ्यः कन्याभ्यः शिक्षकः प्रभूतानि पारितोषिकाणि यच्छति**—चतुर लड़कोंको और लडकियोंको पाठक बहुत इनाम देता है।

(आ) **रम्येषु उद्यानेषु रम्यायां कौमुद्यां रम्यः पुष्पाणां गन्धः चित्तम् आह्लादयति**—रमणीय बगीचोंमें रमणीय चन्द्रिकामें फूलोंका रम्य सुगंध चित्तको आनंद देता है।

उपर्युक्त वाक्योंमें चतुर, प्रभूत, रम्य, ऐसे अकारान्त विशेषणका प्रयोग किया गया है। उनके रूप जिन संज्ञाओंके वे विशेषण हैं, उनके अनुसार लिंग, विभक्ति और वचनके हुए हैं।

विशेषण	संज्ञा	लिंग	विभक्ति	वचन
चतुरेभ्यः	बालेभ्यः	पु०	च०	बहुवचन
रम्यः	गन्धः	पु०	प्र०	एकवचन
प्रभूतानि	पारितोषिकाणि	न०	द्वि०	बहुवचन
रम्येषु	उद्यानेषु	न०	स०	बहुवचन
परंतु चतुराभ्यः	कन्याभ्यः	स्त्री०	च०	बहुवचन (चतुर्+आ—चतुरा)
रम्यायाम्	कौमुद्याम्	स्त्री०	स०	एकवचन (रम्य+आ—रम्या)

ऊपरके उदाहरणोंसे यह दिखाई देगा कि 'आ' करान्त विशेषणोंका रूपान्तर पुंलिंगमें 'देव' शब्दके समान होता है, नपुंसकलिंगमें 'वन' के समान और, स्त्रीलिंगमें उन्हें 'आ' प्रत्यय जोड़कर 'माला' शब्दके समान।

कुछ 'अ' कारान्त विशेषणोंमें स्त्रीलिंगमें 'आ' के स्थान पर 'ई' प्रत्यय लगाकर उनका रूपान्तर 'नदी' शब्दके समान होता है।

जैसे :—गौर—गौरी, कल्याण—कल्याणी, सारङ्ग—सारङ्गी, पावन—पावनी, शाश्वत—शाश्वती।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

कुछ विशेषणोंको दोनों (आ, ई) प्रत्यय लगाए जाते हैं।

जैसे:—चण्ड—चण्डा—ण्डी, सुन्दर—सुन्दरा—री, पुराण—पुराणा—णी, नील—नीला—ली, विशाल—विशाला—ली, साधारण—साधारणा—णी।

२ एक, द्वि, त्रि, चतुर्, पञ्चन् (संख्याविशेषण)

पुं० एकः शब्दः द्वौ शब्दौ त्रयः शब्दाः चत्वारः शब्दाः पञ्च शब्दाः
स्त्री० एका भाषा द्वे भाषे तिस्रः भाषाः चतस्रः भाषाः पञ्च भाषाः
न० एकम् अक्षरम् द्वे अक्षरे त्रीणि अक्षराणि चत्वारि अक्षराणि पञ्च अक्षराणि

ऊपरके उदाहरणोंमें एक (१) से पांच (५) तकके संख्याविशेषणोंका तीनों लिंगोंमें उपयोग कर दिखाया है। 'एक' यह एकवचनके, 'द्वि' यह द्विवचनके, 'त्रि, चतुर, पञ्चन्,' ये बहुवचनके ही रूप ग्रहण करता है।

पुंलिंगके रूप

एक	द्वि	त्रि	चतुर्
एकः	द्वौ	त्रयः	चत्वारः
एकम्	,,	त्रीन्	चतुरः
एकेन	द्वाभ्याम्	त्रिभिः	चतुर्भिः
एकस्मै	,,	त्रिभ्यः	चतुर्भ्यः
एकस्मात्	,,	,,	,,
एकस्य	द्वयोः	त्रयाणाम्	चतुर्णाम्
एकस्मिन्	,,	त्रिषु	चतुर्षु
एक	द्वौ	त्रयः	चत्वारः

स्त्रीलिंगके रूप

एक	द्वि	त्रि	चतुर्
प्र० एका	द्वे	तिस्रः	चतस्रः
द्वि० एकाम्	,,	,,	,,
तृ० एकया	द्वाभ्याम्	तिसृभिः	चतसृभिः
च० एकस्यै	,,	तिसृभ्यः	चतसृभ्यः
पं० एकस्याः	,,	,,	,,
ष० एकस्याः	द्वयोः	तिसृणाम्	चतसृणाम्
स० एकस्याम्	,,	तिसृषु	चतसृषु
सं० ऐके	द्वे	तिस्रः	चतस्रः

नपुंसकलिंग:—प्र० द्वि० एकम् द्वे त्रीणि चत्वारि
सं० एक ,, ,, ,,

दूसरी विभक्तियोंके रूप पुंलिंगके समान।

पञ्चन्:—(पु० स्त्री० न०) प्र० सं०—पञ्च, द्वि०—पञ्च, तृ०—पञ्चभिः, च० पं०—पञ्चभ्यः, ष०—पञ्चानाम्, स०—पञ्चसु।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

सन्धिनियम

१७ मूर्खस्य पुस्तकैः कार्यं न विद्यते—पुस्तकैः कार्यं—सन्धि नहीं होती।
वृक्षयोः फलानि मधुराणि—वृक्षयोः फलानि—सन्धि नहीं होती।
कूपीवलः खनति भूमिम्—कूपीवलः खनति—सन्धि नहीं होती।
वृक्षाः फलानि धारयन्ति—वृक्षाः फलानि— „ „

नियमः—उपर्युक्त वाक्योंमें विसर्गके पहले भिन्न भिन्न स्वर हैं और आगे क्, ख्, प्, फ्, ये कठोर व्यञ्जन आए हैं इस लिए विसर्ग की सन्धि नहीं होती।

१८ वनमार्गैः चरन्ति चोराः —वनमार्गैश्चरन्ति .....र्गैश् च...
पथिकः छायाम् आश्रयते —पथिकश्छायाम्.....कश् छा...
कविः टीकां करोति —कविष्टीकां .....विष् टी...
नाविकाः तरन्ति सागरम् —नाविकास्तरन्ति.....कास् त...

नियमः—विसर्गके पूर्वमें कोई भी स्वर हो और आगे च्, छ्, ट्, (ठ्), त्, (थ्), इसमेंसे कोई व्यञ्जन हो तो विसर्गके स्थान पर क्रमसे श्, ष् और स्, होते हैं।

१९ मुनिः शास्त्राणि पठति—मुनिः शास्त्राणि अथवा मुनिश्शास्त्राणि...।
चन्द्रस्य कलाः षोडश सन्ति—कलाः षोडश अथवा कलाष्षोडश...।
क्षेत्रपालाः सारमेयान् पालयन्ति—क्षेत्रपालाः सारमेयान् अथवा क्षेत्रपालास्सार...।

नियमः—यदि विसर्गके पहले कोईभी स्वर हो और आगे, श्, ष्, स्, ये कठोर व्यञ्जन आवें, तो विसर्गके स्थानपर विकल्पसे अनुक्रमसे श्, ष्, स् हो जाते हैं।

नए शब्द

(अ) **संज्ञा**—छाया, दिशा, प्रकाशः, भूषणम्। **विशेषणा**—कर्कश, कोमल, चञ्चल, तीक्ष्ण, पवित्र, मधुर, हिंस्र।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

(आ) १ संज्ञा

आम्रः–आमका वृक्ष
आम्रम्–आम (फल)
कला–कला, चंद्रमाकी कोर
कल्लोलः–लहर
क्षेत्रपालः–किसान
खड्गः–तलवार
चन्द्रिका–चांदनी
चारः–गुप्त दूत
छत्रम्–छत्री
धारा–धार
नासिका–नाक
निवासः–रहना
मृगः–हरिणाः–हिरन
मेघः–मेघ
यात्रिकाः–पथिक, प्रवासी
रासभः–गर्दभ, गधा
लाङ्गूलम्–पूँछ
वायसः–कौआ
व्याधः—शिकारी
शीतम्–सरदी, थंड

२ विशेषण

गभीर–गहरा
घन–घना, कड़ा
चराड–गरम
द्वितीय–(स्त्री० या) दूसरा
चतुर्थः–(स्त्री०र्थी)–चौथा
तुङ्ग–ऊंचा
दीर्घ–लम्बा
निशित–तीखा, तीक्ष्ण
धवल–श्वेत
निखिल, अखिल–सब
नील–नीला
पक्व–पका हुआ
परम–बडा
प्रभूत–बहुत
भीषण–भयङ्कर
शीत–थंडा, शीतल
श्वेत–शुभ्र–सफेद
श्याम–काला
सुलभ–सहज, सीधा

३ क्रिया

आ + नी–लाना
नि+सद्–(निषीदति) –बैठना
खन्–(१प०प०)–खोदना
शुष्–(४प०प०)–सूखना

प्रश्न

१ नीचेके वाक्योंमें कोष्ठकमें दिए हुए विशेषणोंके योग्य रूपोंका प्रयोग करोः—

१ (शीतल) छायायां पान्थः निषीदति ।
२ (निशित) बाणैः व्याधः मृगं विध्यति ।
३ धनिकः (प्रभूत) बालाभ्यः भूषणानि यच्छति ।
४ (श्याम) मेघाः (प्रभूत) जलं वर्षन्ति ।
५ (गभीर) वापीषु जलं न शुष्यति ।
६ (धवल) चन्द्रिकया (निखिल) पृथ्वी शोभते ।
७ नरस्य (एक) नासिका (द्वि) कर्णौ (द्वि) नयने च सन्ति ।
८ अश्वस्य (चतुर्) पादाः (दीर्घ) लाङ्गूलं च वर्तन्ते ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

९ (चतुर्) मुखानि ब्रह्मदेवस्य (चतुर्) दिशासु सन्ति ।

१० मोक्षस्य (त्रि) मार्गाणां भक्तिमार्गः (सुलभ) ।

२ निम्न-लिखित संज्ञाओंके लिए योग्य विशेषण चुनकर उनका संज्ञाओंके साथ प्रयोग करो ।

संज्ञाविभाग		विशेषणविभाग	
१ वायसस्य स्वरः	६ नदीनां जलम्	१ पक्वानि	६ चण्डः
२ गजस्य आकारः	७ व्याघ्रस्य स्वभावः	२ भीषणाः	७ मधुरम्
३ खड्गस्य धारा	८ रासभस्य कर्णौ	३ दीर्घौ	८ तीक्ष्णा
४ आम्रस्य फलानि	९ शङ्करस्य नयनानि	४ कर्कशः	९ हिंस्रः
५ सागरस्य कल्लोलाः	१० सूर्यस्य प्रकाशः	५ त्रीणि	१० स्थूलः

३ निम्न-लिखित विशेषणोंका वाक्योंमें प्रयोग करो :—

नील, पवित्र, चञ्चल, कोमल, दरिद्र, तुङ्ग, चतुर्थ, द्वितीय, परम, घन ।

४ सन्धि विश्लेषण करो :—अश्वास्तृणानि भक्षयन्ति । वृक्षच्छायया तोषयति जनान् । नृपाश्चारैः पश्यति ।

५ सन्धि करके लिखो :—पान्थः छायायाम् उपविशति आनन्देन । यात्रिकाः तीर्थानि अटन्ति । धारयति सेवकः छत्रं नृपस्य उपरि ।

पाठ १२—विशेषण (कर्मणि भूतकालिक कृदन्त धातु)

१ **बालौ ग्रामं गतौ**—दो लड़के गांवको गए ।

रामः रावणाय क्रुद्धः—राम रावणपर क्रुद्ध हुआ ।

समुद्रः वातेन क्षुब्धः—समुद्र हवासे अशान्त हुआ ।

जननी पुत्रस्य पराक्रमेण मुदिता—माता लड़केके पराक्रमसे आनंदित हुई ।

चन्द्रः प्रकाशितः—चन्द्र प्रकाशित हुआ ।

वैरम् वृद्धम्—वैर बढा ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

ऊपरके वाक्योंमें क्रियाका उपयोग नहीं किया है। परन्तु उसके स्थानपर **गत, क्रुद्ध, क्षुब्ध, मुदित, प्रकाशित** और **वृद्ध** इन 'भूतकालिक' कृदन्त विशेषणोंका उपयोग किया गया है। उनके रूप अकारान्त विशेषणोंके समान कर्तृपदके लिंग, विभक्ति और वचन के अनुसार हुए हैं। इसका कारण यही है कि वे सब धातु अकर्मक हैं।

जैसे :—बालौ–पु० प्र० द्विवचन—गतौ–पु० प्र० द्विवचन
जननी–स्त्री० प्र० ए० व०—मुदिता–स्त्री० प्र० ए० वचन।
वैरम्–न० प्र० ए० व०—वृद्धम्–न० प्र० ए० वचन

१ बालेन अध्ययनं कृतम्––लडकेने अभ्यास किया।
नृपेण वार्ता श्रुता—राजाने समाचार सुने।
मालाकारेण वृक्षाः सिक्ताः—मालीने वृक्षोंको सींचा।

ऊपरके वाक्योंमें भी क्रिया के बदले भूतकालदर्शक कृदन्त विशेषणोंकाही उपयोग किया गया है। परंतु वे रूप सकर्मक धातुके होनेसे उनके रूप प्रथमान्त कर्मपदके लिंग, विभक्ति और वचनके अनुसार प्रयुक्त हैं और मूल कर्तृपदवाचक शब्द तृतीयामें रखे गए हैं।

इस परसे यह दिखाई देगा कि भूतकालकी क्रिया का भाव उपर्युक्त भूतकालिक कृदन्त विशेषणोंके उपयोगसे भी अभिव्यक्त किया जा सकता है। परन्तु इस प्रकारके रूपोंका वाक्योंमें प्रयोग करते समय वे सकर्मक धातुके रूप हैं या अकर्मक धातुके इसका अच्छा विचार करना चाहिए। क्योंकि वाक्योंकी रचना ऊपर कहे अनुसार इसपरही अवलम्बित है।

३ कृतं निश्चयं प्राज्ञः न त्यजति–किया हुआ निश्चय बुद्धिमान् मनुष्य त्याग नहीं देता।

लब्धेन विजयेन नृपः तुष्यति—मिले हुए विजयसे राजा संतुष्ट होता है।

ऊपरके वाक्योंमें भूतकालवाचक कृदन्त विशेषणोंका उपयोग जिन संज्ञाओंसे उनका संबंध आया है उन्हीके साथ सामान्य विशेषणके सदृश किया गया है।

४ कुछ अकर्मक धातुके भूतकालिक कृदन्त विशेषण :—

परा (ला) + अय्–पलायित। सम् + ऋध्–समृद्ध। गम्–गत। जन्–जात। तुप्–तुष्ट। भू–भूत। नश्–नष्ट। प्र + बुध्–प्रबुद्ध। भ्रंश्–भ्रष्ट।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पत्–पतित । मद्–मत्त । मस्ज्–मग्न । मृ–मृत । रम्–रत । आ + रुह् – आरूढ ।
उप + विश्–उपविष्ट । श्रम्–श्रान्त । स्था–स्थित । उद् + स्था–उत्थित ।

कतिपय सकर्मक धातुके भू० का० वा० कृदन्त विशेषरण ।

इष्–इष्ट । कृ–कृत । वि + कृ–विकीर्ण । गै–गीत । ग्रह्–गृहीत ।
जी–जीत । नी–नीत । दृश्–दृष्ट । वि + तॄ–वितीर्ण । त्यज्–त्यक्त ।
दह्–दग्ध । दा–दत्त । आ + दिश्–आदिष्ट । धृ–धृत । नम्–नत ।
पा–पीत । प्रच्छ्–पृष्ट । आ + रभ्–आरब्ध । लभ्–लब्ध । रक्ष्–रक्षित ।
व्यध्–विद्ध । श्रु–श्रुत । स्पृश्–स्पृष्ट । आ + ह्वे–आहूत । कथ्–कथित ।
क्षल्––क्षालित । अॄ–अर्पय–अर्पित । स्था–स्थापय–स्थापित ।

सन्धिनियम

२० रामः गच्छति वनम्–**राम उ गच्छति...रामो गच्छति...** ।
नरः अभ्युदयं वाञ्छति–**नर उ अभ्युदयं...नरो*ऽभ्युदयं...**।

नियमः—विसर्गके पहले 'अ' और आगे 'मृदु व्यञ्जन अथवा अ' हो तो विसर्गका 'उ' होता है। और वह 'उ' पिछले 'अ' के साथ मिलकर 'ओ' होता है।

२१ योधः इच्छति विजयम्–**योध इच्छति...** ।
बालः उदकं पिबति—**बाल उदकं...** ।
वृक्षाः एतैः पुष्पैः शोभते—**वृक्ष एतैः...**।

नियमः—विसर्गके पहले 'अ' और आगे 'अ' के अतिरिक्त 'स्वर' हो तो विसर्गका लोप हो जाता है और विसर्गका लोप होनेसे पासमें आनेवाले दो स्वरोंकी सन्धि नहीं होती।

२२ बालाः गच्छन्ति पाठशालाम्—**बाला गच्छन्ति...**।
,, रमन्ते कन्दुकेन—**बाला रमन्ते...**।
,, इच्छन्ति ज्ञानम्—**बाला इच्छन्ति...**।
,, उतिष्ठन्ति आसनेभ्यः—**बाला उतिष्ठन्ति...**।

---

* ओ इस स्वरके आगे आनेवाले 'अ' का लोप होकर उसके स्थानपर (ऽ) अवग्रह लिखा जाता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

नियम :—विसर्गके पहले 'आ' और आगे 'मृदु व्यञ्जन' अथवा 'कोई स्वर' हो तो विसर्गका लोप होता है, और फिर पासमें आनेवाले दो स्वरोंकी सन्धि नहीं होती।

२३ एषः—सः अस्ति उद्याने—एषोऽस्ति...सोऽस्ति...।
एषः—सः इच्छति विजयम्—एष-स इच्छति...।
एषः—सः उत्तिष्ठति आसनात्—एष-स उत्तिष्ठति...।
एषः—सः पश्यति मित्रम्—एष-स पश्यति...।
एषः—सः नमति देवम्—एष-स नमति...।

नियम :—'एषः और सः' इन शब्दोंके विसर्गके पश्चात् 'अ' आवे तो विसर्गका 'उ' होता है वह 'उ' पिछले 'अ' में मिलकर उनका 'ओ' होता है और फिर पीछेके अ का अवग्रह (ऽ) होता है।

'एषः और सः' इनके विसर्गके आगे 'अ' के अतिरिक्त दूसरा स्वर अथवा कोई मृदु अथवा कठोर व्यञ्जन आवे तो विसर्गका लोप होता है।

नए शब्द

(अ) अधिकारः, आनन्दः, उपदेशः, नाशः, निश्चयः, वृत्तान्तः, वैरम्, विजयः, शास्त्रम्, साहाय्यम्, सेना।

(आ) **अट्** (१ प० प० अटति)—भटकना
अनु + रुध् (अनुरुध्यते)—आज्ञा पालना
अनु + सृ (अनुसरति)—अनुसरण करना
आ + श्रि (१ उ० प०)—आश्रय लेना
अर्थः—धन, द्रव्य
आगमनम्—आना
चन्द्रापीडः—राजपुत्रका नाम
महाश्वेता—स्त्रीका नाम
वनमार्गः—जंगलका रास्ता
चर्—(१ प० प०)—चलना
पठ् (१ प० प०)—पढ़ना
प्रज्ञः, प्राज्ञः—बुद्धिमान् आदमी
भषणम्—भोंकना
पालय—पा (२ प० प०—प्रेरणार्थक)—पालना
भिक्षुकः—भिखारी
सैनिकः—सिपाही

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ नीचे दिए हुए भूतकालवाचक कृदन्त विशेषणोंका सामान्य विशेषणके समान, वाक्योंमें प्रयोग करो।

कृत, मुदित, समृद्ध, सन्तुष्ट, आरब्ध।

२ कोष्ठक की धातुके भूतकालवाचक कृदन्त बनाकर उनका प्रयोग करोः—

१ व्याधेन बाणैः मृगः (व्यध्)। २ सैनिकैः चोराः (ग्रह्)।

३ कृष्णस्य वयस्याः यमुनायाः तीरं (प्र + स्था)।

४ सूत्रधारेण पुष्पाणि (वि + कृ)।

५ विश्वामित्रेण दशरथः (प्रच्छ्)। ६ ब्राह्मणेन पुत्रः (आ + ह्वे)।

७ जनकेन कन्याभ्यः भूषणानि (दा)। ८ प्रवासेन पथिकाः (श्रम्)।

९ वानराः वृक्षस्य शाखाम् (आ + रुह्)।

१० वसिष्ठेन रामः (आ + दिश्)।

३ नीचे दिए हुए शब्दोंके योग्य रूपोंसे वाक्य बनाओः—

१ ईश्वर, वसुधा, अवतीर्ण, दुर्जन, नाश।

२ चन्द्रापीड, वृत्तान्त, श्रुत, महाश्वेता।

३ वानर, साहाय्य, राम, राक्षस, सेना, जित।

४ जनक, पुत्र, अपराध, क्षान्त।

५ कुक्कुर, भषण, चोर, पलायित।

४ सन्धि विश्लेषण कर लिखोः—एषोऽस्त्यत्र देवालयो गजाननस्य। एकदर्षयो यमुनायास्तीर उपाविशन्। जना इच्छन्त्येतेऽधिकारम्। स बालोऽनुसरत्युपदेशं जनकस्य।

५ सन्धि करके लिखोः—एषः भिक्षुकः याचते अर्थम्। पुत्राः अनुरुध्यन्ते आदेशम्। छात्राः उत्तिष्ठन्ति आसनेभ्यः अध्यापकस्य आगमने।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

पाठ १३—इकारान्त संज्ञा और विशेषण

१ कविषु (कवियोंमें) कालिदासः श्रेष्ठः । कवयः (कवि) नृपान् वर्णयन्ति काव्येषु । नृपः अरिणा सह (शत्रुसे) युध्यते । रवेः (सूर्यका) प्रकाशः मध्याह्ने चण्डः । कपिभ्यः (बंदरोंको) फलानि रोचन्ते । मुनिभ्यः (मुनियोंसे) ज्ञानं लभन्ते शिष्याः ।

ऊपर दिए हुए वाक्योंमें पुं० ह्रस्व इकारान्त संज्ञा—कवि, अरि, रवि, कपि, मुनि—इनका भिन्न भिन्न विभक्तियोंमें उपयोग किया गया है । उनके रूप नीचे दिए हुए 'कवि' शब्दके रूपोंके समान होते हैं ।

इकारान्तः पुंलिङ्गः कविशब्दः ।

कविः	कवी	कवयः	प्र०	कवेः	कविभ्याम्	कविभ्यः पं०
कविम्	,,	कवीन्	द्वि०	,,	कव्योः	कवीनाम् ष०
कविना	कविभ्याम्	कविभिः	तृ०	कवौ	,,	कविषु स०
कवये	,,	कविभ्यः	च०	हे कवे	हे कवी	हे कवयः सं०

ह्रस्व इकारान्तके संज्ञाके रूपान्तरोंमें तृ० ए० व० और ष० ब० व० इनमें 'न्' का 'ण्' हो सकता है या नहीं यह देखना चाहिए ।

इकारान्त पुंलिंगकी संज्ञा

(अ) ऋषिः, कविः, व्याधिः, निधिः, मुनिः, यतिः ।

(आ) अरिः—शत्रु, अलिः—भ्रमर, असिः—तलवार | कपिः—वानर, कालिः—लड़ाई, कलियुग, रविः—सूर्य | हरिः—विष्णु, इन्द्र, सिंह, वानर

२ मन्दा गतिः (चाल) गजस्य । मुनिः ईश्वरं प्रीणायति भक्त्या (भक्तिसे) । रात्रिषु (रात्रिको) सञ्चरन्ति निशाचराः । बुद्धेः (बुद्धिके) प्रकर्षेण नरः कीर्तिं (कीर्ति) लभते । भूमेः (जमीनपरसे) उड्डयन्ते कपोताः । मुक्तये (मोक्षके लिए) यतन्ते यतयः ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

उपर्युक्त वाक्योंमें–**गति, भक्ति, रात्रि, बुद्धि, कीर्ति, भूमि, मुक्ति** – ये स्त्रीलिंगकी इकारान्त संज्ञाएं भिन्न भिन्न विभक्तियोंमें प्रयुक्त हुई हैं। उनके रूप आगे दिए हुए 'मति' शब्दके रूपोंके समान बनाना चाहिए। केवल ष० व० वचनान्त के 'न्' का 'ण्' हो सकता है या नहीं यह देख लेना चाहिए।

इकारान्तः स्त्रीलिङ्गः मतिशब्दः।

मतिः	मती	मतयः	प्र०	मतेः–त्याः	मतिभ्याम्	मतिभ्यः	पं०
मतिम्	,,	मतीः	द्वि०	,, ,,	मत्योः	मतीनाम्	ष०
मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः	तृ०	मतौ–मत्याम्	,,	मतिषु	स०
मतये–त्यै	,,	मतिभ्यः	च०	हे मते	हे मती	हे मतयः	सं०

ह्रस्व इकारान्त स्त्रीलिंगकी संज्ञाओं के दो भाग हो जाते हैं।

(१) मूल धातुको 'ति' इस भाववाचक संज्ञाके प्रत्यय से बनी हुई (**ति** के स्थानपर सन्धिनियमानुसार टि, डि, धि, नि, ऐसा परिवर्तन होता है)।

(२) मूल इकारान्त संज्ञा—

१—**कृतिः, जातिः, दृष्टिः, धृतिः, नीतिः, प्रकृतिः** (स्वभाव, प्रजा, मन्त्री), **प्रतिकृतिः** (प्रतिमा), **प्रीतिः, बुद्धिः, भूतिः** (उन्नति), **रतिः** (प्रेम, मदनकी भार्याका नाम), **रूढिः, वसतिः, वृत्तिः** (वर्ताव, जीवनक्रम), **श्रुतिः** (वेद), **सृष्टिः, स्मृतिः** (ग्रन्थोंको नाम, स्मरण)।

२—**भूमिः** (जमीन), **मूर्तिः, रात्रिः**।

३ **मेघः वारीणां** (पानीका) **वाहकः। तडागस्य वारिणा** (पानीमें) **कमलानि रोहन्ति। वारिभिः** (पानीसे) **सिञ्चन्ति मेघाः पृथ्वीम्।**

ऊपरके वाक्योंमें 'वारि' इस नपुंसकलिंगकी ह्रस्व इकारान्त संज्ञाका उपयोग किया गया है। संस्कृतमें ह्रस्व इकारान्त नपुंसकलिंगी संज्ञाएं बहुतसी नहीं हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

इकारान्तः नपुंसकलिङ्गः वारिशब्दः ।

वारि	वारिणी	वारीणि	प्र०	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः	पं०
,,	,,	,,	द्वि०	,,	वारिणोः	वारीणाम्	ष०
वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः	तृ०	वारिणि	,,	वारीषु	स०
वारिणे	,,	वारिभ्यः	च०	हे वारे-रि	हे वारिणी	हे वारीणि	सं०

४ **सुरभ्या** (सुवासिक) **मालया भक्तः ईश्वरं पूजयति ।**
शुचिनि-शुचौ (पवित्र) **वा तीर्थे जनाः स्नानं कुर्वन्ति ।**
शुचिना (पवित्र) **आचारेण नरः आदरम् अर्हति ।**
भूरये (बहुत) **अर्थाय सर्वे जनाः स्पृहयन्ति ।**
गङ्गायाः जलं नरस्य भूरीणि (बहुत) **पापानि नाशयति ।**

ऊपरके वाक्योंमें इकारान्त विशेषण—सुरभि, शुचि, भूरि—इनका उपयोग किया गया है। उनके रूप पुंलिंगमें **'कवि'** शब्दके रूपोंके समान, स्त्रीलिंगमें **'मति'** शब्दके रूपोंके समान और नपुंसकलिंगमें 'वारि' के रूपोंके समान और चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी और सप्तमी ए० व०, षष्ठी–द्विवचन और सप्तमी–द्विवचन इनमें 'कवि' के रूपोंके अनुसार भी होते हैं।

शुचि, नपुं० च० ए० व०—शुचिने-शुचये, पं० और ष० ए० व०—शुचिनः-शुचेः, स० ए०व० —शुचिनि-शुचौ, ष० और स० द्विव०—शुचिनोः-शुच्योः ।

सन्धिनियम

२४ **हरिः वसति वैकुण्ठे–हरिर् वसति–हरिर्वसति...** ।
वारीः अरिं विध्यति योधः–वारीर् अरिं–वारीरिं... ।
रवेः आतपः चण्डः—**रवेर् आतपः–रवेरातपः.....** ।

* **सूर्यचन्द्रयोः दर्शनम् आह्लादकम्–सूर्यचन्द्रयोर् दर्शनम्—सूर्यचन्द्रयोर्दर्शनम्** ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

नियमः—विसर्गके पहले 'अ–आ' के अतिरिक्त अन्य स्वर हो और पीछे 'स्वर' अथवा 'मृदु व्यञ्जन' हो, तो विसर्गका 'र्' होता है और पीछेके स्वरमें मिलनेसे उसका पूर्णोच्चार होता है अथवा वह आगेके व्यञ्जनको जोड़ दिया जाता है।

२५ नृपतिः रक्षति प्रजाः–नृपतिर् रक्षति–नृपती रक्षति ... ।
वारणौः रामः अयुध्यत– वारणैर् रामः–वारणै रामः ... ।
कुशलवयोः * रामः स्निग्धः–कुशलवयोर् रामः–कुशलवयो रामः ... ।
रविः रात्रौ न प्रकाशते–रविर् रात्रौ–रवी रात्रौ... ।
प्रातर् रमते कन्दुकेन बालः–प्रातः रमते... ।
पुनर् रथ्यया धावति चोरः –पुनः रथ्यया... ।

नियमः—विसर्गके स्थान पर आए हुए अथवा मूल 'र्' इस व्यञ्जनके पश्चात् 'र्' से आरम्भ हुआ शब्द आवे तो पहले 'र्' का लोप होता है। और उस 'र्' के पहलेका स्वर यदि ह्रस्व हो, तो वह दीर्घ होता है।

२६ भोः इह आगच्छत (आओ)–भो इह... ।
भोः मम वचनं शृणुथ (सुनो)–भो मम... ।
भोः कष्टं मम जीवितम्– भोः कष्टं ... ।

नियमः—'भोस्–अरे–अहो'–इन सम्बोधनार्थक अव्ययोंके विसर्गके आगे यदि मृदु व्यञ्जन अथवा स्वर आवे, तो विसर्गका 'लोप' होता है; और यदि आगे कठोर व्यञ्जन आवे, तो नित्यके अनुसार सन्धि होती है।

---

*सूचनाः—संस्कृतमें दो या दोसे अधिक समान महत्त्वकी संज्ञा एकत्र जोड़कर लिखी जाती हैं। ऐसे सामासिक शब्दको 'द्वन्द्व समास' कहते हैं। ऐसे द्वन्द्व समासका लिंग अन्य पदके लिंगके अनुसार रहता है और वचन समासमेंके पदोंसे व्यक्त संख्यापर। जैसेः—सूर्यः च चन्द्रः च सूर्यचन्द्रौ। कुशः च लवः च–कुशलवौ। धर्मः भीमः अर्जुनः च—धर्म-भीमार्जुनाः। कन्दाः मूलानि फलानि च–कन्दमूलफलानि।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

नए शब्द

अटवी–जंगल
आतपः–सूर्यकी उष्णता (गरमी)
उच्छ्वासः–श्वास (बाहर निकला हुआ)
तडागः-गम्–तालाब
अशक्य (वि०)–जो न किया जा सके
कष्ट–(वि०)–दुःखदायक
नव-नवीन (वि०)–नया
निशाचरः–राक्षस
प्रकर्षः–बहुत वृद्धि
पण्डितः–विद्वान् मनुष्य
प्रभावः–प्रभाव, जोर, पराक्रम
हेमन्तः–सर्दी, थण्डकी ऋतु
पीडाकर (वि०)–पीडा देनेवाला
प्रमुख (वि०)–मुखिया, नेता
प्राकृत (वि०)–सामान्य, साधारण
मन्द (वि०)–धीरे जानेवाला
प्रार्थना–विनती
भारवाहकः–बोझा उठानेवाला
मध्याह्नः–दोपहरका समय
रथ्या–मार्ग, सडक
वैकुण्ठम्–विष्णु भगवान्का स्थान
वर्ण् (१० उ० प०)–वर्णन करना
विहीन (वि०) रहित
स्निग्ध (वि०) प्रेमी, प्यारा
सम् + चर्(सञ्चरति)–फिरना, घूमना

प्रश्न

१ आगेके वाक्योंमें कोष्टकके शब्दोंके योग्य रूपोंका प्रयोग करो :—

१ (व्याधि) मनुजस्य शरीरं पीडयन्ति ।
२ (नृपति) (अरि) सह (असि) युध्यन्ते ।
३ (रवि) उदये कृषीवलाः क्षेत्राणि गच्छन्ति ।
४ (रात्रि) निखिला (सृष्टि) अन्धकारे निमज्जति ।
५ हेमन्ते शीतानां (वारि) स्पर्शः पीडाकरः भवति ।
६ (स्मृति) चतसृणां (जाति) आचारः वर्णितः ।
७ (भूमि) मेघाः (वारि) सिञ्चन्ति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

८ (विपत्ति) (धृति) विहीनाः नराः नश्यन्ति ।

९ (यति) (वसति) अटव्यां वर्तते ।

१० (कपि) प्रमुखेन (मारुति) अशोकवने सीता दृष्टा ।

२ आगे दिए हुए रूपोंको पूर्णतया पहिचानो और उनके आगे दिए हुए वाक्योंमें योग्य स्थानपर उनका उपयोग करोः—

श्रुतीः, राशीन्, हरेः, रूढिम्, कीर्तये, मुक्तिम्, कलेः, सृष्टौ, रीतिः, मूर्तये ।

१ ——— प्रभावेण वर्णानां सङ्करः भवति । २ कवेः ——— किमपि अशक्यं न । ३ पण्डिताः ——— स्पृहयन्ति । ४ यतयः संसारात् ——— इच्छन्ति । ५ प्राकृताः जनाः ——— अनुसरन्ति । ६ भक्तः ईश्वरस्य ——— पुष्पाणि अर्पयति । ७ नवीना ——— जनेभ्यः रोचते । ८ भक्तानां प्रार्थनया ——— चित्तं द्रवति । ९ धान्यस्य ——— आनयन्ति भृत्याः । १० स्मृतयः ——— अनुसरन्ति ।

३ निम्न-लिखित संज्ञाओंके रूपोंके योग्य नीचे लिखे हुए विशेषणोंके योग्य रूपोंका प्रयोग करोः—

(सुरभि) पुष्पे । (शुचि) मत्या । (सुरभि) उच्छ्वासात् । (शुचि) वृत्तिम् । (भूरि) कीर्तये ।

४ सन्धि करके लिखोः—

एतैः छात्रैः अध्ययनं कृतम् । कविः रजन्याम् आकाशे तारकाः अपश्यत् । हरिः उदतिष्ठत् पुनर् रात्रौ । भोः भारवाहक अत्र किं तिष्ठसि ।

५ सन्धि विश्लेषण करके लिखोः—

शत्रोरेतां सेनां बाणैर्वीरोऽविध्यत् । मित्रयोरुपदेशेन कृष्णोऽप्यविन्दत सुखम् ।

———

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

पाठ १४—उकारान्त संज्ञा और विशेषण

१ कामः क्रोधः च प्रबलौ रिपू (शत्रु) वर्तेते ।
चातकाः जलस्य विन्दून् (बिन्दु) मेघेभ्यः अपेक्षन्ते ।
भानुना (सूर्यसे) प्रकाशितं भूतलं शोभते ।
पशुभ्यः (पशुको) तृणां रोचते ।
शत्रोः (शत्रुसे) रक्षणाम् इच्छन्ति पौराः ।
इन्दौ (चन्द्रमें) कलङ्कः वर्तते ।
विनीतः छात्रः गुरूणाम् (गुरुजीकी) आज्ञां न उल्लङ्घयति ।
हे साधो (साधुपुरुष) तव उपदेशम् अहं न विस्मरामि ।

ऊपरके वाक्योंमें—रिपु, बिन्दु, भानु, पशु, शत्रु, इन्दु, गुरु, साधु,—ये 'उ'कारान्त पुंलिंगके शब्द भिन्न भिन्न विभक्तियोंमें प्रयुक्त हुए हैं ।

उकारान्तः पुंलिङ्गः भानुशब्दः ।

भानुः	भानू	भानवः	प्र०	भानोः	भानुभ्याम्	भानुभ्यः	पं०
भानुम्	भानू	भानून्	द्वि०	भानोः	भान्वोः	भानूनाम्	ष०
भानुना	भानुभ्याम्	भानुभिः	तृ०	भानौ	,,	भानुषु	स०
भानवे	,,	भानुभ्यः	च०	हे भानो	हे भानू	हे भानवः	सं०

उकारान्त पुंलिंगकी संज्ञाओंके 'भानु' शब्दके समान रूप बनाते समय तृ० ए० वचन और व० वचन इनमें जहां आवश्यक हो वहां 'न्' का 'ण्' करना चाहिए ।

(अ) पशुः, बन्धुः, बिन्दुः, मृत्युः, वायुः, विष्णुः शत्रुः, साधुः ।

(आ) असुः—प्राण*	प्रभुः—स्वामी	विधुः—चन्द्र
इषुः—बाण	राहुः—ग्रहका नाम	शम्भुः—शङ्कर
परशुः—कुल्हाडी	रिपुः—शत्रु	शिशुः—छोटा बच्चा

* असु और प्राण ये शब्द हमेषा बहुवचनान्त होते हैं ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

२ **मित्रस्य प्राणानां रक्षणो साधवः तन्वाः** (शरीरका) **त्यागम् अपि न गणायन्ति । खगाः चञ्चवा** (चोंचसे) **उदरं पूरयन्ति । अन्धाः कदाचित् रज्जुं** (रस्सीको) **सर्पं मन्यन्ते । दिलीपेन धेनोः** (गायसे) **वरः लब्धः ।**

ऊपरके वाक्योंमें ह्रस्व **उकारान्त** स्त्रीलिंगकी संज्ञाओंका उपयोग किया गया है। ह्रस्व '**उकारान्त**' स्त्रीलिंगकी संज्ञाके रूप धेनु शब्दके समान होते हैं।

उकारान्तः स्त्रीलिङ्गः धेनुशब्दः ।

धेनुः	धेनू	धेनवः	प्र०	धेनोः-न्वाः	धेनुभ्याम्	धेनुभ्यः पं०
धेनुम्	,,	धेनूः	द्वि०	,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम् ष०
धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः	तृ०	धेनो-न्वाम्	,,	धेनुषु स०
धेनवे-न्वै	,,	धेनुभ्यः	च०	हे धेनो	हे धेनू	हे धेनवः सं०

उकारान्त स्त्रीलिंगकी संज्ञाएँ—**चञ्चुः**-चोंच, **तनुः**-शरीर, **धेनुः**-गाय, **रज्जुः**-रस्सी।

३ **शोकेन नयनयोः अश्रूणि** (अश्रु) **उद्भवन्ति ।**
मधुपः एव मधुनः (शहदका) **मार्मिकः ।**
दुर्लभाय वस्तुने (वस्तुके लिए) **न स्पृहयति प्राज्ञः ।**
अल्पेन वसुना (द्रव्यसे) **न तुष्यति कदर्यः ।**

ऊपरके वाक्योंमें ह्रस्व उकारान्त नपुंसकलिंगकी संज्ञाओंके रूपोंका उपयोग किया गया है।

उकारान्तः नपुंसकलिङ्गः मधुशब्दः ।

मधु	मधुनी	मधूनि	प्र०	मधुनः	मधुभ्याम्	मधुभ्यः पं०
,,	,,	,,	द्वि०	,,	मधुनोः	मधूनाम् ष०
मधुना	मधुभ्याम्	मधुभिः	तृ०	मधुनि	,,	मधुषु स०
मधुने	,,	मधुभ्यः	च०	हे मधो-धु	हे मधुनी	हे मधूनि सं०

ह्रस्व उकारान्त संज्ञाएँ '**मधु**' शब्दके समान होती हैं और '**न**' का '**ण**' आवश्यक हो वहां करना चाहिए।

(अ) **अश्रु**, वस्तु।
(आ) **तालु**-मुखके अंदर ऊपरका भाग, **मधु**—शहद, **वसु**-धन

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

४ उकारान्त विशेषण

गुरुः भारः। पटुः–पट्वी कन्या। स्वादु फलम्।

उकारान्त विशेषणोंके रूप पुंलिंगमें 'भानु' शब्दके समान, स्त्रीलिंगमें 'धेनु' शब्दके समान अथवा दीर्घ 'ई' लगाकर 'नदी' शब्दके समान, नपुंसकलिंगमें 'मधु' शब्दके समान होते हैं। नपुंसकलिंगमें च०, पं०, ष०, और स० के एकवचनमें और षष्ठी–सप्तमीके द्विवचनमें विकल्पसे 'भानु' शब्दके रूपोंके समान भी रूप होते हैं।

जैसे स्वादु (न०)—स्वादुने-स्वादवे–च० ए० व०; स्वादुनः–स्वादोः–पं० और ष० ए० व०; स्वादुनि–स्वादौ–स० ए० व०; स्वादुनोः–स्वाद्वोः–ष० और स० द्वि० वचन.

उकारान्त विशेषण—**गुरु**–वजनदार, बड़ा, **चारु**–सुंदर, **तनु**–छोटा, बारीक, पतला, **पटु**–चतुर, **बहु**–बहुत, **मञ्जु**–मञ्जुल, **लघु**—थोडा, छोटा, **स्वादु**–मीठा, रुचिकर।

सूचना:—उकारान्त विशेषणके अन्त्य 'उ' के पूर्वमें यदि संयुक्त व्यञ्जन हो, तो स्त्रीलिंगमें केवल 'धेनु' शब्दके समान रूप होते हैं। जैसे–**पाराडुः रात्रिः**।

५ ऊकारान्त स्त्रीलिंगकी संज्ञा

शरय्वाः (शरयू नदीके) तीरे अयोध्या तिष्ठति। शत्रोः चमूनाम् (सैन्यके) उपरि वीरः बाणान् किरति। रामः वध्वा सह (पत्नीके साथ) अरण्यं गतः। स्नुषा श्वशुरं श्वश्रूं (साससे) च आपृच्छते जनकस्य गृहं गच्छति च।

ऊपर दिए हुए वाक्योंमें दीर्घ **ऊकारान्त** संज्ञाकी योजना की गई है। इन सज्ञाओंके रूप आगे दिए हुए 'वधू' शब्दके समान होते हैं।

ऊकारान्तः स्त्रीलिंगः 'वधू' शब्दः।

वधूः	वध्वौ	वध्वः	प्र०	वध्वाः	वधूभ्याम्	वधूभ्यः	पं०
वधूम्	,,	वधूः	द्वि०	,,	वध्वोः	वधूनाम्	ष०
वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः	तृ०	वध्वाम्	,,	वधूषु	स०
वध्वै	,,	वधूभ्यः	च०	हे वधु	हे वध्वौ	हे वध्वः	सं०

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ऊकारान्त स्त्रीलिंगकी संज्ञाः—चञ्चूः-चोंच, चमूः-सैन्य, चम्पूः-गद्यपद्यमय काव्य, वधूः-वहू, पत्नी, शरयूः-नदीका नाम, श्वश्रूः-सास।

सन्धिनियम

२७ बालः कमले ईक्षते—बालः कमले ईक्षते।

कवी आगच्छतः नृपस्य सभाम्—कवी आगच्छतः...।

क्रोधः लोभः च रिपू अतीव पीडाकरौ—...रिपू अतीव...।

एते द्वे वस्तुनी अहं गृह्णामि—...वस्तुनी अहं....।

नियमः—ऊपरके वाक्योंमें कमले, कवी, रिपू, वस्तुनी इन द्विवचनके शब्दोंके अन्त्य ई, ऊ और ए इनके आगे आए हुए स्वरके साथ उनकी सन्धि नहीं होती। इन स्वरोंको '**प्रगृह्य**' स्वर कहा जाता है।

२८ १ प्रभो अस्मान् रक्ष—प्रभो अस्मान् अथवा प्रभोऽस्मान्...।

२ इन्दो अद्य रम्यं तव विम्बम्—इन्दो अद्य अथवा इन्दोऽद्य...।

३ विष्णो इच्छामि मोक्षम्—विष्णो इच्छामि अथवा विष्णाविच्छामि—अथवा विष्णा इच्छामि...।

४ भानो एषः चण्डः प्रकाशः असह्यः—भानो एषः...अथवा भानवेषः ...अथवा भान एषः...।

नियमः—ऊपरके वाक्योंसे यह दिखाई देगा कि सम्बोधनवाचक स्वरान्त पदोंकी आगे आनेवाले स्वरोंसे विकल्पसे सन्धि होती है; और जब सन्धि होती है, तब पहला स्वर 'ओ' और आगेका स्वर 'अ' हो तो उस 'अ' का लोप करके उसके स्थानमें (ऽ) अवग्रह लिख दिया जाता है; और अन्य स्वर हो तो 'ओ' का 'अव्' में परिवर्तन करके उसका 'व्' आगेके स्वरमें मिलाकर उसका पूर्णोच्चार करते हैं अथवा 'व्' का लोप करते हैं।

२९ वन्दामहै ईश्वरं वयम्—वन्दामहा ईश्वरं (हम नमस्कार करें) अथवा—वन्दामहार्यीश्वरं...।

लभै अहं फलम्-लभायहं अथवा लभा अहं...। (मिले)

तस्मै अलङ्कारं यच्छामि—तस्मा अलङ्कारम्...।

अथवा— तस्मायलङ्कारम्...।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

नियम:--यदि पदके अन्त्य 'ऐ' के पश्चात् कोई भी स्वर आवे, तो 'ऐ' का 'आय्' करके 'य्' को अगले स्वरमें मिलाकर पूर्णाच्चर किया जाता है अथवा 'य्' का लोप कर दिया जाता है।

३० कलौ एवं विचित्रः प्रकारः जायते--कलावेवं-अथवा कला एवं...।
गुरौ अतीव स्नेहः छात्राणाम्—गुरावतीव अथवा गुरा अतीव...।
रात्रौ इतस्ततः सञ्चरन्ति राक्षसाः—रात्राविवतस्ततः अथवा रात्रा इतस्ततः...।

नियम:--शब्दके अन्त्य 'औ' का आगेके स्वरसे सन्धि करते समय 'आव्' करके उसमेंका 'व्' आगेके स्वरमें मिलाकर पूर्णाच्चर किया जाता है अथवा 'व्' का लोप होता है।

सूचना—'य्' अथवा 'व्' का लोप होनेसे पास आनेवाले स्वरोंकी पुनः सन्धि नहीं होती।

नए शब्द

(अ) त्यागः, प्रसिद्ध (वि०), वरः, शोकः, सभा।

(आ) **अन्ध** (वि०)-अंधा
आस्पदम्-जगह, स्थान
आह्लाद् (१ आ० प०)-प्रसन्न होना
आह्लादयति (प्रेरणार्थक) प्रसन्न करना।
उद् + लङ्घ (१ आ० प० -१० प० प० उल्लङ्घते -उल्लङ्घयति)-उल्लंघन करना
कदर्यः-कृपणाः-कञ्जूष मनुष्य
कलङ्कः-दाग, धब्बा
कीटः-कीटकः-कीडा
घटः-घड़ा
चातकः-एक पक्षी
दिलीपः-रघुवंशके राजाका नाम
निपातः-गिरना
निषिद्ध (वि०)-निषेध किया हुआ, रोका हुआ
पूर्-(४ आ० प०-पूर्यते, १० उ० प० पूरयति-ते)-भरना
पौरः-नगरका रहनेवाला, नागरिक
मधुपः-भ्रमर
मार्मिकः-मर्म जाननेवाला
विनीत (वि०)-विनयशील

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ आगे दिए हुए वाक्योंमें कोष्टकके शब्दोंके योग्य रूपोंका प्रयोग करो:—

१ (वसु) लाभेन नरः आदरास्पदं भवति ।

२ (राहु) पीडयति (विधु) (भानु) च ।

३ (शिशु) आननं जननीम् आह्लादयति ।

४ (साधु) (तनु) परोपकाराय वर्तते ।

५ (वारि) (विन्दु) निपातः घटं पूरयति ।

६ (रघु) (चमू) सह दिग्विजयाय प्रस्थितः ।

७ भृत्याः (प्रभु) आदेशम् अनुरुध्यन्ते ।

८ (वधू) श्वशुरं (श्वश्रू) च नमति ।

९ (चक्षु) विहगः कोटकान् उद्धरन्ति ।

१० (अश्रु) आकुले नयने बालस्य ।

२ आगे दी हुई संज्ञाओंके अनुरूप विशेषणोंके रूपोंका प्रयोग करो:—

(पटु) ललनाः । (गुरु) भारेण । (लघु) नयने । (स्वादु) फलानि । (चारु) चित्रे । मञ्जु (स्वरस्य) । (मृदु) व्यञ्जनानाम् । (भीरु) नार्या ।

३ आगे दिए हुए रूपोंको पहिचानो और उनका वाक्योंमें उपयोग करो:—

रिपोः, धेन्वाः, वस्तूनाम्, इन्दौ, शरण्वाम् ।

४ सन्धि करो:—प्रभो अस्माकं शरणम् असि । कलौ एतानि कृत्यानि निषिद्धानि । कालिदासः भवभूतिः च द्वौ कवी एतस्मिन् भारतवर्षे अतीव प्रसिद्धौ । कृपः द्रोणः च कौरवाणां गुरू आस्ताम् ।

५ सन्धि विश्लेषण कर लिखो:—इन्दू रात्रावुदयत आकाशे । मुना अतीव विश्वासश्छात्राणाम् । विद्यावैकः कलङ्को वर्तते ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

पाठ १५—कर्मवाच्य और भाववाच्य

१ (अ) **बालः ईश्वरं नमति-वन्दते**—लडका ईश्वरको वन्दन करता है।
बालेन ईश्वरः नम्यते-वन्द्यते—लडकेसे ईश्वरको नमस्कार किया जाता है।

(आ) **त्वं कन्दुकान् क्षिपसि**—तू गेन्द फेंकता है।
त्वया कन्दुकाः क्षिप्यन्ते—तुझसे गेन्दें फेंकी जाती हैं।

(इ) **ईश्वरः अस्मान् पश्यति**—ईश्वर हमको देखता है।
ईश्वरेण वयं दृश्यामहे—ईश्वरसे हम देखे जाते हैं।

ये तीनों वाक्य दो दो प्रकारसे लिखे गए हैं। उनके अर्थमें भेद नहीं है, परंतु उनकी रचनामें अन्तर है। पहले प्रकारमें **कर्तृपदको** प्राधान्य दिया है और दूसरेमें **कर्मपदको**। इस लिए पहला कर्तृवाच्य और दूसरा कर्मवाच्य है। इन वाक्योंमें क्रियाएँ **सकर्मक** हैं। पहले प्रकारमें प्रथमान्त कर्तृपदके अनुसार क्रियाके पुरुष और वचन हैं और दूसरे प्रकारमें प्रथमान्त कर्मपदके पुरुष और वचनके क्रियाका रूप प्रयुक्त हुआ है और कर्तृपद तृतीया विभक्तिमें रखा गया है।

अब क्रियाके रूप कर्मवाच्य के कैसे हुए यह देखें:—

नम्यते – नम् + य + ते	क्षिप्यन्ते – क्षिप् + य + अन्ते
वन्द्यते – वन्द् + य + ते	दृश्यामहे – दृश् + य + महे

इससे यह दिखाई देगा कि सामान्यतः कर्मणि प्रकारका रूप बनाते समय मूल धातुको प्रथम लेना चाहिए, उसे यह चिह्न जोड़ कर फिर योग्य हों, वे आत्मनेपदके प्रत्यय लगाना चाहिए।

२ (अ) **बालः आसने उपविशति—बालेन आसने उपविश्यते।**
(आ) **त्वं भृत्याय कुप्यसि—त्वया भृत्याय कुप्यते।**
(इ) **वयं विजयेन मोदामहे—अस्माभिः विजयेन मुद्यते।**

ऊपर दिए हुए वाक्योंके दोनों प्रकारोंमें अर्थभेद नहीं है; परंतु रचनामें तो भेद अवश्य है। इन वाक्योंकी क्रियाएँ अकर्मक होनेसे उपर्युक्त रीतिसे कर्मवाच्यके अनुसार रचना नहीं हुई। कर्तृपदकी तृतीया विभक्ति हुई है और क्रियाका रूप

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

कर्मवाच्यके समान अन्य पुरुषके एकवचनमें रक्खा गया है। इस रचनामें क्रियाका भाव महत्त्वका है। इस वाच्यको **भाववाच्य** कहते हैं।

सूचनाः—हिन्दीका भाववाच्य और संस्कृत का भावप्रयोग ये समान हैं। हिन्दीमें भाववाच्य संस्कृतके समान केवल अकर्मक क्रियाओंकाही होता है।

(आगे दिए हुए परिवर्तन आवश्यकतानुसार पढाए जावें। संदर्भकी सुविधाके लिए वे एकत्रित करके यहाँ दिए जाते हैं।)

'य' के पूर्वमें होनेवाले परिवर्तन

(१) धातु	जि	श्रु	श्रि	ह्रि	
कर्तरि रूप	जयति	शृणोति	श्रयति-ते	ह्रयति	
कर्मणि रूप	जीयते	श्रूयते	श्रीयते	ह्रीयते	

इससे यह कहा जा सकता है कि धातुका अन्त्य ह्रस्व, 'इ' अथवा 'उ' 'य' के पहले क्रमशः दीर्घ 'ई' अथवा 'ऊ' होता है।

(२) धातु	दा	पा	(अनु) स्था	गै	(अव) सो	
कर्तरि	यच्छति	पिबति	अनुतिष्ठति	गायति	अवस्यति	
कर्मणि	दीयते	पीयते	अनुष्ठीयते	गीयते	अवसीयते	

परंतु

धातु	ज्ञा	स्ना (२ ग०प०प०)	पा (२ ग०प०प०)	त्रै	
कर्तरि	जानाति	स्नाति	पाति	त्रायते	
कर्मणि	ज्ञायते	स्नायते	पायते	त्रायते	

इस परसे यह दिखाई देगा कि कर्मणि 'य' के पहले दा, स्था, पा, गै, अव + सो, इनके अन्त्य स्वरके स्थान पर 'ई' यह स्वर आता है; परंतु ज्ञा, त्रै और द्वितीय गणके आकारान्त धातु इनका अन्त्य स्वर 'य' के पहले 'आ' ही रहता है।

(३) धातु	कृ	हृ (अनु) सृ	धृ (१ ग० प० प०)		परंतु	
कर्तरि	करोति	हरति	सरति	धरति	स्मृ	ऋ	स्वृ
कर्मणि	क्रियते	ह्रियते	स्रियते	ध्रियते	स्मरति	ऋच्छति	स्वरति
					स्मर्यते	अर्यते	स्वर्यते

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

ह्रस्व ऋकारान्त धातुओंके 'अन्त्य' ऋके स्थानपर 'य' के पहले 'रि' होता है। परंतु 'ऋ' के पूर्वमें यदि संयुक्त-व्यञ्जन हो तो 'ऋ' का 'अर्' होता है। उसी प्रकारसे 'ऋ' धातुका भी 'अर्' होता है।

(४) धातु यज् वद् वह् वस् (आ) ह्वे स्वप् (२ ग० प० प०) ग्रह् प्रच्छ्

कर्तरि	यजति	वदति वहति वसति	ह्वयति स्वपिति गृह्णाति पृच्छति
कर्मणि	इज्यते	उद्यते उह्यते उष्यते	हूयते सुप्यते गृह्यते पृच्छ्यते

उपर्युक्त धातुके कर्मवाच्यके रूपोंकी रचनामें उनके य्, व् और र् के स्थान पर क्रमशः इ, उ, और ऋ हुआ है। इस परिवर्तनको **'सम्प्रसारण'** कहते हैं। य्, व्, र् के स्थान पर इ, उ, ऋ होनेके पश्चात् आगामी स्वरका लोप होता है। जैसे—यज्-इ+ज्+य+ते-इज्यते (य्+अ-इ)

स्वप्-स्+उ+प्+य+ते-सुप्यते (स्+व्+अ-सु)

(५) धातु शंस् स्रंस् ध्वंस् दंश् भ्रंश् बन्ध् (९ ग० प० प०)

कर्तरि	शंसति	स्रंसते ध्वंसते	दंशति भ्रंशते बध्नाति
कर्मणि	शस्यते	स्रस्यते ध्वस्यते	दश्यते भ्रश्यते बध्यते

ऊपरकी धातुके अनुनासिकोंका 'य' के पूर्व लोप होता है।

(६) धातु तड् तुल् धृ (१० ग०) धू — १० गणके धातु

कर्तरि	ताडयति	तोलयति	धारयति धूनयति
कर्मणि	ताड्यते	तोल्यते	धार्यते धून्यते

धातु नश् (प्रेरणार्थक) तुष् (प्र०) दृश् (प्र०) — प्रेरणार्थकके रूप

कर्तरि	नाशयति	तोषयति	दर्शयति
कर्मणि	नाश्यते	तोष्यते	दर्श्यते

ऊपरके उदाहरणोंसे यह दिखाई देगा कि, दशम गणके धातुओंमें और प्रेरणार्थक क्रियाओंमें 'अय' के पूर्व जो परिवर्तन होते हैं वे 'कर्मवाच्य' के 'य' के पहले भी विद्यमान रहते हैं।

(७) धातु तॄ खन् जन्

कर्तरि	तरति	खनति	जायते
कर्मणि	तीर्यते	खन्यते-खायते	जन्यते-जायते

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

कर्मवाच्यके 'य' के पूर्वमें 'तृ' धातुनेके 'ऋ' का 'ईर्' होता है। जन् और खन् इनके विकल्पसे 'य' के पहले 'जा' और 'खा' ऐसे रूप होते हैं।

३ पान्थः गोविन्दं मार्गं पृच्छति-पान्थेन गोविन्दः मार्गं पृच्छ्यते। भिक्षुकः धनिकं धनं याचते-भिक्षते-भिक्षुकेण धनिकः धनं याच्यते-भिक्ष्यते वा।

जननी बालं देवायलं नयति-जनन्या बालः देवायलं नीयते।

ऊपरके वाक्योंमें प्रच्छ्, याच् और नी ये द्विकर्मक धातु हैं। जिसको पूछना हो, जिसकी याचना करना हो, और जिस स्थानको ले जाना हो उनके वाचकशब्द **गौण कर्मपद** और जो पूंछना हो, जो मांगना हो, और जो ले जाना हो उनके वाचकशब्द **मुख्य कर्मपद** होते हैं। ऐसे वाक्योंका कर्मवाच्यमें परिवर्तन करते समय **पृच्छ्** और **याच्** इनके गौण कर्मपदकी प्रथमा विभक्ति करना चाहिए और **नी** धातुके मुख्य कर्मपदकी। अन्य कर्मपद द्वितीया विभक्तिमें ही रखना चाहिए।

प्रथम भूतकाल (कर्मवाच्यके रूप)

	कर्तरि	कर्मणि	पृथक्करण
४	कृ—अकरोत्	अकियत	अ + कृ (कि) + य + त
	तड्—अताडयत्	अताडयत	अ + तड् (ताड्) + य + त
	यज्—अयजत्	ऐज्यत	आ + यज् (इज्) + य + त
	जि—अजयत्	अजीयत	अ + जि (जी) + य + त
	दा—अयच्छत्	अदीयत	अ + दा (दी) + य + त
	वि + स्मि—व्यस्मयत्	व्यस्मीयत	वि + अ + स्मि (स्मी) + य + त
	स्मृ—अस्मरत्	अस्मर्यत	अ + स्मृ (स्मर्) + य + त
	प्र + शंस्—प्राशंसत्	प्राशस्यत	प्र + अ + शंस् (शस्) + य + त
	दृश्—अपश्यत्	अदृश्यत	अ + दृश् + य + त
	इष्—ऐच्छत्	ऐष्यत	आ + इष् + य + त

ऊपर दिए हुए भूतकालके कर्मवाच्यके अन्य पु० के एकवचनके उदाहरणोंसे यह दिखाई देगा कि—प्रथम भूतकालमें कर्मवाच्यके रूप बनाते समय प्रथम

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

'अ' अथवा 'आ' यह आगम, फिर मूलधातु अथवा 'य' के पूर्वमें होनेवाला रूप, फिर 'य' यह कर्मवाच्यका चिह्न और अन्तमें प्रथम भूतकालके आत्मनेपदके प्रत्यय इस क्रमसे परिवर्तन किए जाते हैं।

सूचनाः--अधिक ज्ञानके लिए संस्कृत वाक्यरचना पाठ १४ देखो।

सन्धिनियम

३१ वनात् आगच्छति मुनिः--वनादागच्छति.....।
आगच्छत् एकदा कश्चित् पान्थः—आगच्छदेकदा.....।
ककुभ् + अन्तः--ककुबन्तः (समास)। (दिशाका अग्र)
समिध् + आहरणम्—समिदाहरणम् (समास)। (समिधा लाना)

नियमः--ऊपरके उदाहरणोंसे यह दिखाई देगा कि यदि शब्दके अन्तमें किसीभी वर्गके अनुनासिकके अतिरिक्त अन्य व्यञ्जन आवे और उसके आगे स्वर हो तो पिछले व्यञ्जनके स्थानपर उसी वर्गका तृतीय व्यञ्जन होता है।

३२ नगरात् बहिः गच्छति दूतः—नगराद्बहिः.....।
आसनात् गुरुः उत्तिष्ठति—आसनाद्गुरुः.....।
ककुभ् + मार्गः—ककुब्मार्गः। (समास) दिशाका मार्ग।
समिध् + भङ्गः—समिद्भङ्गः। (समास) समिधाका टुकडा।

नियमः—यदि किसीभी वर्गके अनुनासिकके अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जनके आगे मृदु व्यञ्जन आवे, तो पिछले व्यञ्जनके स्थानपर उसी वर्गका तृतीय व्यञ्जन आता है।

३३ नगरात् नगरं भ्रमति भिक्षुकः—नगराद्नगरं किंवा नगरान्नगरं...।
अपश्यत् मण्डलं सूर्यस्य बालः—अपश्यद् मण्डलं किंवा अपश्यन्मण्डलं...।

नियमः—यदि किसीभी वर्गके अनुनासिकके अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जनके आगे अनुनासिकसे आरम्भ हुआ शब्द आवे तो पिछले व्यञ्जनके स्थानपर उसी वर्गका तृतीय व्यञ्जन अथवा अनुनासिक आता है।

३४ मृद् + मयः (घटः)—मृन्मयः घटः (मिट्टीका बना हुआ बर्तन)
तद् + मयः (भक्तः)—तन्मयः भक्तः (तल्लीन हुआ भक्त)

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

नियमः—यदि किसीभी वर्गके अनुनासिकके अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जनके आगे यदि अनुनासिकसे आरम्भ हुआ प्रत्यय आवे, तो पीछेके व्यञ्जनके स्थानपर उसी वर्गका अनुनासिक आता है।

नए शब्द

(अ) आरोग्यम्, व्यायामः।

(आ) **तुला**–तराजू
दुर्गः-गम्—किला, जंगलमें-का विकट मार्ग
ध्रुवः—विष्णुभक्तका नाम
भेदः—भेद करना
मण्डलम्—बिम्ब, गोलाई, समुदाय
वर्षा—बरसात, वर्षाकाल
वि + दृ (१० उ० प०–विदारयति–ते)—फाड़ना, टुकडे करना
स्वीकृत (वि०)– स्वीकार किया हुआ
सो (अव–अवस्यति–च०ग०प०प०) अंत होना, पूर्ण होना, खतम होना

प्रश्न

१ कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य ये नाम क्रियाके प्रयोगोंको क्यों दिए गए हैं यह सोदाहरण बताओ।

२ आगे दिए हुए वाक्योंमें वाच्यका परिवर्तन करो :—
१ नरः उद्यमेन धनम् अधिगच्छति। २ शत्रवः शरैः सैनिकान् प्रहरन्ति।
३ व्यायामेन आरोग्यं वर्धते। ४ नृपाः चारैः राज्यतन्त्रं पश्यन्ति।
५ स्वयंवरमण्डपे राजपुत्राः निषीदन्ति। ६ सेवकाः माम् अनुसरन्ति।
७ यूयम् अरण्ये वसथ। ८ वृद्धः नृपः पुत्रे राज्यं* वितरति।
९ कलानाम् उत्कर्षेण देशः समृध्यति। १० गुरुः युवाम् आह्वयति।

३ आगेके वाक्योंमें कोष्टककी क्रियाओंके योग्य रूपोंकी योजना करो :—
१ विष्णुः ध्रुवाय दर्शनं (दा)। २ धनाय नरैः प्रयत्नः (कृ)।
३ क्रीडया बालैः (मुद्)। ४ दुर्गस्य भेदेन सैनिकाः वीरैः (प्रशंस्)।
५ योधाः अरीन् (वि+जि)। ६ सुवर्णकारेण तुलया सुवर्णं (तुल्)।

---

* वि + तृ–देना, हवाले करना, इस क्रियाका उपयोग जिसको देना हो उसकी सप्तमी करके करते हैं। कभी २ चतुर्थीकी भी योजना करते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

७ कृषीवलैः वर्षासु† क्षेत्रे बीजानि (वप्)। ८ सिंहेन अरण्ये मृगाः (वि+दृ)
९ प्राज्ञाः स्वीकृतात् कार्यात् न (वि+रम्)‡। १० जनन्या बालः क्रीडाङ्गणात् (आह्वे)।

४ ऊपरके प्रश्न ३ में दी हुई क्रियाके प्र० भूतकालके रूप वाक्योंके वाच्यके अनुसार लिखो।

५ सन्धि करो:—ग्रामात् ग्रामम् अटति पान्थः। वाक् + ऐश्वर्यम्। वृक्षात् अपतत् बालकः। अवसत् एकदा ऋषिः आश्रमे।

६ सन्धि विश्लेषण करके लिखो.—दूरादागतं दूतमीक्षते नृपः। वृक्षाद्वृक्षमुत्प्लवन्ते वानराः। वनाद्रामो न्यवर्तत।

पाठ १६—कर्मणिभूतकालवाचक कृदन्त विशेषण और पूर्वकालवाचक (ल्यबन्त) कृदन्त अव्यय

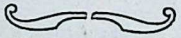

कर्मणि भूतकालवाचक कृदन्त विशेषणोंका उपयोग कैसे करना चाहिए यह सामान्यतः विशेषणके पाठमें प्रदर्शित किया गया है। परंतु उनका उपयोग करते समय वाक्यरचना विशेष प्रकारकी क्यों होना चाहिए यह आगे दिए हुए उदाहरणोंसे ध्यानमें आवेगा।

१ रामः निश्चयम् अकरोत्—रामेण निश्चयः अक्रियत-कृतः वा।
नृपः वार्ताम् अशृणोत्—नृपेण वार्ता अश्रूयत-श्रुता वा।
बालः चन्द्रस्य बिम्बम् अपश्यत्—बालेन चन्द्रस्य बिम्बम् अदृश्यत-दृष्टं वा।

---

† वर्षाः (बरसात) यह स्त्रीलिंगी शब्द बहुवचनमें आता है।

‡ वि+रम् (ठहरना) इस क्रियामें जिसको ठहराना हो उसके वाचक शब्द का उपयोग पंचमी विभक्तिमें होता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ऊपर दिए हुए वाक्योंमेंकी क्रियाएं **सकर्मक** हैं। इस लिए कर्मवाच्यकी रचना करके उसमें क्रियाके स्थानपर कर्मणि भू० का० कृदन्त विशेषणोंका प्रयोग किया जा सकता है। सकर्मक धातुके कर्मणि भू० का० कृदन्त विशेषणोंका उपयोग करते समय कर्मवाच्यके समान वाक्यरचना करना चाहिए।

१ समुद्रः वायुना अक्षुभ्यत्-क्षुब्धः वा। समुद्रेण वायुना अक्षुभ्यत-क्षुब्धम् वा।

अर्जुनः रणाङ्गणे अतिष्ठत्-स्थितः वा। अर्जुनेन रणाङ्गणे अस्थीयत-स्थितं वा।

नृपः विजयेन अमोदत-मुदितः वा। नृपेण विजयेन अमुद्यत-मुदितं वा।

ऊपर दिए हुए वाक्योंमेंकी क्रियाएं **अकर्मक** हैं। इस लिए अकर्मक धातुके कर्मणि भू० का० कृदन्त विशेषणोंका उपयोग कर्तृवाच्य और भाववाच्य ऐसे दोनों प्रकारकी रचनाओंके समान किया जाता है। कर्तृवाच्यकी वाक्यरचनामें यदि योजना की जावे तो उनके रूप प्रथमान्त कर्तृपदके अनुसार होते हैं और भाववाच्य की वाक्यरचनामें यदि योजना की जावे, तो उनके रूप न० प्रथमा विभक्तिके एकवचनमें होते हैं। इनमेंसे कर्तृवाच्यकी वाक्यरचनामें योजना करनेकी रीति अधिक प्रचलित है। परंतु कहीं कहीं दूसरे प्रकारकी पद्धतिका उपयोग भी किया हुआ पाया जाता है, जैसे—बालैः स्मितम्-हसितम्।

सूचनाः—विशेष ज्ञानके लिए सं० वाक्यरचना पाठ २० देखो।

ऊपर दिए हुए रूप धातुको 'त' प्रत्यय लगाकर बनाये गए हैं। कुछ धातुको 'त' के पहले 'इ' यह स्वर जोड़ देते हैं, कुछ धातुको विकल्पसे 'इ' जोड़ते हैं और किसी को बिलकुल नहीं जोड़ते; जब 'इ' नहीं जोड़ते 'तव' का सन्धिनियमानुसार 'ट, ड, ध और न' होता है।

पूर्वकालवाचक (ल्यबन्त) कृदन्त अव्यय

३ मुखं क्षालयित्वा बालः दुग्धं पिबति—मुख धोकर लडका दूध पीता है।
निराशः भूत्वा शृगालः न्यवर्तत—निराश होकर शृगाल वापिस लौटा।
सीतां त्यक्त्वा रामः दुःखितः जातः—सीताका त्याग कर राम दुखी हुआ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

पुस्तकानि आदाय बालः पाठशालां गतः—पुस्तकें लेकर लडका पाठशालाको गया।

वृक्षस्य तले विश्रान्तिम् अनुभूय पान्थः चलितः—वृक्षके नीचे विश्रान्ति लेकर पथिक चलता हुआ।

धर्मम् अनुसृत्य नरः पुण्यं लभते—धर्मका अनुसरण करके मनुष्यको पुण्यका लाभ होता है।

ऊपरके वाक्योंमें **क्षालयित्वा, भूत्वा, त्यक्त्वा, आदाय, अनुभूय, अनुसृत्य** ये पूर्वकालवाचक कृदन्त (ल्यबन्त) अव्यय हैं। वाक्योंकी रचनासे यह प्रतीत होगा कि जब एकही कर्तृपदसे एकसे अधिक क्रियाका संबंध होता है तब अन्त की क्रिया के अतिरिक्त दूसरी पूर्ण हुई क्रियाओंके स्थान पर इन अव्ययोंका उपयोग करते हैं।

सूचनाः—पूर्वकालवाचक कृदन्त अव्ययका अर्थ हिन्दीमें धातुको 'कर' या 'करके' प्रत्यय लगाकर व्यक्त किया जाता है।

क्षालयित्वा–क्षल्–क्षाल् + अय + इ + त्वा। भूत्वा–भू + त्वा। त्यक्त्वा–त्यज् + त्वा।

आदाय – आ + दा + य। अनुभूय – अनु + भू + य। अनुसृत्य – अनु + सृ + त्य।

ऊपर दिए हुए पृथक्करणसे यह ध्यानमें आवेगा कि सामान्यतः धातुको 'त्वा' यह प्रत्यय लगाकर पूर्वकालवाचक कृदन्त अव्यय बनाए जाते हैं। परंतु धातु यदि उपसर्गसहित हो तो 'य' यह प्रत्यय लगाया जाता है और यदि उपसर्गसहित धातुका अन्त्य स्वर, ह्रस्व हो तो 'य' के पहले 'त्' भी जोड़ दिया जाता है। 'त्वा' यह प्रत्यय जोड़ते समय कुछ धातुको 'त्वा' के पहले 'इ' वर्ण जोड़ा जाता है। कुछ धातूको यह 'इ' विकल्पसे लगाया जाता है, और किसीको लगता ही नहीं।

सूचनाः—'त्वा' प्रत्यय लगाकर होनेवाले पूर्वकालवाचक कृदन्त अव्ययोंको 'क्त्वान्त' कहना चाहिए और 'य' प्रत्यय लगाकर होनेवाले अव्ययोंको 'ल्यबन्त' परन्तु दोनों प्रकारके कृदन्त अव्ययों को 'ल्यबन्त' ही कहने की रीतसी हो गई है।

अधिक ज्ञानके लिए संस्कृत-वाक्यरचना पाठ २१ देखो।

साधारणतः कर्मणि भू० का० कृदन्त विशेषणोंका 'त' और ल्यबन्तका 'त्वा' इनके पहले धातुमें एकसेही परिवर्तन होते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

कुछ महत्त्वपूर्ण धातुओंके रूप

(आगेके रूप आवश्यकतानुसार कण्ठाग्र किए जावें। इस जगह संदर्भके लिए वे एकत्र दिए जाते हैं। एक साथ अध्ययन करने के लिए नहीं।)

१ स्वरान्त धातुमें अपरिवर्तनशील स्वरान्त धातुमें परिवर्तनशील

ज्ञा – ज्ञात – ज्ञात्वा (अनुज्ञाय)	दा – दत्त – दत्त्वा (आदाय)
जि – जित – जित्वा (विजित्य)	पा – पीत – पीत्वा (निपीय)
श्रि – श्रित – श्रित्वा (आश्रित्य)	स्था – स्थित – स्थित्वा (प्रस्थाय)
नी – नीत – नीत्वा (आनीय)	उद् + स्था – उत्थित (उत्थाय)
भू – भूत – भूत्वा (अनुभूय)	डी – डीन – डयित्वा (उड्डीय)
कृ – कृत – कृत्वा (अनुकृत्य)	तॄ – तीर्ण – तीर्त्वा (अवतीर्य)
धृ – धृत – धृत्वा (उद्धृत्य)	गै – गीत – गीत्वा (अनुगीय)
सृ – सृत – सृत्वा (अनुसृत्य)	त्रै – त्राण-त-त्रात्वा (परित्राय)
हृ – हृत – हृत्वा (प्रहृत्य)	

२ धातुमेंके य्, व्, र् के स्थान पर इ, उ, ऋ, वर्णोंको ग्रहण करनेवाली।

यज् – इष्ट – इष्ट्वा (प्रेज्य)	वह् – ऊढ – ऊढ्वा (प्रोह्य)
वद् – उदित – उदित्वा (अनूद्य)	व्यध् – विद्ध – विद्ध्वा (अनुविध्य)
वप् – उप्त – उप्त्वा (प्रोप्य)	स्वप् (२ग०प०प०) सुप्त – सुप्त्वा (प्रसुप्य)
वच् (२ ग० प० प०) – उक्त – उक्त्वा (प्रोच्य)	ह्वे – हूत – हूत्वा (आहूय)
वस् – उषित – उषित्वा (प्रोष्य)	ग्रह् – गृहीत – गृहीत्वा (अनुगृह्य)
	प्रच्छ् – पृष्ट – पृष्ट्वा (आपृच्छ्य)

३ धातुमेंके अन्त्य म् अथवा न् का लोप ग्रहण करनेवाली।

गम् – गत – गत्वा (आगम्य-त्य)	मन् – मत – मत्वा (अनुमत्य)
नम् – नत – नत्वा (प्रणम्य-त्य)	हन् – (२ ग० प० प०) हत – हत्वा (विहत्य)
यम् – यत – यत्वा (संयम्य-त्य)	खन् – खात – खनित्वा – खात्वा (निखन्य – निखाय)
रम् – रत – रत्वा (विरम्य-त्य)	जन् – जात – जनित्वा (सञ्जाय-सञ्जन्य)

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundati

४ पच् – पक्व – पक्त्वा (विपच्य)
सिच् – सिक्त – सिक्त्वा (अभिषिच्य)
मुच् – मुक्त – मुक्त्वा (उन्मुच्य)
त्यज् – त्यक्त – त्यक्त्वा(सन्त्यज्य)
भज् – भक्त – भक्त्वा (विभज्य)
भुज् (७ ग० प० प०) भुक्त – भुक्त्वा (उपभुज्य)
युज् – युक्त – युक्त्वा (प्रयुज्य)

तप् – तप्त – तप्त्वा (सन्तप्य)
लिप् – लिप्त – लिप्त्वा (विलिप्य)
शप् – शप्त – शप्त्वा (संशप्य)
लुभ् – लुब्ध – लुब्ध्वा (प्रलुभ्य)
रभ् – रब्ध – रब्ध्वा (आरभ्य)
लभ् – लब्ध – लब्ध्वा (विप्रलभ्य)

५ सृज्–सृष्ट–सृष्ट्वा (विसृज्य)
दिश्–दिष्ट–दिष्ट्वा (सन्दिश्य)
दृश्–दृष्ट–दृष्ट्वा (सन्दृश्य)
नश्–नष्ट–नष्ट्वा–नंष्ट्वा–नशित्वा (प्रणश्य)
मृश्–मृष्ट–मृष्ट्वा (विमृश्य)

स्पृश्–स्पृष्ट–स्पृष्ट्वा (उपस्पृश्य)
विश्–विष्ट–विष्ट्वा (प्रविश्य)
कृप्–कृष्ट–कृष्ट्वा (आकृष्य)
तुष्–तुष्ट–तुष्ट्वा (सन्तुष्य)
पुष्–पुष्ट–पुष्ट्वा (सम्पुष्य)

६ क्रुध्–क्रुद्ध–क्रुद्ध्वा (सङ्क्रुध्य)
दह्–दग्ध–दग्ध्वा (प्रदह्य)
नह्–नद्ध–नद्ध्वा (सन्नह्य)

मुह्–मूढ·मुग्ध-मूढ्वा, मुग्ध्वा, मुहित्वा, मोहित्वा (विमुह्य)
रुह्–रूढ–रूढ्वा (आरुह्य)
सह्–सोढ–सोढ्वा–सहित्वा (विषह्य)

७ क्षम्–क्षान्त–क्षान्त्वा–क्षमित्वा (प्रक्षम्य)।
इसी प्रकार—क्रम्, क्रम्, दम्, भ्रम्, शम्, श्रम्।
दृप्–दृप्त–दृप्त्वा–दर्पित्वा (अभिदृप्य)। इस प्रकार तृप्, क्लृप्।

८ सञ्ज्–सक्त–सक्त्वा (प्रसज्य), दंश्–दष्ट–दष्ट्वा (सन्दश्य), भ्रंश्–भ्रष्ट–भ्रष्ट्वा–भ्रंशित्वा (प्रभ्रश्य)। इसी प्रकार शंस्, स्रंस्।

९ खिद्–खिन्न–खित्त्वा (विखिद्य), सद्–सन्न–सत्त्वा (विषद्य), पद्–पन्न–पत्त्वा (प्रतिपद्य)।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

१० रक्ष्–रक्षित–रक्षित्वा (संरक्ष्य) | जीव्–जीवित–जीवित्वा (अनुजीव्य)
मुद्–मुदित–मुदित्वा (प्रमुद्य) | कुप्–कुपित–कुपित्वा (प्रकुप्य)

क्लिश्–क्लिष्ट–क्लिशित–क्लिशित्वा, क्लिश्त्वा (विक्लिश्य)

११ *कथ्–कथित–कथयित्वा (अनुकथ्य) | कृ (कारय)–कारित–कारयित्वा (अनुकार्य)
तड्–ताडित–ताडयित्वा (अभिताड्य) | स्था (स्थापय)–स्थापित–स्थापयित्वा (प्रस्थाप्य)
चुर्–चोरित–चोरयित्वा (अपचोर्य)

सन्धिनियम

३५ प्रासादात् जनं पश्यति नृपः—प्रासादाद् जनं–प्रासादाज्जनं...।
एतान् जनान् रक्षति नृपः—एताञ्जनान्...।
गृहात् चोरः निर्गतः—गृहाच्चोरः...।
एतस्मिन् शत्रौ दयां न करोति रामः—एतस्मिञ्शत्रौ...।

नियमः—'त् वर्गके व्यञ्जन अथवा स्' इनकी और 'च वर्गके व्यञ्जन अथवा श्' इनकी सन्धि होते समय त् के बदले च्, द् के बदले ज्, ध् के बदले झ्, न् के बदले ञ् और स् के बदले श् ऐसे परिवर्तन होते हैं।

३६ तस्मात् शत्रोः धनं लभन्ते सैनिकाः–तस्माच्शत्रोः अथवा तस्माच्छत्रोः...।
तद् श्मशानं भीषणम्–तच्श्मशानं अगर तच्छ्मशानं...।
गृहात् श्वः गच्छति रामः—गृहाच्श्वः अगर गृहाच्छ्वः...।

---

*दशम गणाकी धातु और प्रेरणार्थक क्रियाएँ इनके कर्मणि भू० का० कृदन्त विशेषण बनाते समय 'अय' का लोप करके 'इत' प्रत्यय जोड़ दिया जाता है और ल्यबन्त अव्ययके समय 'अय' रखकर 'इत्वा' प्रत्यय जोड़ देना चाहिए। इन रूपोंमें 'अय' के पहले होनेवाले परिवर्तन कायम रहते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

नियमः—ऊपर दिए हुए नियम ३५ के अनुसार पहले त् का च् हुआ और तत्पश्चात् विकल्पसे 'श् का छ्' हुआ है। श् से आरम्भ होनेवाले शब्दके पहले यदि किसी भी वर्गके अनुनासिकके अतिरिक्त अन्य व्यञ्जन आवे और 'श्' के आगे स्वर, अन्तःस्थ वर्ण अथवा अनुनासिक आवे तो '_' का विकल्पसे 'छ्' होता है।

३७ अवक्त् षोडशं बालं गुरुः—अवदट् षोडशं...।
वृक्षात् डयन्ते शुकाः—वृक्षाद् डयन्ते–वृक्षाड्डयन्ते...।
विविधान् प्रदेशान् डयन्ते खगाः—प्रदेशाण्डयन्ते...।

नियमः—'त्–वर्गके व्यञ्जन अथवा स्' इनकी 'ट–वर्गके व्यञ्जन अथवा ष्' से सन्धि होते समय त् का ट्, द् का ड्, ध् का ढ्, न् का ण्, और स् का ष्, ऐसे परिवर्तन होते हैं।

नए शब्द

(अ) आश्रमः, क्लेशः, निराश (वि०), मारुतिः (पुं०), लङ्का, शस्त्रम्, श्मशानम्।

(अ) **अचिरात्** (अ०)–विनाविलम्बके, शीघ्र
अजः—रघुवंशके राजाका नाम
काञ्चनमृगः—सोनेका हिरन
कौञ्चः—पक्षीका नाम
गौतमः—बुद्धदेवका नाम
जरासन्धः—चेदि देशका राजा
ज्वरः—बुखार
तलम्—तलवा
तूष्णीम् (अ०)–स्वस्थतासे, शान्ततासे, धीरेसे
दृप् (४ प० प०)—गर्वित होना
दंश् (१ प० प० दशति)—काटना
द्वन्द्वम्—द्वन्द्वयुद्ध, कुस्ती
नह् (४ उ० प०)—बांधना
निषादः—शिकारी, भील
प्रासादः—राजवाडा, राजमहल
भ्रंश्—(१ आ०प०)—गिरना
महाश्वेता–गन्धर्वकन्याका नाम
शृगालः—लोमडी, शृगाल
सद् (सीदति)—जाना
सञ्ज् (१ प० प० सजति)–चिपकना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

प्रश्न

१ आगे दिए हुए वाक्योंमें कोष्टककी धातुओंके ल्यबन्तका प्रयोग करो :—

१ शत्रुं (जि) नृपः सुखम् अन्वभवत् ।

२ शस्त्राणि (ग्रह्) सैनिकाः प्रस्थिताः ।

३ तुरगात् (अव + तॄ) चन्द्रापीडः महाश्वेतायाः आश्रमम् अगच्छत् ।

४ संसारं (परि + त्यज्) गौतमः अरण्यं गतः ।

५ अजं राज्ये (अभि + सिच्) रघुः नगरात् बहिः अवसत् ।

६ लङ्कां (दह्) मारुतिः रामं प्रत्यागच्छत् ।

७ निखिलां पृथ्वीं (भ्रम्) पथिकः गृहं न्यवर्तत ।

८ अर्जुनः चापं (वि + सृज्) रणाङ्गणे तूष्णीं स्थितः ।

९ कार्यम् (आ + रभ्) धीरः नरः तस्मात् न विरमति ।

१० वसिष्ठस्य सन्देशं रामाय (नि + विद् प्र०) दूतः निर्गतः ।

२ आगे दिए हुए वाक्योंमें कोष्टककी धातुओंके कर्मणि भू० का० कृदन्त विशेषणोंका प्रयोग करो :—

१ अरण्ये (त्यज्) सीतया क्लेशाः (सह्) ।

२ अर्जुनेन जयद्रथस्य वधः (प्रति + ज्ञा) ।

३ कण्वस्य आश्रमे दुष्यन्तेन शकुन्तला (परि + नी) ।

४ दशरथः श्रावणस्य जनकेन (शप्) ।

५ नयात् (भ्रंश्) नृपः अचिरात् विनश्यति ।

६ निषादेन क्रौञ्चः बाणेन (व्यध्) ।

७ काञ्चनमृगेण रामः आश्रमात् दूरं (नी) ।

८ पुत्रेण जनकः सुचरितैः (तुष् प्र०) ।

९ ज्वरेण (पीड्) नरेण औषधं (पा) ।

१० कृष्णेन जरासन्धः द्वन्द्वाय (आ + ह्वे) ।

३ उपसर्ग सहित धातुओंके ल्यबन्तके रूप कैसे तयार करते हैं यह हरएक गण के दो दो धातु लेकर उनके रूप बनाकर बनाओ ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

४ दशमगणके धातु और प्रेरणार्थक रूप इनके भू० का० कृदन्त विशेषणा और ल्यबन्त कृदन्त अव्यय कैसे बनाये जाते हैं यह सोदाहरण बताओ।

पाठ १७—ऋकारान्त संज्ञा

१ नॄणाम् (लोगोंका) अधिपतिः दशरथः अयोध्यायाम् अवसत्। तस्य चत्वारः पुत्राः एका च दुहिता (लड़की) शान्ता नाम। तस्य सुमन्त्रः नाम सव्येष्टा (सारथि)। पितुः (पिताकी) आज्ञया रामः भ्रात्रा सह (भाईके साथ) धनुर्विद्याम् अशिक्षत। रामस्य भार्या सीता। भर्तरि (पतिमें) रामे तस्याः परमा प्रीतिः। तथा च देवुः (देवरका) लक्ष्मणास्य यातरि (भाभी के प्रति) मातृवत् आदरः। सीतायाः अपि ननान्दरि (ननंद के लिए) शान्तायाम् आदरः। रामस्य स्वसुः (भगिनीका) शान्तायाः भर्ता (पति) ऋष्यशृङ्गः। तेन सत्रम् आरब्धम्। तदा रामस्य मातरः (माताएँ) जामातुः (जवाँईके) गृहम् अगच्छन्। रामस्य पुत्रौ लवकुशौ दशरथस्य नप्तारौ (नाती)।

ऊपरके अवतरणमें ऋकारान्त पुं० और स्त्री० संज्ञाओंका उपयोग किया हैं। वे नीचे लिखे अनुसार हैं।

पुं०—पितृ, भ्रातृ, जामातृ, देवृ, नृ, सव्येष्टृ, भर्तृ, नप्तृ।

स्त्री०—मातृ, दुहितृ, ननान्दृ, यातृ, स्वसृ।

पुं० संज्ञाके रूप 'भर्तृ व नप्तृ' के अतिरिक्त 'पितृ' के समान होते हैं और स्त्री० संज्ञाके रूप 'स्वसृ' के अतिरिक्त 'मातृ' के समान।

२ ऋकारान्तः पुंलिङ्गः पितृशब्दः। ऋकारान्तः स्त्रीलिङ्गः मातृशब्दः।

पिता	पितरौ	पितरः	प्र०	माता	मातरौ	मातरः
पितरम्	,,	पितॄन्	द्वि०	मातरम्	,,	मातॄः

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः	तृ०	मात्रा	मातृभ्याम्	मातृभिः
पित्रे	,,	पितृभ्यः	च०	मात्रे	,,	मातृभ्यः
पितुः	,,	,,	पं०	मातुः	,,	,,
,,	पित्रोः	पितॄणाम्	ष०	,,	मात्रोः	मातॄणाम्
पितरि	,,	पितृषु	स०	मातरि	,,	मातृषु
हे पितर्	हे पितरौ	हे पितरः	सं०	हे मातर्	हे मातरौ	हे मातरः

'भर्तृ और नप्तृ' इनके रूप **पितृ**के समान और 'स्वसृ' के रूप **मातृ**के समान प्रथमा, द्वितीया और संबोधनके अतिरिक्त अन्य विभक्तियोंमें होते हैं।

भर्तृ—प्रथमा—भर्ता भर्तारौ भर्तारः **स्वसृ**—स्वसा स्वसारौ स्वसारः
द्वितीया—भर्तारम् ,, भर्तॄन् स्वसारम् ,, स्वसॄः
सं० —भर्तर् ,, भर्तारः स्वसर् ,, स्वसारः

३ **नृ** शब्दके रूप:—ना नरौ नरः **प्र०**, नरम् नरौ नॄन् **द्वि०**, त्रा नृभ्याम् नृभिः **तृ०**, त्रे नृभ्याम् नृभ्यः **च०**, नुः नृभ्याम् नृभ्यः **पं०**, नुः त्रोः नृणाम्–नॄणाम् **ष०**, नरि त्रोः नृषु **स०**, नर् नरौ नरः **सं०**।

४ कर्तृवाचक शब्द (तृ-प्रत्ययान्त)

विश्वस्य स्रष्टुः (सृष्टिकर्ताका) **चातुर्यम् अवर्णनीयम्।**
राज्यस्य रक्षितृभ्यः (रक्षण करनेवालोंको) **नृपः पारितोषिकाणि यच्छति।**
सन्मार्ग नेतृणाः (लेजानेवाले) **मित्रस्य साहाय्यम् इच्छति नरः।**
शूराः ललनाः अपि रामस्य रक्षित्र्यः (रक्षण करनेवाली) **भवन्ति।**
कार्यस्य आरम्भे विघ्नानाम् अपहर्तॄणि (नाश करनेवाले) **दैवतानि पूजयन्ति नराः।**

अधुना भारतवर्षे ग्रन्थानां कर्त्रीणां (ग्रन्थकर्त्रीओंका) **बाहुल्यं वर्तते।**

ऊपरके वाक्योंमें **स्रष्टृ, रक्षितृ, नेतृ, अपहर्तृ, कर्तृ** इत्यादि धातुओंको 'तृ' प्रत्यय लगाकर बनाये हुए 'क्रिया करनेवाला' इस अर्थके शब्द तीनों लिंगोंमें प्रयुक्त किये गए हैं। जिनके सम्बन्धमें 'तृ'–कारान्त शब्दोंका उपयोग करना हो उसके लिङ्ग, विभक्ति और वचनके अनुसार इनका उपयोग करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

तृ-कारान्त शब्दोंके पुंलिंगी रूप (नेतृ-पुं०)

नेता	नेतारौ	नेतारः	प्र०	नेतुः	नेतृभ्याम्	नेतृभ्यः	पं०
नेतारम्	,,	नेतॄन्	द्वि०	,,	नेत्रोः	नेतॄणाम्	ष०
नेत्रा	नेतृभ्याम्	नेतृभिः	तृ०	नेतरि	,,	नेतृषु	स०
नेत्रे	,,	नेतृभ्यः	च०	हे नेतर्	हे नेतारौ	हे नेतारः	सं०

स्त्रीलिंगके रूप बनाते समय 'ई' यह प्रत्यय जोड़ा जाता है और पश्चात् 'नदी' शब्दके समान उसके रूप होते हैं।

नेतृ + ई – नेत्री, कर्तृ + ई – कर्त्री, रक्षितृ + ई – रक्षित्री।

नेत्री	नेत्र्यौ	नेत्र्यः	प्र०	नेत्र्याः	नेत्रीभ्याम्	नेत्रीभ्यः	पं०
नेत्रीम्	,,	नेत्रीः	द्वि०	नेत्र्याः	नेत्र्योः	नेत्रीणाम्	ष०
नेत्र्या	नेत्रीभ्याम्	नेत्रीभिः	तृ०	नेत्र्या	,,	नेत्रीषु	स०
नेत्र्यै	,,	नेत्रीभ्यः	च०	नेत्रि	नेत्र्यौ	नेत्र्यः	सं०

तृ-कारान्त शब्दोंके नपुंसकलिंगके रूप

नेतृ	नेतृणी	नेतॄणि	प्र०	नेतृणः–तुः	नेतृभ्याम्	नेतृभ्यः	पं०
,,	,,	,,	द्वि०	नेतृणः–तुः	नेतृणोः–त्रोः	नेतॄणाम्	ष०
नेतृणा–त्रा	नेतृभ्याम्	नेतृभिः	तृ०	नेतृणि–नेतरि	,,	नेतृषु	स०
नेतृणे–त्रे	,,	नेतृभ्यः	च०	हे नेतृ-तर्	हे नेतृणी	हे नेतॄणि	सं०

कुछ तृ-कारान्त शब्दः—**दातृ**–देनेवाला दाता, **द्रष्टृ**–देखनेवाला, **ज्ञातृ**–जाननेवाला, **श्रोतृ**–सुननेवाला, **वक्तृ**–बोलनेवाला, **जेतृ**–जीतनेवाला, **रचयितृ**–रचनेवाला, **हर्तृ**–हरण करनेवाला, **पूजयितृ**–पूजा करनेवाला।

सन्धिनियम

३८ आकाशात् लोकान् पश्यति देवः—आकाशाल्लोकान् ... ...।

अपश्यत् लोचनाभ्यां रम्यं स्थलं बालः—अपश्यल्लोचनाभ्यां ... ...।

नियमः—'त्' इस व्यञ्जनके आगे यदि 'ल्' से आरम्भ किया हुआ शब्द आवे तो 'त्' का 'ल्' होता है।

३९ समिध् + खण्डः—समित्खण्डः (समास)–समिधाका कटका।

ककुभ् + प्रदेशः—ककुप्प्रदेशः (,,)–दिशाका प्रान्त।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

विपद् **पी**डयति नरम्—विपत्**पी**ड्यति.....संकट आदमीको तकलीफ करता है।

नियमः—किसी भी वर्गके अनुनासिकके अतिरिक्त दूसरे व्यञ्जनके आगे कठोर व्यञ्जन आवे तो, पीछे व्यञ्जन आवे तो, पिछले व्यञ्जनके स्थानपर उसी वर्गका पहला अक्षर आता है ।

४० धनिकात् हरति धनं चोरः—धनिकाद् हरति अगर धनिकाद्धरति।

सूनृता*वाक् हरति चित्तस्य क्लेशम्—वाग् हरति अगर वाग्घरति।*(वाणी-शब्द)

नियमः—'ह्' से आरम्भ होनेवाले शब्दके पहले यदि अनुनासिकके अतिरिक्त दूसरे वर्गव्यञ्जन आवे तो 'ह्' के स्थानपर विकल्पसे पिछले व्यञ्जनका चौथा अक्षर आता है।

४१ वृक्ष + छाया—वृक्षच्छाया, तरु + छाया—तरुच्छाया।
मा + छेदय—माच्छेदय, आ + छादयति—आच्छादयति।

परंतु

लक्ष्मी + छाया—लक्ष्मीछाया अथवा लक्ष्मीच्छाया।

नियमः—यदि 'छ्' के पहले ह्रस्व स्वर, **मा** यह निषेधार्थक अव्यय, और **आ** यह उपसर्ग आवे, तो 'छ्' को 'च्' यह व्यञ्जन जोड़ देते हैं। और 'छ्' के पहले दूसरे दीर्घ स्वर आवे तो 'च्' विकल्पसे जोड़ा जाता है ।

नए शब्द

अन्तरेण(अ०)—अतिरिक्त सम्बन्धमें

कर्णः—भारतीय वीरका नाम

चातुर्यम्—बुद्धिमत्ता

दंड् (१० उ० प०)—शिक्षा करना

दैवतम्—देवता

धनुर्विद्या—धनुष्यसे लढनेकी विद्या

नियन्तृ(पु०)—नियंत्रण करनेवाला

पाशः—रस्सी, जाल

बाहुल्यम्—बहुत संख्या

यमः—देवका नाम

रङ्गः—रङ्गभूमि

शल्यः—मद्र देशके राजाका नाम

सत्रम्—महान् यज्ञ

साहाय्यम्—सहायता

सुग्रीवः—किष्किन्धाका राजा, वानरश्रेष्ठ

सूनृत (वि०) मृदु, सभ्य

स्तेनः—चोर

सूचना:—अन्तरेण इस अव्ययका उपयोग द्वितीयान्त शब्दके बराबर किया जाता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ आगेके वाक्यों में कोष्टकके ऋ-कारान्त शब्दोंके योग्य रूपोंका उपयोग करो :—

१ सैनिकाः (नेतृ) उपदेशं न अन्वसरन् अतः ते पराजीयन्त ।
२ सीतायाः त्यागेन तस्याः (मातृ) वसुन्धरा (जामातृ) अकुप्यत् ।
३ सुग्रीवः (भ्रातृ) सार्धं चिरम् अयुध्यत ।
४ (सव्येष्टृ) शल्येन कुरूणां सेनापतिः कर्णः निर्भर्त्सितः ।
५ (विधातृ) इच्छा केनापि न लङ्घ्यते ।
६ कृष्णेन (स्वसृ) सुभद्रायाः विवाहः अर्जुनेन सह कृतः ।
७ धनस्य (अपहर्तृ) स्तेनं नृपः अदण्डयत् ।
८ सावित्री (भर्तृ) यमस्य पाशेभ्यः अमुञ्चत् ।
९ बालः (पितृ) हृदयम् आह्लादयति ।
१० अधुना भारतवर्षे बह्वयः (अभिनेतृ) ललनाः रङ्गम् अवतीर्णाः ।

२ निम्नलिखित रूपोंको पहिचानो और उनका आगेके वाक्योंमें उपयोग करो :—

नृणाम्, पितरौ, नप्तारौ, नियन्तुः, द्रष्टारः, जेतारम्, गन्तारः योद्धारः, स्रष्टारम्, दुहितुः, उपदेष्टारः ।

१ मूर्खः _____ निन्दति ।
२ दशरथस्य _____ लवः कुशः च ।
३ गङ्गायाः जलेन _____ पापानि नश्यन्ति ।
४ _____ विवाहम् अन्तरेण _____ चिन्तातुरौ भवतः ।
५ अप्रियस्य पथ्यस्य _____ विरलाः ।
६ नृपस्य पश्चात् _____ अभावात् शत्रुणा देशः आक्रान्तः ।
७ ऋषयः मन्त्राणां _____ सन्ति न तु कर्तारः ।
८ कौरवाणां पाण्डवानां च बहवः _____ रणे पतितः ।
९ प्रजाः _____ राज्ये अभ्यषिञ्चन् ।
१० विमार्गेण _____ सङ्कटे पतन्ति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

३ तृ-प्रत्ययान्त धातुसाधित कर्तृवाचक शब्दोंका तीनों लिंगोंमें उपयोग करके बताओ।

४ सन्धि करो :—लोभात् जायते क्रोधः। दक्षिणात् हस्तात् लेखनी पतिता। नरः ईश्वरस्य पूजनात् शान्तिं लभते।

५ सन्धि विश्लेषण कर लिखो:—ग्रामादागताद्दूताज्जानाति वार्तां नृपः। रामाच्छ्रवर्या मोक्षो लब्धः। स्वर्गाल्लोकानीक्षत ईश्वरः। अरचयट्टीकां ग्रन्थस्य कर्ता।

पाठ १८–'तुमन्त' (हेत्वर्थक) कृदन्त अव्यय

१ भक्तः ईश्वरस्य दर्शनाय (ईश्वरं द्रष्टुं) देवालयं गच्छति।
बालाः क्रीडाङ्गणं क्रीडायै (क्रीडितुं) गच्छन्ति।
वातस्य सेवनाय (वातं सेवितुं) जनाः समुद्रस्य तीरम् आश्रयन्ति।
जनाः धनस्य लाभम् (धनं लब्धुम्) इच्छन्ति।

ऊपरके पहले तीन वाक्योंमें धातुको 'तुम्' प्रत्यय लगाकर बनाए हुए रूपोंका उपयोग किया गया है। उनका उपयोग 'धातुमेंसे व्यक्त क्रिया करनेके लिए' इस अर्थमें किया जाता है। इस लिए साधारणतः ये तुमन्त रूप हेत्वर्थक कृदन्त अव्यय हैं। कहीं कहीं चौथे वाक्यके समान इनका उपयोग कर्मपदके समान भी होता है। कुछ धातुओंको 'तुम्' प्रत्यय, 'इ' स्वरके सहित किसीको 'इ' स्वरके विना, और किसीको विकल्पसे 'इ' जोड़कर, लगाया जाता है। कुछ विशेष धातुके तुमन्त के रूप आगे दिए गए हैं।

पिछले पाठमें दिए हुए कर्तृवाचक विशेषणोंको 'तृ' प्रत्यय धातुओंको लगाते समय, जो परिवर्तन करने पडते हैं उन्हे 'तुम्' प्रत्यय लगाते समय भी करना चाहिए।

२ 'तव्य'–प्रत्ययान्त कर्मणि विध्यर्थक कृदन्त विशेषण।
छात्रैः अध्ययनं कर्तव्यम्—विद्यार्थियोंको अभ्यास करना चाहिए।
नरेण उपकारः स्मर्तव्यः—मनुष्यको उपकारोंका स्मरण करना चाहिए।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

गोपालेन धेनुः रक्षितव्या—ग्वालने गैयाकी रक्षा करना (करना चाहिए, करना योग्य है।)।

ऊपरके वाक्योंमें ' क्रिया करनी चाहिए अथवा करना योग्य है' ऐसे अर्थके ' **तव्य** ' प्रत्ययान्त कृदन्त विशेषण सकर्मक धातुके हैं। इस लिए उनका उपयोग करते समय वाक्यकी रचना कर्मवाच्यके समान हुई है और उनके रूप प्रथमान्त कर्मपदके लिङ्ग, विभक्ति और वचनके अनुसार प्रयुक्त हुए हैं और कर्तृपदवाच्य शब्द तृतीयान्त रखे गये हैं।

३ **नृपैः शत्रुणा सह योद्धव्यम्**—राजाको शत्रुसे लड़ना चाहिए।

छात्रैः गुरोः आगमने उत्थातव्यम्—विद्यार्थियोंको पाठकके आनेके समय उठना चाहिए।

नरैः सन्मार्गेण गतव्यम्—लोगोंको अच्छे मार्गसे जाना चाहिए।

ऊपरके वाक्योंमें ' क्रिया करना चाहिए ' ऐसे अर्थके अकर्मक धातुके ' तव्य ' प्रत्ययान्त रूपोंकी योजना की हुई है। अर्थात् कर्तृपदवाचक शब्द तृतीयान्त हैं और क्रियावाचक कृदन्तोंके रूप नपुंसकलिंगके एकवचनके हैं।

' **तव्य** ' प्रत्यय धातुको जोड़ते समय ' **तुम्** ' अथवा ' **तृ** ' प्रत्ययके समानही धातुमें परिवर्तन करना पडते हैं।

कुछ विशेष धातुके तुमन्त और तव्य प्रत्ययान्त रूप

(आगे दिए हुए रूप आवश्यकतानुसार कराठाग्र किए जाएँ। संदर्भके लिये वे यहां एकत्रित दिए जाते हैं, एकसाथ कराठाग्र करनेक लिए नहीं।)

स्वरान्त धातु

दा–दातुम्–दातव्य
उसी प्रकार स्था, पा, ज्ञा, और अन्य आकारान्त धातु

गै–गातुम्–गातव्य

ध्यै–ध्यातुम्–ध्यातव्य

सौ–सातुम्–सातव्य

ए, ऐ और ओ यह अन्त्य स्वर का धातु आकारान्त के अनुसार

जि–जेतुम्–जेतव्य

नी–नेतुम्–नेतव्य

ष्टि–ष्टेतुम्–ष्टेतव्य

स्मि–स्मेतुम्–स्मेतव्य
परंतु
श्रि–श्रयितुम्–श्रयितव्य

डी–डयितुम्–डयितव्य

श्रु–श्रोतुम्–श्रोतव्य

द्रु–द्रोतुम्–द्रोतव्य

भू–भवितुम्–भवितव्य

कृ–कर्तुम्–कर्तव्य

हृ–हर्तुम्–हर्तव्य
उसी प्रकार सृ, धृ, स्मृ

तॄ–तरितुम्–तरितव्य, तरीतुम्–तरीतव्य

कॄ–करितुम्–करितव्य, करीतुम्–करीतव्य

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

व्यञ्जनान्त धातु

मुच्–मोक्तुम्–मोक्तव्य
सिच्–सेक्तुम्–सेक्तव्य
वच्–वक्तुम्–वक्तव्य
प्रच्छ्–प्रष्टुम्–प्रष्टव्य
त्यज्–त्यक्तुम्–त्यक्तव्य
मस्ज्–मङ्क्तुम्–मङ्क्तव्य
यज्–यष्टुम्–यष्टव्य
युज्–योक्तुम्–योक्तव्य
सृज्–स्रष्टुम्–स्रष्टव्य
दृश्–द्रष्टुम्–द्रष्टव्य
पद्–पत्तुम्–पत्तव्य

क्रुध्–क्रोद्धुम्–क्रोद्धव्य
युध्–योद्धुम्–योद्धव्य
व्यध्–व्यद्धुम्–व्यद्धव्य
सिध्–सेद्धुम्–सेद्धव्य
मन्–मन्तुम्–मन्तव्य
हन्–हन्तुम्–हन्तव्य
क्षिप्–क्षेप्तुम्–क्षेप्तव्य
सृप्–सर्प्तुम्–सर्प्तव्य
स्रप्तुम्–स्रप्तव्य
लभ्–लब्धुम्–लब्धव्य
रभ्–रब्धुम्–रब्धव्य
गम्–गन्तुम्–गन्तव्य
नम्–नन्तुम्–नन्तव्य
रम्–रन्तुम्–रन्तव्य

दिश्–देष्टुम्–देष्टव्य
विश्–वेष्टुम्–वेष्टव्य
स्पृश्–स्प्रष्टुम्–स्प्रष्टव्य
—स्पर्ष्टुम्–स्पर्ष्टव्य
कृष्–कष्टुम्–कष्टव्य
—कर्ष्टुम्—कर्ष्टव्य
वस्–वस्तुम्–वस्तव्य
दह्–दग्धुम्–दग्धव्य
नह्–नद्धुम्–नद्धव्य
रुह्–रोढुम्–रोढव्य
वह्–वोढुम्–वोढव्य

तुम् और तव्य इन प्रत्ययके पहले 'ई' आगम लेनेवाले रूप

वद्–वदितुम्–वदितव्य
मुद्–मोदितुम्–मोदितव्य
रञ्ज्–रञ्जितुम्–रञ्जितव्य
जीव्–जीवितुम्–जीवितव्य

नृत्–नर्तितुम्–नर्तितव्य
ईक्ष्–ईक्षितुम्–ईक्षितव्य
वृध्–वर्धितुम्–वर्धितव्य
वृत्–वर्तितुम्–वर्तितव्य

कम्प्–कम्पितुम्–कम्पितव्य
कुप्–कोपितुम्–कोपितव्य
जन्–जनितुम्–जनितव्य

दशम गण और प्रेरणार्थक धातुओंके रूप

कथ्–कथयितुम्–कथयितव्य
ताड्–ताडयितुम्–ताडयितव्य
प्री–प्रीणयितुम्–प्रीणयितव्य
घुष्–घोषयितुम्–घोषयितव्य

कृ (प्र०)—कारयितुम्—कारयितव्य
दृश् (प्र०)—दर्शयितुम्–दर्शयितव्य
स्था (प्र०)—स्थापयितुम्–स्थापयितव्य
तुष् (प्र०)—तोषयितुम्–तोषयितव्य

नए धातु

नह् (४ उ० प०)–बांधना। सिध् (४ प०प०)–यशस्वी होना
श्रि (१उ०प०)–आश्रय करना।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ निम्नलिखित वाक्योंमें 'तुमन्त' रूपोंकी योजना करो (कोष्टककी धातुओंके):-

१ शुकस्य वृत्तान्तं (श्रु) सर्वे ऋषयः जावालि * परितः उपविष्टाः ।
२ कार्यम् (आ + रभ्) सर्वे तत्पराः भवन्ति ।
३ राज्यभारं (वह्) सचिवाः इच्छन्ति ।
४ विश्वामित्रः दशरथं रामलक्ष्मणौ (याच्) अयोध्यां प्राप्तः ।
५ वाल्मीकिः कुशलवौ रामायणं (शिक्ष् प्र०) ऐच्छत् ।
६ श्रान्तः पान्थः शीतलं जलं (पा) इच्छति ।
७ सन्ध्याकाले (क्रीड्) बहिर् गच्छन्ति बालाः ।
८ न एषः समयः नृपं (दृश्) ।
९ विद्याधनं चोरेण (अप + हृ) अशक्यम् ।
१० राक्षसानां शक्तिः साधून् (पीड्) एव ।

२ निम्नलिखित वाक्योंमें 'तव्य'-प्रत्ययान्त रूपोंका उपयोग करोः—

१ जनकस्य उपदेशः पुत्रैः (अनु + सृ) ।
२ मित्रेषु स्नेहेन (वृत्) नरेण ।
३ सङ्कटेषु धैर्यं न (त्यज्) नरैः ।
४ लङ्का मया (दह्) इति मारुतिना चिन्तितम् ।
५ राक्षसैः पीडिता पृथ्वी (त्रै) इति मत्वा विष्णुः पृथ्वीतले जातः ।
६ अधुना युष्माभिः गृहं (गम्) इति गुरुः शिष्यान् अकथयत् ।
७ विद्यया अलङ्कृतः अपि दुर्जनः (परि + हृ) ।
८ पुण्यस्य सञ्चयेन † भवसागरः नरैः (तॄ) ।
९ पुत्रेण पितरौ (तुष्-प्र०) ।
१० अरण्ये यतिभिः (वस्) ।

३ सन्धि करोः—अस्मिन् उद्याने एकदा अक्रीडन् एते बालाः । सूर्यं लोचनाभ्याम् न ईक्षन्ते मानवाः । बाणान् अरौ अस्यति एषः वीरः ।

४ सन्धि विश्लेषण कर लिखोः—अवदन्नेतानि मित्राण्यनेकशस्तदा । धनिको भारमानेतुं भृत्यानादिशत् । उपायानामभावेन नरो निराशो भवति ।

---

* जाबालिः (पुं०) ऋषीका नाम । † भवः (पुं०)-संसार

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

पाठ १९–आज्ञार्थ

१ रामः कृष्णाः गोविन्दः गोपालः च गुरुणा सह क्रीडाङ्गणम् अगच्छन्। तदा रामः गुरुम् अवदत्–अहं कन्दुकेन क्रीडानि रमै वा (मुझे गेंदसे खेलने दो)। गुरुः प्रत्यवदत्—त्वं क्रीड रमस्व वा (खेल)। कृष्णाः अपि क्रीडतु रमताम् वा (खेले)। गोपालः गोविन्दः च गुरुम् अकथयताम्—आवाम् अपि क्रीडाव रमावहै वा (हम दोनोंभी खेलें)। वयं सर्वे मिथः (एक साथ) क्रीडाम रमामहै वा (हम सब एक साथ खेलें)। तदा गुरुः अवदत्—हे गोविन्द, हे गोपाल, युवाम् क्रीडतम् रमेथाम् वा (तुम दोनों खेलो)। एवं यूयं सर्वे क्रीडत रमध्वम् वा (तुम सब खेलो)। रमन्ताम् क्रीडन्तु वा (खेलें) एते बालाः स्वैरम् इति उक्त्वा गुरुः गृहं न्यवर्तत।

ऊपर दिए हुए अवतरणमें 'क्रीड् और रम्' इन प्रथम गणके परस्मैपद और आत्मनेपद धातुके 'आज्ञार्थ' के रूपोंका उपयोग किया गया है। उनके अर्थसे यह ध्यानमें आवेगा कि 'आज्ञा देना, हुकुम करना' यह अर्थ केवल मध्यम पुरुषमें ही हो सकता है। उत्तम पुरुष और अन्य पुरुषके रूपोंके अर्थसे इच्छा, अपेक्षा, आशीर्वाद और अनुज्ञा इनमेंसे कोई एक अर्थ व्यक्त किया जाता है।

२

क्रीड् – परस्मैपद			आज्ञार्थ		रम् – आत्मनेपद		
क्रीडानि	क्रीडाव	क्रीडाम	उ०	पु०	रमै	रमावहै	रमामहै
क्रीड	क्रीडतम्	क्रीडत	म०	पु०	रमस्व	रमेथाम्	रमध्वम्
क्रीडतु	क्रीडताम्	क्रीडन्तु	अ०	पु०	रमताम्	रमेताम्	रमन्ताम्

इन रूपोंका पृथक्करण करनेसे नीचे दिए हुए प्रत्यय दिखाई देंगे :—

प्रत्यय – प० प०			प्रत्यय – आ० प०		
आनि	आव	आम	ऐ	आवहै	आमहै
—	तम्	त	स्व	इथाम्	ध्वम्
तु	ताम्	अन्तु	ताम्	इताम्	अन्ताम्

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

इन प्रत्ययोंको धातुओंको जोड़कर रूप बनानेकी रीति वर्तमानकाल और प्रथम भूतकाल इनके समानही है। धातु (विकार) + विकरण + प्रत्यय।

प० प०	आ० प०
३ च० ग० नृत् + य + आनि – नृत्यानि ।	युध् + य + ताम् – युध्यताम्।
प० ग० इष् (इच्छ्) + अ + अन्तु – इच्छन्तु।	विद् (विन्द्) + अ + इथाम् – विन्देथाम्।
द० ग० प्री (प्रीण्) + अय – प्रीणय।	मन्त्र् + अय + ध्वम् – मन्त्रयध्वम्।

इन रूपोंसे ४, ६ व १० गणके धातुओंके दोनों पदोंमें आज्ञार्थके रूप किस प्रकार होते हैं यह ज्ञात होगा।

नृत् (प० प०) चतुर्थ गण युध् (आ० प०)

नृत्यानि	नृत्याव	नृत्याम	युध्यै	युध्यावहै	युध्यामहै
नृत्य	नृत्यतम्	नृत्यत	युध्यस्व	युध्येथाम्	युध्यध्वम्
नृत्यतु	नृत्यताम्	नृत्यन्तु	युध्यताम्	युध्येताम्	युध्यन्ताम्

इष् – इच्छ् (प० प०) षष्ठ गण विद् – विन्द् (आ० प०)

इच्छानि	इच्छाव	इच्छाम	विन्दै	विन्दावहै	विन्दामहै
इच्छ	इच्छतम्	इच्छत	विन्दस्व	विन्देथाम्	विन्दध्वम्
इच्छतु	इच्छताम्	इच्छन्तु	विन्दताम्	विन्देताम्	विन्दन्ताम्

प्री–प्रीण् (प० प०) दशम गण मन्त्र् (आ० प०)

प्रीणयानि	प्रीणयाव	प्रीणयाम	मन्त्रयै	मन्त्रयावहै	मन्त्रयामहै
प्रीणय	प्रीणयतम्	प्रीणयत	मन्त्रयस्व	मन्त्रयेथाम्	मन्त्रयध्वम्
प्रीणयतु	प्रीणयताम्	प्रीणयन्तु	मन्त्रयताम्	मन्त्रयेताम्	मन्त्रयन्ताम्

४ पान्थः वृक्षस्य छायायाम् उपविशतु–पान्थेन वृक्षस्य छायायाम् उपविश्यताम्

त्वम् आलेख्यं पश्य–त्वया आलेख्यं दृश्यताम्।

यूयं माम् अनुसरत–युष्माभिः अहम् अनुस्रियै।

महाराजः मम वचनं शृणोतु–श्रूयतां मम वचनं महाराजेन।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ये वाक्य कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य-भाववाच्यमें लिखे हुए हैं। कर्मवाच्यके रूप बनाते समय मूल धातु लेकर (कर्मणि 'य' के पूर्वमें होनेवाले आवश्यक परिवर्तन करके) कर्मणि रूपका **'य'** यह चिन्ह और आत्मनेपदके प्रत्यय जोड़ दिए गये हैं।

जैसे:—उप + विश् + य + ताम्-उपविश्यताम्।

दृश् + य + ताम्-दृश्यताम्। अनु + स्रु (स्रि) + य + ऐ - अनुस्रियै।

आज्ञार्थके कर्मवाच्यमें अन्य पु० एकवचनका उपयोग विनंतिवाचक अर्थमें किया जाता है।

५ **हे बालाः असत्यं मा वदत** (मत बोलो)।

कौरवाः बालेन अभिमन्युना सह मा युध्यन्ताम् (मत लड़ने दो)।

आज्ञार्थके रूपोंके साथ **'न'** इस निषेधार्थक अव्ययके स्थान पर **'मा'** इस अव्ययका उपयोग किया जाता है।

(१) त्रायस्व मां हे परमेश्वर। (२) भवतु सर्वेषां कल्याणम्।
(३) भज गोविन्दं मूढमते। (४) वत्स चिरं जीव।

पहले वाक्यमें आज्ञार्थका उपयोग, प्रार्थना करनेके लिए, दूसरेमें शुभेच्छा दर्शानेके लिए, तीसरेमें उपदेश करनेके लिए और चौथेमें आशीर्वाद देनेके लिए, किया गया है।

सूचना:—आज्ञार्थके भिन्न भिन्न उपयोगके लिए सं० वाक्यरचना पाठ १६ देखो।

६ **अस्—(२ ग० प० प०)**

असानि असाव असाम। एधि स्तम् स्त। अस्तु स्ताम् सन्तु।

कृ—(८ ग० प० प०)

करवाणि करवाव करवाम। कुरु कुरुतम् कुरुत। करोतु कुरुताम् कुर्वन्तु।

ज्ञा (९ ग० प० प०)

जानानि जानाव जानाम। जानीहि जानीतम् जानीत। जानातु जानीताम् जानन्तु।

ग्रह्—(९ ग० प० प०)

गृह्णानि गृह्णाव गृह्णाम। गृहाण गृह्णीतम् गृह्णीत। गृह्णातु गृह्णीताम् गृह्णन्तु।

श्रु—(५ ग० प० प०)

शृणवानि शृणवाव शृणवाम। शृणु शृणुतम् शृणुत। शृणोतु शृणुताम् शृण्वन्तु।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ निम्नलिखित वाक्योंमें कोष्टककी धातुओंके आज्ञार्थके योग्य रूपोंका प्रयोग करो :—

१ सर्वे जनाः सुखम् (अनु + भू)।
२ शत्रून् (वि + जि) इति गुरुणा आशीर्वादः दत्तः।
३ अपि मित्रं गृहं (आ + नी) इति बालः जनकम् अपृच्छत्।
४ दूतः राजधानीं (गम्) नृपाय च सन्देशं (नि + विद् – प्र०)।
५ (क्षिप्) बाणः जयद्रथे इति अर्जुनः कृष्णेन आदिष्टः।
६ पुत्रं (लभ्) गुणैः सम्पन्नम् इति वैखानसेन उक्तम्।
७ हे ईश्वर (मुच्) माम् एतस्मात् सङ्कटात्।
८ (वृष्) काले पर्जन्यः (भू) च सुभिक्षं सर्वत्र।
९ (गम्) त्वया गोदावरीतीरेण।
१० (नश्) अस्माकं सङ्कटानि ईश्वरस्य कृपया।

२ आगे दिए हुए रूपोंको पहिचानो और दिए हुए वाक्योंमें योग्य स्थानमें उनका प्रयोग करो :—

ज्ञायताम्, उद्वयध्वम्, उद्घोष्यताम्, आह्वयन्ताम्, अनुसरन्तु।

१ सर्वे नृपाः द्रौपद्याः स्वयंवरार्थम् ———— ।
२ गुरूणां वचनं ———— छात्राः।
३ ———— हेतुः दूतस्य आगमने।
४ भोः कपोताः ———— समम् एव जालेन सह।
५ ———— नृपस्य आज्ञा सर्वत्र।

३ प्रश्न २ के वाक्योंका प्रयोग बदलो :—

सूचना :—वैखानसः— यति. सुभिक्षम्— सुकाल, सुवृत्ता. समम् एव (अव्यय)— एकदम्, एकही समय.

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

पाठ २०—विध्यर्थ

३ भूपतयः वसुधां नयेन रक्षेयुः (रक्षण करना चाहिए)।
अहं किं पठेयम् (पढना चाहिए) अधुना इति त्वं मन्यसे।
त्वं नीचैराख्यं गिरिम् आधिवसेः (रह) इति यक्षः मेघम् अवदत्।
यूयं विजयं लभेध्वम् (मिलाओ—मिले) इति अहं आशंसे।
प्रबलेन रिपुणा सार्धं न युध्येत (लड़ना नहीं चाहिए) दुर्बलः।
वयम् अधुना उड्डयेमहि (उड जावें) इति खगाः अवदन्।

इन वाक्योंके अर्थसे यह दिखाई देगा कि क्रियाके रूपोंको विध्यर्थमें रखा गया है। 'सामान्यतः' 'क्रिया करना चाहिए अथवा करना योग्य है' इसे अर्थमें विध्यर्थका उपयोग किया जाता है।

२

रक्ष् (१ प० प०)		लभ् (१ आ० प०)	
अहं रक्षेयम्	आवां रक्षेव	वयं रक्षेम	अहं लभेय	आवां लभेवहि	वयं लभेमहि
त्वं रक्षेः	युवां रक्षेतम्	यूयं रक्षेत	त्वं लभेथाः	युवां लभेयाथाम्	यूयं लभेध्वम्
सः रक्षेत्	तौ रक्षेताम्	ते रक्षेयुः	सः लभेत	तौ लभेयाताम्	ते लभेरन्

उपर्युक्त रूपोंका पृथक्करण करनेसे आगे दिए हुए प्रत्यय दिखाई देंगे।

प० प०			आ० प०		
ईयम्	ईव	ईम	ईय	ईवहि	ईमहि
ईः	ईतम्	ईत	ईथाः	ईयाथाम्	ईध्वम्
ईत्	ईताम्	ईयुः	ईत	ईयाताम्	ईरन्

विध्यर्थके रूप सामान्य नियमोंसे बनाए गये हैं।

मूलधातु (अथवा विकार) + विकरण + प्रत्यय।

चतुर्थ, षष्ठ और दशम गणकी धातुओंके दोनों पदोंमें विध्यर्थके रूप ऊपर दी हुई रीतिसे बनाये जा सकते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प० प०	आ० प०
च० ग० नश्–नश्+य+ईत्–नश्येत्।	जन्–जा + य + ईत – जायेत।
ष० ग० सिच्–सिञ्+अ+ईयम्–सिञ्चेयम्।	विद् – विन्द्+अ + ईय – विन्देय।
द० ग० प्री – प्रीण्+अय+ईः–प्रीणयेः।	मन्त्र् – मन्त्र्+अय + ईथाः– मन्त्रयेथाः।

नश् (प० प०) चतुर्थ गण जन्–जा (आ० प०)

नश्येयम्	नश्येव	नश्येम	जायेय	जायेवहि	जायेमहि
नश्येः	नश्येतम्	नश्येत	जायेथाः	जायेयाथाम्	जायेध्वम्
नश्येत्	नश्येताम्	नश्येयुः	जायेत	जायेयाताम्	जायेरन्

सिच्–सिञ् (प० प०) षष्ठ गण विद्–विन्द् (आ० प०)

सिञ्चेयम्	सिञ्चेव	सिञ्चेम	विन्देय	विन्देवहि	विन्देमहि
सिञ्चेः	सिञ्चेतम्	सिञ्चेत	विन्देथाः	विन्देयाथाम्	विन्देध्वम्
सिञ्चेत्	सिञ्चेताम्	सिञ्चेयुः	विन्देत	विन्देयाताम्	विन्देरन्

प्री–प्रीण् (प० प०) दशम् गण मन्त्र् (आ० प०)

प्रीणयेयम्	प्रीणयेव	प्रीणयेम	मन्त्रयेय	मन्त्रयेवहि	मन्त्रयेमहि
प्रीणयेः	प्रीणयेतम्	प्रीणयेत	मन्त्रयेथाः	मन्त्रयेयाथाम्	मन्त्रयेध्वम्
प्रीणयेत्	प्रीणयेताम्	प्रीणयेयुः	मन्त्रयेत	मन्त्रयेयाताम्	मन्त्रयेरन्

३ (१) जनाः सुखं विन्देरन्। (२) युष्माकं सङ्कटानि नश्येयुः। (३) अपि नाम शिशुः जीवेत्। (४) सर्वत्र सुभिक्षं भवेत् इति साधुः अवदत्।

ऊपर दिए हुए वाक्योंमेंसे पहलेमें आशा–अपेक्षा, दूसरेमें इच्छा, तीसरेमें अपेक्षा, और चौथेमें आशीर्वाद–शुभेच्छा यह विध्यर्थके रूपोंसे व्यक्त की गई है।

४ यदि त्वम् मम गृहं आगच्छेः तर्हि अहं त्वां मम पुस्तकालयं दर्शयेयम्। यदि सुग्रीवस्य साहाय्यं वयं लभेमहि तर्हि शोभनं भवेत् इति मारुतिः रामम् अवदत्।

ऊपरके वाक्योंमें एक दुसरे पर अवलम्बित रहनेवाले वाक्य दिए गए हैं और उन वाक्योंमें भविष्यकालका अर्थ विध्यर्थके रूपोंसे व्यक्त किया गया है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

५ नृपः प्रजानां दुःखानि हरेत्। नृपेण प्रजानां दुःखानि ह्रियेरन्।
भृत्याः भारं वहेयुः। भृत्यैः भारः उह्येत।
पश्चात्तापः पापानि क्षालयेत्। पश्चात्तापेन पापानि क्षाल्येरन्।
सैनिकाः राजधानीं परितः तिष्ठेयुः। सैनिकैः राजधानी परितः स्थीयेत।

पर्जन्यः काले पतेत्। पर्जन्येन काले पत्येत।

ऊपरके वाक्य कर्तृवाच्य और कर्म-भाववाच्य ऐसे दोनों वाच्योंमें दिए हैं और उनकी रचना पहले दिए हुए नियमोंके अनुसारही की गई है।

क्षाल्येरन्–(क्षल्) क्षाल्+य+ईरन्। ह्रियेरन्–(हृ) ह्रि+य+ईरन्।
उह्येत–(वह्) उह्+य+ईत। स्थीयेत–(स्था) स्थी+य+ईत।
पत्येत–पत्+य+ईत।

ऊपर दिए हुए रूपोंके पृथक्करणसे यह ध्यानमें आवेगा कि विध्यर्थमें कर्मवाच्यके रूप दूसरे कालके कर्मवाच्यके रूपोंके समान ही बनाए गए हैं।—मूलधातु (य पूर्व होनेवाले विकार)+य+आ० प० विध्यर्थके प्रत्यय।

६ अस् (२ ग० प० प०)

स्याम् स्याव स्याम। स्याः स्यातम् स्यात। स्यात् स्याताम् स्युः।

कृ (८ ग० प० प०)

कुर्याम् कुर्याव कुर्याम। कुर्याः कुर्यातम् कुर्यात। कुर्यात् कुर्याताम् कुर्युः।

ज्ञा (९ ग० प० प०)

जानीयाम् जानीयाव जानीयाम। जानीयाः जानीयातम् जानीयात।
जानीयात् जानीयाताम् जानीयुः।

ग्रह् (९ ग० प० प०)

गृह्णीयाम् गृह्णीयाव गृह्णीयाम। गृह्णीयाः गृह्णीयातम् गृह्णीयात।
गृह्णीयात् गृह्णीयाताम् गृह्णीयुः।

श्रु (५ ग० प० प०)

शृणुयाम् शृणुयाव शृणुयाम। शृणुयाः शृणुयातम् शृणुयात।
शृणुयात् शृणुयाताम् शृणुयुः।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रश्न

१ नीचे दिए हुए वाक्योंमें कोष्टककी धातुओंके विध्यर्थके रूपोंका प्रयोग करोः—

१ नराः कालं सदाचारेण (नी)।
२ याचकेभ्यः धनिकः धनं (दा)।
३ कं शरणं (गम्) इति सङ्कटे पतितः नरः अचिन्तयत्।
४ प्रजाः सुखं (अनु + भू) इति नृपस्य इच्छा।
५ * मृगतृष्णिकासु नरः कदापि जलं न (लभ्)।
६ यदि त्वं मम उपदेशं (श्रु) तर्हि तव सङ्कटानि (नश्)।
७ नरः †प्राणव्ययेन अपि मित्रस्य प्राणान् (रक्ष्—त्रै)।
८ ना कायेन चित्तेन वचनेन वा परस्य अहितं न (कृ)।
९ कातरः युद्धे शत्रूणां पुरतः न (स्था) अपि तु (परा + अय्)।
१० एषः मम मित्रं (भू) इति मे तर्कः।

२ आगे दिए हुए रूपोंको पहिचानो और दिए हुए वाक्योंमें योग्य स्थानमें उनका उपयोग करोः—जायेत, अवसीदेत् पृच्छेयम्, विजयेथाः, त्यजेत्।

१ नरः ग्रामार्थे कुलं ——— इति सुभाषितम्।
२ कलहः पुत्रेषु न ——— इति जनकेन धनविभागाः कृताः।
३ आलस्येन नरः ——— अतः उद्योगः कर्तव्यः।
४ कं मार्गं ——— इति मार्गात् भ्रष्टः बालः अचिन्तयत्।
५ त्वं परीक्षायां ——— इति जनकः अवदत्।

३ अनुरुध्येरन्, स्पृहयेम, समृध्येत्, वर्धेरन्, कल्पेत इन विध्यर्थके रूपोंका संस्कृत वाक्योंमें उपयोग करो।

---

* मृगतृष्णिका – मृगजल। † प्राणव्ययः– प्राणोंका व्यय करना।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

पाठ २१ – व्यञ्जनान्त संज्ञा और विशेषण

१ त्, द्, च्, ज्, इन अन्त्य व्यञ्जनके शब्दः—

कुबेरस्य सम्पद् (सम्पत्ति) **अवर्णनीया। सम्पदः** (संपत्तिके) **लाभेन नरं सर्वे गुणाः आश्रयन्ते। लोकोत्तराणां चित्तं सम्पत्सु** (उन्नति-कालमें) **उत्पलम् इव कोमलं भवति। सम्पद्भिः** (संपत्तिसे) **सत्पुरुषाः उद्धृताः न भवन्ति। यतयः ऐहिकीं सम्पदं** (संपत्तिको) **तृणाय मन्यन्ते। सज्जनाः परस्य सम्पद्धयः** (संपत्तिके लिए) **न स्पृहयन्ति।**

ऊपरके वाक्योंमें '**सम्पद्**' इस दकारान्त स्त्रीलिंगी संज्ञाकी भिन्न भिन्न विभक्तियोंके रूपोंका उपयोग किया गया है। तकारान्त और दकारान्त पुंलिंग और स्त्रीलिंगकी संज्ञाकी विभक्तियोंके रूप समानही होते हैं।

सम्पद् (स्त्री०)

सम्पत्-द्	सम्पदौ	सम्पदः	**प्र०**	सम्पदः	सम्पद्भ्यः	सम्पद्भ्यः	**पं०**
सम्पदम्	,,	सम्पदः	**द्वि०**	,,	सम्पदोः	सम्पदाम्	**ष०**
सम्पदा	सम्पद्भ्याम्	सम्पद्भिः	**तृ०**	सम्पदि	सम्पदोः	सम्पत्सु	**स०**
सम्पदे	,,	सम्पद्भ्यः	**च०**	हे सम्पत्-द्	हे सम्पदौ	हे सम्पदः	**सं०**

व्यञ्जनान्त संज्ञाके पुं० व स्त्री० रूप बनाते करते समय आगे दिए हुए प्रत्यय सामान्यतः जोड़े जाते हैं।

स्	औ	अस्	**प्र०**	ए	भ्याम्	भ्यस्	**च०** इ	ओस् सु **स०**
अम्	,,	अस्	**द्वि०**	अस्	,,	,,	**पं०** –	औ अस् **सं०**
आ	भ्याम्	भिस्	**तृ०**	,,	ओस्	आम्	**ष०**	

सूचनाः—व्यञ्जनान्त शब्दको प्रथमा विभक्तिके एकवचनका प्रत्यय लगाते समय पहला व्यञ्जन रखकर शेष व्यञ्जनोंका लोप कर दिया जाता है।

४२ नियमः–किसी भी पदके अन्तमें अनुनासिक के अतिरिक्त यदि दूसरा वर्ग व्यञ्जन आवे, तो उसके स्थानपर उसी वर्गका प्रथम अथवा तृतीय अक्षर हो जाता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

'सम्पद्' के समान रूप ग्रहण करनेवाली 'तकारान्त' और 'दकारान्त' संज्ञाएँ।

पुं०–**भूभृत्**—राजा, पर्वत; **मरुत्**–देवका नाम, हवा; **सुहृद्**–मित्र।

स्त्री०—**आपद्–विपद्**–विपत्ति, संकट; **दृशद्**–पत्थर; **प्रतिपद्**–पंधरवाडेका पहला दिन; **मृद्**–मिट्टी; **विद्युत्**–बिजली; **शरद्**–शरदृतु; **सम्पद्**–सम्पत्ति, धन; **सरित्**–नदी।

१ नपुंसकलिंगकी तकारान्त संज्ञाएँ:—जगत्–जग, दुनिया; प्र० द्वि० सं०—जगत् जगती जगन्ति; दूसरी विभक्तियोंके रूप सम्पद्के समान होते हैं।

'त'कारान्त नपुंसकलिंगकी संज्ञा :—**वियत्**–आकाश.

नपुंसकलिङ्गमें व्यञ्जनान्त संज्ञाके प्रथमा, द्वितीया, और सम्बोधनके प्रत्यय :—

—ई इ, । वहुवचनके 'इ' इस प्रत्ययको लगाते समय मूल शब्दके अन्त्य व्यञ्जनके पहले अनुनासिक आता है।

३ तकारान्त विशेषण:—

हरित्—हरा; **पुण्यकृत्**—पुण्य करनेवाला; **देहभृत्**—देहधारी और दूसरे वे विशेषण जिनके **कृत्** और **भृत्** ऐसे अन्य भाग हैं।

इन विशेषणोंके रूप पुंलिंगमें और स्त्रीलिंगमें सम्पद्के समान होते हैं; और नपुंसकलिंगमें 'जगत्' के समान।

४ चकारान्त और जकारान्त संज्ञा और विशेषण:—

लौकिकानां साधूनां वाच् (वाणी) **अर्थम् अनुसरति। आद्यानाम् ऋषीणां वाचम्** (शब्दोंको) **अर्थः अनुवर्तते। चित्ते वाचि** (बोलनेमें) **क्रियायां च साधूनाम् एकरूपता। कवयः वाचाम्** (शब्दोंके) **अधिपतयः सन्ति। अवृताभ्यः वाग्भ्यः** (बोलनेसे) **सङ्कटानि उद्भवन्ति। साधवः वाचा** (वचनसे) **न कमपि पीडयन्ति।**

ऊपरके वाक्योंमें **'वाच्'** शब्दके भिन्न भिन्न विभक्तियोंके रूपोंका उपयोग किया गया है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

वाच् (स्त्री०)

वाक्-ग्	वाचौ	वाचः	प्र०	वाचः	वाग्भ्याम्	वाग्भ्यः	पं०
वाचम्	,,	,,	द्वि०	,,	वाचोः	वाचाम्	ष०
वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः	तृ०	वाचि	,,	वाक्षु	स०
वाचे	,,	वाग्भ्यः	च०	वाक्-ग्	वाचौ	वाचः	सं०

नियमः—च् अथवा ज् इनके स्थानपर कठोर व्यञ्जन के पहले 'क्' होता है और मृदु व्यञ्जनके पहले 'ग्'।

वाच् के समान रूप ग्रहण करनेवाले शब्दः—**वाच्**—स्त्री० वाणी, शब्दः **वणिज्**—पुं० व्यापारी; **हुतभुज्**—पुं० अग्नि; **भिषज्**—पुं० वैद्य.

विशेषणाः—सुखभाज्–सुखी; **आत्मभाज्**–**देहभाज्**—आत्मा अथवा देह धारण करनेवाला, मनुष्य; **दुःखभाज्**—दुःखी.

इन विशेषणोंके रूप पुंलिंगमें और स्त्रीलिंगमें 'वाच्' शब्दके समान होते हैं और नपुंसकलिंगमें तृतीयासे सप्तमीतक पुंलिंगके समान होते हैं।

नपुं० प्र० द्वि० सं०—सुखभाक् सुखभाजी सुखभाञ्जि।

५ वत्–मत् प्रत्ययान्त विशेषणाः—

धनवतां नराणां पुत्रात् अपि भयं विद्यते। विद्यावद्भिः पुरुषैः प्राप्तुम् अशक्यं वस्तु नास्ति। गुणावत्सु सुतेषु कुटुम्बभारं निक्षिप्य नरः वनम् आश्रयन्ति। श्रीमद्भ्यः नरेभ्यः श्रीमतीभ्यः नारीभ्यः च धीमन्तः धनं लभन्ते। विनयवत्यः नार्यः भर्तुः प्रतीपं न गच्छन्ति। वसन्ते पुष्पवतां वृक्षाणां पुष्पवतीनां लतानां च बाहुल्येन वनानि पुष्पवन्ति दृश्यन्ते।

इन वाक्योंमें 'वत् और मत्' ये स्वत्वदर्शक प्रत्यय जोड़कर बनाए हुए विशेषणोंका प्रयोग किया गया है।

गुणावत् (पुं०)

गुणवान्	गुणवन्तौ	गुणवन्तः	प्र०	गुणवतः	गुणवद्भ्याम्	गुणवद्भ्यः	पं०
गुणवन्तम्	,,	गुणवतः	द्वि०	,,	गुणवतोः	गुणवताम्	ष०
गुणवता	गुणवद्भ्याम्	गुणवद्भिः	तृ०	गुणवति	,,	गुणवत्सु	स०
गुणवते	,,	,,	च०	हे गुणवन्	हे गुणवन्तौ	हे गुणवन्तः	सं०

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

गुणावत् (न०) जगत्के समान प्र० द्वि० सं०

प्र० द्वि० सं०—गुणवत् गुणवती गुणवन्ति। दूसरी विभक्तियोंके रूप पुंलिंगके समान।

गुणावत् (स्त्री०)-दीर्घ ई लगाकर नदीके समान।

गुणवती गुणवत्यौ गुणवत्यः **प्र०** गुणवत्याः गुणवतीभ्याम् गुणवतीभ्यः **पं०**
गुणवतीम् ,, गुणवतीः **द्वि०** ,, गुणवत्योः गुणवतीनाम् **ष०**
गुणवत्या गुणवतीभ्याम् गुणवतीभिः **तृ०** गुणवत्याम् ,, गुणवतीषु **स०**
गुणवत्यै ,, गुणवतीभ्यः **च०** हे गुणवति हे गुणवत्यौ हे गुणवत्यः **सं०**

गुणवत् के समान दूसरे कुछ विशेषण :—कान्तिमत्, गुणवत्, धनवत्, धीमत्, परवत्, बुद्धिमत्, बलवत्, भगवत्, विद्यावत्, श्रीमत्, इन शब्दोंका अर्थ जिन संज्ञाओंको 'वत् और मत्' यह प्रत्यय जोड़े गए हों 'उनसे युक्त' ऐसा होता है। जैसेः—कान्तिमत्—कान्तियुक्त; धनवत्—धनयुक्त।

६ '**भवत्**' यह सर्वनाम बहुमानके अर्थमें '**आप**' इस अर्थमें और '**कियत्**' यह विशेषण '**कितना**' इस अर्थमें—इन शब्दके रूप ऊपर दिए हुए 'गुणवत्' इस शब्दके समान होते हैं। 'भवत्' यह सर्वनाम अर्थ दृष्टिसे मध्यम पुरुषवाचक है, तो भी उसका उपयोग अन्य पुरुषके क्रियाके साथ होता है। जैसे :—भवान् क्व उपविशति।

यह 'भवत्' सर्वनाम 'अत्र और तत्र' इनको जोड़कर लिखनेसे आदरदर्शक भाव व्यक्त किया जाता है। 'अत्र भवान्' इसका, सम्मुख उपस्थित रहनेवाले मनुष्यका उल्लेख करते समय उपयोग किया जाता है और 'तत्र भवान्' का अनुपस्थित (गैर हाजिर) मनुष्यका उल्लेख करते समय।

७ **महान् महत्सु एव पराक्रमं करोति।** बडा आदमी बडे आदमीके साथ ही पराक्रम करता है।

महतां चरित्रं आह्लादकं भवति। बडे आदमीका चरित्र आनन्ददायक रहता है।

महतां नराणां महत्या बुद्ध्या महान्ति कार्याणि सिध्यन्ति। बडे मनुष्योंकी बडी बुद्धीसे बडे कार्य सिद्ध होते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

इन वाक्योंमें 'महत्' इस विशेषणके रूपोंका उपयोग किया गया है। पुंलिंगमें प्र०, द्वि० और सं० के अतिरिक्त दूसरे रूप 'सम्पद्' के रूपोंके समान, स्त्रीलिंगमें दीर्घ 'ई' जोड़कर नदीके रूपोंके समान, और नपुंसकलिंगमें प्र०, द्वि० और सं० के अतिरिक्त दूसरे रूप पुंलिंगके रूपोंके समान होते हैं।

पुं०—प्र० महान् महान्तौ महान्तः। द्वि० महान्तम् महान्तौ महतः।
सं० महन् ,, ,, । दूसरे 'सम्पद्' के समान

स्त्री०:—महत् + ई – महती—नदीके समान

न०:—प्र० द्वि० सं०—महत् महती महान्ति। दूसरे पुंलिंगके समान।

'**बृहत्**'—(आकारसे बडा) इस विशेषणके रूप 'गुणवत्' के रूपोंके समान होंगे। केवल पुं० प्रथमा विभक्तिका एकवचन 'बृहन्' होता है।

नए शब्द

(अ) आहुतिः (स्त्री०), विरोधः, इन्द्रियम्।

(आ) **अनृतम्**—असत्य भाषण
अविषयः—अयोग्य विषय
असंयमः—अधिकार न रहना, स्वैरता
आद्य (वि०)—पहला
देशान्तरम्—दूसरा देश
लौकिक (वि०, स्त्री० लौकिकी) इस लोक का, सामान्य
उत्पलम्—कमल
उद्धत—घमंडी, गर्वीला
कुबेरः—धनके देवताका नाम
ऐहिक (वि०, स्त्री० ऐहिकी)—इस संसारका
लोकोत्तर—(वि०) सब लोकोंमें श्रेष्ठ
वि + लस् (१ प०प०) प्रकाशित होना
संसर्गः—संगति

प्रश्न

१ आगे दिए हुए वाक्योंमें कोष्ठकमें दिए हुए शब्दोंके योग्य रूपोंका प्रयोग करो:—

१ वानराः राक्षसान् (दशद्) अताडयन्।

२ (आपद्) मित्रत्वं परीक्ष्यते।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

३ (मृद्) चयः प्रतिविम्बं न गृह्णाति ।
४ (भूभृत्) विचलन्ति (मरुत्) वेगेन ।
५ ईश्वरस्य वर्णनं (वाच्) अशक्यम् ।
६ (वियत्) विलसति तडित् ।
७ दुर्बलेन (बलवत्) विरोधः न कर्तव्यः ।
८ (हुतभुज्) आहुतयः देवान् प्रति नीयन्ते ।
९ (भिषज्) औषधानि यच्छन्ति ।
१० (महत्) संसर्गः (महत्) फलाय कल्पते ।

२ आगे दिए हुए रूपोंको पहिचानकर दिए हुए वाक्योंमें योग्य स्थानपर उनका उपयोग करो :—

आपदाम्, हरिन्ति, दुःखभाजाम्, आयुष्मतः, धीमतां, वणिजः, भवद्भ्यः, भगवता, प्रतिपदः, बुद्धिमत्सु ।

१ ——— न कश्चित् अविषयः ।
२ ——— देशान्तरं गच्छति ।
३ ——— कथितः मार्गः इन्द्रियाणाम् असंयमः ।
४ वृक्षाणां पर्णानि ——— वसन्ते ।
५ सर्वे जनाः ——— पुत्रान् वाञ्छन्ति ।
६ ——— वरं यच्छति मुनिः ।
७ ——— आरभ्य चन्द्रस्य बिम्बं वर्धते ।
८ ——— वाल्मीकिना सीता रक्षिता ।
९ एतस्मिन् जगति ——— बाहुल्यं वर्तते ।
१० ——— प्राणिषु नराः श्रेष्ठाः ।

३ सन्धि करोः—वृक्षात् अपतत् वदरीफलम् । आपद् मित्रं परीक्षते । सुखंभाक् नरः अयच्छत् धनम् ।

४ सन्धि विश्लेषण कर लिखोः—उद्यानाद्बहिर्याति । स्वर्गादवातरन्नारदः । अकस्मान्मामपश्यद्धनिकः ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पाठ २२–नकारान्त संज्ञा और विशेषण

१ **पृथिव्यां बहवः राजानः** (राजा) **सन्ति। राजानमन्तरेण** (राजाके बिना) **प्रजानां रक्षणम् अशक्यम्। राजभिः** (राजाओंसे) **शत्रवः जीयन्ते। अतः राज्ञि-राजनि** (राजाके प्रति) **तासाम् आदरः। राज्ञां** (राजाओंकी) **सभाः पण्डिताः अलङ्कुर्वन्ति। राज्ञः** (राजासे) **प्रसादम् अपेक्षन्ते कवयः। राज्ञे** (राजाको) **आशीर्वादं प्रयच्छन्ति ते।**

ऊपरके वाक्योंमें 'राजन्' इस पुं० नकारान्त संज्ञाके रूपोंका उपयोग किया गया है। नकारान्त स्त्रीलिंगकी संज्ञाओंके रूप पुंलिंगके समानही होते हैं।

राजन् (पुं०)

राजा	राजानौ	राजानः	**प्र०**	राज्ञः	राजभ्याम्	राजभ्यः	**पं०**
राजानम्	,,	राज्ञः*	**द्वि०**	राज्ञः	राज्ञोः	राज्ञाम्	**ष०**
राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः	**तृ०**	राज्ञि-राजनि	,,	राजसु	**स०**
राज्ञे	,,	राजभ्यः	**च०**	हे राजन्	हे राजानौ	हे राजानः	**सं०**

राजन् + अस् – राज् न् + अस् – राज् ञ् + अस् – राज्ञ् + अस् – राज्ञः

राजन्के समान निम्नलिखित संज्ञाओंके भी रूप होते हैं। **आवन्**–पुं० पत्थर **प्रेमन्**–पुं० प्रेम; **महिमन्**–पुं० महिमा; **मूर्धन्**–पुं० सिर; **लघिमन्**–पुं०; छोटापन; **सीमन्**–स्त्री० मर्यादा।

२ **आत्मन्**–(पुं०) आत्मा; **अन्तरात्मन्**–पुं० अन्तरात्मा; **अश्मन्**–पुं० पत्थर; **विश्वकर्मन्**–पुं० देवताओंका कारीगर; **ब्रह्मन्**–पुं० ब्रह्मदेव, ब्राह्मण; इन

---

*राजन् इसके प्र० द्वि० ए० और द्विव० और सम्बोधन द्विव० और बहुव० इनके रूपोंमें उपान्त्य 'अ' का 'आ' हुआ है। और प्र० ए० में वचनान्त अन्त्य 'न्' का लोप हुआ है।

राजन् इसके उपान्त्य 'अ' का द्वि० बहुवचन से आगे, स्वारम्भी प्रत्ययके पहले, लोप हुआ है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

शब्दोंके रूप भी 'राजन्' शब्दोंके रूपोंके समान होंगे, किन्तु द्वितीया के बहुवचनसे स्वरारम्भी प्रत्ययोंके पहले उपान्त्य 'अ' का लोप नहीं करना चाहिए; कारण कि इन संज्ञाओंमें उपान्त्य 'अ' के पहले 'म् अथवा व्' से युक्त संयुक्त व्यञ्जन है।

आत्मन् (पुं०)

आत्मा आत्मानौ आत्मानः प्र० आत्मनः आत्मभ्याम् आत्मभ्यः पं०
आत्मानम् , आत्मनः द्वि० ,, आत्मनोः आत्मनाम् ष०
आत्मना; आत्मभ्याम् आत्मभिः तृ० आत्मनि ,, आत्मसु स०
आत्मने ,, आत्मभ्यः च० हे आत्मन् हे आत्मानौ हे आत्मानः सं०

३ दशरथस्य पुत्राणां नामानि रामः लक्ष्मणः भरतः शत्रुघ्नः च।
दशरथस्य भार्यायाः नाम कौसल्या।
रामस्य पुत्रयोः नामानी कुशः लवः च।
मोक्षस्य त्रीणि वर्त्मानि सन्ति ज्ञानं कर्म भक्तिः च।
एतेषां द्वे वर्त्मनी दुष्करे। एकं वर्त्म सुकरम्।

इन वाक्योंमें 'नामन्' और 'वर्त्मन्' इन नकारान्त नपुंसकलिंगके संज्ञाके प्रथमाके रूपोंका उपयोग किया गया है।

नामन्—(उपान्त्य 'अ' के पहले एकही साधारण व्यञ्जन के शब्द)

नामन्—(न०) नाम नामनी-नाम्नी नामानि प्र० द्वि०
हे नामन्-नाम ,, ,, ,, सं०

दूसरी विभक्तियोंके रूप 'राजन्' के रूपोंके समान।

नामन् शब्दके समान रूप ग्रहण करनेवाले शब्द :—**प्रेमन्**- (न०) प्रेम; **हेमन्**-(न०) सोना।

४ **वर्त्मन्** (उपान्त्य अ के पहले म् अथवा व् से युक्त ऐसे संयुक्त व्यञ्जन के शब्द।)

वर्त्म वर्त्मनी वर्त्मानि प्र० द्वि०
हे वर्त्मन्-वर्त्म हे ,, हे ,, सं० } दूसरे रूप 'आत्मन्' के समान।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

वर्त्मन् के समान नपुं० संज्ञा :--

कर्मन्—कर्म, काम; **चर्मन्**—चमडा; **जन्मन्**—जन्म; **भस्मन्**—भस्म, राख; **मर्मन्**—शरीरका नाजुक भाग; **वर्मन्**—कवच, जिरह, बख्तर; **सद्मन्**—घर।

५ 'इन्-विन्' प्रत्ययान्त संज्ञा और विशेषण :—

भाविनम् अनर्थं ज्ञातुम् असमर्थः एव मनुष्यः। भाविन्याः कीर्तेः कृते शूराः मृत्युम् अपि न गणयन्ति। दुश्चिह्नानि भावीनि सङ्कटानि सूचयन्ति।

इन वाक्योंमें '**भाविन्**' (आगे होनेवाला) इस विशेषणके तीनों लिंगोंके रूपोंका उपयोग किया गया है।

भाविन् (पुं०)

भावी	भाविनौ	भाविनः	**प्र०**	भाविनः	भाविभ्याम्	भाविभ्यः	**पं०**
भाविनम्	,,	,,	**द्वि०**	,,	भाविनोः	भाविनाम्	**ष०**
भाविना	भाविभ्याम्	भाविभिः	**तृ०**	भाविनि	,,	भाविषु	**स०**
भाविने	,,	भाविभ्यः	**च०**	हे भाविन्	हे भाविनौ	हे भाविनः	**सं०**

भाविन् (न०)—तृतीया से सप्तमीतक पुंलिङ्गके समान

भावि भाविनी भावीनि प्र० द्वि०; भाविन्-वि भाविनी भावीनि सं०

भाविन् (स्त्री०)–भाविन् + ई – भाविनी – नदीके समान

'**इन्**' अवयवान्त आगे दिए हुए शब्दके बहुधा पुंलिङ्गके रूप होते हैं।

अनुजीविन्—नौकर; **कञ्चुकिन्**—अन्तःपुरका सेवक; **पक्षिन्**—पक्षी; **प्राणिन्**—प्राणी; **शशिन्**—चन्द्र; **शिखरिन्**—पहाड; **शूलिन्**—शङ्कर; **स्वामिन्**—स्वामी; परंतु इनको 'ई' जोड़कर उनके स्त्रीलिंगके रूप भी बनाए जा सकते हैं।

'इन्-विन्' प्रत्ययान्त कुछ विशेषण :—**अपराधिन्**—अपराध करनेवाला; **कुशलिन्**—कुशल; **क्षयिन्**—क्षयी, कम होनेवाला; **धनिन्**—धनवान्; श्रीमान्; **बलिन्**—बलवान्; **मेधाविन्**—बुद्धिमान्।

इन विशेषणोंके भाविन् के समान तीनों लिङ्गोंमें रूप होते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

६ **पञ्चन्** से **नवदशन्** (संख्यादर्शक विशेषण):—

इन संख्या–विशेषणके रूप बहुवचनमेंही होते हैं यह उनके अर्थसे ही ज्ञात होगा। **पञ्च वृक्षाः। पञ्च लताः। पञ्च पुष्पाणि।** इन संख्याविशेषणोंके रूप तीनों लिङ्गोंमें समान ही होते हैं।

	पञ्चन्	षष्	अष्टन्
प्र० द्वि० सं०	पञ्च	षट्–ड्	अष्ट–अष्टौ
तृ०	पञ्चभिः	षड्भिः	अष्टभिः–अष्टाभिः
च० पं०	पञ्चभ्यः	षड्भ्यः	अष्टभ्यः–अष्टाभ्यः
ष०	पञ्चानाम्	षण्णाम्	अष्टानाम्
स०	पञ्चसु	षट्सु–षट्त्सु	अष्टसु–अष्टासु

सप्तन्, नवन्, दशन्, एकादशन्, द्वादशन्, त्रयोदशन्, चतुर्दशन्, पञ्चदशन्, षोडशन्, सप्तदशन्, अष्टादशन् व नवदशन् इनके रूप 'पञ्चन्' के समान होते हैं।

नए शब्द

(अ) उत्सवः, रचना।

(आ) **अङ्कः**—दाग, धब्बा
अनर्थः—सङ्कट, कलङ्क
अव + लम्ब् (१आ०प०) अवलम्बित रहना
दुश्चिह्नम्—बुरा चिह्न
प्रसादः—कृपा, मेहरबानी
विभूतिः—(स्त्री०)–ऐश्वर्य, सम्पत्ति
हनुमत्—(पुं०)–महावीर, हनुमान

प्रश्न

१ कोष्टकके शब्दोंके योग्य रूपोंका प्रयोग करो:—

१ साधवः (प्रेमन्) जगत् जयन्ति। २ (ब्रह्मन्) चत्वारि मुखानि।
३ हनुमान् (ग्रावन्) राक्षसान् प्राहरत्। ४ (राजन्) कीर्तिं कवयः गायन्ति।
५ (शशिन्) किरणेषु अङ्कः निमज्जति। ६ (मेधाविन्) छात्रे गुरुः स्निह्यति।
७ (पक्षिन्) बलम् आकाशः। ८ (अपराधिन्) दण्डयति नृपः।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

९ नरस्य (महिमन्) (लघिमन्) वा गुणान् एव अवलम्बते ।

१० महद्भिः सुप्रतिष्ठितः (अश्मन्) अपि देवत्वं गच्छति ।

२ निम्न-लिखित रूपोंको पहिचानो और दिए हुए वाक्योंमें उनका उपयोग करोः—योगिनाम्, वर्म, महात्मनाम्, विश्वकर्मणः, भाविनः, वर्त्मनाम्, सीमानः, स्वामिनः, अनुजीविनः, चर्मणा ।

१ ——— अनर्थान् नरः न जानाति ।

२ मोक्षस्य त्रयाणाम् ——— भक्तिमार्गः अतीव सुकरः ।

३ कलियुगे शरीरिणां ——— धर्मः ।

४ ——— जन्मनः उत्सवः क्रियते ।

५ सृष्टेः रचनायां ——— चातुर्यं दृश्यते ।

६ रजकः रासभं व्याघ्रस्य ——— आच्छादयत् ।

७ ——— प्रभुम् अनुसरन्ति ।

८ महतां विभूतीनां ——— न सन्ति ।

९ ——— भृत्येभ्यः पारितोषिकाणि यच्छन्ति ।

१० श्रीकृष्णः ——— श्रेष्ठः आसीत् ।

३ प्रश्न १ और २ इनमेंसे पांच पांच वाक्य सन्धि करके लिखो ।

पाठ २३—सकारान्त संज्ञा और विशेषण

१ चन्द्रमसः (चंद्रके) प्रकाशेन धवलं भवति भूतलम् । चन्द्रमसा (चंद्रसे) शोभते आकाशः यथा तडागः पद्मेन । चन्द्रमसि (चंद्रके प्रति) वैरं राहोः । चन्द्रमाः (चन्द्र) गुणाप्रकर्षात् तिष्ठति शङ्करस्य मौलौ । पूर्णिमायां चन्द्रमसं (चन्द्रको) दृष्ट्वा प्रमुदिताः भवन्ति जनाः । हे चन्द्रमः (चन्द्र) महत् ते भाग्यम् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

ऊपरके वाक्योंमें '**चन्द्रमस्**' इस पुं० सकारान्त संज्ञाके रूपोंका प्रयोग किया गया है। उसके सब रूप नीचे दिए हुए हैं :—

चन्द्रमस् (पुं०)

चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः	**प्र०**	चन्द्रमसः	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः **पं०**
चन्द्रमसम्	,,	,,	**द्वि०**	,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम् **ष०**
चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः	**तृ०**	चन्द्रमसि	,,	चन्द्रमःसु **स०**
चन्द्रमसे	,,	चन्द्रमोभ्यः	**च०**	हे चन्द्रमः	हे चन्द्रमसौ	हे चन्द्रमसः **सं०**

'चन्द्रमस्' के समान जिनके रूप होते हैं वे शब्द :— **संज्ञा**—**जातवेदस्**—(पुं०)—अग्नि; **दुर्वासस्**—(पुं०) ऋषिका नाम; **वेधस**—(पुं०)—ब्रह्मदेव।

विशेषण :—दिवौकस्—स्वर्गमें रहनेवाला; **पयस्**—वयोवृद्ध; **महौजस्**—पराक्रमी; **वनौकस्**—वनमें रहनेवाला।

इन विशेषणोंके पुंलिंगके और स्त्रीलिंगके रूप 'चन्द्रमस्' के समान होते हैं। नपुंसकलिङ्गमें 'मनस्' शब्दके रूपोंके समान होते हैं।

२ **मनस्**—मन (नपुंसकलिङ्ग)

मनः मनसी मनांसि प्र० द्वि० सं०, दूसरी विभक्तियोंमें 'चन्द्रमस्' के रूपोंके समान।

'मनस्' के समान जिनके रूप होते हैं ऐसे नपुंसकलिङ्गकी संज्ञाएं :—

(अ) तपस्, तेजस्, मनस्, यशस्, वयस्।

(आ) **छन्दस्**—वेद; **तमस्**—अन्धेरा; **नभस्**—आकाश; **पयस्**—पानी; **रक्षस्**—राक्षस; **रजस्**—धूल; **वक्षस्**—सीना वक्षस्थल; **वचस्**—वचन; **वासस्**—कपडा; **शिरस्**—सिर; **सरस्**—सरोवर।

हविस्—हविर्भाग, आहुति (न०)

हविः	हविषी	हवींषि	**प्र०**	हविषः	हविर्भ्याम्	हविर्भ्यः **पं०**
,,	,,	,,	**द्वि०**	हविषः	हविषोः	हविषाम् **ष०**
हविषा	हविर्भ्याम्	हविर्भिः	**तृ०**	हविषि	,,	हविःषु **स०**
हविषे	,,	हविर्भ्यः	**च०**	हविः	हविषी	हवींषि **सं०**

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

चक्षुस्—न० आंख, **धनुस्**—न० धनुष्य, इनके रूप 'हविस्' के रूपोंके समान होते हैं।

अर्चिस्—स्त्री० –ज्वाला इस शब्दके रूप व्यञ्जनान्त संज्ञाके प्रत्यय जोड़कर बनाए जाते हैं।

अर्चिस् (स्त्री०)

अर्चिः	अर्चिषौ	अर्चिषः	**प्र०**	अर्चिषः	अर्चिर्भ्याम्	अर्चिर्भ्यः **पं०**
अर्चिषम्	,,	,,	**द्वि०**	,,	अर्चिषोः	अर्चिषाम् **ष०**
अर्चिषा	अर्चिर्भ्याम्	अर्चिर्भिः	**तृ०**	अर्चिषि	,,	अर्चिष्षु **स०**
अर्चिषे	,,	अर्चिर्भ्यः	**च०**	अर्चिः	अर्चिषौ	अर्चिषः **सं०**

३ भक्तिमार्गः ज्ञानमार्गात् श्रेयान् (अधिक अच्छा)।

लक्ष्मणाः ज्यायांसं भ्रातरं (बड़े भाईको) **वने अन्वसरत्।**
मनोरथस्य सिद्धये नराः भूयसः प्रयत्नान् (बहुत प्रयत्न) **कुर्वन्ति।**

इन वाक्योंमें श्रेयस्, ज्यायस्, भूयस् इन तुलनात्मक विशेषणोंका उपयोग किया गया है। पदार्थोंकी अथवा मनुष्योंकी तुलना करते समय जिससे अधिक उस शब्दका प्रयोग पंचमी विभक्तिमें किया जाता है। ऐसे शब्दोंके रूप 'श्रेयस्' के रूपोंके समान होते हैं।

***श्रेयस्** (पुं.)

श्रेयान्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः	**प्र०**	श्रेयसः	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभ्यः **पं०**
श्रेयांसम्	,,	श्रेयसः	**द्वि०**	,,	श्रेयसोः	श्रेयसाम् **ष०**
श्रेयसा	श्रेयोभ्याम्	श्रेयोभिः	**तृ०**	श्रेयसि	,,	श्रेयस्सु **स०**
श्रेयसे	,,	श्रेयोभ्यः	**च०**	श्रेयन्	श्रेयांसौ	श्रेयांसः **सं०**

'श्रेयस्' शब्दके **नपुंसकलिङ्गके** रूप 'मनस्' के रूपोंके समान होते हैं।
,, शब्दके **स्त्रीलिङ्गके** रूप दीर्घ 'ई' जोड़कर नदी शब्दके रूपोंके समान बनाए जाते हैं।

---

* 'श्रेयस्' इस शब्दके पुंलिङ्गके रूपोंके प्रथमा, द्वि० ए० व० और द्विव० और सम्बोधन इनके रूपोंमें अन्य 'स्' के पहले 'न्' आया है और सं० ए० वचनके अतिरिक्त दूसरे रूपोंमें उपान्त्य 'अ' का 'आ' हुआ है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

इस प्रकारके कुछ शब्द :—

कनीयस्–उमर में छोटा; **ज्यायस्**–उमरसे अथवा महत्त्व में बड़ा; **प्रेयस्**–अधिक प्यारा; **भूयस्**–बहुत (संख्यासे अथवा मापसे); **श्रेयस्**–अधिक अच्छा।

नए शब्द

अप+ऊह् (१ प० प० अपोहति)–नाश करना
आ+नन्द्–(प्र० आनन्दय)–आनन्दित करना
जनस्थानम्–दण्डकारण्यका एक भाग
निषूदित–(धा० वि०) मारा हुआ, नष्ट किया हुआ
पादाघातः–पांवसे मारना, लात मारना
मौलिः (पु०, स्त्री०)–सिर
वाल्मीकिः (पु०)–ऋषिका नाम
शप् (१ प० प०)–शाप देना
संहतिः (स्त्री०)–ऐक्य, एकता
सहस्रम्–हजार, सहस्र
स्तम्भः–खम्भा (आधार

प्रश्न

१ कोष्ठकके शब्दोंके योग्य रूपोंसे निम्न-लिखित वाक्योंकी पूर्ति करो :—

१ (चन्द्रमस्) शोभते निशा निशया च शोभते (चन्द्रमस्)।
२ इन्द्रः (दिवौकस्) अधिपतिः।
३ (प्रवयस्) नरस्य अङ्गानि दुर्बलानि भवन्ति।
४ ईश्वरस्य रूपं (मनस्) अपि चिन्तयितुम् अशक्यम्।
५ सीता (रक्षस्) भयेन व्याकुला अभवत्।
६ (दुर्वासस्) शकुन्तलाम् अशपत्।
७ (वेधस्) वाल्मीकये वरम् अयच्छत्।
८ (सरस्) सूर्योदये कमलानि विकसन्ति।
९ (चक्षुस्) (तेजस्) जनान् आनन्दयत् वीरः।
१० (जातवेदस्) (अर्चिस्) (हविस्) नयन्ति।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

२ निम्न-लिखित वाक्योंकी अन्तमें दिए हुए शब्दोंमेंसे योग्य शब्दोंसे पूर्ति करो :—

१ ——— सहस्राणि रामेण निपूदितानि ।

२ ——— भ्रातरं रावणं विभीषणः उपादिशत् ।

३ सायङ्काले अग्नेः ——— तेजः वर्धते ।

४ दुष्यन्तः ———हुङ्कारेण एव विघ्नान् अपौहत् ।

५ पुरा ——— वेदविदः अवसन् जनस्थाने ।

६ एतस्मिन् जगति संहतिः एव जनानां ——— ।

७ श्रीकृष्णेन कर्मणः बुद्धिः ——— मता ।

८ ऋषयः ———द्रष्टारः न तु कर्तारः ।

९ ——— कमलानि जायन्ते ।

१० सैनिकानां पादाघातैः ——— स्तम्भाः उद्गच्छन्ति ।

(छन्दसाम्, रजसः, श्रेयसी, ज्यायसी, रक्षसाम्, धनुषः, ज्यायांसम्, भूयांसः, अर्चिषाम्, सरसि)

३ सन्धि करो :—शिष्यान् तापसः अध्यापयति । वृक्षाः पान्थान् छायया तोषयन्ति । भक्तः पूजनात् लभते पुण्यम् । हस्तात् शस्त्रं पतितम् । अपश्यत् जनकं बालः । अज्ञानात् टीकां कुर्वन्ति जनाः । गृहात् हरिः निर्गतः ।

४ सन्धि विश्लेषण करो :—रणाङ्गणाच्छत्रुः पलायितः । परस्परमवदज्जनाः । सम्भाषणाद्धेतुर्ज्ञायते । अविध्यल्लीलयैव व्याधो मृगम् ।

———

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पाठ २४—वर्तमानकालवाचक कृदन्त विशेषण

१ (१) मार्गेण गच्छन्ति (जानेवाले) मित्राणि दृष्ट्वा अहं तानि कुशलम् अपृच्छम्।

(२) गृहं प्रविशन्तं (प्रवेश करनेवाले) चोरं गृहीत्वा राजपुरुषः तं कारागृहे न्यक्षिपत्।

(३) वीरेभ्यः पुत्रेभ्यः स्पृहयन्त्यः (इच्छा करनेवाली) ललनाः पुरा अवसन् भारतवर्षे।

(४) युद्धे विजयम् अलभमानं न (प्राप्त करनेवाले) सेनापतिं नृपः निरभर्त्सयत।

(५) आकाशे प्रकाशमानानां (प्रकाशित होनेवाले) तारकाणां सौन्दर्यम् आह्लादयति दृष्ट्वा।

(६) श्वश्रूं श्वशुरं च वन्दमानया (नमस्कार करनेवाली) स्नुषया आशीर्वादः लब्धः।

(७) शत्रुणा दह्यमानात् नगरात् (जलाए हुए) पौराः पलायिताः आत्मानं रक्षितुम्।

(८) मुनिभिः श्रूयमाणाः (सुना हुआ) शुकस्य वृत्तान्तः जाबालिना कथितः।

ऊपर दिए हुए सब वाक्योंमें वर्तमानकालवाचक कृदन्त विशेषणोंका उपयोग किया गया है, यह वाक्योंके अर्थसे ध्यानमें आवेगा।

१, २, ३ में परस्मैपद धातुके रूप; ४, ५, ६ में आत्मनेपद धातुके रूप और ७, ८ में कर्मणि वर्तमानकालवाचक कृदन्त विशेषणोंका उपयोग किया गया है; और उनके रूप लिङ्ग, विभक्ति और वचन जिस संज्ञासे उन विशेषणोंका सम्बन्ध है उन संज्ञाके लिङ्ग, विभक्ति और वचनके अनुसार हुए हैं। जैसे :—

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

गच्छन्ति यह न० द्वि० व० व०; कारण कि **मित्राणि** यह न० द्वि० व०व० है।
स्पृहयन्त्यः यह स्त्री० प्र० व० व०; कारण कि **ललनाः** यह स्त्री० प्र० व० व० है।
वन्दमानया यह स्त्री० तृ० ए० व०; कारण कि **स्नुषया** यह स्त्री० तृ० ए० व० है।

वर्तमानकालवाचक कृदन्त विशेषण कैसे बनाए जाते हैं और उनके विभक्तियोंके रूप कैसे होते हैं इसका विचार अब यहाँ किया जाता है:—

परस्मैपदी:—गम्—गच्छत् (गच्छन्ति–अन्ति + अत्)
नश्—नश्यत् (नश्यन्ति–अन्ति + अत्)
इष्—इच्छत् (इच्छन्ति–अन्ति + अत्)
प्र —प्रीणयत् (प्रीणयन्ति–अन्ति + अत्)
अस्—सत् (सन्ति–अन्ति + अत्)
शु —शृण्वत् (शृण्वन्ति–अन्ति + अत्)
कृ —कुर्वत् (कुर्वन्ति–अन्ति + अत्)
ग्रह्—गृह्णत् (गृह्णन्ति–अन्ति + अत्)
ज्ञा —जानत् (जानन्ति–अन्ति + अत्)

ऊपर दिए हुए पृथक्करणसे यह दिखाई देगा कि धातुका वर्तमानकालका तृ० पु० व० वचनका रूप लेकर उसमेंसे 'अन्ति' यह प्रत्यय निकाल कर 'अत्' यह प्रत्यय जोड़ देनेसे परस्मैपदके वर्त० का० कृ० विशेषणका रूप बन जाता है।

२ गच्छत् (पुं०)

गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः	**प्र०**	गच्छतः	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भ्यः	**पं०**
गच्छन्तम्	,,	गच्छतः	**द्वि०**	,,	गच्छतोः	गच्छताम्	**ष०**
गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः	**तृ०**	गच्छति	,,	गच्छत्सु	**स०**
गच्छते	,,	गच्छद्भ्यः	**च०**	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः	**सं०**

ये रूप 'वत्' प्रत्ययान्त विशेषणोंके रूपोंके समान हुए हैं। केवल प्रथमा–एकवचनमें उपान्त्य स्वर 'अ' ही रहता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रथम गण, चतुर्थ गण, षष्ठ गण और दशम गण इनकी धातुओंके परस्मैपदके वर्तमानकालवाचक कृ० विशेषण, और सत्, शृण्वत्, कुर्वत्, ज्ञानत्, गृह्णत्, इनके रूप पुंलिङ्गमें 'गच्छत्' के रूपोंके समान करना चाहिए।

३

गच्छत्—नपुंसकलिङ्ग

प्र० ग०	गच्छत्	गच्छन्ती	गच्छन्ति	प्र० द्वि० सं०	इतर पुंलिङ्गके समान
च० ग०	नश्यत्	नश्यन्ती	नश्यन्ति	प्र० द्वि० सं०	,,
द० ग०	प्रीणयत्	प्रीणयन्ती	प्रीणयन्ति	,,	,,

परंतु

ष० ग०	इच्छत्	इच्छती·न्ती	इच्छन्ति	,,	,,
द्वि० ग०	सत्	सती	सन्ति	,,	,,
पं० ग०	शृण्वत्	शृण्वती	शृण्वन्ति	,,	,,
न० ग०	जानत्	जानती	जानन्ति	,,	,,
न० ग०	गृह्णत्	गृह्णती	गृह्णन्ति	,,	,,
अ० ग०	कुर्वत्	कुर्वती	कुर्वन्ति	,,	,,

इन रूपोंसे यह दिखाई देगा कि प्र० च० और द० गणके वर्त० कृ० विशेषणोंके रूप नपुंसकलिङ्गमें 'जगत्' के समान होते हैं। प्र० द्वि० सं० द्विवचनमें 'त्' के पहले अनुनासिक आता है। षष्ठ गणके वर्त० कृ० वि० के नपुं० प्र० द्वि० सं० के द्विवचनमें 'त्' के पहले अनुनासिक विकल्पसे आता है; और अन्य पांच धातुके रूप 'जगत्' के रूपोंके समान होते हैं, अर्थात् अनुनासिक आताही नहीं।

४

स्त्रीलिङ्गके रूप

स्त्रीलिङ्गमें वर्तमानकालवाचक कृदन्त विशेषण

नपुं० प्रथमाके द्विवचनके रूपको मूल शब्द समझकर 'नदी' शब्दके समान इनकी विभक्तियोंके रूप बनाये जाते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

५ आत्मनेपदी—वर्त० धा० विशेषण

प्र० ग० मुद् — मोदमान (मोदन्ते – अन्ते + मान)
च० ग० युध् — युध्यमान (युध्यन्ते – अन्ते + मान)
प० ग० मृ — म्रियमाण (म्रियन्ते – अन्ते + मान)
द० ग० मृग् — मृगयमाण (मृगयन्ते – अन्ते + मान)

सूचना—आवश्यकतानुसार 'मान' के 'न्' का 'ण्' करना चाहिए।

यह रूप आत्मनेपदके १–४–६–१० इन गणोंके धातुके वर्त० कृ० वि० हैं। वे मूल धातुके वर्त० अन्य पु० व० व० के रूपोंमेंसे '**अन्ते**' यह प्रत्यय निकालकर और '**मान**' जोड़कर बनाये गये हैं। इनके पुंलिङ्गके रूप 'देव' के रूपोंके समान, नपुंसकलिङ्गके 'वन' शब्दके रूपोंके समान और स्त्रीलिङ्गमें 'आ' जोड़कर 'माला' के रूपोंके समान बनाए जाते हैं।

सूचनाः—'अन्ते' यह प्रत्यय निकालनेके पश्चात् धातुके 'सविकरण' रूपोंको 'मान' प्रत्यय जोड़ दिया जाता है। परस्मैपदमें भी 'अन्ति' प्रत्यय निकाल लेनेके पश्चात् १, ४, ६ और १० गणके धातुके सविकरण रूपोंकोही 'अत्' यह प्रत्यय लगाया जाता है। परंतु 'अत्' का आरम्भ 'अ' से होता है इससे विकरण युक्त रूपके अन्त्य 'अ' का लोप होता है।

६ कर्मणि वर्त० धा० विशेषण

गम् — गम्यते – गम्यमान	दा — दीयते – दीयमान
जि — जीयते – जीयमान	हृ — ह्रियते – ह्रियमाण
हृ — ह्रियते – ह्रियमाण	चुर् — चोर्यते – चोर्यमाण
यज्— इज्यते – इज्यमान	ताड् — ताड्यते– ताड्यमान

इन रूपोंको बनाते समय धातुके कर्मणि वर्त० का० अन्य पु० के ए० व० का रूप लेकर उसमेंसे 'ते' यह प्रत्यय निकाल कर उसके स्थानपर 'मान' प्रत्यय जोड़ दिया गया है। इन विशेषणोंके रूप पुंलिङ्गमें 'देव' के समान, नपुं० में 'वन' के समान और स्त्रीलिङ्गमें 'आ' जोड़कर 'माला' शब्दके रूपोंके समान होते हैं।

सूचनाः—चतुर्थ गणके आत्मनेपद की धातुओंके कर्तृवाच्यमें और कर्मवाच्यमें वर्त० कृ० विशेषणके रूप एकसे होते हैं। —युध्–युध्यमान (कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य)
मन्–मन्यमान (,, ,,)

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

इस पाठके आरम्भमें दिए हुए वाक्योंसे यह ध्यानमें आवेगा कि, वर्तमान-कालवाचक कृदन्त विशेषणके रूपोंका उपयोग करना हो तो प्रधान क्रिया और गौण क्रियाका व्यापार काल समान ही होना चाहिए।

जैसे—पहले वाक्यमें मित्रोंके चलनेकी क्रिया और पूंछनेकी क्रियाके व्यापार का समय एक ही है।

७ (१) आगते मित्रे बालः अध्ययनम् आरभत—मित्रके आनेपर.....

(२) अर्जुनेन कृतायां प्रतिज्ञायां जयद्रथः भयेन अकम्पत—(जब) अर्जुनने प्रतिज्ञा की, तब.....

(३) सूर्ये प्रकाशमाने अन्धकारः न प्रसरति—(जब) सूर्य प्रकाशित होता है, तब.....

(४) गृहं त्यजति पितरि पुत्रः दुःखितः अभवत्—जब पिता घरका त्याग करते हैं, तब.....

इन चार वाक्योंमें अधोरेखांकित शब्दोंका प्रयोग गौण वाक्योंके लिए किया गया है। जैसे—**यदा मित्रम् आगतम्, यदा अर्जुनेन प्रतिज्ञा कृता, यावत् सूर्यः प्रकाशते, यावत् पिता गृहं त्यजति,** इन गौण वाक्योंके लिए पहले दो वाक्योंमें कर्मणि भू० कृ० विशेषणोंके सप्तमी विभक्तिके रूप रखकर उनके प्रथमान्त पद भी सप्तमीमें ही रखे गये है। पहले दो गौण वाक्यों-की क्रिया पूरी हो गई है इस लिए कर्मणि भूत० कृ० वि० और अन्तके दो गौण वाक्योंमें की क्रियाएं, प्रधान वाक्यके क्रियाओंके साथ हो रही हैं, इस लिए वर्त० कृ० वि० की योजना की गई है। इसके अतिरिक्त गौण क्रिया तथा प्रधान क्रिया इनके कर्तृपद भी भिन्न हैं। इस प्रकारकी रचनाको '**सति सप्तमी**' कहते हैं।

पश्यतः ईश्वरस्य जनाः पापं कुर्वन्ति—ईश्वरके देखते हुए भी.....

जब अनादर ध्वनित करना हो तो **सतःषष्ठी** का प्रयोग करनेकी रीति है। विशेष ज्ञानके लिए सं० वाक्यरचना पाठ ३१ देखो।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

नए शब्द

असिधाराव्रतम्—तलवारकी धारके समान कठिन व्रत
कारागृहम्—जेल, कैदखाना
दुष्कर (वि०)—करनेमें कठिन
धीर (वि०)—बुद्धिमान्, धैर्यवान्
निधनम्—मरण, मृत्यु
प्रतिकार—अडाना, प्रतिकार
राजपुरुष—राजाका अधिकारी
स्तोत्रम्—स्तुतिसे पूर्ण काव्य
स्नुषा—वधू

प्रश्न

१ निम्न-लिखित वाक्योंमें वर्तमानकालवाचक कृदन्त विशेषणोंके रूपोंका प्रयोग करोः—

१ समुद्रस्य तीरं प्रति (आ + गम्) नौकाम् अपश्यत् बालः ।
२ पुत्रेण (पठ्) श्रीरामस्य स्तोत्रं पितरम् आनन्दयत् ।
३ श्रावणस्य निधनेन (वि + सद्) तस्य पितरौ दशरथः असान्त्वयत् ।
४ दुःखं (परि + हृ) मित्रे विश्वासः उपपन्नः ।
५ (युध्) सैनिकेभ्यः युद्धम् एव रोचते ।
६ पुत्रजन्मनः वार्ता (कथ्) सेवकेभ्यः नृपेण पारितोषिकाणि दत्तानि ।
७ (अस् २ प० प०) आचरणम् असिधाराव्रतम् इव दुष्करं वर्तते ।
८ कपोतं (व्यध्) व्याधस्य पादतलं सर्पः अदशत् ।
९ (आ + पत्) आपदां प्रतिकारं धीरः करोति ।
१० (आ + रभ्) कार्यं सम्यक् चिन्तयति प्राज्ञः ।

२ निम्न-लिखित रूपोंको पहिचानो और उनका वाक्योंमें उपयोग करोः—

आनीयमानैः, अनुसरतः, प्रतिष्ठमानः, जायमानान्, आदिशता ।

३ कर्तरि और कर्मणि वर्त० कृ० वि० बनाओः—दृश्, इष्, प्र + स्था, सम् + गम्, डी, स्मृ, वह्, ग्रह्, दा, आ + ह्वे ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

१–४–६–१० गणके महत्त्वके उपसर्गसहित धातु

अय् (उद्–उदयते)–उदय होना
(परा–पला–पलायते) –भग जाना
अर्थ् (प्र–प्रार्थयते)–प्रार्थना करना
अस् (अप–अपास्यति)–त्याग करना
(निर्–निरस्यति)–नाश करना
इष् (अनु–अन्विष्यति)–तलाश करना, ढूंढना
ईक्ष् (अप्–अपेक्षते)–अपेक्षा करना
(उद्–प्रति)–रास्ता देखना
(उप् – उपेक्षते)–उपेक्षा करना
(परि–परीक्षते)–परीक्षा करना
ईर् (उद्–उदीरयति–ते) –उच्चारण करना
ऋध् (सम्–समृध्यति) – वृद्धि होना, उन्नति होना
काश् (प्र– १ आ० प०) – प्रकाशित होना
कृत् (नि–निकृन्तति) फाड़ना
कृष् (अप–अपकर्षति)–दूर खींच ले जाना
(आ)–खींचना
कॄ (प्र–प्रकिरति)–फैलाना, बोना
(वि०) उछालना, फेंकना
क्षिप् (अधि)–निन्दा करना
(नि)–अधिकारमें देना, (धरोहर) रखना
खन् (उद्–उत्खनति)–उखाड़ना, उपाडना
(नि)–गाडना, जड जमाना
गम् (उपसर्गोंके पाठमें दिया गया है)
गाह् (अव – व –१ आ० प०) स्नान करना, अंदर प्रवेश करना
गै (वि)–निन्दा करना
चर् (अनु)–अनुसरण करना
(उद्)–बोलना, ऊपर जाना
चुद् (प्र–प्रचोदयति–ते)–हंकालना, उत्तेजित करना
छद् (आ–आच्छादयति–ते)–ढांकना, आच्छादित करना
(प्र–सं)–छुपाना
जि (वि–परा–१ आ० प०)–जीतना, पराजय करना
डी (उद्–उड्डयते)–ऊंचा उड़ना
तप् (अनु–पश्चात्–१ प० प०) पश्चात्ताप करना
तॄ (अति–अतितरति)–पार जाना
(अव)–नीचे उतरना
(उद्)–उल्लंघन करना
(वि)–देना
दा (प्रति–प्रतियच्छति)–वापिस करना, लौटाना
दिश् (अप ६ उ० प०)–ढोंग करना
(आ)–आज्ञा करना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

दिश् (उप)–उपदेश करना
(निर्)–उल्लेख करना, निर्देश करना
(प्रति + आ)–न करना, तिरस्कार करना

द्रु (अभि–अभिद्रवति)–आक्रमण करना
(उप)–तकलीफ़ देना, सताना

धृ (उद्–उद्धरति)–(ऊपर) उठाना

नन्द् (अभि–१ प० प०)–अभिनन्दन करना, प्रसन्न होना

नम् (अव्–१ प० प०) नीचे झुकना
(उद्)–ऊपर उठना
(उप)–भाग्यमें होना, दैवाधीन होना

नश् (प्र–प्रणश्यति)–नाश होना

नह् (अपि–पि ४ उ० प०)–ढाँकना, पक्का बांधना
(सम्–४ आ० प०)–तैयार होना

नी (अनु–अनुनयति)–नम्रतापूर्वक प्रार्थना करना
(अप)–भगाना, दूर ले जाना
(आ)–लाना
(अभि)–अभिनय करना, स्वांग लेना
(निर्)–निश्चय करना, निर्णय करना
(परि)–विवाह करना

नुद् (अप–अपनुदति)–हंकालना
(प्र–प्रणुदति)–निकाल देना, हंकालना

पत् (अभि–१ प० प०) आक्रमण करना
(उद्)–कूदना, उड़ना
(परा)–पीछे फिरना
(परि)–चक्कर लगाना
(प्र + नि)–नमस्कार करना

पद् (उद्–उत्पद्यते)–उत्पन्न होना
(उप)–पास जाना, युक्तिसंगत होना
(निस्–निष्पद्यते)–परिणाम होना
(प्र)–शरणमें जाना

पीड् (निस्–निष्पीडयति)–दाबना, निचोना

पृ (वि + आ–व्याप्रियते)–संलग्न रहना, उद्यममें रहना

प्रच्छ् (आ–आपृच्छते)–आज्ञा लेना,
(परि–परिपृच्छति)–तलाश करना

बुध्–(प्र–४ आ० प०)–जाग्रत होना

भज् (वि–१ उ० प०)–विभाग करना

भर्त्स् (निर्–निर्भर्त्सयते)–निन्दा करना

भाष् (अप–१ आ० प०) बुरे शब्द बोलना (प्रति)–उत्तर देना

भू (अनु–अनुभवति)–अनुभव लेना
(अभि)–अपमान करना, आक्रमण करना
(आविस्–आविर्भवति)–प्रकट होना
(उद्)–उत्पन्न होना
(परा)–पराभव करना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

भू (प्र०) (वि–विभावयति)–विचार करना, निश्चय करना
(सम्)–सम्मान करना
भ्रम् (परि–परिभ्रमति)–परिभ्रमण करना
(उद्–सम्)–पागल होगा, गडबडमें पड जाना
मद् (प्र–प्रमाद्यति)–भूल करना
मन् (अनु–अनुमन्यते)–आज्ञा देना
(अप–अव)–अपमान करना
मन्त्र् (आ–आमन्त्रयते)–आज्ञा लेना
(नि)–बुलाना, निमन्त्रण देना
मस्ज् (उद्–उन्मज्जति)–ऊपर उठना
(नि)–डूबना
मील् (उद्–उन्मीलति)–आंखें खुलना
(नि)–आंखें बंद होना
मूल् (उद्–उन्मूलयति–ते)–उखाडना
मृश् (परा–परामृशति)–स्मर्श करना, जड़ खोदना
(वि)–विचार करना
यत् (प्र–प्रयतते)–प्रयत्न करना
यम् (उप–उपयच्छते)–विवाह करना
(नि–नियच्छति)–अधिकारमें रखना
रभ् (आ–प्र + आ–प्रारभते)– आरम्भ करना
(परि)–आलिंगन देना
रम् (उप–उपरमति–ते)–ठहरना, मरना
(वि–विरमति)–ठहरना
राज् (वि–विराजते)–शोभा देना, प्रकाशित होना
राध् (अप–अपराध्यति)–अपराध करना, चूकना, भूल करना
रुच् (वि–विरोचते)–प्रकाशित होना, चमकना
रुह् (आ–आरोहति)–चढ़ना
(अव)–उतरना
(प्र)–चढ़ना, ऊगना
लप् (अप–अपलपति)–अस्वीकार करना
(प्र)–बडबडाना
(वि)–शोक करना
(सम्)–सम्भाषण करना
लभ् (उप + आ – उपालभते)–दोष देना
(वि + प्र)–फँसाना
लम्ब् (अव + अवलम्बते)–लटकना, अवलम्ब ग्रहण करना
(आ)–आश्रय लेना
(वि)–देर करना
लिख् (आ)–(आलिखति)–लकीरें खींचना, लिखना
(वि)–जड़ना, लिखना
वद् (अप–अपवदते)–निन्दा करना
(प्रति–प्रतिवदति)–उत्तर देना
(वि–विवदते)–लड़ना, वादविवाद करना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

वस् (प्र–प्रवसति)–प्रवास करना
(अनु, अधि, आ, उप, नि)–रहना
वह् (उद्–उद्वहति)–(ऊपर) उठाना, विवाह करना
(वि–विवहति)–विवाह करना
विश् (उप–उपविशति)–बैठना
वृत् (अनु–अनुवर्तते)–अनुसरण करना
(नि)–पीछे फिरना, लौटना, ठहरना
(प्र)–आरम्भ करना, होना
शंस् (प्र–प्रशंसति)–स्तुति करना
शम् (नि–निशाम्यति)– } सुनना
(नि–निशामयति–ते)– }
सद् (अव–अवसीदति)–नाश होना
(नि–निषीदति)–बैठना
(प्र–प्रसीदति)–प्रसन्न होना
(वि–विषीदति)–शोक करना

सृज् (उद्–उत्सृजति)–छोड़ना, त्याग करना
(वि–विसृजति)–भेजना
सो (अधि+अव–अध्यवस्यति)– निर्णय करना
(वि+अव)–निश्चय करना, प्रयत्न करना
स्था (अनु–अनुतिष्ठति)–कार्यरूपमें परिणत करना, पूरा करना, व्यवहारमें लाना
(उद्–उत्तिष्ठति)–खड़े रहना
(उप–उपतिष्ठते)–पूजा करना
स्मृ (वि–विस्मरति)–भूलना
हस् (उप–उपहसति)– } मजा करना
(वि–विहसति)– }
ह्वे (आ–आह्वयति)–बुलाना
(आ–आह्वयते)–आह्वान करना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

कुछ व्याकरणकी संज्ञा

हिंदी	संस्कृत	अंग्रेजी
वर्तमानकाल	लट्	The Present
प्रथम भूतकाल	लङ्	The Imperfect
आज्ञार्थ	लोट्	The Imperative
विध्यर्थ	विधिलिङ्	The Potential
प्रेरणार्थक (प्रयोजक)	णिजन्त	The Causal
हेत्वर्थक कृदन्त तुमन्त अव्यय	तुमुन्नन्त	The Infinitive
पूर्वकालिक कृदन्त अव्यय (ल्यवन्त)	ल्यवन्त-क्त्वान्त	The Gerund or The Indeclinable / Past Participle or The Absolutive
कर्मणि भूतकालवाचक कृदन्त विशेषण	क्त्वान्त	The Past Passive Participle
वर्तमानकालिक कृदन्त विशेषण	शात्रन्त (प. प.) शानजन्त (आ.प.)	The Present Participle
कर्तृवाच्य	कर्तृवाच्य	The Active Voice
कर्मवाच्य	कर्मवाच्य	The Passive Voice
भाववाच्य	भाववाच्य	The Impersonal Construction
उत्तम पुरुष	उत्तम पुरुष	The First Person
मध्यम पुरुष	मध्यम पुरुष	The Second Person
अन्य पुरुष	प्रथम पुरुष	The Third Person
प्रथम गण	भ्वादिगण	The First Conjugation
चतुर्थ गण	दिवादिगण	The Fourth Conjugation
षष्ठ गण	तुदादिगण	The Sixth Conjugation
दशम गण	चुरादिगण	The Tenth Conjugation

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

भाग दूसरा—संस्कृत-पाठ

(गद्यविभाग)

ईश्वरः ।

ईश्वरः पृथ्वीं सृजति। सः मनुजान् पशून् खगान् सागरान् पर्वतान् वृक्षान् च सृजति। जनाः ईश्वरं हस्ताभ्यां नमन्ति। ते ईश्वरं कल्याणाय ध्यायन्ति। जनाः ईश्वरस्य प्रतिमां पुष्पैः पूजयन्ति। ते ईश्वरं नयनाभ्यां न पश्यन्ति। भक्ताः ईश्वरं चित्तेन पश्यन्ति। ते ईश्वरस्य गुणान् आनन्देन गायन्ति। भक्तानां निष्ठया ईश्वरः तुष्यति। सः भक्तेभ्यः सुखम् आरोग्यं मोक्षं च यच्छति। एवं ते सुखेन कालं नयन्ति। सङ्कटेषु जनाः ईश्वरं शरणं गच्छन्ति। सः जनान् रक्षति। ईश्वरः सकलां पृथ्वीं पश्यति। सूर्यः चन्द्रः च ईश्वरस्य नयने। अतः भयेन जनाः पापं न कुर्वन्ति। सः जनानां रक्षणाय पृथ्वीम् अवतरति। मत्स्यः ईश्वरस्य प्रथमः अवतारः। कल्किः ईश्वरस्य दशमः अवतारः। ईश्वराय नमः।

सूचना

'न'—अर्थात् 'नहीं' यह निषेधार्थक अव्यय क्रियाके साथ नकारार्थमें प्रयुक्त होता है।

'अतः'—अर्थात् 'इस लिए, इस कारण,' यह अव्यय कारणवाचक वाक्यके पश्चात् प्रयुक्त होता है।

'च'—अर्थात् 'और' यह अव्यय दो या अधिक संज्ञाएं, क्रियाएं अथवा वाक्य इन सबके अन्तमें रखा जाता है; अथवा प्रत्येक संज्ञा अथवा वाक्यके पश्चात् तथा अन्तमें भी प्रयुक्त किया जाता है।

'नमः'—अर्थात् 'नमस्कार' यह अव्यय चतुर्थ्यन्त संज्ञाके साथ प्रयुक्त होता है

'दा—यच्छ्—देना' इसके उपयोगमें जिसे देना हो उसके वाचक शब्दके चतुर्थी विभक्तिके प्रत्यय लगाए जाते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अभ्यास

१ किं किं सृजति ईश्वरः । जनाः तं कथं पूजयन्ति । भक्ताः किं कुर्वन्ति । ईश्वरः तेभ्यः किं किं यच्छति । भक्ताः ईश्वरं कथं पश्यन्ति । सङ्कटेषु जनाः किं कुर्वन्ति । ईश्वरस्य के के अवताराः ।

२ वाक्यांकी पूर्ति करोः—(१) ——— निष्ठया ——— तुष्यति । (२) सूर्यः ——— च ——— नेत्रे । (३) जनाः ——— गुणान् ——— । (४) ईश्वरः ——— रक्षणाय ——— अवतरति । (५) जनाः ——— ईश्वरं ——— ।

३ कण्ठाग्र करोः—अमरा निर्जरा देवास्त्रिदशा विबुधाः सुराः ।

१—नारायणः ।

एषः वनप्रदेशः । वने बहवः वृक्षाः रोहन्ति । वृक्षाः पर्णैः पुष्पैः च शोभन्ते । वृक्षाणां समीपे जलप्रवाहः वहति पर्वतात् । वृक्षस्य मूले अस्ति एका शिला । शिलायाम् उपविशति एकः बालः । सः नारायणं ध्यायति । तस्य मस्तके जटाभारः वर्तते । सः बालभक्तः ध्रुवः । ईश्वरस्य दर्शनाय सः वनम् आगतः । नारायणः ध्रुवस्य भक्त्या सन्तुष्टः भवति । तस्य च पुरतः तिष्ठति । नारायणस्य रूपं मनोहरम् । तस्य मस्तकं मुकुटेन शोभते । सः हस्तेषु चक्रं गदां पद्मं शङ्खं च धारयति । तस्य कण्ठे रत्नहाराः विलसन्ति । ध्रुवः नारायणं पश्यति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

नारायणास्य रम्यं रूपं ध्रुवम् आनन्दयति। सः तं हस्ताभ्यां नमति। नारायणाय नमः।

सूचना

१ वर्तते (है) और शोभन्ते (शोभा देते हैं) ये आत्मनेपदके रूप हैं। दूसरी क्रियाएं परस्मैपदकी हैं।

२ संस्कृत भाषाके वाक्योंमें शब्दोंकी रचना किसीभी क्रम से हो सकती है। कर्ता, कर्म, क्रिया यह क्रम आवश्यक नहीं है।

अभ्यास

१ वने किं रोहति। वृक्षाणां समीपे किं वहति। शिला कुत्र वर्तते। ध्रुवः किं करोति। तस्य मस्तके किं वर्तते। किमर्थं सः वनम् आगतः। नारायणस्य मस्तकं केन शोभते। तस्य हस्तेषु किम् किम् अस्ति। ध्रुवं किम् आनन्दयति।

२ ध्रुवः, नारायणः और वनम् इनके संबंधमें चार चार वाक्य लिखो।

२—शरीरम्।

एतद् मम शरीरम्। जीवः शरीरे वसति। अतः शरीरं जीवस्य गृहम्। अहं शरीरस्य अवयवान् वर्णयामि। एतौ मम हस्तौ। अहं हस्ताभ्यां देवं नमामि। एकः मम दक्षिणः हस्तः अन्यः च वामः। अहं हस्तेन लिखामि शब्दान् पत्रे। एतौ मम चरणौ। अहं पादाभ्यां चरामि धावामि च। एते मम नेत्रे। अहं नेत्राभ्यां पश्यामि। एतौ मम कर्णौ। अहं कर्णाभ्यां शृणोमि गानं भाषणं वा। हे राम एतद् तव मुखम्। त्वं मुखेन वदसि अन्नं भक्षयसि जलं च पिबसि। गोविन्दः अपि मुखेन वदति अन्नं भक्षयति जलं च पिबति। एषा मम नासिका। अहं नासिकया गन्धं जिघ्रामि। एते मम दन्ताः। अहं दन्तैः अन्नं चर्वामि। रामः अपि दन्तैः अन्नं चर्वति। एषा तव जिह्वा। त्वं जिह्वया रसं जानासि। एतद् मम उदरम्।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

उदरम् अन्नं धारयति। एतद् मम शीर्षम्। शीर्षे केशाः रोहन्ति। शरीरस्य अन्तर्भागे हृदयं वर्तते। हृदयं शरीरस्य प्रमुखः भागः। हृदयात् रुधिरं शरीरे प्रसरति। नरः अवयवैः कार्याणि करोति।

सूचना

पुं०—एषः—यह, एतौ—ये दो; न० एतद्—यह, एते—ये दो; स्त्री० एषा—यह, एते—ये दो.

'वा—अथवा' इस अव्यय का उपयोग 'च' के समान किया जाता है।

'अपि—भी,' यह अव्यय जिस शब्दसे उसका सम्बन्ध हो उसके पश्चात् प्रयुक्त होता है। अवयवदर्शक शब्द एकही आदमीके सम्बन्धमें हो तो द्विवचनमें लिखे जाते हैं।

अभ्यास

१ जीवस्य किं गृहम्। त्वं हस्ताभ्यां किं करोषि। नरः नेत्राभ्यां किं करोति। अहं मुखेन किं करोमि। त्वं कथं शृणोषि। नरः रसं कथं जानाति। कः प्रमुखः भागः शरीरस्य। हृदयात् किं प्रसरति।

२ वाक्योंकी पूर्ति करो:—(१) नरः दन्तैः.....। (२) अहं नासिकया...। (३) केशाः .....। (४) त्वं हस्तेन .....। (५) नरः पादाभ्यां,.....।

३—हिमालयः।

हिमालयः पर्वतेषु श्रेष्ठः भवति। भारतवर्षस्य उत्तरतः सः तिष्ठति। हिमालयः भारतवर्षं रक्षति। एतस्य नगस्य शिखराणि अतीव उच्चानि। तानि सर्वदा हिमेन आच्छादितानि सन्ति। अतः सः हिमस्य आलयः अथवा हिमालयः। हिमाचलस्य दुरारोहाणि तुङ्गानि कूटानि मेघाः आश्रयन्ति। तापसाः अपि तत्र वसन्ति स्थिरेण चित्तेन च ईश्वरं ध्यायन्ति। हिमालयस्य अतितुङ्गे शृङ्गे

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

मानसं नाम विशालः सरोवरः वर्तते। सः विकसितैः कमलैः शोभते। तस्मिन् हंसाः विहरन्ति। जलम् अपि स्वच्छं मधुरं च

वर्तते। तस्य समीपे तिष्ठति शिवालयः। हिमालयस्य कन्या पार्वती शङ्करस्य भार्या। हिमालयात् गङ्गा यमुना ब्रह्मपुत्रा च उद्भवन्ति। एतस्य पर्वतस्य तटे निबिडानि अरण्यानि सन्ति। तत्र व्याघ्राः सिंहाः च हिंस्राः सत्त्वाः गुहासु वसन्ति। अतः वनेषु सञ्चारः अपि दुष्करः भवति। हेमन्तकाले हिमालये सर्वत्र हिमं वर्तते। अतः सः शुभ्रवस्त्रेण आच्छादितः इव शोभते।

सूचना

उत्तरतः—तस् प्रत्ययान्त दिशावाचक शब्द षष्ठ्यन्त संज्ञाके साथ प्रयुक्त होते हैं।

नाम—नामका—यह अव्यय नामदर्शक शब्दके पश्चात् आता है और जिसका नाम हो उस अर्थका शब्द पहले रहता है और प्रथम तथा द्वितीय ये दोनों शब्द एकही विभक्तिमें प्रयुक्त किये जाते हैं।

इव—'समान' 'मानोंकि'—यह अव्यय कल्पनादर्शक शब्दके पश्चात् आता है; जिससे तुलना करना हो वह पहलेका शब्द और जिसकी तुलना हो वह पीछेका शब्द ये दोनों समान विभक्तिमें प्रयुक्त होते हैं।

CC-0. In Public Domain.Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अभ्यास

१ कुत्र तिष्ठति हिमालयः। कीदृशानि तस्य शिखराणि। के आश्रयन्ति शिखराणि। कुत्र वर्तते मानसम्। काः नद्यः उद्भवन्ति हिमालयात्। के वसन्ति गुहासु।

१ रिक्तास्थानमें शब्दोंकी योजना करो :—

(अ) हिमालयस्य शिखराणि १———२———३———
(विशेषणोंकी योजना करो)

(आ) हिमालयः पर्वतेषु श्रेष्ठः।
अर्जुनः———श्रेष्ठः।
सिंहः———श्रेष्ठः।

(इ) विशेषणानि | नामानि
——— | अरण्यम्
——— | सत्त्वः
——— | जलम्
——— | कमलानि
——— | चित्तम्

(ई) चन्द्रः इव धवला कीर्तिः।
———इव सत्यप्रियः नृपः।
———इव शूरः वीरः।

(उ) ———नाम नृपस्य रामः नाम
———अयोध्यायां नाम———
राज्यम् अकरोत्। (किया)

४—उद्यानम्

विशालेषु नगरेषु उद्यानानि वर्तन्ते। उद्यानैः नगराणां शोभा वर्धते। उपवने विविधाः वृक्षाः लताः च रोहन्ति। वृक्षाः पर्णैः पुष्पैः च शोभन्ते। पर्णानां वर्णाः हरितः पुष्पाणां च विविधः। पक्वानि फलानि अपि वृक्षाणां भूषणानि। वृक्षाणां शाखाः फलानां भारेण नमन्ति। लताः वृक्षान् आश्रयन्ति। लतानां कुसुमानि श्वेतानि पीतानि रक्तानि नीलानि वा सन्ति। वृक्षाणां छायासु जनाः विश्रान्तिसुखं लभन्ते। जनाः वृक्षाणां फलानि भक्षयन्ति। एवं

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

वृक्षाः छायया फलैः च जनेषु उपकारं कुर्वन्ति। विहगाः वृक्षेषु वसन्ति। ते नीडानि रचयन्ति तत्र। खगाः अपि वृक्षाणां फलानि

खादन्ति। वृक्षेषु खगानां मधुरं कूजनं मनोहरं वर्तते। उद्याने भूमिभागः हरितेन तृणेन आच्छादितः अस्ति। मालाकारः वृक्षान् लताः च जलेन सिञ्चति। उपवनेषु तडागाः अपि सन्ति। तडागानां स्थिरे जले मन्देन पवनेन तरङ्गाः उद्भवन्ति। कमलानि अपि तडागेषु रोहन्ति। सूर्योदये प्रफुल्लैः कमलैः तडागः शोभते। हंसाः तत्र क्रीडन्ति मयूराः च नृत्यन्ति। प्रातःकाले सायङ्काले च उद्यानस्य स्वरूपम् अतीव रमणीयम्।

सूचना

भूमिभागः—(भूमेः भागः), सूर्योदयः (सूर्यस्य उदयः) इन सामासिक शब्दोंका अर्थ पूर्ण है और प्रथम पदका द्वितीय पदसे षष्ठी विभक्तिसे सम्बन्ध प्रदर्शित किया जाता है। ये समास षष्ठीतत्पुरुष समास कहे जाते हैं।

अभ्यास

१ वाक्योंकी पूर्ति करोः— वृक्षाः जनेषु ——— ——— च ——— ———।
वृक्षाणां शाखाः ——— ——— ———। खगाः वृक्षेषु ——— ———।
भूमिभागः हरितेन ——— ——— ———।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

२ कर्मपदोंकी योजना करो :—लताः ——— आश्रयन्ति । मालाकारः ——— च सिञ्चति । जनाः वृक्षाणां ——— भक्षयन्ति । जनाः वृक्षाणां छायासु ——— लभन्ते ।

३ योग्य विशेष्योंका प्रयोग करो:—हरितानि । मधुरम् । मन्दः । प्रफुल्लानि । विशालानि । पक्वम् ।

४ योग्य शब्दोंका प्रयोग करो :— खगाः ——— वसन्ति । नराः ——— वसन्ति । व्याघ्राः ——— वसन्ति । मत्स्याः ——— वसन्ति ।

५—विहगाः ।

गरुडः मयूरः शुकः कोकिलः च इति विविधाः खगाः सन्ति । गरुडः विहङ्गमानां प्रमुखः । गरुडः नारायणस्य वाहनम् । मयूरः अपि सरस्वत्याः वाहनम् । गरुडस्य शासने खगाः तिष्ठन्ति । विहगाः दिवा इतस्ततः डयन्ते आकाशे । ते भक्ष्यं मार्गयन्ति । खगाः कीटकान् धान्यकणान् च भक्षयन्ति । रात्रौ ते कुलायेषु वसन्ति निद्रासुखम् अनुभवन्ति च ।

शुकः मयूरः कोकिलः कपोतः वायसः च जनानां परिचिताः सन्ति । वायसस्य वर्णः श्यामः शुकस्य हरितः मयूरस्य च चित्रितः वर्तते । वायसस्य कर्कशः स्वरः जनेभ्यः न रोचते । कोकिलस्य मधुरः स्वरः जनान् आनन्दयति । मयूरः केकारवं करोति नृत्यति च आनन्देन वर्षाकाले । शुकः मनुजः इव शब्दान् वदति । अतः जनाः शुकान् पञ्जरेषु स्थापयन्ति । कपोतस्य स्वभावः सौम्यः कातरः च । मयूरः कोकिलः शुकः कपोतः वा जनानां प्रियः भवति । न तथा वायसः । मयूरस्य स्वरूपं मनोहरं वर्तते । तस्य मस्तके रम्यः तरलः च पिच्छकानां कलापः शोभते । तस्य नृत्यकाले बर्हः व्यजनम् इव विस्तृतः भवति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

सूचना

रुच्--पसंद होना-इसके उपयोगमें जिसको पसंद होता है वह चतुर्थी विभक्तिमें और जो वस्तु पसंद होती है उस अर्थका शब्द प्रथमा विभक्तिमें प्रयुक्त होता है।

अभ्यास

१ खगानां कः प्रमुखः। दिवा खगाः किं कुर्वन्ति। के खगाः जनानां परिचिताः। किमर्थं जनाः शुकं पञ्जरे स्थापयन्ति। मयूरस्य रूपं कथं रम्यं भवति। कीदृशः स्वभावः कपोतस्य।

२ वाक्योंकी पूर्ति करोः— मयूरः _____ वाहनम्। खगाः _____ धान्यकणान् _____ भक्षयन्ति। शुकः _____ इव _____ करोति। मयूरस्य _____ तरलः _____ कलापः शोभते। _____ इव विस्तृतः भवति _____ वर्हः।

३ गरुडस्य शासने खगाः तिष्ठन्ति। उसी प्रकर

_____ शासने छात्राः ,, ।
सेनापतेः ,, _____ ,, ।
_____ ,, प्रजाः ,, ।

४ मयूरः रोचते जनेभ्यः। क्रीडा रोचते _____। _____ रोचते ईश्वराय। नृत्यं रोचते _____।

६—विद्यागृहम्।

रामः मार्गे गोविन्दं पश्यति। तस्य हस्ते पुस्तकानि सन्ति। अतः रामः तं पृच्छति। गोविन्द कुत्र गच्छसि त्वम् इति।

गोविन्दः—अहं पाठशालां गच्छामि। किमर्थं तव हस्ते पुस्तकानि न वर्तन्ते। अपि त्वं पाठशालां न गच्छसि। किं त्वं स्वैरं भ्रमसि।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

रामः—अद्य अस्माकम् अनध्यायदिनं वर्तते। यतः ह्यः एव वार्षिकः क्रीडोत्सवः समाप्तः। अपि अहं त्वया सह तव पाठशालाम् आगच्छामि।

गोविन्दः—अथ किम्। समीपे एव ग्रामात् बहिः अस्माकं भव्यं विद्यामन्दिरं वर्तते। तद् स्थानम् अतीव रमणीयम्। अस्माकं चित्तम् आह्लादयति तद्।

रामः—कथम् इव।

गोविन्दः—शालागृहस्य पुरतः मनोहरं सुरचितं च उद्यानं वर्तते। तस्मिन् विविधाः पुष्पवृक्षाः लताः च रोहन्ति। पार्श्वतः तु वर्तते क्रीडाङ्गणम्। तत्र वयं सर्वे छात्राः विविधैः प्रकारैः सायङ्काले क्रीडामः। अस्माकम् अध्यापकाः अपि विविधेषु शास्त्रेषु निपुणाः सन्ति। ते अस्मान् विविधान् विषयान् सम्यक् अध्यापयन्ति।

रामः—शोभनं खलु तव शालागृहम्। सुभाग्यं तव। अस्माकं विद्यागृहे अपि क्रीडाङ्गणं विना अन्यानि उपयुक्तानि ज्ञानसाधनानि

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

सन्ति। आचार्याः अपि पण्डिताः सन्ति। किन्तु क्रीडाङ्गणं नास्ति यतः नागरिकाणां गृहैः व्याप्ते नगरस्य मध्यभागे तिष्ठति अस्माकं शालागृहम्।

गोविन्दः—शीघ्रं गच्छावः पाठशालाम्।

सूचना

यतः—क्योंकि–इस अव्ययका उपयोग कार्यवाचक वाक्यके पश्चात् और कारणवाचक वाक्यके पहले किया जाता है। **हि**—इसका भी उपयोग इसी अर्थमें कारणवाचक वाक्यमें प्रथम शब्दके पश्चात् होता है।

अपि और **किम्** इनका प्रश्नार्थक अव्ययके समान उपयोग किया जाता है। अपि वाक्यारम्भमें प्रयुक्त होता है और 'किम्' कहीं भी।

अथ किम्—इनका उपयोग स्वीकृति सूचक उत्तर देते समय किया जाता है।

बहिः—बाहर–इसका उपयोग पञ्चम्यन्त संज्ञाके साथ किया जाता है।

अभ्यास

१ रामः किमर्थं पाठशालां न गच्छति। केन कारणेन तद् अनध्यायदिनम्। गोविन्दस्य शालागृहं केन कारणेन आह्लादकम्। कुत्र वर्तते रामस्य पाठशाला।

२ अध्यापकाः शास्त्रेषु निपुणाः। मयूरः ——— प्रवीणः। बालकाः ——— च निपुणाः। वीरः ——— निपुणः। ——— राज्यतन्त्रे निपुणः।

३ विद्यागृहं ग्रामात् बहिः वर्तते। अङ्गणं ——— बहिः वर्तते। क्रीडाङ्गणं ——— बहिः वर्तते। मत्स्यः ——— बहिः न जीवति।

४ रामेण सह गोविन्दः गच्छति। ——— सह पुत्रः गच्छति। ——— सह भाषते नृपः। ——— सह अध्यापकाः क्रीडन्ति।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

७—सागरः ।

भारतवर्षीयाः सागरं पवित्रं मन्यन्ते । सागरे सर्वाणि तीर्थानि सन्ति । सागरः पृथिव्याः मेखला इति कवयः वर्णयन्ति । समुद्रः विस्तीर्णः जलसञ्चयः भवति । उदधेः जलं क्षारम् । अतः जनाः तद् न पिबन्ति । सागरस्य पृष्ठभागे अग्निनौकाः सञ्चरन्ति । जनाः ताभिः देशान्तरं गच्छन्ति वाणिज्यं च कुर्वन्ति। वर्षाकाले सागरस्य

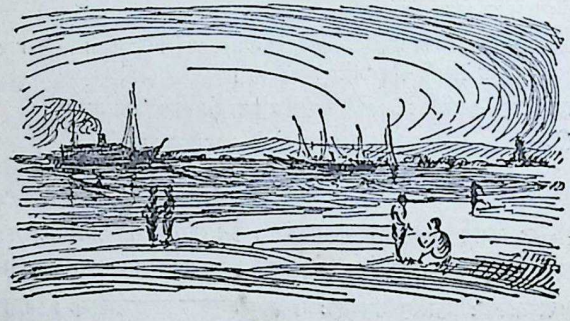

जले प्रबलेन वातेन तुङ्गाः तरङ्गाः उद्भवन्ति । तदा घोरः गर्जनारवः उत्पद्यते । सागरे बहुविधाः सत्त्वाः निवसन्ति मत्स्याः कूर्माः मकराः च । सागरस्य तले बहुमूल्यानि रत्नानि मौक्तिकानि च तिष्ठन्ति । अतः जनाः सागरं रत्नाकरं वदन्ति । नद्यः सागरे विलीयन्ते । अतः सागरः नदीपतिः नदीशः वा भवति ।

प्रातःकाले सायङ्काले च समुद्रस्य तीरे सञ्चारः आह्लादकः भवति । शुद्धः प्रशान्तः च पवनः इतस्ततः वहति । उद्यमेन श्रान्ताः जनाः समुद्रतीरे मन्दं मन्दं सञ्चरन्ति । वालुकासु ते सुखेन उपविशन्ति विश्राम्यन्ति च । बालाः बालिकाः नराः नार्यः वृद्धाः तरुणाः धनिकाः दरिद्राः च सर्वे समुद्रतीरं गच्छन्ति । बालाः बालिकाः

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

च सिकताभिः विविधैः प्रकारैः क्रीडन्ति। सागरस्य जलं चन्द्रोदये वर्धते।

सूचना

विलीयन्ते—एकरूप होते हैं, मिल जाते हैं (वि + ली – ४ ग० आ० प०)

'इति–ऐसा,' इस प्रकार यह अव्यय प्रथमान्त संज्ञाके पश्चात् अथवा वाक्यके अन्तमें लिखा जाता है।

वालुकाः—सिकताः—रेत, यह शब्द बहुवचनमें लिखे जाते हैं।

अभ्यास

१ केन कारणेन सागरः पवित्रः भवति। जनाः तस्य जलं किं न पिबन्ति। नौकाभिः जनाः किं कुर्वन्ति। समुद्रे कदा तरङ्गाः उद्भवन्ति। सायङ्काले के समुद्रतीरं गच्छन्ति। सागरस्य वेला कदा विस्तृता भवति।

२ वाक्योंकी पूर्ति करोः—— —— वालुकासु विश्राम्यन्ति। —— —— तरङ्गाः उद्भवन्ति। —— —— सागरे सन्ति। —— —— समुद्रस्य तीरे वहति।

३ निम्न-लिखित विशेषणोंको योग्य विशेष्योंकी योजना करोः—घोरः, पवित्राणि, प्रबलः, बहुमूल्यानि, भीषणाः, प्रशान्तः।

४ विग्रह करोः—जलसञ्चयः। गर्जनारवः। रत्नाकरः। समुद्रतीरम्।

८–नदी।

गङ्गा ब्रह्मपुत्रा यमुना च इति नद्यः भारतवर्षे वर्तन्ते। नदी पर्वतात् प्रभवति। प्रथमं नद्याः प्रवाहः अल्पः विद्यते। पश्चात् क्रमशः सः विततः भवति। नद्याः उद्गमस्थानम् उच्चं भवति। तस्मात् निम्नं प्रदेशं प्रति नदी वहति। वर्षाकाले नदीनां पात्राणि जलेन पूर्णानि भवन्ति। निदाघे तु तानि शुष्यन्ति। अथवा तेषु

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अतीव अल्पं जलं भवति। नद्याः जले नौकाः सञ्चरन्ति। जनाः नौकाभिः नद्याः पारं गच्छन्ति। नद्याः जलं जनाः क्षेत्राणि नयन्ति।

तेन जलेन क्षेत्रेषु विपुलं सस्यं रोहति। नद्याः समीपे समृद्धानि नगराणि वर्तन्ते। नद्याः तीरे वृक्षाः रोहन्ति। तेषां छायासु पान्थाः उपविशन्ति मधुरं जलं पिबन्ति सुखेन च विश्राम्यन्ति। भारतवर्षीयाः नदीं पवित्रा इति मन्यन्ते। अतः धार्मिकाः जनाः नद्याः जले स्नानं कुर्वान्ति पापं क्षालयन्ति पुण्यं लभन्ते च। नद्याः तीरे देवालयाः अपि विद्यन्ते। जनाः देवालयं गच्छन्ति देवस्य च प्रतिमां पूजयन्ति पुष्पैः। नदीनां समीपे तीर्थानि वर्तन्ते। यात्रिकाः पवित्राणि तीर्थानि गच्छन्ति प्रतिवर्षम्। अतः पुण्यं नदीनां दर्शनम्। नदीभ्यः नमः।

सूचना

'तु–परंतु' यह अव्यय किन्तु, परन्तु इनके समान दो वाक्योंके बीचमें नहीं आता है। वह दूसरे वाक्यमें प्रथम शब्दके पश्चात् आता है।

'प्रतिवर्षम्–प्रत्येक वर्ष' यह अव्ययीभाव समास है। पहला पद 'प्रति' यह अव्यय है और सब समासका उपयोग अव्ययके समान किया जाता है; इस प्रकारके समासोंका 'वर्षे वर्षे–प्रतिवर्षम्' इस प्रकारसे विग्रह होता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अभ्यास

१ कस्मात्प्रभवन्ति नद्यः । नदीनां पात्राणि कदा पूर्णानि भवन्ति । क्षेत्रेषु विपुलं सस्यं कथं रोहति । नद्याः तीरे किं वर्तते । के जनाः तीर्थानि गच्छन्ति । धार्मिकाः नद्याः जले किमर्थं स्नानं कुर्वन्ति ।

२ योग्य अव्ययोंकी योजना करोः—नदीनां ——— देवालयाः वर्तन्ते । निम्नं प्रदेशं ——— जलं वहति । नद्याः प्रवाहः ——— विततः भवति । नद्याः जलं निदाघे ——— अल्पं भवति । नद्याः जलस्य ——— नौकाः सञ्चरन्ति ।

३ विरुद्धार्थी शब्द लिखोः–अल्पम्, पुण्यम्, उच्चम्, धनिकः, वृद्धः, पूर्णिमा ।

४ विग्रह करोः—प्रतिदिनम्, प्रतिगृहम्, प्रतिशैलम्, प्रतिगजम्, प्रतिवनम् ।

५ भारतवर्षे काः अन्याः नद्यः वहन्ति ।

९—कृषीवलः ।

रामः ग्रामे वसति । तस्य वयस्यः गोविन्दः नगरे वसति । एकदा गोविन्दः रामस्य ग्रामं गच्छति तस्य च गृहे निवसति । रामः गोविन्देन सह ग्रामे सञ्चरति क्षेत्राणि उटजानि च गोविन्दः पश्यति । तदा तयोः संवादः भवति ।

गोविन्दः—अयि मित्र कस्य एतानि क्षेत्राणि । किम् एतद् क्षेत्राणां मध्ये ।

रामः—अपि त्वं न जानासि । कृषीवलस्य एतानि क्षेत्राणि । क्षेत्राणां मध्ये एतद् उटजम् । कृषीवलः उटजे वसति ।

गोविन्दः—एषः निर्जनः प्रदेशः । किमर्थं कृषीवलः एतादृशे स्थले वसति । कथं सः कालं नयति ।

रामः—उपपन्नः किल ते प्रश्नः । कृषिकार्यम् एव अस्य कृषीवलस्य उद्योगः । अतः सः बलीवर्दौ धेनुं सारमेयं कुक्कुटं च पालयति । सूर्योदयात् प्राक् कुक्कुटः रवं करोति । तेन रवेण कृषीवलः शयनात्

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

उत्तिष्ठति स्वकार्यम् आरभते च। सः हलेन भूमिं कृषति। बलीवर्दौ हलं कर्षतः। अनन्तरं सः क्षेत्रेषु बीजानि वपति। तेभ्यः पर्जन्येन सस्यानि रोहन्ति। एवं सः विपुलं धान्यं लभते। धेनुः तस्मै दुग्धं वितरति। सारमेयः तस्य क्षेत्राणि उटजं च रक्षति।

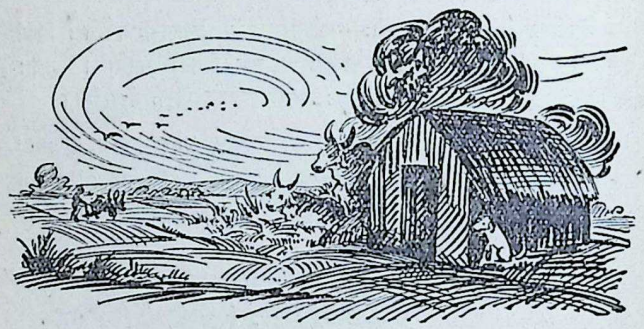

गोविन्दः—कष्टमयं तर्हि कृषीवलस्य जीवितम्। किमर्थम् एषः एवं परिश्रमं करोति। नगरे एतादृशः परिश्रमः आवश्यकः न भवति।

रामः—एषः परिश्रमेण एव आवश्यकं धनं सुखम् आरोग्यं च लभते। अस्य शरीरं रोगाः न पीडयन्ति। अतः सः सन्तोषेण सुखेन च जीवति। क्षेत्रेषु शुद्धः पवनः वहति। निर्मलं जलं सः पिबति सात्त्विकं च अन्नं भक्षयति। नगरे तु सर्वं विपरीतम्। कृत्रिमैः साधनैः जनाः जीवन्ति। अतः ते विशुद्धं सुखं न लभन्ते।

गोविन्दः—कृषीवलस्य जीवितस्य महत्त्वं ज्ञातं मया। अस्तंगतः दिवाकरः। गृहं निवर्तावहे।

सूचना

'खलु-किल' ये अव्यय 'सचमुच' इस अर्थमें वाक्यमें अवधारणा के लिए प्रथम शब्दके पश्चात् प्रयुक्त किये जाते हैं।

'प्राक्-पहले' यह अव्यय पञ्चम्यन्त संज्ञाके साथ प्रयुक्त होता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अभ्यास

१ रामः गोविन्देन सह कुत्र गच्छति। कृषीवलस्य कः उद्योगः। कृषीवलः कथं विपुलं धान्यं लभते। सः धेनुं सारमेयं च किमर्थं पालयति। परिश्रमस्य कः उपयोगः। जनाः नगरे विशुद्धं सुखं केन कारणेन न लभन्ते।

२ वाक्योंकी पूर्ति करोः—सारमेयः ——— ——— ——— । बलीवर्दौ ——— ———। रोगाः ——— ——— ——— ———। कुक्कुटः ——— ——— ——— ———। कृषीवलः ——— ——— ———।

३ योग्य शब्दोंका प्रयोग करोः—छात्राः कालं नयन्ति ———। कृषीवलः कालं नयति ———। भक्तः कालं नयति ———। मूर्खः कालं नयति ———।

४ योग्य शब्दोंका प्रयोग करोः— ———प्राक् कुक्कुटः रवं करोति। प्राक् नरः ईश्वरं पूजयति। ——— प्राक् बालः गुरुं नमति। ——— प्राक् बालः अध्ययनं करोति।

१०—पशवः।

सिंहाः व्याघ्राः गजाः भल्लूकाः जम्बूकाः हरिणाः अश्वाः धेनवः सारमेयाः च इति विविधाः पशवः पृथिव्यां वसन्ति। एतेषां सिंहाः व्याघ्राः भल्लूकाः जम्बूकाः च वन्याः पशवः क्रूराः। गजाः हरिणाः च अपि वन्याः पशवः किन्तु ते सौम्याः। अश्वाः धेनवः सारमेयाः च जनानाम् उपयुक्ताः भवन्ति। पशूनां चत्वारः पादाः सन्ति। तथा च लाङ्गूलम् अपि वर्तते। हिंस्राः पशवः मांसं भक्षयन्ति। सौम्याः तु तृणं धान्यं च भक्षयन्ति। सौम्याः पशवः नराणाम् उपकुर्वन्ति विविधैः प्रकारैः। अश्वाः रथान् कर्षन्ति। बलीवर्दाः शकटान् हलानि च कर्षन्ति। सारमेयाः क्षेत्राणि गृहाणि च रक्षन्ति। धेनवः दुग्धं यच्छन्ति।

हिंस्रैः पशुभिः वनं भीषणं भवति। सर्वेषां वन्यपशूनाम् अथवा मृगाणाम् अधिपतिः सिंहः। अतः सिंहस्य मृगाधिपः मृगपतिः मृगेन्द्रः मृगराजः इति अन्यानि अभिधानानि सन्ति। व्याधाः

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

वन्यान् पशून् शरैः विध्यन्ति । सारमेयाः तेषां साहाय्यं कुर्वन्ति । एवं ते वन्यान् पशून् गृह्णन्ति पञ्जरेषु च स्थापयन्ति । पञ्जरेषु स्थापिताः सिंहाः व्याघ्राः भल्लूकाः च पशुसङ्ग्रहालयेषु वर्तन्ते ।

अभ्यास

१ के पशवः वन्याः । के जनानाम् उपयुक्ताः भवन्ति । केन कारणेन वनं भीषणं भवति । अश्वाः धेनवः सारमेयाः च जनानां कथम् उपकुर्वन्ति । कः मृगाणाम् अधिपतिः । व्याधाः पशून् कथं गृह्णन्ति ।

२ वाक्योंकी पूर्ति करोः—(१) व्याधानां ——— कुर्वन्ति ———। (२) वन्यान् ——— पञ्जरेषु ———। (३) ——— पशवः मांसं ———। (४) अश्वाः ——— उपयुक्ताः भवन्ति । (५) हिंस्रैः ——— वनं ——— भवति ।

३ कर्मपदोंके योग्य कर्तृपदकी और क्रियाओंकी योजना करोः— ——— स्थान् ———। ——— दुग्धम् ———। ——— वन्यान् पशून् ———। ——— मांसं ———। ——— गृहाणि ———।

११—न्यायप्रियः अनङ्गपालः ।

हस्तिनापुरे नाम नगरे अनङ्गपालः नाम न्यायप्रियः नृपः अवसत् ।

तस्य प्रासादस्य द्वारप्रदेशम् उभयतः शिलासिंहौ स्थापितौ । तयोः पृष्ठयोः उपरि बद्धात् दण्डात् अवालम्बत एका घण्टा । यः एव घण्टाम् अनादयत् सः एव नृपात् न्यायम् अलभत । एकदा कश्चित् काकः तस्याः उपरि अकस्मात् उपाविशत् । अतः नादः उदभवत् । अनङ्ग-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

पालः तम् अशृणोत् अपृच्छत् च 'द्वारपाल, कः खलु नादयति घण्टाम्' इति। 'वायसः एव' इति प्रत्यवदत् द्वाःस्थः। तदा नृपः अभाषत 'तर्हि सः वायसः न्यायं प्रार्थयते। किं वाञ्छति सः' इति। किन्तु न कोऽपि तस्य इच्छाम् अजानात्। अतः सः नृपः स्वयमेव घण्टास्थानम् अगच्छत् अवदत् च। 'एषः वायसः यथाक्रमं भक्ष्यार्थम् एव अत्र आगतः। किन्तु न अलभत किमपि अत्र। अतः सः खाद्यम् एव इच्छति' इति। एवं नृपस्य आज्ञया सेवकः सिंहमुखयोः मांसखण्डान् अस्थापयत् काकः च तान् अभक्षयत्। अनङ्गपालस्य राज्ये सर्वे न्यायम् अलभन्त। अहो न्यायप्रियता नृपस्य।

सूचना

उभयतः—'दोनों दिशासे' यह अव्यय द्वितीयान्त संज्ञाके साथ आता है।
यथाक्रमम्—क्रमसे—अव्ययीभाव समास। विग्रह (क्रमम् अनुसृत्य)।
नादयति—'नद्' का प्रेरणार्थक रूप—बजाना।

अभ्यास

१ कुत्र अवसत् अनङ्गपालः। तेन कुत्र घण्टा स्थापिता। किं तस्याः प्रयोजनम्। कः अकस्मात् तस्याम् उपाविशत्। का वायसस्य प्रार्थना।

२ विग्रह करोः—द्वारप्रदेशः। घण्टास्थानम्। सिंहमुखम्। मांसखण्डाः।

३ वाक्योंकी पूर्ति करोः— _____ उभयतः द्वारपालौ तिष्ठतः। _____ उभयतः नटौ तिष्ठतः। _____ उभयतः बालकौ उपविशतः। चोरम् उभयतः _____ चलतः।

४ पूर्ति करोः— _____ उपरि काकः उपाविशत्। _____ उपरि नृपः उपविशति। _____ उपरि खगाः वसन्ति। _____ उपरि सेतुः वर्तते।

५ विग्रह करोः—यथाकालम्। यथाबलम्। यथालेखनम्।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

१२—मूढशिष्यस्य ।

आसीत् पुरा सुतर्कः नाम अध्यापकः । वितर्कः नाम एकः बटुः तस्य शिष्यः आसीत् । तस्य आश्रमः ग्रामात् बहिः अरण्ये अवर्तत । बहूनि दिनानि सः रात्रौ निद्रां न अलभत मूषकाणाम् उपद्रवेण । अतः सः आह्वयत् स्वशिष्यं वितर्कम् अवदत् च तम् । अयि जात वितर्क मम किमपि कार्यं कुरु । मूषकसंहाराय आनय कमपि मार्जारम् इति । वितर्कः आचार्यम् अपृच्छत् आर्य न जानामि अहं विडालस्य स्वरूपम् । कानि तस्य लक्षणानि इति । तदा सः अध्यापकः लक्षणानि अकथयत् ।

काचवल्लोचने तस्य वर्णाः कपिलधूसरः ।
पृष्ठे च लोमशं चर्म रथ्यास्वटति चेह सः ॥

वितर्कः तदनुसारेण मार्जारान्वेषणाय इतस्ततः अभ्रमत् । किन्तु न कोऽपि तेन तादृशैः लक्षणैः युक्तः दृष्टः । अन्ते सः मार्गे कमपि मुनिकुमारम् अपश्यत् । तस्य लोचने काचवत् आस्ताम् । वर्णाः धूसरपिङ्गलः आसीत् । पृष्ठे च तेन लोमशं हरिणाजिनं धृतम् । मार्गेण च सः पर्यटत् । अतः एषः एव मार्जारः इति सः वितर्कः अमन्यत तं च गुरोः पुरतः आनयत् अवदत् च । अयं हि आवश्यकलक्षणैः युक्तः मार्जारः आनीतः मया इति । एतेन तस्य मौर्ख्येण विस्मितः सः अध्यापकः उच्चैः व्यहसत् अवदत् च । अहो अज्ञानं वितर्कस्य । अयं तु ब्राह्मणकुमारः न मार्जारः । अतः एषः मोचनम् अर्हति इति । एवं लज्जितः सः मूर्खः तम् अमुञ्चत् । अध्यापकः तु स्वयमेव कुतश्चित् मार्जारम् आनयत् मूषकोपद्रवात् च मुक्तः अभवत् ।

सूचना

'बहूनि दिनानि—बहुत दिनतक' इस अर्थके कालवाचक शब्द द्वितीया विभक्तिमें रखे जाते हैं।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

छोटे बच्चोंसे बातचीत करते समय 'जात-बच्चे' इस शब्दकी योजना की जाती है और बडे आदमीसे अदबसे या आदरपूर्वक बोलते समय 'आर्य' शब्दका प्रयोग किया जाता है।

अभ्यास

१ केन कारणेन सुतर्कः निद्रां न अलभत। किम् अकथयत् सः स्वशिष्याय। कानि मार्जारस्य लक्षणानि। मुनिकुमारस्य मार्जारेण सह कथं साम्यम् आसीत्। तं दृष्ट्वा अध्यापकः किम् अवदत्। कथं सः मूषकाणाम् उपद्रवात् मुक्तः।

२ एषा कथा कुमारैः नाटयितव्या।

३ सः निद्रां न अलभत—तेन निद्रा न लब्धा। इनके समान नीचेके वाक्योंमें भूतकालिक कृदन्त विशेषणका प्रयोग करोः—

वितर्कः मुनिकुमारम् अपश्यत् (दृष्ट)। सुतर्कः मार्जारम् आनयत् (आनीत)। सुतर्कः मुनिकुमारम् अमुञ्चत् (मुक्त)।

१३—मूर्खः दासः।

निवसति स्म पुरा उज्जयिन्यां नाम नगर्यां कश्चित् धनिकः हेमचन्द्रः नाम। तस्य गृहम् आगच्छत् एकदा कोऽपि अतिथिः। अतः सः स्वदासम् आह्वयत् अवदत् च। रे सेवक, अद्य गृहे घृतं न अस्ति। अपि त्वं तद् विपणेः आनयसि इति। गृह्णामि अहं किमपि पात्रं तस्मिन् च घृतम् आनयामि आपणिकात् इति अवदत् सेवकः। अतः सः पात्रम् अगृह्णात् विपणिं च अगच्छत्। तत्र आसन् बहवः आपणिकाः। तेषाम् एकं प्रति सः अगच्छत् अवदत् च। घृतं मम आवश्यकम्। अहं घृतस्य मूल्यं यच्छामि एतस्मिन् च पात्रे तद् नयामि इति। तदा आपणिकः तस्मिन् पात्रे घृतम् अस्थापयत् मूल्यं च अगृह्णात्।

सः दासः घृतपात्रेण सह गृहं प्रातिष्ठत। मार्गे तम् अपश्यत् एकः परिहासशीलः बालः। सः तम् अवदत् एतद् तव पात्रम् अधः स्रवति इति। यदा सः मूर्खः तस्य बालस्य शब्दान् अशृणोत्

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

तदा सः तद् पर्यवर्तयत् तद् स्रवति न वा इति अपश्यत् च। अतः तद् सर्वं घृतं भूमौ अपतत् सः च बालः तं मूर्खं व्यहसत्।

अनन्तर सः तद् सर्वं धनिकाय अकथयत्। तदा धनिकः तस्मै भृत्याय अक्रुध्यत् तं च गृहात् निरसारयत्।

सूचना

'निवसति स्म-न्यवसत्'—वर्तमानकालके रूपके साथ 'स्म' की योजना की जाय ता भूतकालका अर्थ होता है।

'कथ्-कहना' इसका उपयोग जिसको कहना उसकी चतुर्थी विभक्तिमें रखकर किया जाता है। कहीं कहीं द्वितीया अथवा चतुर्थीका भी उपयोग करते हैं।

'क्रुध्, कुप्-क्रोध करना, गुस्सा होना' इसका उपयोग करते समय जिसपर क्रोध किया जाता है, उसके वाचक शब्दको चतुर्थीमें प्रयुक्त किया जाता है।

'घृतपात्रम्-घृतेन युक्तं पात्रम्' यह मध्यमपदलोपी समास है।

अभ्यास

१ हेमचन्द्रः स्वदासं किमर्थम् आह्वयत्। किम् अवदत् सः दासः तम्। पात्रेण सह दासः कुत्र गतः। किं सः तस्मिन् अस्थापयत्। परिहासशीलः

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

कुमारः किम् अवदत् । पात्रस्य परिवर्तनात् किम् अभवत् । किमर्थं धनिकः तस्मै अकुप्यत् ।

२ 'दासः पात्रे घृतं स्थापयति' इस वाक्यका मूल वाक्य 'घृतं पात्रे तिष्ठति', वैसेही (१) दासः पात्रं परिवर्तयति । (२) धनिकः दासं निःसारयति । (३) काकः घण्टां नादयति । इनके मूल वाक्य लिखो ।

३ योग्य शब्दका उपयोग करोः—धनिकः ——— अकुध्यत् । गुरुः ——— कुप्यति । जनकः ——— कुप्यति । नृपः ——— कुप्यति ।

४ नीचेके शब्दसमूहोंके स्थानपर समासका प्रयोग करोः—शिलया निर्मितः सिंहः । पुष्पैः युक्ताः वृक्षाः । जलेन युक्तः कुम्भः ।

१४—यतेः चातुर्यम् ।

एकदा कश्चित् गोपालः बलीवर्दस्य पृष्ठे व्रीहिभारम् अस्थापयत् मार्गेण च अचलत् ग्रामान्तरं प्रति । मार्गमध्ये गोपालः चिरात् आगतं मित्रम् अपश्यत् तेन सह समभाषत च । यावत् सः सम्भाषणे मग्नः तावत् सः बलीवर्दः इतस्ततः अभ्रमत् अदृश्यः च अभवत् । सम्भाषणात् अनन्तरं यदा सः बलीवर्दं तत्र न अपश्यत् तदा सः खिन्नः अभवत् । पश्चात् सः तं चिरम् अन्वैष्यत् । किन्तु तस्य परिश्रमः निरर्थकः जातः । अतः यावत् सः गृहम् उद्दिश्य प्रस्थितः तावत् कोऽपि यतिः तम् अपृच्छत् । भोः गोपाल, किमर्थं त्वं दुःखितः । अपि तव बलीवर्दः नष्टः इति । अथ किम् इति गोपालः प्रत्यवदत् । पुनरपि सः तम् अपृच्छत् । अपि तव बलीवर्दः दक्षिणेन नेत्रेण अन्धः इति । अथ किम् इति पुनरपि सः अवदत् । एवं क्रमशः सः यतिः तम् अपृच्छत् । अपि तव वृषभः पादेन खञ्जः । अपि तस्य पृष्ठे व्रीहिभारः आसीत् इति ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

एतैः प्रश्नैः गोपालः अचिन्तयत्। एषः यतिः मम बलीवर्दस्य लक्षणानि यथार्थतः जानाति। एषः एव मम वृषभम् अचोरयत् असंशयम् इति। अतः सः यतिम् आवेशेन अवदत्। त्वया एव मम बलीवर्दः चोरितः इति अहं मन्ये। अहं त्वां न्यायाध्यक्षस्य पुरतः नयामि इति। एवं तौ न्यायसभां गतौ। न्यायाधीशस्य पुरतः यतिः अवदत्। महाराज, मया बलीवर्दः न दृष्टः अपि। कथं तर्हि सः मया चोरितः इति शक्यम् इति। तदा न्यायाधीशः तम् अवदत्। कथं तर्हि त्वया तस्य लक्षणानि कथितानि इति। सः यतिः प्रत्यवदत्। मया मार्गे बलीवर्दस्य खुरचिह्नानि दृष्टानि। तेषाम् एकं खुरचिह्नं न स्पष्टम्। अतः बलीवर्दः एकेन पादेन खञ्जः इति मया तर्कः कृतः। तथा च मार्गेण वामपार्श्वस्थं तृणं भक्षितं दृष्टम् न दक्षिणपार्श्वस्थम्। अतः सः दक्षिणेन नयनेन अन्धः इति मया ज्ञातम्। खुरचिह्नानां समीपे व्रीहिकणाः एव भूमौ पतिताः आसन्। अतः तस्य पृष्ठे व्रीहिभारः आसीत् इति मया चिन्तितम् इति। एतद् यतेः वचनं श्रुत्वा न्यायाधीशः तस्य चातुर्यं प्राशंसत् गोपालं च अनिन्दत्।

सूचना

'स्था' इस क्रियाको 'प्र' उपसर्ग जोड़नेसे वह आत्मनेपदी हो जाती है।

'नयनेन अन्धः' अवयवोंकी कमी प्रदर्शित करनेवाले शब्द अवयववाचक शब्दके तृतीयान्त रूपोंके साथ प्रयुक्त किये जाते हैं।

अभ्यास

१ एषा कथा बालैः नाटयितव्या।

२ गोपालस्य वृषभः कदा अदृश्यः अभवत्। अतः सः किम् अकरोत्। यतिः मार्गे तं किम् अपृच्छत्। प्रश्नान् श्रुत्वा गोपालः किम् अमन्यत। कस्य पुरतः सः यतिम् अनयत्। यतिना लक्षणानि कथं ज्ञातानि। न्यायाधीशः किम् अकरोत्।

३ योग्य अव्ययोंका प्रयोग करोः—गोपालः बलीवर्द ——— अन्वैष्यत्। यतिः बलीवर्दस्य लक्षणानि ——— अजानात्। यतिः बलीवर्दस्य लक्षणानि ——— अकथयत्।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

४ अन्यः देशः—देशान्तरम्, इस प्रकार—अन्यः धर्मः ———— । अन्य पाठशाला ———— । अन्यत् मित्रम् ———— ।

५ नयनेन अन्धः—काणः । इस प्रकार— ———— पधिरः । ———— मूकः । ————खञ्जः ।

६ ऊपरके पाठके सब स्वरसन्धि करके फिरसे लिखो ।

१५—वञ्चितः नृपः ।

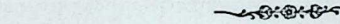

कस्मिंश्चित् अधिष्ठाने कुम्भकारः प्रतिवसति स्म । तस्य गृहं परितः अर्धभग्नानि कर्पराणि अवर्तन्त । एकदा सः कर्परस्य तीक्ष्णाग्रस्य उपरि पतितः । अतः कर्परस्य तीक्ष्णाया कोट्या तस्य ललाटे क्षतम् अभवत् । तस्मात् अस्रवत् बहु रुधिरम् । कालेन तद् क्षतं विरोपितम् औषधप्रयोगेण । किन्तु तस्य ललाटे प्रहारचिह्नम् अवशिष्टम् । एकदा दुर्भिक्षसमये सः देशान्तरम् अगच्छत् । तत्र सः नृपस्य प्रासादे सेवकत्वेन स्थितः । सः नृपः तेन प्रहारचिह्नेन अचिन्तयत् शूरः खलु दृश्यते अयम् इति । अतः सर्वेषु राजपुत्रेषु सः तस्मिन् साविशेषम् आदरेण व्यवाहरत् । एतद् राजपुत्राणाम् न अभिमतम् ।

अथ एकदा तस्य नृपस्य देशः शत्रुणा अभिक्रान्तः । अतः सन्नद्धाः अभवन् नृपस्य सैनिकाः वीराः च युद्धाय । सः नृपः तं कुम्भकारं सेनापतिपदे नियोक्तुम् ऐच्छत् । अतः सः नृपः तम् अपृच्छत् । कस्मिन् आहवे हे शूर सम्मुखप्रहारः तव ललाटे लग्नः इति । तदा सः अवदत् । देव न अयं शस्त्रप्रहारः । कुलालः अहं प्रकृत्या । कर्पराग्रस्य उपरि पतितः अहम् एकदा । तेन अयं प्रहारविकारः इति । अनेन प्रतिवचनेन लज्जितः सः नृपः अवदत् । अहो कथम् अहं वञ्चितः राजपुत्रसदृशेन कुलालेन । अतः अर्धचन्द्र-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रदानेन अस्य निःसारणम् इष्टम् इति । एवं विचिन्त्य तेन नृपेण सः राज्यात् बहिः निःसारितः ।

सूचना

परितः—अभितः (आसपास) इन अव्ययोंका उपयोग द्वितीयान्त संज्ञाके साथ किय जाता है ।

व्यव + हृ—हृत् (व्यवहार करना) इनका उपयोग करते समय जिसके साथ व्यवहार किया जाय उनका प्रयोग सप्तमी विभक्तिमें किया जाता है ।

नि + युज् (नियुक्ति करना)–इसके उपयोगमें जिस स्थानपर अथवा कामपर नियुक्ति करना हो उसको सप्तमी विभक्तिमें प्रयुक्त किया जाता है ।

अभ्यास

१ वाक्योंकी पूर्ति करो:—कुलालः गृहं परितः ———— । क्षतम् औषध-प्रयोगेण ———— । नृपः प्रहारचिह्नेन ———— । नृपः कुलालस्य प्रतिवचनेन ———— ।

२ समासका प्रयोग करो:— तीक्ष्णा कोटिः । सम्मुखः प्रहारः । तीक्ष्णम् अग्रम् । अर्धभग्नं कर्परम् ।

३ योग्य क्रमसे वाक्य लिखो:—(१) महाराज न अयं शस्त्रप्रहारः किन्तु व्रणचिह्नम् एतद् इति कुलालः अवदत् । (२) एकदा कुम्भकारः कर्परस्य उपरि पतितः । (३) नृपस्य पुरतः गतः दुर्भिक्षसमये सः कुलालः (४) शत्रुणा सह युद्धकाले नृपः तं सेनापतिं कर्तुम् ऐच्छत् । (५) अतः सः नृपेण अर्धचन्द्रप्रदानेन निःसारितः । (६) व्रणस्य विरोपणात् अनन्तरं प्रहारचिह्नम् अवशिष्टम् । (७) नृपः तस्मिन् सादरं व्यवाहरत् । (८) नृपतिः प्रहारचिह्नेन तं वीरश्रेष्ठम् अमन्यत । (९) अनेन प्रतिवचनेन वञ्चितः अहं कुलालेन इति नृपः उच्चैः अवदत् । (१०) कुत्र त्वया सम्मुखप्रहारः लब्धः इति नृपेण सः पृष्टः । (११) तेन तस्य ललाटे क्षतम् अभवत् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

१६—नागार्जुनकथा।

आसीत् पुरा चिरायुर्नाम नृपतिः। नागार्जुनो नाम तस्य दयालु-र्दानशीलश्च सचिवः आसीत्। स सर्वासामोषधीनां धर्मानवोध-दात्मानं नृपतिं च रसायनेन विजरमकरोत्। सः भूपोऽष्टशतं वर्षाणि राज्यमकरोत्। एतस्मिन्दीर्घकाले तस्य बहवो भार्याः पुत्राश्च त्रिदिवं गताः। अन्ते स जीवहरं नाम पुत्रं युवराजपदेऽभ्यषिञ्चत्। सः एतां वार्तां जनन्यै न्यवेदयत्। तदा सावदत्। त्वादृशाः बहवो राजपुत्राः पूर्वमभिषिक्ताः यौवराज्ये किन्तु नान्वभवन्राज्यसुखानि ते यतो नृपो नागार्जुनेन दत्तैरौषधैश्चिरायुर्जातः। अतो यदि त्वं राज्यपदं वाञ्छासि तर्हि नागार्जुनं गच्छ तं च तस्य शीर्षमेव याचस्व। स हि याचकानां मनोरथान्सर्वदा पूरयति। एवं यदा नागार्जुनो म्रियते तदा नृपोऽपि सुचिरं न जीवति त्वं च नृपो भवसि इति। सः पुत्रो नागार्जुनं गत्वा तथाकरोत्। किन्तु नागार्जुनस्य शीर्षच्छेदने सोऽसमर्थः। अतो नागार्जुनः स्वयमेवात्मनः शीर्षच्छेदमकरोत्। नागार्जुनवधं श्रुत्वा स नृपतिरपि राज्यमत्यजद्दुःखं च प्राविशत्। राजपुत्रः सिंहासनमारोहत्किन्तु नान्वभवद्राज्यसुखं बहुकालं यतः क्रुद्धैर्नागार्जुनपुत्रैस्तस्य वधः कृतः।

सूचना

चिरायुस्—यह व्यंजनान्त शब्द है। चिरायुः—प्र० ए० व०, चिरायुषः—षष्ठी ए० व०

'अष्टशतं वर्षाणि—८०० वर्ष' कालवाचक द्वितीया। शतं, सहस्रं, ये शब्द बहुवचनान्त संज्ञाके साथ भी एकवचनमेंही प्रयुक्त किए जाते हैं।

'नि + विद् (प्रेरणार्थक)-निवेदयति—कहना, निवेदन करना, समाचार कहना' इसका उपयोग, जिसको कहना हो, उसकी चतुर्थी रखकर किया जाता है।

'दीर्घकालः—दीर्घः कालः' विशेषणा-विशेष्य कर्मधारय समास।

'आत्मानम्—स्वतःको, आत्मनः—स्वतःका।'

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अभ्यास

१ चिरायुषः कः सचिवः। सः कथं नृपं विजरम् अकरोत्। जीवहराय जननी किम् अकथयत्। सः नागार्जुनं किम् अयाचत। नृपः किमर्थं वनं आविशत्। केन कारणेन नागार्जुनपुत्रः जीवहरम् अमारयन्।

२ वाक्योंमें उपयोग करोः—अभिषिक्त, अनुभूत, त्यक्त, कृत।

३ 'दानं शीलं यस्य सः दानशीलः'—इस प्रकार निम्न-लिखित समासोंका विग्रह करोः—उद्यमशीलः, परिहासशीलः, उपकारशीलः।

४ विग्रह करोः—राज्यसुखानि, राज्यपदम्, शीर्षच्छेदः, नागार्जुनवधः।

५ क्रियाके स्थानपर भूतकालवाचक कृदन्त विशेषणोंका प्रयोग करोः—राजपुत्राः त्रिदिवम् अगच्छन्। नृपतिः वनं प्राविशत्। राजपुत्रः सिंहासनम् आरोहत्।

१७—कृतज्ञो नकुलः।

कस्मिन्नपि नगरे अवसत् कोऽपि ब्राह्मणः। एकदा तस्य भार्यायां सुतो जातः। तस्य गृहे कापि नकुली पालिता। तस्मिन्नेव दिने तस्यामपि नकुलोऽजायत। अतः सा ब्राह्मणी स्वसुतवत्तं नकुलमप्यपुष्णत्। किन्तु कदाचित्सः स्वदारकं पीडयेदिति विचारेण सा तस्मिन्विश्वासं नाकरोत्। एकदा सुतं स्वपुत्रं शय्यायां स्थापयित्वा जलकुम्भं च गृहीत्वा सा तडागतीरमगच्छत्। गमनात् प्राक् स्वपतिं सावदत्। नकुलाद्रक्षणामर्हति बाल इति। तस्या गमनादनन्तरं बालस्य न किमपि भयं नकुलादिति मत्वा सः ब्राह्मणोऽपि भिक्षार्थं कुत्रापि गतः। अत्रान्तरे कोऽपि कृष्णसर्पो बिलाद्बहिरागतः। नकुलोऽपि स्वभाववैरेण बालस्य रक्षणार्थं तेन सहायुध्यत। एवं नकुलेन खण्डशः कृतः स सर्पः। यदा सा ब्राह्मणी गृहं प्राविशत्तदा स नकुलस्तस्याः समीपं गतः। सा तस्य मुखं रुधिरेण लिप्तमपश्यत्। अतः साऽचिन्तयन्नूनमनेन मम सुतस्य वधः कृत

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

इति। एवं क्रुद्धा सा जलकुम्भं तस्योपरि सहसैव प्राक्षिपत्। तेनाघातेन मृतः स नकुलः। पश्चाद्भीता सा यावद्गृहं प्रविशति

तावत्सा बालकं सुराक्षितं तथा च सर्पं मृतमपश्यत्। अतः साऽऽत्मनोऽविचारतामनिन्दन्नकुलस्य कृतेऽशोचच्च।

अपरीक्ष्य न कर्तव्यं कर्तव्यं सुपरिक्षितम्।
पश्चाद्भवति सन्तापो ब्राह्मण्या नकुले यथा॥

सूचना

'नूनम्—सच मुच' यह अव्यय निश्चय प्रदर्शित करनेके लिए आरम्भमें लिखा जाता है।

'कृते—लिए' इस अव्ययका उपयोग षष्ठचन्त संज्ञाके साथ किया जाता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अभ्यास

१ ब्राह्मणी नकुलं कथमपालयत्। केन कारणेन सा तस्मिन्विश्वासं नाकरोत्। जलकुम्भं गृहीत्वा सा किमकरोत्। ब्राह्मणः किं मत्वा बहिर्गतः। बालकस्य समीपं क आगतः। तदा नकुलः किमकरोत्। केन कारणेन सा नकुलस्योपरि जलकुम्भं प्राक्षिपत्। किमर्थं साऽऽत्मानमनिन्दत्।

२ ल्यबन्त अव्ययका प्रयोग कर वाक्य लिखो :—

सा नकुलस्य मुखं रुधिरेण लिप्तमपश्यदचिन्तयच्च।
साऽऽत्मनोऽविचारतामनिन्दन्नकुलस्य कृतेऽशोचच्च।

३ ल्यबन्तोंके स्थानपर क्रियाके रूपका प्रयोग करो :—

सा पुत्रं शय्यायां स्थापयित्वा बहिरगच्छत्।
सा जलकुम्भं गृहीत्वा तडागमगच्छत्।

१८—बुद्धिहीना विनश्यन्ति।

कस्मिंश्चिन्नगरे चत्वारो ब्राह्मणपुत्राः परं मित्रभावमुपगता वसन्ति स्म। तेषां त्रयः शास्त्रपारङ्गताः किन्तु ते बुद्धिहीनाः। सुबुद्धिर्नाम चतुर्थश्चतुरः किन्तु शास्त्रपराङ्मुखः। एकदा ते सर्वे मिथोऽमन्त्रयन्त वयं देशान्तरं गत्वा भूपं च तोषयित्वा द्रव्यार्जनं कुर्म इति। अतः शुभदिने ते प्रातिष्ठन्त। मार्गे ज्येष्ठोऽवदत्। वयं त्रयो नृपप्रसादं लभामहे यतो वयं शास्त्रनिपुणाः। किन्त्वयं सुबुद्धिः शास्त्रविमुखः। अतः केवलया बुद्ध्या नृपप्रसादं स न लभत इति।

एवं यावत्ते मार्गेण गच्छन्ति तावत्तैरटव्यां मृतसिंहस्यास्थीनि दृष्टानि। तत्रैकेनोक्तम्। यदहोऽहं विद्याप्रभावं दर्शयामि। किञ्चिदेतत्सत्त्वं मृतं वर्तते तद्विद्याप्रभावेण सजीवं कुर्मः। अहमस्थिसञ्चयं करोमीति। एवमेकेनास्थिसञ्चयः कृतः। द्वितीयेन च चर्ममांसरुधिरं संयोजितम्। तृतीयोऽपि यावत्तस्मिञ्जीवप्रदानायोद्यतस्ता-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

वत्सुबुद्धिस्तं तस्मान्न्यवारयदवदच्च । एवं युष्माभिः सिंहो निष्पाद्यते । यदि त्वमेनं सजीवं करोषि तर्हि स सर्वानस्मान्व्यापादयति इति । अनेन वचनेन क्रुद्धः स तृतीयो ब्राह्मणोऽवदत् । धिङ्

मूर्खं नाहं विद्यां विफलतां नयामीति । तदा सुबुद्धिनोक्तं प्रतीक्षस्व क्षणं यावदहं वृक्षमारोहामीति । पश्चाद्यावत्तृतीयेन स सिंहः सजीवः कृतस्तदैव स तांस्त्रीनमारयत् । चतुर्थस्तु सिंहस्य गमनादनन्तरं वृक्षादवतीर्य गृहं गतः । अत इदमुच्यते—

वरं बुद्धिर्न सा विद्या विद्याया बुद्धिरुत्तमा ।
बुद्धिहीना विनश्यन्ति यथा ते सिंहकारकाः ।

सूचना

'अस्थीनि—हड्डी' अस्थि शब्दका प्रथमा और द्वितीया इन विभक्तियोंका बहुवचनका रूप इस शब्दके रूप अनियमित प्रकारसे होते हैं ।

'निष्पाद्यते—लभामहे—व्यापादयति' इन वर्तमानकालके रूपोंका उपयोग भविष्यकालके अर्थमें किया गया है ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Founda

अभ्यास

१ ब्राह्मणपुत्राः कीदृशा आसन्। किं तेऽमन्त्रयन्त। मार्गे तैः किं दृष्टम्। किं दर्शयितुमैच्छन्ब्राह्मणपुत्राः। तदा सुबुद्धिस्तान् किमुपादिशत्। कः परिणामस्तेषामविचारस्य।

२ कर्तृपदका प्रयोग करो:—१ भूपः तुष्यति। ——— भूपं तोषयामः। २ सिंहः निष्पाद्यते। ——— सिंहं निष्पादयथ। ३ सर्वे व्यापाद्यन्ते। ——— सर्वान् व्यापादयति। ४ ते त्रयः अम्रियन्त। ——— तान् त्रीन् अमारयत्।

३ बुद्धया हीनाः—बुद्धिहीनाः। शास्त्रात् विमुखः—शास्त्रविमुखः। शास्त्रेषु निपुणः—शास्त्रनिपुणः

इनमें समासोंका अर्थ पूर्ण है। इस लिए प्रथम पदका सम्बन्ध द्वितीय पदसे जिस विभक्तिसे व्यक्त किया जाता है उस विभक्ति का तत्पुरुष समास होता है।

१९—यतिद्रव्यनाशः।

कस्मिंश्चिद्विविक्तप्रदेश आसीत्कस्यचिल्लुब्धमतेर्नाम यतेराश्रमः। बहवो जनास्तस्याश्रमं प्रतिदिनमगच्छन्ननुग्रहाय। अतस्तेन यतिना तेभ्यो बहून्युपायनानि लब्धानि। तेषां विक्रयेण तेन प्रभूतो वित्तसञ्चयः कृतः। तद्द्रव्यं तेन कक्षान्तर एवास्थाप्यत। यतः कस्मिन्नपि न तस्य विश्वासः। एकदाऽऽषाढमतिर्नाम स्तेनस्तस्य वित्तमपश्यदचिन्तयच्च। अहं भवामि यतेः शिष्यः। तथा च तेन सहैकत्रोषित्वा तस्य धनमपहरामि क्रमश इति। अतः स यतेः समीपं गत्वा तं च साष्टाङ्गपातं प्रणम्य प्रार्थयत। यतिश्रेष्ठ अहं विरक्तः संसारात्। अत इच्छामि तस्माद्मुक्तिम्। उपदेशग्रहणायैवाहमत्रागत इति। तस्य निष्ठां दृष्ट्वा स यतिस्तस्य तत्रावस्थानमन्वमन्यत। केनचित्कालेन स स्तेनो यतिं भक्त्याप्रीणयत्। यतिरपि तं ज्ञानमार्गमुपादिशत्।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

एकदा स यतिर्भोजनार्थं ग्रामान्तर आहूतः। अतः शिष्येण सह स प्रस्थितः। प्रवाससमये वित्तं यतेः कक्षान्तर एवासीत्। मार्गे ताभ्यामेका नदी दृष्टा। तदा यतिनोक्तम्। मध्याह्नोऽधुना। अतः स्नानार्थमहं नदीतीरं गच्छामि। त्वमत्रैव मां प्रतीक्षस्व इति। गमनात्प्राग् यतिः स्वद्रव्यं कन्थामध्ये स्थापयित्वा स्नानार्थं गतः।

स आषाढमतिस्तत्सर्वमपश्यत्। यावत्स यतिर्गतस्तावदेव स धनं गृहीत्वा सुदूरं पलायत। स्नानादनन्तरं स यतिर्वृक्षमूलमागतः। किन्तु तेन शिष्यो न दृष्टः। अतः कन्थायां द्रव्यमस्ति न वेति निपुणं व्यलोकयत्। तेन शिष्येण द्रव्यं हृतमिति ज्ञात्वा हा हतोऽस्मीत्युच्चैराक्रोशत् सः यतिः पुनरपि स्वमठं न्यवर्तत च।

अर्थानामर्जने दुःखमर्जितानां च रक्षणे।
आये दुःखं व्यये दुःखं धिगर्थाः कष्टसंश्रयाः॥

सूचना

स्नानार्थम्—स्नान के लिए, भोजनार्थम्—भोजनके लिए, इन सामासिक शब्दोंकी क्रियाविशेषणके समान योजना होती है। 'जिस के लिए' ऐसा अर्थ दर्शाना हो उसे 'अर्थ' शब्द जोड़कर नपुं० प्रथमा एकवचनका रूप बनाया जाता है।

'हा हतोऽस्मि—हाय हाय, मर गया' यह उद्गारवाचक वाक्य है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अभ्यास

१ पहले पांच वाक्योंमेंकी सन्धियोंका विश्लेषण करके लिखोः—

२ विग्रह करो :—वित्तसञ्चयः, उपदेशग्रहणम्, ग्रामान्तरम्, कक्षान्तरम्, वृक्षमूलम्, प्रतिदिनम्, विविक्तप्रदेशः, ज्ञानमार्गः, प्रवाससमयः।

३ निम्न-लिखित वाक्यार्धसमूहोंमेंसे योग्य वाक्यार्ध जोड़कर वाक्यरचना करोः—

बहवो जनाः	अभीक्ष्णयत् मुनिं स्वनिष्ठया।
यतिः तस्य अवस्थानम्	कन्थामध्ये स्थापितम्।
आषाढमतिः	अनुग्रहाय आगच्छन् तस्य आश्रमम्।
यतिना स्वद्रव्यं	अन्वमन्यत।
सः शिष्यः	मध्याह्ने सञ्जातः।
यतेः स्नानसमयः	द्रव्यम् अपाहरत्।

२०—जामातृसम्भावना।

अस्ति धरापीठे विकराटकं नाम पुरम्। तत्र महाधनो नाम भाराङ्गपातिर्न्यवसत्। तस्य चत्वारो जामातरोऽवन्तीनगर्यामवसन्। एकदा पर्जन्याभावात्सर्वत्र दुर्भिक्षमभवत्। भोजनमपि दुर्लभं जातं तेषाम्। अतस्ते श्वशुरगृहं विकराटकनगरे सम्प्राप्ताः। 'जामाता दशमो ग्रहः' इति ज्ञात्वा स तेषु सबहुमानं व्यवाहरत्। तेभ्य उत्तमानि वस्त्राणि भोजनं च प्रायच्छत्। एवं ते तत्र सुखेन षण्मासान्यवसन्। यदा महाधनस्तान् गमनोत्सुकान्नापश्यत्तदा स स्वभार्यामवदत्। एते जामातरः स्वगृहं प्रति निवर्तनमपि न चिन्तयन्ति। अपमानं विना ते गमनोत्सुका न भवन्तीत्यहं मन्ये। अतोऽद्य भोजनवेलायां पादप्रक्षालनार्थं जलमपि न दातव्यं यथा तेऽपमानेन क्रुद्धा भूत्वा निर्गच्छेयुरिति। एवं गर्गः पादप्रक्षालनापमानात् सोमो लघ्वासन-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

दानाद्दत्तः क्षुद्रभोजनाच्च निर्गताः । किन्तु चतुर्थः श्यामलकः स्वयमेव नागच्छत् । अतः सः बलान्निःसारितो गृहाद्बहिरर्धचन्द्रप्रदानेन ।

गर्गो हि पादशौचाल्लब्धासनदानतो गतः सोमः ।
दत्तः कदशनभोज्याच्छ्यामलकश्चार्धचन्द्रेण ॥

सूचना

'न दातव्यम्—न दिया जाय' कर्मवाच्यका विध्यर्थका कृदन्त विशेषण ।

'सबहुमानम्—बडे सन्मानसे'—'बहुमानेन सह,' सहके अर्थमें संज्ञाके पूर्व 'स' जोड़कर बनाया हुआ यह सहबहुवीहि समास अव्ययके समान प्रयुक्त किया गया है ।

अभ्यास

१ योग्य क्रमसे निम्न-लिखित वाक्य लिखो:—(१) षण्मासादनन्तरमपि ते गमनं नाचिन्तयन् । (२) विकटके महाधनो नाम भाण्डपतिर्निवसति स्म । (३) तेभ्यः सुवस्त्राणि मिष्टान्नं चायच्छत् सः । (४) तस्य जामातरोऽवन्तीनगराद्विकटकं प्राप्ताः। महाधनोऽन्ते तान् विविधैः प्रकारैरनादरमदर्शयत् । (५) चतुर्थोऽर्धचन्द्रप्रदानेन निःसारितः । (६) तेषु स आदरेण व्यवाहरत् । (७) तेषां त्रयो गताः ।

२ अन्तके पांच वाक्योंके सन्धियोंका विश्लेषण करके लिखो ।

३ योग्य शब्दोंकी योजना करो:—प्रजाः _____ सबहुमानं व्यवहरन्ति । पुत्रः _____ सादरं वर्तते । शिष्याः _____ सविनयं वर्तन्ते ।

४ योग्य शब्दोंकी योजना करो :—सायङ्कालें बालाः _____ उत्सुकाः दृश्यन्ते । जामातरः _____ उत्सुकाः न आसन् । प्रजाः नृपस्य _____ उत्सुकाः सन्ति ।

५ निम्न-लिखित समासोंमेंके पदोंका उल्लेख कर उनका सम्बन्ध स्पष्ट करो:—पादप्रक्षालनापमानः, लब्धासनदानम्, क्षुद्रभोजनम् ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

२१–विचित्रो दैवयोगः ।

आसीत्पुरा भिक्षापतिर्नाम दरिद्रो ब्राह्मणः। स भिक्षयैवान्नमलभत। अतो ग्रामाद् ग्रामं सोऽभ्रमत्। एकदा दीर्घमन्तरं गत्वा श्रान्तः स कस्याचिद्देवायतनस्य समीपे वृक्षतलेऽस्वपत्। अनन्तरं प्रबुद्धो भूत्वा यदा स गन्तुं प्रवृत्तस्तदा देवालयाधिपतिस्तमपृच्छत्। कस्त्वं कुत्र च गच्छस्यधुनेति। निर्धनोऽहं भिक्षार्थमितस्ततः सञ्चरामीत्यवदत्स भिक्षापतिः। तदा स देवालयाधिपः पुनस्तमवदत्। शृणु रे भद्र। अहं तुभ्यमन्नं वस्त्रं च प्रयच्छामि। अत्रैव स्थित्वा क्रियतां मम साहाय्यं देवपूजायां देवालयरक्षणे चेति। हर्षनिर्भरः स भिक्षापतिस्तथेत्युक्त्वा तत्र स्थितः। स दिवा देवालयाधिपस्य साहाय्यमकरोद्रात्रौ च द्वारस्य समीप एवास्वपत्। एकदा मध्यरात्रानन्तरं प्राप्तः कोऽपि चोरो देवालङ्कारानपहर्तुम्। यावत्स देवालयं प्रविष्टस्तावदेव काश्चिद्वृश्चिकस्तमदशत्। अतः स दुःखेनाक्रन्दत्। तस्य क्रन्दनं श्रुत्वा निद्रितो भिक्षापतिः प्रबुद्धो भूत्वा दीपं च गृहीत्वा तस्य समीपमगच्छत्। क्रन्दनकारणं ज्ञात्वा स पीडापरिहारमकरोद्दौषधप्रयोगेण। यदा स दंशपीडया मुक्तोऽभवत्तदानेनातार्किकेन दैवदण्डेन भिक्षापतेः सौजन्येन च स भृशं लज्जितोऽभवत्। अतःप्रभृति न जीवाम्यहमनेन पापमार्गेणेति सशपथमुच्चैरुक्त्वा सहसैव निर्गतः स चोरः। भिक्षापतिस्तु विस्मितस्तत्रैव स्थितः।

सूचना

'मम साहाय्यं क्रियताम्'—मुझे सहायता करो।' जिसे सहायता करना हो, उस अर्थका शब्द षष्ठी विभक्तिमें प्रयुक्त होता है।

'जीवामि-जीवयात्रां करोमि'—जिस मार्गसे उदरनिर्वाह किया जाता है उस अर्थका शब्द तृतीया विभक्तिमें प्रयुक्त होता है।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अभ्यास

१ भिक्षापतिः कुत्रास्वपत्। कस्तस्य साहाय्यमकरोत्। क आगतो रात्रौ एकदा। कथं स दण्डितो दैवेन। कः परिणामो वृश्चिकदंशस्य।

२ निम्नलिखित भू० का० रु० वि० का उपयोग ऊपर की कहानीमें योग्य स्थानमें करोः— लब्ध, सुप्त, पृष्ट, दष्ट, क्रन्दित।

३ निम्न-लिखित समासोंका विग्रह करके नाम बताओ :—देवपूजा। हर्ष-निर्भरः। देवालङ्काराः। क्रन्दनकारणम्। सशपथम्।

४ योग्य शब्दोंकी योजना करोः—

यथा भिक्षुकः भिक्षया जीवति जीवयात्रां करोति वा।
तथा चोरः ——— ,, ,, ,,।
,, धीवरः (ढीमर) ——— ,, ,, ,,।
,, व्याधः (शिकारी) ——— ,, ,, ,,।

२२—गन्तव्यं सह मित्रेण।

सुवर्णापुरे नाम नगरे ब्रह्मदत्तो नाम ब्राह्मणः प्रतिवसति स्म। स च प्रयोजनवशाद् ग्रामान्तरं गन्तुं प्रवृत्तः। तदा मात्रा स उपदिष्टः। वत्स अपि त्वमेक एव व्रजसि। नैतद्युक्तम्। मार्गे सहाय आवश्यकः। अतोऽन्विष्यतां कश्चित्सहाय इति। सोऽवदत्। अम्ब अलं भयेन। निरुपद्रवोऽयं मार्ग इति। अथ तस्य तं निश्चयं ज्ञात्वा समीपस्थाया वाप्याः कर्कटमादाय मात्रा स कथितः। यदि तव गमनमावश्यकं तर्ह्येष कर्कटस्तव सहायो भवत्विति। सोऽपि मातुर्वचनादुभाभ्यां पाणिभ्यां तं सङ्गृह्य कर्पूरपुटिकामध्ये स्थापयित्वा पात्रमध्ये च निक्षिप्य शीघ्रं प्रस्थितः। सूर्यस्यातपेन सन्तप्तः स मार्गे पार्श्वस्थस्य वृक्षस्य छायायां सुप्तः। अत्रान्तरे वृक्षकोटरात्

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

निर्गत्य सर्पस्तत्समीपमागतः । सर्पस्य कर्पूरगन्धः प्रियः । अतः स पात्रास्थितां कर्पूरपुटिकामतिलौल्येन भक्षयितुमारभत । किन्तु तत्र

स्थितः कर्कटस्तस्य प्राणानपाहरत् । ब्राह्मणः प्रबुद्धो भूत्वा यावदुत्थितस्तावत्कर्पूरपुटिकायां समीपे हतं कृष्णसर्पमपश्यत् । तद् दृष्ट्वा स व्याचिन्तयत् । भोः सत्यं कथितं मम मात्रा यत्पुरुषस्य प्रगसे सहाय आवश्यक इति ।

अपि कापुरुषो मार्गे द्वितीयः क्षेमकारकः ।
कर्कटेन द्वितीयेन जीवितं परिरक्षितम् ॥

सूचना

'अलम्—बस' इस अव्ययका उपयोग तृतीयान्त संज्ञाके साथ अथवा उसी अर्थकी धातुके ल्यबन्त रूपके साथ किया जाता है :—जैसे—अलं क्रीडया—अलं क्रीडित्वा ।

'अम्ब—हे माता' अम्बा—मा इस शब्दके संबोधनका एकवचन ।

अभ्यास

१ ब्रह्मदत्तः किं कर्तुं प्रवृत्तः । मातुः कः उपदेशः । कर्कटः तस्मै मात्रा किमर्थं दत्तः । स तं कुत्र अस्थापयत् । मार्गमध्ये किं कृतं तेन । कः तत्र आगतः । किमर्थं कर्पूरपुटिकां भक्षयितुम् आरभत सः । कः तस्य परिणामः ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

१ 'समीपे तिष्ठति–समीपस्थः' इस प्रकार निम्न-लिखित सामासिक शब्दोंका स्पष्टीकरण करो—मार्गस्थः, पार्श्वस्थः, वृक्षस्थः, ग्रामस्थः, गृहस्थः।

२ यथा कर्पूरगन्धः सर्पस्य प्रियः, तथा क्रीडा ——— प्रिया। ——— प्रियं वीरस्य। मधु प्रियं ———। ——— प्रियं कृपणस्य।

२३–दिलीपस्य पुत्रप्राप्तिः।

आसीत्पुरा सूर्यवंशे दिलीपो नाम नृपः। स सर्वैर्गुणैरुपेतस्तथा च सकलशास्त्रनिपुणा आसीत्। प्रजापालने स दक्षः। तस्य सुदक्षिणा नामानुरूपा भार्या। सा तस्य प्राणेभ्योऽपि प्रिया। सुत-मुखदर्शनं विना सर्वाण्यन्यानि सुखानि तस्य सुलभानि। अतः सन्तानार्थं कमप्युपायं चिन्तयितुं स सकलं राज्यभारं सचिवेषु निक्षिप्य भार्यया सह कुलगुरोर्वसिष्ठस्याश्रमं गतः। मुनिं सादरं प्रणम्य तस्मै स स्वमनोरथं न्यवेदयत्। तदा स ऋषिरेवमुपदिष्टः। त्वया सुरधेनुरवज्ञाता पूर्वजन्मनि। अतस्तस्याः शापादेव त्वं सन्ततिविहीनो जातः। ममाश्रमे वर्तते तस्या नन्दिनी नन्दिनी नाम। तामेवाराध्य तव पुत्रप्राप्तिर्भवेदिति।

दिलीपो भार्यया सह तां नन्दिनीमाराधयत्। सा तस्य भक्त्या सन्तुष्टा किन्तु परीक्षां विना तस्य मनोरथं पूरयितुं नैच्छत्। अतः साऽऽत्मानं मायामयेन सिंहेनाभिभूतमदर्शयत्। एतद् दृष्ट्वा नृपस्तस्य सिंहस्य वधाय सज्जोऽभवत्। तदा स सिंहो मनुजवाच-यैव तमुपहासिनावदत् केवलं शस्त्रेण त्वं धेनुरक्षणाय नालमिति तदा नृपोऽवदत्। अहमिमां प्राणैरेव रक्षामि। मां भक्षयित्वा त्वमिमां मोचयति। अत्रान्तरे मायानिर्मितः सिंहोऽदृश्योऽभवत्। अनेन तस्य दृढनिश्चयेन प्रीता सा धेनुस्तमवदत्। मदीयेन दुग्ध-पानेन तव मनोरथः सफलो भवेदिति। तदा नृपो भार्यया सह

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

तस्या दुग्धमापिबत्। पश्चाद्रुरुमामन्त्र्य स्वराजधानीं न्यवर्तत। यथाकालं सा सुदक्षिणा गर्भवती भूत्वा सुलक्षणासम्पन्नं पुत्रमजनयत्। दिने दिने वर्धमानः स पुत्रो मातापितरा आनन्दस्य परां काष्ठामनयत्।

सूचना

'अलम्—योग्य, समान योग्यताका' इस अव्ययका उपयोग तुमन्त, कृदन्त अव्ययके साथ अथवा चतुर्थ्यन्त संज्ञाके साथ होता है।

'यथाकालम्—योग्य समयपर' यह अव्ययीभाव समास है।

'पूर्वजन्मनि—पहले जन्ममें;' जन्मन् शब्दके सप्तमीका एकवचन।

'आत्मानम्—स्वतःको;' आत्मन् शब्दका द्वितीया विभक्तिका एकवचन। यह रूप एकवचनमें प्रयुक्त होता है। आत्मना, आत्मने, आत्मनः, आत्मनः, आत्मनि ये तृतीयासे लगाकर सप्तमी तकके एकवचनके रूप हैं।

अभ्यास

१ वाक्य पूर्ण करो :— दिलीपः सर्वशास्त्रेषु ——— ——— च शूरः। तेन ——— राज्यभारः ——— निक्षिप्तः। ——— तेन जन्मान्तरे ———। अतः सः ——— आराधयत्। तस्याः ——— प्राणान् ——— उद्यतः सः। तस्य ——— प्रीता सा ——— ——— अपूरयत्। सुदक्षिणा ——— पुत्रम् ———।

२ विग्रह करो :—प्रजापालनम्, राज्यभारः, सन्तानविहीनः, धेनुरक्षणम्, दृढनिश्चयः।

३ समासोंका प्रयोग करोः—सिंहेन अभिभूता, सिंहस्य वधः, दिने दिने, परां काष्ठा।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

२४–रघो राज्यप्राप्तिः ।

यौवनमापन्नो दिलीपसूनू रघुर्यौवराज्ये पित्राऽभिषिक्तः । पश्चाद्दिलीप एकोनशततमं क्रतुं प्रारभत । तदा होमतुरङ्गरक्षणे रघुर्नियुक्तः । किन्तु शक्रेण स तुरगोऽपहृतः। नन्दिनीप्रभावेण तज्ज्ञात्वा रघुर्धीरस्वरेण ' मुच्यतां तुरगः ' इति शक्रं प्रार्थयत । तदा शतक्रतुरवदत् । तव पिता ममाभिधानं शतक्रतुं वाञ्छति। नेच्छाम्यहमात्मन उपपदं त्यक्तुम् । अतस्तस्य मनोरथं निष्फलं कर्तुमेव मया तुरगोऽपहृत इति ।' एतच्छ्रुत्वा रघुस्तं युद्धायाह्वयत । तदा तयोस्तुमुलं युद्धमभवत् । रघोर्युद्धकौशलेन प्रीत इन्द्रस्तुरङ्गमाहृते त्वं किमिच्छसीति रघुमपृच्छत् । तदा रघुरवदत् । मम पिताशेषं क्रतुफलं लभतामिति । तथेत्युक्त्वा वासवो नभोमार्गेण त्रिदिवं गतः। रघुरप्ययोध्यां निवृत्य स्वपित्रे तत्सर्वं न्यवेदयत् । तदा हर्षभरेणाभिनन्दितः स पित्रा। एवं एकोनशतं यज्ञान् कृत्वा रघौ च राज्यभारं निवेश्य दिलीपो देव्या सुदक्षिणाया सह वनवासाय प्रस्थितः।

रघुरपि नयेन राज्यं कृत्वा प्रजानुरञ्जनमकरोत् । ' राजा प्रकृतिरञ्जनात् ' इति सुभाषितं सार्थतामनयत् । किन्तु बहवः शत्रव आत्मना सह योद्धुमुद्यता इति ज्ञात्वा रिपूणां दर्पं शमयितुं दिग्विजयाय स प्रातिष्ठत । क्रमेण सर्वाञ्शत्रून् पराजित्य दिग्विजयं च कृत्वा निवृत्तः स राजधानीम् । पश्चात्तेन विश्वजिन्नाम यज्ञ आरब्धः । तस्मिन्यज्ञे कोषस्थं सर्वं धनं तेन पात्रेभ्यो वितीर्णम् । अन्ते तु वरतन्तुशिष्यः कौत्सो नाम दक्षिणार्थमागतः । किन्तु नृपस्य कोषागारं धनविहीनं दृष्ट्वा निवर्तितुमैच्छत् । किन्तु रघोस्तन्न सम्मतम् । अतः स धनपतेः कुबेराद्धनं लब्धुं स्वयमेव गन्तुं प्रवृत्तः । यावत्स गमनोद्यतस्तावदेव तस्य कोषगृहे हिरण्मयी वृष्टिरभवत् । तत्सर्वं सुवर्णं स कौत्साय याचकृत् । तदातीव प्रीतेन तेन कौत्सेन स आशीर्वचनेनानुगृहीतः । त्वमात्मगुणानुरूपं पुत्रं लभस्वेति स आशीर्वादः ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

तदनुसारेण रघोर्भार्या काले पुत्रवती जाता। अज इति स्वपुत्रस्य नाम कृतं रघुणा।

सूचना

'आ+ह्वे—आह्वयते, आह्वान करना' यह धातु इस अर्थमें आत्मनेपदमें प्रयुक्त होती है।

'ऋते—विना अतिरिक्त' यह अव्यय पञ्चम्यन्त संज्ञाके साथ प्रयुक्त किया जाता है।

'वि+तृ—देना' इस क्रियकि उपयोगमें जिसे देना हो उसे चतुर्थी अथवा सप्तमीमें प्रयुक्त किया जाता है।

अभ्यास

१ वाक्योंकी पूर्ति करोः—रघुः ——— यौवराज्ये ———। ——— रक्षितः ——— इन्द्रेण ———। ——— तुरगः ——— रघुणा ——— कृतम्। रघोः ——— प्रीतेन ——— दिलीपाय ——— दत्तम्। ——— राज्यभारः ——— निवेशितः।

२ यथा हिरण्मयी वृष्टिः तथा ——— घटः, ——— अलङ्काराः, ——— पञ्जरः, ——— मूर्तिः, ——— मोदकः।

३ अन्तके १० वाक्य सन्धिविश्लेषण करके लिखो।

४ निम्न-लिखित शब्दोंकी वाक्योंमें योजना करोः—सम्मतः,, ऋते, न्ययोजयत्, अनुगृहीतः।

२५—रघुपुत्रस्याजस्य विवाहः।

स रघुकुमारोऽजो धैर्येण शौर्येणौदार्येण च पितरमन्वकरोत्। यावत्स यौवनपदवीमारूढस्तावत्कथकौशिकानामधिपतिना स्वसुरिन्दुमत्याः स्वयंवर आरब्धः। ससुतं रघुं न्यमन्त्रयत स स्वयंवराय। रघुणापि ससैन्योऽजो विदर्भाणां राजधानीं प्रस्थापितः। मार्गे मतङ्गमुनेः शापान्मतङ्गजत्वमापन्नो गन्धर्वस्तेन शापान्मुक्तः।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

अतः स गन्धर्वस्तस्मै सम्मोहनं नाम समन्त्रमस्त्रमयच्छत्। अस्त्रेणा युक्तोऽजोऽपि स्वयंवराय सत्वरं गतः। तत्र क्रथकैशिकस्तं प्रत्युदगच्छत्। स्वयंवरमण्डपे सोऽन्यैर्नृपैः सार्धमासन उपाविशत्। यदा पतिंवरा राजकन्येन्दुमती मण्डपं प्रविष्टा तदा तस्याः सौन्दर्येणा सर्वेषां नृपाणां नयनान्याकृष्टानि। तस्याः सखी सुनन्दा

सर्वेषां नृपाणां गुणान् पराक्रमं चावर्णयत् क्रमेण। किन्तु रघुपुत्रस्याजस्य वर्णनेनैव सा प्रीताऽभवत्तस्य च कण्ठे विवाहमालामार्पयत्। विवाहविधेरनन्तरं पित्रा स सिंहासने स्थापितो राज्ये चाभिषिक्तः। स प्रजानां भूतय एवायतत। रघुस्तु राज्ये सुप्रतिष्ठितं पुत्रं दृष्ट्वा यदा वनगमनायोद्यतोऽभवत्तदाऽऽत्मनोऽपरित्यागं स प्रार्थयत। अनया प्रार्थनया रघुर्वनं न गतः किन्तु नगराद्बहिरेव विजने स्थले पर्णशालामध्यवसत्कालेन च त्रिदिवमगच्छत्। एवं रघुः पराक्रमेणौदार्येण सुराज्यतन्त्रेण च विख्यात आसीत्। अत एव दिलीपवंशो 'रघुवंशः' इति विख्यातोऽभवत।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

सूचना

'अनु + कृ—अनुकरणा करना' जिसका अनुकरणा करना हो वह द्वितीया अथवा षष्ठी विभक्तिमें प्रयुक्त होता है।

'अधि + वस्—रहना' इसका उपयोग स्थलवाचक शब्दको द्वितीया विभक्तिमें रखकर किया जाता है।

अभ्यास

१ रघुणा कः स्वयंवराय प्रस्थापितः। मार्गे किं जातम्। इन्दुमत्या किं कृतम्। का नृपानवर्णयत्। कस्य वर्णनं तस्याः प्रियम्। विवाहादनन्तरं किमभवत्। रघुर्वननिवासार्थं किं न गतः।

२ सुतेन सहितः—ससुतः रघुः। इस प्रकार निम्न-लिखित समासोंका विग्रह करोः—समन्त्रम् अस्त्रम्। ससैन्यः रघुः। सशापः गन्धर्वः।

३ विदर्भाणां—विदर्भदेशस्य वा। इस प्रकार निषधेषु _____ वा। कलिङ्गान् _____ वा। वङ्गाः _____ वा।

४ यावत्–तावत्, यदा–तदा, यदि–तर्हि इन अव्ययोंसे वाक्यरचना करो।

पद्यविभागः

१—गणेशः

अभिप्रेतार्थसिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरैरपि।
सर्वविघ्नच्छिदे तस्मै गणाधिपतये नमः॥

२—पण्डितप्रशंसा

पण्डिते हि गुणाः सर्वे मूर्खे दोषाश्च केवलाः।
तस्मान्मूर्खसहस्रेभ्यः प्राज्ञ एको विशिष्यते॥ १॥
किं कुलेन विशालेन विद्याहीनस्य देहिनः। (नरस्य)
अकुलीनोऽपि विद्यावान् देवैरपि स पूज्यते॥ २॥

---

१ इष्ट वस्तु मिलनेके लिए। २ सर्व विघ्नोंका नाश करनेवाले।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

विद्वत्त्वं च नृपत्वं च नैव तुल्यं कदाचन ।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ॥ ३ ॥

विद्यया शस्यते लोके पूज्यते चोत्तमैः सदा ।
विद्याहीनो नरोऽप्राज्ञः सभायां नैव शोभते ॥ ४ ॥

३ — सामान्यनीतिः ।

वृथा वृष्टिः समुद्रेषु वृथा तृप्तस्य भोजनम् ।
वृथा दानं समर्थस्य वृथा दीपो दिवापि च ॥ १ ॥

शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे ।
साधवो न हि सर्वत्र चन्दनं न वने वने ॥ २ ॥

उदारस्य तृणां वित्तं शूरस्य मरणां तृणाम् ।
विरक्तस्य तृणां भार्या निःस्पृहस्य तृणां जगत् ॥ ३ ॥

को न याति वशं लोके मुखे पिण्डेन पूरितः ।
मृदङ्गो मुखलेपेन करोति मधुरध्वनिम् ॥ ४ ॥

सदयं हृदयं यस्य भाषितं सत्यभूषितम् ।
कायः परहिते यस्य कलिस्तस्य करोति किम् ॥ ५ ॥

प्रदोषे दीपकश्चन्द्रः प्रभाते दीपको रविः ।
त्रैलोक्ये दीपको धर्मः सुपुत्रः कुलदीपकः ॥ ६ ॥

गुणान् भूषयते रूपं शीलं भूषयते कुलम् ।
सिद्धिर्भूषयते विद्यां भोगो भूषयते धनम् ॥ ७ ॥

पिण्डे पिण्डे मतिर्भिन्ना कुण्डे कुण्डे नवं पयः ।
जातौ जातौ नवाचारा नवा वाणी मुखे मुखे ॥ ८ ॥

विद्या मित्रं प्रवासेषु भार्या मित्रं गृहेषु च ।
व्याधितस्यौषधं मित्रं धर्मो मित्रं मृतस्य च ॥ ९ ॥

हस्तस्य भूषणां दानं सत्यं कण्ठस्य भूषणाम् ।
श्रोत्रस्य भूषणां शास्त्रं भूषणैः किं प्रयोजनम् ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

४— भूमिगतं धनम् ।

वसति स्म पुरा कश्चित्पण्डितो वृद्धतां गतः।
स्वपुत्रानलसान् दृष्ट्वा सचिन्तहृदयोऽभवत् ॥ १ ॥
अथैकस्मिन्दिने पुत्रान्समाहूयावदन्मिथः।
मन्येऽहं मृत्युकालो मे समीपं वर्ततेऽधुना ॥ २ ॥
श्रूयतां सावधानं च यत्र मे वर्तते धनम्।
निखातं यत्रकुत्रापि द्रव्यं क्षेत्रे सुरक्षितम् ॥ ३ ॥
विस्मृतं तु मया स्थानं स्मृतिभ्रंशात्सुनिश्चितम्।
एवमुक्त्वा वचः कष्टात्पञ्चत्वं पण्डितो गतः ॥ ४ ॥ (वचनम्)

धनलाभेच्छया पुत्रा अखनन् क्षेत्रमुत्सुकाः।
न दृष्टं तैस्तु कुत्रापि द्रव्यं भूमिगतं तदा ॥ ५ ॥
धान्यं दशगुणं लब्धं यदा क्षेत्रस्य कर्षणात्।
अवदंस्ते तदा पुत्रा ज्ञातो हि पितुराशयः ॥ ६ ॥

५—उदारप्रशंसा ।

शतेषु जायते शूरः सहस्रेषु च पण्डितः।
वक्ता दशसहस्रेषु दाता भवति वा न वा ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

दाता नीचोऽपि सेव्यः स्यान्निष्फलो न महानपि ।
जलार्थी वारिधिं त्यक्त्वा पश्य कूपं निषेवते ॥ २ ॥
युध्यन्ते पक्षिपशवः पठन्ति शुकसारिकाः ।
दातुं शक्नोति यो वित्तं स शूरः स च पण्डितः ॥ ३ ॥
यद्ददासि विशिष्टेभ्यो यच्चाभासि दिने दिने ।(यच्छसि। भक्षयसि)
तत्ते वित्तमहं मन्ये शेषं कस्यापि रक्षसि ॥ ४ ॥
गौरवं प्राप्यते दानान्न तु वित्तस्य सञ्चयात् ।
स्थितिरुच्चैः पयोदानां पयोधीनामधःस्थितिः ॥ ५ ॥

६—सुभाषितप्रशंसा ।

पृथिव्यां त्रीणि रत्नानि जलमन्नं सुभाषितम् ।
मूढैः पाषाणखण्डेषु रत्नसंज्ञा विधीयते ॥ १ ॥
धर्मो यशो नयो दाक्ष्यं मनोहारि सुभाषितम् ।
इत्यादिगुणरत्नानां सङ्ग्रहो नावसीदति ॥ २ ॥
संसारकटुवृक्षस्य द्वे फले ह्यमृतोपमे ।
सुभाषितरसास्वादः सङ्गतिः सुजनैः सह ॥ ३ ॥
द्राक्षा म्लानमुखी जाता शर्करा चाश्मतां गता ।
सुभाषितरसस्याग्रे सुधा भीता दिवं गता ॥ ४ ॥
भाषासु मुख्या मधुरा दिव्या गीर्वाणभारती ।
तस्माद्धि काव्यं मधुरं तस्मादपि सुभाषितम् ॥ ५ ॥

७—विद्याप्रशंसा ।

अपूर्वः कोऽपि कोशोऽयं विद्यते तव भारति । (अवर्णनीयः)
व्ययतो वृद्धिमायाति क्षयमायाति सञ्चयात् ॥१॥ (आगच्छति)
हर्तुर्न गोचरं याति दत्ता भवति विस्तृता । (गच्छति)
कल्पान्तेऽपि न या नश्येत्किमन्यद्विद्यया समम् ॥ २ ॥
विद्या शस्त्रस्य शास्त्रस्य द्वे विद्ये प्रतिपत्तये ।
आद्या हास्याय वृद्धत्वे द्वितीयाद्रियते सदा ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

सद्विद्या यदि का चिन्ता वराकोदरपूरणे।
शुकोऽप्यशनमाप्नोति राम रामेति च ब्रुवन्॥४॥(लभते। वदन्)

न चोरहार्यं न च राजहार्यं न भ्रातृभाज्यं न च भारकारि।
व्यये कृते वर्धत एव नित्यं विद्याधनं सर्वधनप्रधानम्॥५॥

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते। (नियोजति)
कान्तेव चापि रमयत्यपनीय खेदम्।
लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षु कीर्तिम्। (वर्धयति।
प्रसारयति। दिशासु)

किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥६॥
विद्या नाम नरस्य रूपमधिकं प्रच्छन्नगुप्तं धनम्।
विद्या भोगकरी यशःसुखकरी विद्या गुरूणां गुरुः॥
विद्या बन्धुजनो विदेशगमने विद्या परं दैवतम्।
विद्या राजसु पूज्यते न हि धनं विद्याविहीनः पशुः॥७॥

८–मूर्खवायसः।

विहरन्ति यदा हंसाः सानन्दं सरसीजले।
तत्रागत्य जनाः सर्वे भवन्ति मुदितास्तदा॥१॥

१ क्षुद्र पेट भरनेकी।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

वृक्षस्थो वायसः कश्चित्प्रापश्यत्तद्दिने दिने ।
चिन्ताक्रान्त इवासीत्स हंससौभाग्यकारणात् ॥ २ ॥
हंस-श्वेत-गुणां लब्धुम् उपायस्तेन चिन्तितः ।
अत्यंजत्पूर्वमित्राणि न्यवसच्च सरस्तटे ॥ ३ ॥
अश्रान्तं क्षालितौ पक्षौ वायसेन च वारिणा ।
अभवत् पूर्ववच्छ्यामः स्वभावो दुरतिक्रमः ॥ ४ ॥
सन्तोषश्च नरैः कार्यो देवदत्तैर्गुणैः खलु ।
ईश्वरेच्छामनुल्लङ्घ्य सुखिताः सन्ति मानवाः ॥ ५ ॥

६—सज्जनप्रशंसा ।

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रियाः ।
चित्ते वाचि क्रियायां च साधूनामेकरूपता ॥ १ ॥
उपकर्तुं प्रियं वक्तुं कर्तुं स्नेहमकृत्रिमम् ।
सज्जनानां स्वभावोऽयं केनेन्दुः शिशिरीकृतः ॥ २ ॥
निर्गुणेष्वपि सत्त्वेषु दयां कुर्वन्ति साधवः ।
न हि संहरते ज्योत्स्नां चन्द्रश्चाण्डालवेश्मनः ॥३॥ (गृहात्)
सज्जना एव साधूनां प्रथयन्ति गुणोत्करम् ।
पुष्पाणां सौरभं प्रायस्तनुते दिक्षु मारुतः ॥ ४ ॥ (प्रसारयति)
परदुःखं समाकर्ण्य स्वभावसरलो जनः ।
उपकारासमर्थत्वात्प्राप्नोति हृदये व्यथाम् ॥ ५ ॥
वित्ते त्यागः क्षमा शक्तौ दुःखे दैन्यविहीनता ।
निर्दम्भता सदाचारे स्वभावोऽयं महात्मनाम् ॥ ६ ॥
किमत्र चित्रं यत्सन्तः परानुग्रहतत्पराः ।
न हि स्वदेहशैत्याय जायन्ते चन्दनद्रुमाः ॥ ७ ॥
स्वभावं नैव मुञ्चन्ति सन्तः संसर्गतोऽसताम् ।
न त्यजन्ति रुतं मञ्जु काकसम्पर्कतः पिकाः ॥ ८ ॥
वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि ।
लोकोत्तराणां चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

साधोः प्रकोपितस्यापि मनो नायाति विक्रियाम्।
न हि तापयितुं शक्यं सागराम्भस्तृणोल्कया ॥ १० ॥

१०—परोपकारप्रशंसा ।

रविश्चन्द्रो घना वृक्षा नदी गावश्च सज्जनाः। (धेनवः)
एते परोपकाराय युगे दैवेन निर्मिताः ॥ १ ॥
आत्मार्थं जीवलोकेऽस्मिन् को न जीवति मानवः।
परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति ॥ २ ॥
श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः खलु सज्जनानां परोपकारेण न तु
चन्दनेन ॥ ३ ॥ (शोभते)
परोपकाराय फलन्ति वृक्षाः परोपकाराय वहन्ति नद्यः।
परोपकाराय दुहन्ति गावः परोपकारार्थमिदं शरीरम् ॥ ४ ॥
(दुग्धं यच्छन्ति)
भवन्ति नम्रास्तरवः फलागमैर्नवाम्बुभिर्भूरिविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषाः समृद्धिभिः स्वभाव एवैष
परोपकारिणाम् ॥ ५ ॥

११—उद्योगप्रशंसा ।

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥ १ ॥
उद्यमः साहसं धैर्यं बुद्धिः शक्तिः पराक्रमः।
षडेते यत्र वर्तन्ते तत्र देवः सहायकृत् ॥ २ ॥
आलस्यं हि मनुष्याणां शरीरस्थो महारिपुः।
नास्त्युद्यमसमो बन्धुः कृत्वा यं नावसीदति ॥ ३ ॥
न दैवमिति सञ्चिन्त्य त्यजेदुद्योगमात्मनः।
अनुद्यमेन तैलानि तिलेभ्यो नाप्तुमर्हति ॥ ४ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

न लभन्ते विनोद्योगं जन्तवः सम्पदां पदम् ।
सुराः क्षीरोदविक्षोभमनुभूयामृतं पपुः ॥ ५ ॥ (अपिबन्)

१२–अतिदर्पोऽवपाताय ।

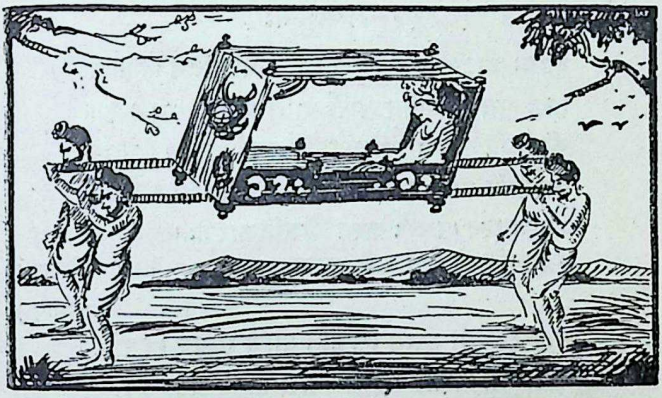

सोमवंशोद्भवः कश्चिन्नहुषो नाम भूपतिः ।
नयेनैवाकरोद्राज्यं रक्षित्वा पुत्रवत्प्रजाः ॥ १ ॥
क्रतूनां च शतं तेन कृतमिन्द्रपदेच्छया ।
सपद्येव फलं प्राप्तं माहेन्द्रं वैभवं महत् ॥ २ ॥
दिव्यैश्वर्योपभोगेन मदान्धः सोऽभवत्तदा ।
महर्षीनादिशद् दृप्तः शिविका प्रोह्यतामिति ॥ ३ ॥
एतत्तद्वचनं श्रुत्वा विमूढास्ते महर्षयः ।
अवहन्शिबिकारूढं स्वांसैस्ते नहुषं प्रभुम् ॥ ४ ॥
वामनत्वादगस्त्यस्य कम्पिता शिबिकाऽभवत् ।
सत्वरं सर्प सर्पेति सक्रोधो नहुषोऽवदत् ॥ ५ ॥
अपमानेन सङ्क्रुद्धोऽगस्त्यस्तमशपन्मुनिः ।
न ते युक्तमिदं स्थानं भव सर्पो महीतले ॥ ६ ॥

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

उक्तमात्रेषु शब्देषु सहसा नहुषस्तदा ।
प्रभावान्मुनिशापस्य पृथिव्यामपतत्खलु ॥ ७ ॥
मुनयो हि क्षमाशीला यदा गच्छन्ति क्रुद्धताम् ।
तदाऽनिवार्यस्तत्कोपः सर्वनाशाय कल्पते ॥ ८ ॥

१३—सत्सङ्गमः ।

काचः काञ्चनसंसर्गाद्धत्ते मारकतीं द्युतिम् । (धारयति)
तथा सत्सन्निधानेन मूर्खो याति प्रवीणाताम् ॥ १ ॥
कीटोऽपि सुमनःसङ्गादारोहति सतां शिरः । (शीर्षम्)
अश्मापि याति देवत्वं महद्भिः सुप्रतिष्ठितः ॥ २ ॥
महाजनस्य संसर्गः कस्य नोन्नतिकारकः ।
पद्मपत्रस्थितं तोयं धत्ते मुक्ताफलश्रियम् ॥ ३ ॥ (मौक्तिकानां शोभाम्)
जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यम् । (बुद्धेः)
मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति ॥ (नाशयति)
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिम् ।
सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम् ॥ ४ ॥ (नराणाम्)

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, .

शब्दसंग्रह

अ

अंसः—कन्धा
अकस्मात् (अ.)—एकदम, एकाएक
अघम्—पाप
अट् (१ प. प.)— घूमना, भटकना
अटवी—जंगल
अतर्कित (वि.)—अकस्मात्, एकदम
अतीव (अ.)—बहुत
अतिलौल्यम्—बहुत लोभ
अथ किम् (अ.)—हां तो
अधिष्ठानम्—स्थान, शहर
अधि + वस् (१ प. प.)—रहना
अध्यापय (अधि + इ का प्रयोजक)—
—पढ़ाना
अनध्यायदिनम्—छुट्टीका दिन
अनु + कृ (८ उ. प.)–अनुकरण
करना
अनु + इष् (४ प. प.)—ढूंढना
अनु + भू (१ प. प.)—अनुभव लेना
अनु + मन् (४ आ. प.)—संमति देना
अन्ध (वि.)—अन्धा
अन्वेषणम्—शोध, ढूंढना (सं.)
अप + नी (१ प. प.)—दूर ले जाना,
नष्ट करना
अप + सृ (१ प. प.)—दूर जाना
अप + हृ (१ प. प.)—दूर ल जाना
अप + आ + कृ (८ उ. प.)–नाश
करना
अभिक्रान्त (भूत. वि.)—हल्ला किया
हुआ
अभिमत (भूत. वि.)–प्यार, प्यार
किया हुआ
अभिप्रेत (भूत. वि.)—इष्ट
अभि + सिच्–अभिषिञ्च् (६ प. प.)—
–अभिषेक करना
अभिधानम्—नाम
अम्बु (न.)—पानी
अम्बुजम्—कमल
अम्भस् (न.)—पानी
अम्भोधिः (पुं.)—समुद्र
अर्कः—सूर्य
अर्धचन्द्रः—अर्धचन्द्र, धक्का
अर्पय ('ऋ' का प्रेरक)–अर्पण करना
अर्धभग्न (वि.)–थोडा टूटा हुआ
अर्ह् (१ प. प.)–योग्य होना
अलस (वि.)—आलसी
अव + तृ (१ प. प.)—उतरना
अव + सद् (१–६ प. प –अवसीदति)–
—नष्ट होना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

अव + लम्ब् (१ आ. प.) —आधार लेना, आश्रय लेना, अवलम्बित रहना

अवस्थानम्—रहना

अशनम्—खाना

अश्मता—पत्थरकी दशा

अश्रान्तम् (अ.)—थके बगैर, न थकते हुए

असत् (वि.)—बुरा (आदमी)

आ

आ + क्रुश् (१ प. प.)—आक्रोश करना, रोना, चिल्लाना

आ + चर् (१ प. प.)—आचरण करना

आ + दा (१ प. प.)—लेना

आ + दृ (६ आ. प.)—आदर प्रदर्शित करना

आद्य (वि.)—पहला

आ + नन्द् (१ प. प.)—आनन्दित होना

आनन्दय (प्रयोजक)—आनन्दित करना

आ+प्रच्छ् (६ आ. प.)—(इजाजत लेना) बिदाई मांगना

आपणिकः—दुकानदार, बेपारी

आ + राध् (१० प. प.)—सन्तुष्ट करना, आराधना करना

आ + रुह् (१ प. प.)—ऊपर चढना, ऊपर बैठना

आलयः—ठिकाना, स्थान

आ + लम्ब् (१ आ. प.)—आश्रय करना, आधार लेना

आशयः—हेतु, उद्देश

आ + श्रि (१ उ. प.)—आश्रय लेना

आहूत (क. भू. कृदन्त)—बुलाया, हुआ

आ + ह्वे (१ प. प.)—बुलाना, पुकारना

(१ आ. प.)—आव्हान देना

आ + ह्लाद् (१ आ. प.)—आनन्दित होना

आह्लादय (प्रयोजक)—आनन्दित करना

इ

इतस्ततः (अ.)—इधरउधर

इन्दुः (पुं.)—चन्द्रमा

उ

उच्च (वि.) ऊंचा

उच्चैस् (अ.)—उदात्त रीतीसे, जोरसे

उटजः—जम्—झोंपडी, छोटासा आश्रम

उत्तरतः (अ.)—उत्तरकी ओर

उत्करः—समूह

उद्यानम्—बाग

उदरम्—पेट

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

उद्यत (वि.)—तैयार
उद् + भू (१ प. प.)—पैदा होना, उत्पन्न होना
उद् + पद् (४ आ. प.)—उत्पन्न होना
उद् + स्था (१ प. प.)—उठना, खडा रहना
उद्गमस्थानम्—उगमकी जगह
उद्भवः—उत्पत्ति, पैदा
उद्यमः—उद्योगः
उप + आस् (२ आ. प.)—उपासना करना, पूजा करना
उप + दिश् (६ उ. प.)—उपदेश करना
उपपदम्—नाम, पदवी, उपाधि
उपपन्न (भू. वि.)—योग्य
उपरि (अ.)—ऊपर
उपवनम्—बाग
उप + विश् (६ प. प.)—बैठना
उपायनम्—बक्षिस, नजर
उपेत (धा. वि.)—युक्त, सम्पन्न
उलूकः—उल्लू

ए

एतादृश (वि. स्त्री-शी)—इसके समान
एकोनशततम (वि. स्त्री.-मी)—नव्याणवेवा

ओ

ओषधिः (स्त्री.)—वनस्पति, औषधि, झाड

क

कक्षान्तरम्—बगलकी पोली जगह
कदशनम्—बुरा अन्न
कन्था—गोधडी, फटातूटा वस्त्र
कन्या—लडकी
कपिल (वि.)—भूरे रंगका
कपोतः—कबूतर
करः—हाथ
कर्कटः—खेकडा
कर्परः—खप्पर
कर्पूरपुटिका—कपूरकी पुडी
कल्पान्तः—जगतका अन्त
कल्पलता—इच्छित वस्तु देनेवाली वेल
कष्टमय—(वि. स्त्री.-मयी)—दुःखकारक
काकः—कौआ
काचवत् (अ.)—कांचके समान
कातर (वि.)—डरपोक
कान्ता—पत्नी, स्त्री
काञ्चनम्—सुवर्ण, सोना
कापुरुषः—क्षुद्र मनुष्य
कामदा (स्त्री.)—इच्छा पूरी करनेवाली
कायः—देह, शरीर
काष्ठा—मर्यादा
किल (अ.)—सचमुच

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

कीटः, कीटकः—कीडा
कुम्भकारः, कुलालः—कुम्हार
कुलायः—यम्—घोंसला
कुतश्चित् (अ.)—किसीसे भी, कहींसे भी
कुक्कुटः—मुर्गा
कुसुमम्—फूल
कूटम्—शिखरम्—चोटी
कूपः—कुवा
कृ (८ उ. प.)—करना
कृष् (१-६ प. प.)—खींचना, हलना
केकारवः—मोरका आवाज
कृष्ण (वि.)—काला
कृषीवलः—किसान
कृषिकार्यम्—खेती
कोटिः (स्त्री.)—नोक, मर्यादा
कोटरः—रम्—भाडकी पोली जगह
कोषागारम्—खजाना
क्रतुः (पुं.)—यज्ञ
क्रमशः (अ.)—क्रमसे
क्रीड् (१ प. प.)—खेलना
क्रुध् (४ प. प.)—क्रुद्ध होना
क्रौञ्चः—पक्षीका नाम
क्रौर्यम्—क्रूरता
क्षल् (१० उ. प.)—धोना
क्षतम्—जखम, खोंक
क्षयः—नाश, बुरी दशा
क्षीरोदः—क्षीरसमुद्र
क्षुद्र (वि.)—हलके मनका, नीच
क्षेत्रम्—खेत
क्षेमकारक (वि.)—रक्षण अथवा हित करनेवाला

ख

खगः—पक्षी
खञ्ज (वि.)—लंगडा
खण्डशः कृ (८ उ. प.)—टुकडे करना
खेदः—खिन्नता

ग

गजः—हाथी
गन्धः—सुवास
गानम्—गाना
गीर्वाणभारती—देवोंकी भाषा
गुणोत्करः—गुणोंका समुदाय
गृध्रः—गीदड
गौरवम्—बडप्पन, श्रेष्ठता
ग्रामः—गांव

घ

घृतम्—घी
घ्रा (१ प. प.)—सूंघना, बास लेना

च

चटकः (पुं.), चटका (स्त्री.)—एक पक्षी
चतुर् (संख्या वि.)—(प्र० चत्वारः—द्वि० चतुरः)—चार

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

चन्द्रिका—चन्द्रप्रकाशः
चरणः—पांव
चर् (१ प. प.)—घूमना, फिरना
चर्व् (१ प. प.)—चाबना,
चर्मन् (न.)—चमडा
चिन्त् (१० उ. प.)—विचार करना, चिन्तन करना
चित्रित (वि.)—चित्रविचित्र रंगोंका
चुर् (१० उ. प.)—चोरना
चेतस् (न.)—मन, चित्त, अंतःकरण

छ

छेदः-दनम्—तोडना

ज

जननी—मा
जम्बूकः—शृगाल
जाडयम्—अज्ञान, मंदता
जामातृ (पुं.)—जंवाई
जीव्—(१. प प.)—जीते रहना
जीवयात्रां कृ (८ उ. प.)—आयुष्य गनाना

ड

डी (१ आ. प.)—उडना

त

तडागः—तलाव
तटः (पुं.), तटी (स्त्री.), तटम् (नः)—तीर
तत्र (अ.)—वहां
तरल (वि.)—हलनेवाला, अस्थिर
तरङ्गः—तरंग, लहर
तादृश (वि. स्त्री.-शी.)—उसके समान
तापसः—यति, संन्यासी
तीर्थम्—पवित्र स्थल
तीक्ष्णांशुः (पुं.)—सूर्य
तुङ्ग (वि.)—ऊंचा
तुरगः, तुरङ्गः, तुरङ्गमः—घोडा
तुष् (४ प. प.)—संतुष्ट होना
तृणम्—चारा, घांस
तृणोल्का—घांसकी चिनगारी
त्रिदिवम्—आकाश, स्वर्ग

द

दक्षिण (वि.)—दहना, उदार, कुशल
दण्डः—शिक्षा, लकडी
दन्तः—दांत
दंश् (१ प. प.-दशति)—काटना, दंश लेना
दशगुण (वि.)—दसगुना
दा (१ प. प.-यच्छति)—देना
दाक्ष्यम्—औदार्य, दक्षता, उदारता
दारकः (पुं.)—लडका, (स्त्री. दारिका- लडकी)
दिनम्—दिन
दिवा (अ.)—दिनमें
दिवाकरः—सूर्यः
दुग्धम्—दूंध

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

दुरतिक्रम (वि.)—बदलनेको कठिन
दुरारोह (वि.)–चढनेको कठिन
दुर्भिक्षम्—काल, दुष्काल
दुर्जनः—बुरा मनुष्य
दुष्कर (वि.)—करनेको कठिन
दृश् (१ प. प.)—देखना
देवायतनम्—मंदिर
देवालयः—मंदिर
द्युतिः (स्त्री.)—तेज
द्वारःस्थः—द्वारपाल

ध

धर्मः—धर्म, गुण
धाव् (१ प. प.)—दौडना
धार्मिकः— धर्मसे रहनेवाला, साधु
धिक् (अ.)—धिक्कार
धृ (१० उ. प.)–धारण करना
धेनुः (स्त्री.)–गाय
ध्यै (१ प. प.)—ध्यान करना, चिन्तन करना

न

नकुलः (पुं.)—नकुला, नौला (स्त्री.–नकुली)
नम् (१ प. प.)—नमस्कार करना
नयनम्, नेत्रम्—आंख
नयः, नीतिः—न्याय
नवाम्बु (न.)—नया पानी
नादय (नद्का प्रेरणार्थक)—बजाना
नासिका—नाक
निखात (भू. वि.)—गडा हुआ
निन्द् (१ प. प.)—निन्दा करना
निपुणम् (अ.)—बारीक रीतीसे, कुशलतासे
निबिड (वि.)—घना, डटा हुआ
निपीत (भू. वा. रु.)--पूर्ण पीया हुआ
नि + मन्त्र् (१० आ. प.)-बुलाना
निम्न (वि.)—ऊंडा, नीचे
नियुज् (१ प. प., १० उ. प.)–नियुक्त करना
निर्घृण (वि.)—कठोर, क्रूर
निर्दम्भता—ढोंग नहीं करना
निर्भर (वि.)—भरा हुआ, पूर्ण
नि + वृ (प्रयोजक)—निवारण करना
नि + वृत् (१आ. प.)—वापिस फिरना
निवर्तनम्— वापिस फिरना
निःसारय (निः + सृ का प्रेरणार्थक) –निकाल देना
निस् + पद् (प्रेरणार्थक)–बना लाना
निःसारणम्--निकाल देना
नि + सेव् (१ आ. प.)—आश्रय करना
नीडः–डम्—घोंसला
नूनम् (अ.)—सचमुच
नृत् (४ प. प.)—नाचना
नौका—नाव

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

प

पञ्चत्वं गम्—मरना
पञ्जरः—पींजरा
पथिकः, पान्थः—रस्तागीर, प्रवासी
पर्णम्—पत्ता
पर्णशाला—झोंपडी
पत्रम्—पत्ता
पयोदः—मेघ
पयोधिः (पुं०)—समुद्र
पवनः—वायु
परा + अय् (१ आ. प. पलायते)—भग जाना
परि + भ्रम् (१-४ प. प.)—चक्कर फिरना
परि + वृत् (१ आ. प.)—फेरी डालना
" (प्रयोजक)—गोल फिराना
परोक्षम् (अ.)—पीठ पीछे
पश्चात् (अ.)—अनन्तर, पीछे
पा (१ प. प. पिबति)—पीना
पाणिः (पुं.)—हाथ
पादपः—वृक्ष
पारः-रम्—दूसरी बाजू
पालय (पा २ प. प. का प्रेरणार्थक)—
—पालना, रक्षा करना
पाषाणः—पत्थर
पिकः—मोर
पिण्डः—चांवल का गोला, पिण्ड
पितृ (पुं.)—पिता, बाप
पिच्छम्—पंख
पीड् (१० उ. प.)—पीडा देना
पुष्पम्—फूल
पुरतः (अ.)—आगे, साम्हने
पुष् (४ प. प.)—पोषण करना
पूर् (१० प. प.)—पूरा करना, भरना
पूर्वम्, प्राक् (अ.)—पहले
पृष्ठम्—पीठ, पृष्ठभाग
प्रकृतिः (स्त्री.)—मूल स्वभाव, प्रजा
प्र + क्षिप् (६. उ. प.)—फेंकना
प्रच्छ् (६ प. प. पृच्छति)—पूँछना
प्रतिपत्तिः (स्त्री.)—सन्मान
प्रच्छन्न (वि.)—छिपा हुआ
प्रतिवचनम्—उत्तर, जवाब
प्रति + ईक्ष् (१ आ. प.)— प्रतीक्षा करना
प्रति + वद् (१ प. प.) —उत्तर देना
प्रत्युद् + गम् (१ प. प.)—स्वागतार्थ आगे जाना
प्रत्यूहः—विघ्न
प्रथ् (१० उ. प.) —प्रसिद्ध करना
प्रदोषः—सायंकाल, रातका पहला भाग
प्रधान (वि.)—मुख्य
प्र + नम् (१. प. प.)—नमस्कार करना, प्रणाम करना
प्रबुद्ध (भू. वा. कृ.)—जगा हुआ
प्रभूत (वि.)—बहुत
प्रवृत्त (धा. वि.)—चालू
प्र + शंस् (१ प. प.)—स्तुति करना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

प्रसारय (प्र + सृ का प्रेरणार्थक)—फैलाना
प्र + स्था (१ आ. प.)—निकलना, रवाना होना
प्राज्ञः—हुशार मनुष्य
प्रासादः—राजवाडा
प्री (१० उ. प.)—संतुष्ट करना

व

बद्ध (भू. वा. कृ.)—बन्धा हुआ
बर्हः-र्हम्—पंख
बलात् (अ.)—जोरसे
बलीवर्दः—बैल
बहिस् (अ.)—बाहर
बहुमूल्य (वि.)—बहुत कीमतका
बुभुक्षा—भूख

भ

भक्ष् (१० उ. प.)—खाना
भक्ष्यार्थम् (अ.)—खानेके लिए
भल्लूकः—भालु
भाण्डपतिः—व्यापारी
भारतवर्षम्—भरतखण्ड, हिन्दुस्थान
भारतवर्षीयः—हिन्दुस्थानका मनुष्य
भारः—बोझा
भारती—वाणी, सरस्वती
भार्या—पत्नी
भाष् (१ आ. प.)—बोलना
भीषण (वि.)—भयङ्कर
भूतिः (स्त्री.)—भरभराट
भूमिभागः—प्रदेश
भ्रम् (१-४ प. प.)—भटकना, फिरना

म

मञ्जु (वि.)—मधुर, कानको मीठा
मन् (४ आ. प.)—मानना, विचार करना
मन्त्र् (१० आ. प.)—ठहराना, सलाह करना
मतङ्गजः—(मस्त) हाथी
मन्द (वि.)—मन्द, मट्ठा
मयूरः—मोर
मातृ (स्त्री.)—माता, मा
मारकत (वि.)—मरकत मणीका (स्त्री.—मारकती)
मारुतः—वायु
मालाकारः—माली
मित्रभावः—मित्रता
मिथः (अ.)—एकत्र, गुप्त रीतिसे
मुक्ताफलम्—मोती
मुखम्—मुंह
मुच् (६ उ. प.)—छोडना
मुदित (भू. क. कृ.)—आनन्दित
मोचनम्—छुटकारा, छूट
मृगः—हिरन, जंगलके पशु
मूषकः—चूहा
मेखला—कमरबंद
मौर्ख्यम्—मूर्खता

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

मौक्तिकम्--मोती
मौनित्वम्--स्तब्धता, मूकता

य

यतिः (पुं.)--मुनि
यथार्थतः (अ.)—सचमुच
याच् (१ आ. प.)--मांगना, याचना करना
याचकः—भिकारी, भिक्षुक
यात्रिकः--यात्रा करनेवाला, यात्री
यौवनपदवी— युवावस्था, जवानी

र

रक्ष् (१ प. प.)--रक्षा करना
रच् (१० उ. प.)--रचना करना, बांधना
रजस् (न.)—धूलि, धूल
रत्नसंज्ञा--रत्न यह संज्ञा, रत्ननाम
रथ्या—रस्ता
रवः—आवाज
राज्यतन्त्रम्—राजका कारभार
रिपुः (पुं.)—शत्रुः
रुच् (१ आ. प.)—पसंद करना-होना
रुतम्—आवाज
रुधिरम्—रक्त, लोहू
रुह् (१ प. प.)—बढना

ल

लक्षणम्—चिन्ह
लग्न (कृ)—लगा हुआ, चिपका हुआ
लता—बेला
लभ् (१ आ. प.)—मिलना
ललाटम्—कपाल
लाङ्गूलम्—पूंछ
लिख् (६ प. प.)—लिखना
लिप्त (कृ)—लेप दिया हुआ, लीपा हुआ
लोमश (वि.)—बालवाला

व

वद् (१ प. प.)—बोलना
वन्य (वि.)—जंगली
वयस्यः—सहकारी, मित्र
वराक (वि.)—गरीब, बिचारा
वर्ण् (१० उ. प.)—वर्णन करना
वर्णः—रङ्ग
वर्षाकालः—बरसात
वस् (१ प. प.)—रहना
वह् (१ प. प.)—उठा लेना, बहना
वाग्देवी—सरस्वती
वाञ्छ् (१ प. प.)—इच्छा करना
वाम (वि.)—बांया
वामनत्वम्—ठिंगनापन
वायसः—कौआ
वारि (न.)—पानी
वार्धिः, वारिधिः (पुं.)—समुद्र
विकसित (कृ)—फूला हुआ
विक्षोभः—हलचल
विकारः, विकृतिः (स्त्री.)—बदल, विक्रिया
विघ्नच्छिद् (पुं.)—विघ्ननाशक

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

विजर (वि.)—बुढापा न होनेवाला, युवा
विजन (वि.)—निर्जन
वितत (कृ.)—फैला हुआ, चौडा
वि + तृ (१ प. प.)—देना, सौंप देना
विदेशः—परदेस
वि + धा (कर्मणि)—करना
विपणिः (पुं.)—दुकान, बाजार
वि + लोक् (१० उ. प.)—देखना
विरक्त (वि.)—विरक्त, संसारसे विरक्त
विरोपित (वि.)—अच्छा किया हुआ
विविक्त (वि.)—गुप्त, निर्जन
विविध (वि.)—भिन्न प्रकारका
वि + शिष् (कर्मणि)—श्रेष्ठ होना, विशेष होना
वि + हृ (१ प. प.)—विहार करना, खेलना
वृत् (१ आ. प.)—होना, रहना
वृथा (अ.)—निरुपयोगी, व्यर्थ
वृश्चिकः—बिच्छू
वृषभः—बैल
वृध् (१ आ. प.)—बढना
वृद्धिः (स्त्री.)—बढ, वृद्धि
वेला—मर्यादा, तीर, जुवारभाटा
वैभवम्—ऐश्वर्य, भाग्य
व्यध् (४ प. प.)—ठूंसना
व्याधः—शिकारी
व्याघ्रः—वाघ
वि + अव + हृ (१ प. प.)—रहना, व्यवहार करना
व्ययतः (अ.)—व्ययसे, व्ययके कारण
व्यजनम्—पंखा
वि + आ + पद् (४ आ. प.)—मरना
(प्रे. व्यापादयति)—मार डालना
व्रीहिभारः—चाँवलका बोझा

श

शंस् (१ प. प.)—स्तुति करना
शकटः—गाडी
शयनम्—बिस्तरा
शय्या—बिस्तरा
शर्करा—शक्कर
शाखा—टहनी, डाली
शासनम्—हुकुम, आज्ञा
शिबिका—पालखी, म्याना
शिवालयः—शंकरजीका मन्दिर
शिशिर (वि.)—ठंडा
शीर्षम्—सिर
शुकः—तोता
शुच् (१ प. प.)—शोक करना
शृङ्गम्—सींग, शिखर
शैलः—टेकडी, पर्वत
श्रुतम्—विद्या, ज्ञान
शोभन (वि.)—अच्छा
श्येनः—बाज पक्षी
श्रान्त (भू. कृ.)—थका हुआ
श्रु (५ प. प.)—सुनना

स

सं + हृ (१ प. प.)—संहार करना

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

सचिवः—प्रधान, मन्त्री
सकल (वि.)—सब, पूरा, पूर्ण
संसर्गः—संगत
सम् + चर् (१ प. प.)—फिरना, संचार करना
सञ्चयः—संग्रह, समूह
सत्त्वः—त्त्वम्—प्राणी
सत्प्रभा—अच्छा प्रकाश
सद्यस् (अ.)—तुरन्त
सन्तानम्—सन्तान
सन्नद्ध (भू. कृ.)—तैयार
सपद्येव—एकदम, तुरन्त
समीपम्-पे (अ.)—पास, नजदीक
सम्प्राप्त (भू. कृ.)—आया हुवा, हुआ हुआ
सम्पर्कः—सङ्गति
सम्पन्न (भू. कृ.)—युक्त
सरसी—तलाव, सरोवर
सविशेषम् (अ.)—विशेष प्रकारसे
सहस्रम्—हजार
सहायः—मदतगार
सारिका—मैना, कोयल
सार्थता—अर्थपूर्णता
सारमेयः—कुत्ता
सावधानम् (अ.)—सावधानतासे
सिकता—वालु, रेती
सिच् (६ प. प.)—छींटना, सींचना
सिद्धिः (स्त्री.)—जय, यश
सुधा—अमृत
सुप्त (भू. कृ.)—सोया हुआ
सुभाग्यम्, सौभाग्यम्—अच्छा नसीब, भाग्य
सुतः—लडका
सुरः—देव
सुमनस् (स्त्री.)—फूल
सृज् (६ प. प.)—उत्पन्न करना
सौजन्यम्—भलाई
सौरभम्—सुगंध
स्तेनः—चोर
स्था (१ प. प.)—खडे रहना
स्थापय ('स्था' का प्रेरणार्थक)—रखना
स्रु (१ प. प.)—झरपना
स्वप् (२ प. प.)—सोना
स्वसृ (स्त्री.)—बहेन
स्वर्धेनुः (स्त्री.)—कामधेनु
स्वयमेव (अ.)—स्वयम्, खुद
स्वैरम् (अ.)—यथेच्छम्, धीरे

ह

हरित (वि.)—हरा
हरिणाजिनम्—हिरनका चमडा
हर्तृ—ले जानेवाला, चुरानेवाला
हलम्—हल
हस्तः—हाथ
हा हतोस्मि—अरेरे, मैं मर गया
हार्यम्—(वि.)—ले जानेके योग्य
हिमम्—बरफ
हिरण्मय (वि. स्त्री.-मयी)—सोनेका

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation

भाग तीसरा—हिन्दी अवतरण

हिन्दीका संस्कृत भाषान्तर

(भाषान्तरके लिए सूचना)

१ सूर्य आकाशमें प्रकाशित होता है—**सूर्यः आकाशे प्रकाशते।**

सूर्योदयके समय मनुष्य कामका आरम्भ करते हैं—**सूर्योदये जनाः कार्यम् आरभन्ते।**

इन हिन्दी वाक्योंके संस्कृत भाषान्तरसे यह दिखाई देगा कि वाक्यके कर्तृपदवाचक शब्दकी प्रथमा विभक्ति होती है और कर्मपदवाचक शब्दकी द्वितीया विभक्ति। क्रियाका रूप आवश्यक काल, पुरुष और वचनमें कर्तृपदके अनुसार प्रयुक्त करना पडता है। वाक्यमेंके दूसरे शब्दोंको वाक्यमें उनके उपयोग और अर्थके अनुसार योग्य विभक्तिमें रखना चाहिए। जैसे सूर्योदयके समय इस कालवाचक शब्दका भाषान्तर 'सूर्योदये' इस सप्तम्यन्त पदसे किया है। 'चन्द्र सूर्यसे प्रकाश प्राप्त करता है' इस वाक्यका भाषान्तर '**चन्द्रः सूर्यात् प्रकाशं लभते**' ऐसा होता है। 'मैं पानीसे हाथ और पांव धोता हूँ' इस वाक्यका भाषान्तर '**अहं जलेन हस्तौ पादौ च क्षालयामि**' ऐसा किया जाता है। इस प्रकारसे प्रथम कर्तृपद और उसके विशेषण, फिर कर्मपद और उसके विशेषण और अन्तमें क्रिया और क्रियाविशेषण आदिकी योजना करके हिन्दीके समान सामान्यतः संस्कृतमें भी वाक्यरचना करना चाहिए

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

विशेषणोंके रूप विशेष्यके अनुसार लिङ्ग, विभक्ति और वचनमें प्रयुक्त किये जाते हैं।

इसी प्रकार कुछ विशिष्ट क्रियाएं और अव्यय इनके उपयोगके सम्बन्धमें इस पुस्तकमें स्थान स्थानपर सूचनाएं दी हैं; उनके अनुसार वाक्यरचना करनी चाहिए।

२ लडका अभ्यासका आरम्भ करता है—**बालः अध्ययनं आरभते।**

मुनि दुर्जनका त्याग करता है—**मुनिः दुर्जनं त्यजति।**

भक्त ईश्वरकी पूजा करता है—**भक्तः ईश्वरं पूजयति।**

पुत्र पिताकी सेवा करता है—**पुत्रः जनकं सेवते।**

इन हिन्दी वाक्योंमेंके अधोरेखांकित शब्दोंका भाषान्तर एकही सकर्मक क्रियावाचक शब्दसे किया गया है। इस लिए उनसे सम्बन्ध रखनेवाली संज्ञाका भाषान्तर द्वितीयान्त कर्मपदसे किया गया है।

३ मनुष्य प्रयत्न करता है—**नरः प्रयतते।**

हाथी पानीमें क्रीडा करता है—**जले गजः क्रीडति।**

ऊपरके वाक्योंमें भी अधोरेखांकित शब्दोंका संस्कृत भाषान्तर एक अकर्मक क्रियासे किया गया है। किन्तु ऐसी क्रियाएं संस्कृतमें बहुत कम हैं।

४ चन्द्र प्रकाशित होता है—प्रकाशित हो रहा है—प्रकाशित रहता है—इन सब क्रियाओंका भाषान्तर '**प्रकाशते**' इस एक सीधे वर्तमानकालके रूपसे किया जाता है। श्रीमान् मनुष्य रहा—रहता था—इन सब क्रियाओंका भाषान्तर '**अवसत्**' अथवा '**वसति स्म**' ऐसा किया जाता है। (वर्तमानकालके रूपके साथ 'स्म' यह अव्यय रखनेसे भूतकालका अर्थ होता है।)

५ वृक्ष झुके हुए थे—**वृक्षाः अवनताः आसन्।**

लताएं शोभायमान थीं—**लताः शोभिताः अभवन्।**

जमीन ढंकी हुई थी—**भूमिः आच्छादिता आसीत्।**

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ऊपर दिए हुए वाक्योंकी संस्कृत क्रियाओंका भाषान्तर भूतकालवाचक कृदन्त विशेषण और 'अस्' क्रियाके प्रयोगके द्वारा किया गया है।

६ क्या, मैं पाठशालाको जाऊँ?—**अपि अहं पाठशालां गच्छानि।**

हमें साथियोंके साथ खेलने दो—**वयं वयस्यैः सह क्रीडाम।**

उसे विजय प्राप्त हो—**सः विजयताम्-विजयं लभताम्।**

उसे घरको जाने दो—**सः गृहं गच्छतु।**

उन्हें यहां बैठने दो—**ते अत्र उपविशन्तु।**

इस प्रकारके वाक्योंमें उत्तम पुरुष और अन्य पुरुषके कर्तृपदके साथ आज्ञार्थके रूपोंकी योजना करनेकी प्रणालि है।

७ बालकों, तुम श्लोक याद करो—**बालाः यूयं श्लोकं पठत।**

बालकों, तुम पानी पीओ—**बालाः, यूयं जलं पिबत।**

हे राजा, तुझे विजय प्राप्त हो—**हे भूपते, विजयं लभस्व।**

मध्यम पुरुषके कर्तृपदके साथ आज्ञा, उपदेश और आशीर्वाद व्यक्त करनेके लिए आज्ञार्थ रूपोंकी योजना की जाती है।

८ लडके पाठशालाको जावें—**बालाः पाठशालां गच्छेयुः।**

मनुष्य ईश्वरका स्मरण करें—**मनुजाः ईश्वरं स्मरेयुः।**

(यदि) वह मेरे पास आवेगा, तो मैं उसे सहायता करूंगा—**यदि सः मम गृहम् आगच्छेत् तर्हि अहं तस्य साहाय्यं कुर्याम्।**

इनमेंसे पहले दो वाक्योंमें हिन्दी विध्यर्थके क्रियाओंका भाषान्तर संस्कृतके विध्यर्थकी क्रियाओंसे किया गया है और तीसरे वाक्यमें एक दूसरेपर अवलम्बित रहनेवाली भविष्यकालीन क्रियाएं व्यक्त करनेके लिए विध्यर्थके रूपोंकी योजना की गई है।

९ 'लडकेने आम खाया' इस हिन्दी वाक्यका भाषान्तर कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य दोनों वाच्योंमें हो सकता है। जैसे:—**बालः आम्रम् अभक्षयत्—बालेन आम्रम् भक्षितम्।**

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

'रामने रावणको मारा' इस हिन्दी वाक्यका भाषान्तर संस्कृतमें कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य इन दोनों वाच्योंमें हो सकता है। जैसे:—**रामः रावणम् अमारयत्—रामेण रावणः मारितः।**

१० दो अथवा उससे अधिक साधे वाक्योंको जोडते समय योग्य अव्ययोंका उपयोग करना चाहिए। **च, वा, इति, किन्तु, परन्तु—परम्—तु, यतः—हि, अतः,** इन (उभयान्वयी) अव्ययोंका उपयोग योग्य नियमोंके अनुसार करना चाहिए।

(अधिक ज्ञानके लिए पाठ ९ और संस्कृत वाक्यरचना पाठ ४, ५, २४ और २५ देखो।)

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

भाषान्तरके लिए वाक्य और अवतरण

(अ) हिन्दी वाक्यसमूह

पाठ १ से ३ :—१ **सूर्य** आकाशमें **प्रकाशित** होता है। २ **हम** वृक्षोंपर फूल **देखते हैं**। ३ **आदमी** घरमें **रहते हैं**। ४ **तू** पांवसे **दौडता है**। ५ **लडके** पाठ **पढ़ते हैं**। ६ **किसान** खेतमें **हल चलाता है**। ७ **पक्षी** घोंसले **बांधते हैं**। ८ **सिपाही** बाण **फेंकते हैं**। ९ **मैं** मुखसे **बोलता हूँ**। १० **समुद्र** हवासे **अशान्त** होता है। ११ **भक्त** देवकी **पूजा करते हैं**। १२ **वे दोनों** खेलनेके स्थानपर **खेलते हैं**। १३ **कुण्डल** कानोंको **सुशोभित करते हैं**। १४ **राजा** विजयकी **इच्छा करते हैं**। १५ **मोर** आनन्दसे **नाचते हैं**।

पाठ ४ से ६ :—१ आदमी उद्योगसे धन **कमाता है**। २ मनुष्य ज्वरसे **मरते हैं**। ३ मेघ वृक्षोंपर पानी **सींचते हैं**। ४ बाप लडकेके अपराधोंको **क्षमा करता है**। ५ हम आंखोंसे **देखते हैं**। ६ लडके मिठाई **पसंद करते हैं**। ७ मित्रके दुःखसे मनुष्यका मन **पसीजता है**। ८ बैल हलको **खींचते हैं**। ९ शिक्षासे ज्ञान **बढ़ता है**। १० पक्षी आकाशमें **उडते हैं**। ११ प्यास आदमीको **पीडित करती है**। १२ रातको चांदनीमें लोग **फिरते हैं**। १३ तुम छोटी नावसे नदीका **उल्लंघन करते हो**। १४ मनुष्य नाकसे फूलोंका **सुगंध लेते हैं**। १५ इन्द्रकी सभामें गन्धर्व **गाते हैं**।

पाठ ७ से ९ :—१ पथिक प्रवासपर **निकलते हैं**। २ गन्धर्व देवोंकी **स्तुति करते हैं**। ३ लोभसे संकट **उत्पन्न होते हैं**। ४ तू वृक्षपर **चढ़ता है**। ५ हम सुखका **अनुभव करते हैं**। ६ वृक्ष फलोंसे **नमते हैं**। ७ वह संध्याकालमें दूध पीता है **अथवा** फल खाता है। ८ लडकेकी आंखें कमलके **समान** हैं। ९ पिताके **साथ** लडका बागमें जाता है। १० उद्योग के **बिना** मनुष्यको धन नहीं मिलता। ११ देवालय नदीके किनारे **पर** रहते हैं। १२ ईश्वर **हमारी** रक्षा करता है। १३ **तुम्हे** गेंदका खेल पसंद नहीं है। १४ **उस** गांवमें **ये** लडके रहते हैं। १५ **तुममेंसे** यह घर **किसका** है?।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

पाठ १० से १२:—हमने रास्तेमें भिखारियोंका झुंड **देखा**। २ चोरोंने श्रीमान् आदमीकी पत्नीके आभूषण **चुराये**। ३ वृक्षपरसे पत्ते **उड़ गए**। ४ चन्द्रका **शुभ्र** प्रकाश पृथ्वीपर फैलता है। ५ दूतने शत्रुके समाचार राजाको **कहे**। ६ **पके हुए** फल मुझे पसंद हैं। ७ **प्रातःकालमें** नदीके किनारेपर **ठंडी** हवा बहती है। ८ श्रीकृष्णका शरीर मेघके समान **नीला** है। ९ रामने रावणको **तीखे** (धारदार) बाणोंसे **मारा**। १० ब्रह्माको **चार** मुख हैं। ११ राम लक्ष्मणने जंगलमें राक्षसोंको **देखा**। १२ सिपाहियोंने सेनापतिका हुकुम **माना**। १३ श्रीकृष्णके **आश्रित** पाण्डवोंने जय प्राप्त की। १४ रावणकी भक्तिसे शङ्कर **सन्तुष्ट** हुए। १५ **तेज**, हवासे समुद्र **क्षुब्ध** हुआ।

पाठ १३ से १५:—१ शुद्ध मनसे **ऋषियोंने** रामकी पूजा की। २ **वेदोंमें** भिन्न भिन्न देवोंके स्तोत्र हैं। **सुगंधित** फूलोंकी माला स्त्रियोंको बहुत पसंद आती है। ४ बडे **धैर्यसे राजाने** शत्रूसे प्रजाकी रक्षा की। ५ **बुद्धिके** सामर्थ्यसे **कवि कीर्ति** संपादन करते हैं। ६ दशरथने **गुरु** वशिष्ठकी आज्ञा पालन की। ७ **चन्द्रकी** कलासे **शङ्करजीका** सिर बहुत शोभायमान होता है। ८ शोकसे आंखोंसे **अश्रु** बहे। ९ **शत्रुकी** सेनाको सेनापतिने पराजित किया। १० हिंदू लोग **गायको** देवता मानते हैं। ११ परीक्षामें लडकोंको इनाम **दिए जाते हैं**। १२ शिकारियोंसे मृगपर बाण **फेंके गये**। १३ संकटके समय लोगोंसे ईश्वरका **स्मरण किया जाता है**। १४ वानरोंसे राक्षस **जीते गए**। १५ वाल्मीकिसे लवकुशोंकी **रक्षा हुई**।

पाठ १६ से १८:—१ जयद्रथको **मारकर** अर्जुनने प्रतिज्ञा पूरी की। २ गुरुगृहमें **रहकर** श्रीकृष्णने विद्या संपादन की। ३ श्रावणके वधके समाचार **सुनकर** उसके मातापिताने प्राण त्याग दिए। ४ सुग्रीवसे मित्रता **करके** रामने रावणको पराजित किया। ५ मेनका शकुन्तलाको **उठाकर** स्वर्गमें ले गई। ६ अच्छे चालचलनका लड़का **मातापिताकी** आज्ञाका उल्लंघन नहीं करता। ७ भगिनीको बचानेके लिए **भाईने** प्राण दिए। ८ **जामाताने** लड़कीका त्याग किया यह सुनकर जनकको दुःख हुआ। ९ राम अपने **भाइयोंपर** बहुत प्यार करता था। १० **मनुष्योंकी** वृद्धि और नाशका कारण भाग्य होता है। ११ धृतराष्ट्रने युद्धके समाचार **सुननेकी** इच्छा की। १२ मनुष्य सम्पत्ति **मिलानेका** यत्न करता

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

है। १३ मित्रके प्राणोंकी **रक्षा करना चाहिए**। १४ सीपाहियोंका रणभूमिपर **ले जानेकी** राजाने सेनापतिको आज्ञा दी। १५ लडकोंने बापको **संतोष देना चाहिए**।

पाठ १६ से २० :— १ इस जगहसे **न हिलो** ऐसा माताने लडकेसे कहा। २ युद्धमें राजा लोग **विजयी हो** और वे प्रजाको **सुख दें**। ३ लोगोंका धर्मके प्रति **प्रेम बढने दो**। ४ अपने गुणोंकी **स्तुति** अपने मुखसे **मत करो**। ५ हमें बागमें **जाने दो** और **खेलने दो**। ६ मनुष्याने संकटमें भी धीरज **नहीं छोडना चाहिए**। ७ यदि पानी **गिरेगा** तो किसान सुखी **होवेंगे**। ८ आश्रयमें आए हुए शत्रुकी भी सहायता **करना चाहिए**। ९ दीन और गरीब प्राणियोंको **पीडित नहीं करना चाहिए**। १० विघ्नोंसे बाधा आनेपर भी आरम्भ किए कार्यका **त्याग नहीं करना चाहिए**।

पाठ २१ से २२ :— १ पापके मार्गसे जानेवाला मनुष्य **दुःखी** होता है। २ **विपत्तिके** समयमें अपनेको सहायता **करनेवाला** सच्चा **मित्र** है। ३ **पढे लिखे** मनुष्यको कोई भी वस्तु प्राप्त करना कठिन नहीं होता। ४ **प्रबल** मनुष्यसे विरोध नहीं करना चाहिए। ५ **चन्द्रका** कलंक चन्द्रकी शोभाको बढ़ाता है। ६ दुर्जनका हृदय मानों कि **पत्थरका** बना हुआ होता है। ७ मालिककी आज्ञासे नौकर सिरपर **बोझा** ले जाता है। ८ **श्रीमान्** मनुष्य **बुद्धिमान्** होते ही हैं ऐसा नहीं। ९ उस दुनियामें मनुष्य बुद्धिके **महत्त्वपर** कीर्ति प्राप्त करते हैं। १० **ऐसे कर्मोंसे** तेरा **कमीनापन** दिखाई देता है।

पाठ २३ से २४ :—१ गुरु शिष्योंको **कल्याणका** मार्ग दिखाते हैं। २ सज्जनोंके **मनमें, बोलनेमें** और **आचरणमें** समानता होती है। ३ पुरोहित **अग्निको** आहुतिसे सन्तुष्ट करते हैं। ४ रावणके **वक्षपर धनुष्य** गिरा। ५ **बिजलीके** प्रकाशसे आंखका तेज नष्ट होता है। ६ रस्तेसे **जानेवाले** मनुष्यको चोरोंने पकड़ा। ७ चन्द्रको सिरपर **धारण करनेवाले** शंकरने उसके महत्त्वको पहिचाना। ८ **नौकरके समाचार कहते ही** राजाको मूर्च्छा आ गइ। ९ मीठा परन्तु हितकारक **उपदेश करनेवाले** मनुष्य बहुत कम मिलते हैं। १० **मारुति लङ्का जला रहे थे उस समय** राक्षस डरकर भाग गए।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

(आ) हिन्दी अवतरण

१

सूर्य आकाशमें प्रकाशित होता है। प्रातःकालमें सूर्यका उदय होता है, दोपहरको सूर्य आकाशके मध्यभागमें रहता है और सायंकालको उसका अस्त होता है। प्रातःकाल और शामको सूर्यका प्रकाश कोमल होता है; परंतु दोपहरको वह उष्ण रहता है। ग्रीष्म ऋतुमें सूर्यकी उष्णता असह्य होती है। सूर्योदयके समय मनुष्य अपने कामका आरम्भ करते हैं। दोपहरको लोग विश्रान्ति लेते हैं और फिर काम करने लगते हैं। सायंकालको घर वापिस आते हैं। फिर बच्चोंके साथ वे खेलते हैं अथवा बागमें जाते हैं। रातको वे भोजन करते हैं और फिर निद्रासुखका अनुभव करते हैं। इस प्रकार मनुष्योंकी दिनचर्या सूर्यपर अवलम्बित रहती है।

२

चन्द्रमा रातको प्रकाशित होता है। चन्द्र सूर्यसे प्रकाश प्राप्त करता है। उससे उसका प्रकाश ठंडा रहता है। चन्द्र यह तारकाओंका अधिपति है। शुक्लपक्षमें वह तारकाओंके मध्यभागमें प्रकाशित होता है। चन्द्रमा पृथ्वीके आसपास फिरता है और पृथ्वी सूर्यके आसपास फिरती है। शुक्लपक्षमें चन्द्रमाकी कला क्रमक्रमसे बढ़ती है और पौर्णिमाको चन्द्रमाका सम्पूर्ण बिम्ब हम देखते हैं। कृष्णपक्षमें वह क्रमसे कम होती है। अमावास्याके दिन चन्द्रमाकी कलाभी आकाशमें नहीं रहती। सब दूर घना अंधेरा रहता है। पौर्णिमाको लोग चन्द्रप्रकाश (चान्दनी) में आनन्दसे घूमते हैं; परन्तु अमावास्याको वे घरमें ही रहते हैं।

३

मैं प्रातःकाल बिछौनेसे उठता हूँ। फिर पानीसे हाथ, पांव और मुख धोता हूँ और ईश्वर का स्मरण करता हूँ और उसे नमस्कार करता हूँ। फिर मैं दूध पीता हूँ और अभ्यास करता हूँ। अभ्यासके पश्चात् मैं स्नान करता हूँ और भोजन करता हूँ। शरीरमें कपडे पहिनता हूँ और पुस्तकें लेकर पाठशालाको जाता हूँ। मेरी पाठशाला मेरे घरके पास है। वहां मेरे साथी मुझे मिलते हैं। मैं सहपा-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ड्योंके साथ पाठशालामें भिन्न भिन्न विषय पढ़ता हूँ। मुझे संस्कृत भाषा पसंद है। मेरे सहपाठी श्लोक याद करते हैं और मैं भी उनके साथ श्लोक पढ़ता हूँ। सायंकालको मैं सहपाठियोंके साथ गेंदसे खेलता हूँ। हम गेंदको इधर उधर फेंकते हैं। खेलनेसे हम थक जाते हैं और घर जाते हैं। रातको मैं फिर भोजन करता हूँ। और पाठ पढ़ता हूँ। फिर मैं ईश्वरको नमस्कार करता हूँ। और सो जाता हूँ।

४

सरस्वती यह विद्याकी देवता है। कवि सरस्वतीकी पूजा करते हैं और मनसे उसका ध्यान करते हैं। उसकी कृपा (प्रसाद) से कवि रमणीय काव्योंकी रचना करते हैं। मनोहर काव्यके वाचनसे मन प्रसन्न होता है। काव्यका माधुर्य कविही जानते हैं। सरस्वतीकी गोदमें वीणा रहती है। वह दहने हाथसे वीणा पकडती है और बांएं हाथसे बजाती है। सरस्वतीके सिरपर मुकुट रहता है। वह रत्नोंसे चमकता है। सरस्वती श्वेत वस्त्र पहिनती है। उसके गलेमें रत्नोंके हार शोभा देते हैं। उनसे उसकी शोभा बढती है। उसकी कृपासे अज्ञान नष्ट होता है। सरस्वती मोरपर बैठती है। मोर आनन्दसे नाचता है। सरस्वतीका मुख प्रसन्न होता है और वह भक्तोंपर उपकार करती है।

५

यह तलाब बहुत पुराना है। इसका पानी बहुत गहरा है और इसीसे वह गर्मीमें भी नहीं सूखता। इस तलाबका पानी स्वच्छ और मीठा है। उसे मनुष्य पीते हैं। और हिंस्र पशु भी पीते हैं। तलाब परसे जब हवा बहती है तब तलाबमें लहरें उठती हैं और यह दृश्य आह्लाददायक दिखाई देता है। इस तलाबके आसपास घना जंगल है। तलाबके किनारे ऊंचे ऊंचे वृक्ष हैं। वे तलाबके मानों कि रक्षक ही हैं। पथिक वृक्षोंकी छायाका आश्रय ग्रहण करते हैं। इस घनी छायामें सूर्यकी किरणें प्रवेश नहीं करतीं और तलाबके पृष्ठभागपर भी नहीं गिरतीं। ये वृक्ष अपने सिरपर सूर्यकी उष्णताको सहते हैं और छायासे लोगोंको सन्तोष देते

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

हैं। तलावमें लाल और श्वेत कमल वढते हैं और लोग उन कमलोंसे गणपतिकी पूजा करते हैं।

६

यह एक वडा द्वीप है। इसके आसपास सव दूर पानी है। यहां श्रीमानोंकी भव्य कोठियां हैं, वैसेही गरीवोंकी झोंपडियां भी हैं। धनवान् लोग सुखका अनुभव लेते हैं, लेकिन दुःख गरीवोंको सताते हैं। यहांके लोग भिन्न भिन्न धर्मोंका अनुसरण करते हैं। यहां विस्तीर्ण और रम्य वगीचे हैं। वहां सुवह और शामको लोग जाते हैं और इधरउधर फिरते हैं। इन वगीचोंमें शुद्ध और ठण्डी हवा वहती है और वह लोगोंके मनोंको आनन्दित करती है। वैसेही समुद्रके किनारेपर भी लोग सायंकालको जाते हैं। वे रेतमें वैठते हैं अथवा किनारेपर घूमते हैं। लडके रेतमें खेलते हैं अथवा पानीमेंसे चलते हैं। यहां भिन्न भिन्न प्रकारके वाहन हैं। शहरके एक हिस्सेसे दूसरे हिस्सेमें लोग वाहनोंसे जाते हैं। यहां सब लोग काममें लगे हुए रहते हैं।

७

वाराणसी नगरीमें महाधन नामका श्रीमान् मनुष्य रहता था। वह एक समय रातको घरमें नहीं था। तव उसके घरमें दो चोर घुसे। उन्होंने सव दूर धन ढूंढा। तव उन्हें धनकी पेटी मिली। उन्होंने उसे उठाया और वे वाहर गए। इतनेमें घरके दरवाजेपर वैठा हुआ कुत्ता जोरसे भोंकने लगा। उसके भोंकनेसे सोए हुए नौकर जग गए और उन्होंने चोरोंका पीछा किया। तव वे चोर उनसे लढ़े। परंतु उन नौकरोंने उन्हें डण्डोंसे मारा और उन्हें पकड लिया। इस प्रकार उस श्रीमान् आदमीको उसका धन वापिस मिला। फिर उन चोरोंको न्यायाधीशने दण्ड दिया। महाधनको वहुत आनंद हुआ और उसने अपने नौकरोंको इनाम दिया।

८

वाण कवि यह एक गरीव पण्डितका लडका था। वह वहुत वुद्धिमान् और सव विषयोंमें प्रवीण था। सव लोग उसकी प्रशंसा करते, परन्तु उसके पिता उसकी

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

प्रशंसा नहीं करते थे। इससे बाणको बडा दुःख होता था। एक समय वह पितासे बहुतही क्रुद्ध हुआ और पिताके बिछौने के पास तलवार लेकर छिपकर बैठा। तब उसने पिताका और माताका सम्भाषण सुना। पिताजीने कहा, 'मेरा लडका बहुत बुद्धिमान् है यह मैं जानता हूँ परंतु वह घमण्डी न हो. इस लिए मैं उसकी प्रशंसा नहीं करता हूँ। मुझे उसके बुद्धिमत्ता पर बहुत आनन्द होता है।' पिताका यह सम्भाषण बाणने सुना और वह एकदम पिताजीके पांवोंमें गिर पडा और अपने अविचारके लिए उसने उनकी क्षमा मांगी। तब उन्होंने उसे क्षमा की और कहा, 'अविचारसे कोई भी बात न करना चाहिए, कारण अविचार यह सब दुःखोंका मूल है।'

९

ध्रुव यह उत्तानपाद राजाका लडका था। उसकी माताका नाम सुनीति था। उस राजाकी सुरुचि नामकी दूसरी प्यारी पत्नी थी। उसके लडकेका नाम उत्तम था। उसका ध्रुवपर प्रेम नहीं था। एक समय वह अपने पिताके गोदमें बैठा था। वहां सुरुचि आई और उसने उसे पिताकी गोदसे खींचा। तब ध्रुव दुखी हुआ और माताके पास गया। उसने मातासे कहा, 'मैं नारायणकी भक्ति करता हूँ और अचल पद मिलाता हूँ।' एक दिन ध्रुवने घरका त्याग किया और वह जंगलमें गया। उसे नारदमुनि मिले और उन्होने उसे उपदेश दिया। तब ध्रुवने ईश्वरका ध्यान किया। फिर नारायण स्वयं उसके सामने खडे हो गये और उन्होंने कहा, 'ध्रुव, उठ, घरको जा, और मातापिताको आनन्दित कर। मैं तेरी भक्तिसे संतुष्ट हुआ हूँ।' तदनुसार ध्रुव फिर मातापिताके पास गया। उत्तानपादने वृद्धावस्थामें राज्यका भार ध्रुवको दे दिया और आप जंगलमें गया। ध्रुवने बहुत वर्षोंतक राज्य किया और अन्तमें स्वर्गमें अचल स्थान प्राप्त किया।

१०

मौर्य कुलमें चन्द्रगुप्त नामका प्रसिद्ध राजा हुआ। अशोक यह उसका पौत्र था। अशोकने गुरुजीसे भिन्न भिन्न विषय पढ़े और उनमें वह पारंगत हुआ। कालान्तरमें अशोकने तक्षशिला नगरी जीती। उसके पिताकी मृत्युके पश्चात् मुख्य प्रधा-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ननेने उसे सिंहासनपर (गद्दीपर) बैठाया। अशोकके राज्यमें विद्यालयोंकी स्थापना हुई। उसे धनुर्विद्याके प्रति अभिरुचि थी। उसने कलिङ्ग देशके राजाका पराजय किया। उस युद्धमें असङ्ख्य लोग मारे गये। इस कारण उसके मनमें विरक्ति पैदा हुई। उसने बौद्ध धर्मका अनुसरण किया। उसके राज्यमें बौद्ध धर्मकी बहुत वृद्धि हुई।

११

एक समय गुरुजीके साथ बहुतसे विद्यार्थी गांवके बाहर बागमें गये। बागमें बहुत वृक्ष थे। वे वृक्ष फलोंके भारसे नम गये थे। बेला (मोगरा) सुवासिक फूलोंसे शोभायमान था। भूमि हरे घांससे आच्छादित थी। वहां वे सब इधर उधर घूमे। फिर वे विद्यार्थी थक गये और उन्हें भूक लगी। तब गुरुजीने मालीको बुलवाया और कहा, 'ये लडके बहुत भूखे हैं, इन्हें खानेको पके हुए फल दे। उनकी कीमत मैं तुझे देता हूँ।' माली पके हुए फल लाया। तब गुरुजी विद्यार्थियोंसे कहने लगे, 'लड़को, तलावके किनारे वृक्षोंकी छायामें बैठो और ये मीठे फल खाओ। फिर तलावका स्वच्छ पानी पीओ और विश्राम करो।' तदनुदार लडकोंने किया और फिर वे सब घरको लौट आये।

१२

युधिष्ठिरका धन और राज्य द्यूतमें नष्ट हुआ। तब वह अपने भाई और द्रौपदी इनके साथ जंगलमें गया। वहां वे सब वृक्षोंके फल और मूल खाते थे। युधिष्ठिरको इस अवस्थासे दुःख होता था। एक समय उसने सूर्यकी प्रार्थना की, 'हे सूर्य, हमारी यह कष्ट-प्रद दशा देखो, और हमपर दया करो। नहीं तो मृत्युके अतिरिक्त हमारी दूसरी गति नहीं है।' सूर्यका मन अति द्रवीभूत हुआ और उसने युधिष्ठिरको अन्नसे भरी हुई स्थाली दी। उस स्थालीमेंसे पाण्डवोंको आवश्यक इतना अन्न मिलता था। उसीसे पाण्डव वनवासका दुःख सहन कर सके।

१३

दशरथ राजाके चार लडके थे। उनमेंसे राम यह सबसे बडा था। इस लिए उसने रामको युवराजपद देनेकी इच्छा की। कैकेयीको यह अच्छा नहीं लगा।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

इस लिए दशरथ राजाने रामको वनमें भेजा। सीता और लक्ष्मण उनके साथ गए। इस दुःखसे दशरथकी मृत्यु हो गई। उस समय भरत मामाके घर था। कैकेयीने भरतको बुलवाया और उसे सिंहासनपर बैठनेके लिए कहा। उसने कहा, 'यह सिंहासन रामका है। मैं रामके पास जाता हूँ और उसे लौटा लाता हूँ।' तदनुसार वह जंगलमें रामके पास गया। उसने (अपने) आनेका कारण रामको कहा। तब रामने कहा, 'मेरा लौटना अशक्य है। कारण कि मैं वचनसे बंधा गया हूँ। इस लिए तूं लौट जा और राज्य कर।' परन्तु रामके बिना भरत वापस नहीं गया। अन्तमें रामके उपदेशसे वह अयोध्याको लौट गया। उसने रामकी पादुका सिंहासनपर रक्खीं और उसने स्वयं रामके प्रतिनिधि के रूपमें राज्य किया।

१४

राम, लक्ष्मण और सीता ये जनस्थानमें रहते थे। वहां लक्ष्मणने एक सुंदर झोंपडी बनाई (खडी की)। एक दिन एक सुवर्णमृग झोंपडीके पास आया। सीताने उसे देखा और उसे वह बहुत प्यार लगा। उसने रामसे कहा, 'इस सुवर्णमृगको पकडो और मेरे पास लाओ।' तब रामने लक्ष्मणसे कहा, 'मैं इसे पकडता हूँ। तूं सीतासे दूर न रहना।' फिर सीताने एकदम 'लक्ष्मण, लक्ष्मण, इधर जल्दीसे आओ' ऐसे दीन शब्द सुने। तब उसने लक्ष्मणसे कहा, 'राम सङ्कटमें हैं। उसकी सहायताके लिए जाओ।' लक्ष्मणने कहा, 'मैं तुम्हें छोडकर कैसे जाऊं? रामकी आज्ञाको मैं कैसे तोडूं? ये रामके शब्द नहीं हैं।' तब सीता उसपर क्रुद्ध हुई। इस लिए लक्ष्मण रवाना हुआ। बीचमें रावण भिक्षुकके रूपमें वहां आया और उसने सीताका हरण किया।

१५

वाराणसी नगरीमें महाप्रज्ञ नामके यति रहते थे। वे सब शास्त्रोंमें प्रवीण थे। उन्होंने एक समय सभामें उपदेश किया, 'मनुष्यने ईश्वरका स्मरण और स्थिर चित्तसे ध्यान करना चाहिए। ईश्वरकी पूजा हररोज करना चाहिए। क्योंकि ईश्वरको पूजा बहुत प्यारी है और वह भक्तोंके मनोरथोंको पूर्ण करता है। मनु-

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

ष्यने उद्योग कर धन मिलाना चाहिए, भाग्यपर अवलम्बित नहीं रहना चाहिए। आलससे मनुष्यकी हानि होती है। मनुष्यने धनका अति लोभ नहीं करना चाहिए। क्योंकि लोभसे पाप पैदा होते हैं।' पापी मनुष्यको मनका स्वास्थ्य नहीं मिलता और वह सदा उदास रहता है।'

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

हिन्दी वाक्योंके संस्कृत भाषान्तरके लिए

सूचना

१ उदय होना—**उद् + अय्** (१ आ. प.)। अस्त होना—**अस्तं गम्** (**गच्छति**)। कोमल—**कोमल** (वि.)। सूर्य की उष्णता—**आतपः**। ग्रीष्मऋतु—**निदाघः**। कामका आरम्भ करना—**कार्यम् आ + रभ्** (१ आ. प.)। वापस आना—**नि + वृत्** (१ आ. प.)। भोजन करना—**अन्नं भक्ष्** (१० उ. प.)।

२ रातको—**रात्रौ**। ठण्डा—**शीतल** (वि.)। फिरता है—**भ्रम्** (१ प. प.)। पृथ्वीके आसपास—**पृथ्वीं परतः**। क्रमक्रमसे—**क्रमशः**। बढना—**वृध्** (१ आ. प.)। कम होना—**क्षि** (१ प. प. क्षयति)। कोर—**कला**। घना—**निबिड, घन** (वि.)। चन्द्रप्रकाश (चांदनी)—**चन्द्रिका, जोत्स्ना, कौमुदी**। घूमना—**सम् + चर्** (१ प. प. सञ्चरति)।

३ बिछौना, शय्या—**शयनम्, शय्या**। उठना—**उद् + स्था** (१ प. प. उत्तिष्ठति)। धोना—**क्षालू** (१० उ. प. क्षालयति–ते)। दूध—**दुग्धम्**। अभ्यास करना—**पाठान् पठ्** (१ प. प.)—**अध्ययनं कृ** (८ उ. प.)। शरीरमें कपडे पहिनना—**शरीरे वस्त्राणि धृ** (१० उ. प. धारयति–ते)। पुस्तकें लेकर—**पुस्तकैः सह**। साथी या सहपाठी मुझे मिलते हैं—**अहं वयस्यान् पश्यामि-अहं वयस्यैः सङ्गच्छे**। भिन्न भिन्न—**विविध** (वि.)। पढ़ना—**पठ्** (१ प. प.)—**शिक्ष्** (१आ. प.)। इधर उधर—**इतस्ततः**। फेंकना—**अस्** (४ प. प.), **क्षिप्** (६ उ. प.)। थकना—**श्रम्** (४ प. प. श्राम्यति)। मैं सो जाता हूँ—**स्वपिमि अहम्**।

४ ध्यान करना—**ध्यै** (१ प. प. ध्यायति)। गोद—**अङ्कः**। दहना—**वाम** (वि.)। पकडना—**ग्रह्** (९ उ. प.), धृ (१० उ. प.)। बांया—**दक्षिण, सव्य** (वि.)। बजाना—**वद्** (प्रयोजक–वादयति)। मुकुट—**किरीटः**। चमकना—**द्युत्** (१ आ. प. द्योतते)। पहिनना—

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

धृ। नष्ट होना—नश् (४ प. प.)। मोर—मयूरः। भक्तोंपर उपकार करती है—भक्तानाम् उपकरोति।

५ तलाब—तडागः। पुराना—पुरातन (वि.)। गहरा—गभीर (वि.)। कम होना (सूखना)—शुष् (४ प. प.) स्वच्छ-निर्मल (वि.)। मीठा—मधुर (वि.)। वैसेही—तथैव। तलाबपरसे—तडागस्य उपरि। लहर—तरङ्गः। उठना—आविस् भू (आविर्भवति), उद् + पद् (उत्पद्यते)। दृश्य—आलोकः, दृश्यम्। किनारा—तीरम्। ऊंचा—तुङ्ग, उच्च (वि.)। मानों कि तलाबके रक्षक ही—तडागस्य रक्षकाः इव। पथिक—पान्थः, पथिकः। प्रवेश नहीं करते—न अवतरन्ति, न पतन्ति। शिर—शीर्षम्, अग्रभागः। सहना—सह्—(१ आ. प.)। सन्तोष देना—प्री (१० उ. प. प्रीणयति-ते), तोषयति। लाल—रक्त (वि.)। सफेद—श्वेत (वि.)।

६ बडा द्वीप—विशालं द्वीपम्। सबदूर—सर्वत्र। भव्य कोठी—उत्तुङ्गः विशालः वा प्रासादः। गरीब—दरिद्रः। झोंपडी—उटजम्। धनवान् लोग—धनिकाः, धनसम्पन्नाः जनाः। सताना—पीड् (१० उ. प.)। भिन्न भिन्न—भिन्न (वि.)। बगीचे—उद्यानम्, उपवनम्। हवा—पवनः। रेतमें—वालुकासु, सिकतासु। घूमना—चर्, चल् (१ प. प.)। वाहन—वाहनम्, यानम्। एक हिस्सेसे दूसरे हिस्सेमें—एकस्मात् विभागात् अन्यं विभागम्। लगे हुए—मग्न। (कृ. वि.)।

७ श्रीमान् मनुष्य—धनिकः। एक समय—एकदा। ढूंढना—अनु + इष् (४ प. प.)। पेटी—पेटिका। उन्हें मिली—तौ अलभेताम्। उठाना—उद् + धृ, उद् + ग्रह्। इतनेमें—तस्मिन्नेव क्षणे। घरके दरवाजेपर बैठा हुआ—गृहस्य द्वारे उपविष्टः। जोरसे—उच्चैः। भूंकने लगा—भषणम् आरभत, अभषत्। भूंकना—भषणम्। नौकर—भृत्याः, किङ्कराः, सेवकाः। जग गए—प्रबुद्धाः अभवन्, अबुध्यन्त। पीछा करना—अनु + धाव् (१ प. प.)। डण्डा—दण्डः, लगुडः। मारना—प्र + हृ (प्रहरति), तड् (ताडयति):

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

श्रीमान् आदमीको उसका धन वापस मिला—**सः धनिकः धनं पुनर् अलभत**। शिक्षा देना (दण्ड देना)—**दण्ड्** (१० उ. प.)। आनन्द होना—**मुद्** (आ. प. मोदते)। इनाम—**पारितोषिकम्**।

८ प्रशंसा करना—**प्र+शंस्** (१ प. प.)। बाणको दुःख होता—**बाणा दुःखितः अभवत्**। बहुत—**भृशम्**। तलवार लेकर—**असिना, खड्गेन सह**। छिपकर बैठा—**प्रच्छन्नः अतिष्ठत्**। घमण्डी—**गर्वित, अवलिप्त** (वि.)। पिताजीके पांवमें लगा—**पितुः चरणायोः अपतत्**। अविचार—**अविवेकः**।

९ प्यारी पत्नी—**प्रिया भार्या**। बैठा था—**उपविष्टः आसीत्**। खींच—**आ+कृष्** (१ प. प.)। भक्ति करना—**भज्** (१ प. प.)। अचल—**ध्रुव** (वि.)। त्याग करना—**त्यज्** (१ प. प.)। नारदमुनि उसे मिले—**मुनिः नारदः तम् अपश्यत्**। स्वयम्—**स्वयमेव, साक्षात्** (अ.)। उसके सामने—**तस्य पुरतः**। वृद्धावस्था—**वार्द्धक्यम्**। दे देना—**नि+क्षिप्**। बहुत वर्ष—**बहूनि वर्षाणि**।

१० हुआ—**अभवत्**। पौत्र—**पौत्रः, नप्ता** (नप्तृ)। पारंगत—**प्रवीण** (वि.)। जीतना—**जि** (१ प. प. **जयति**)। मुख्य प्रधान—**प्रमुखः सचिवः**। बैठाना—**स्थापय** (प्रेरणार्थक)। विद्यालयोंकी स्थापना हुई—**विद्यालयाः स्थापिताः**। उसे धनुर्विद्याके प्रति अभिरुचि थी—**सः धनुर्विद्याप्रियः आसीत्**। कलिङ्ग देश—**कालिङ्गाः**। असङ्ख्य लोग मारे गए—**असङ्ख्याः जनाः हताः**। विरक्ति—**विरागः**।

११ हरा—**हरित** (वि.)। उन्हें भूक लगी—**ते क्षुधिताः अभवन्**। माली—**मालाकारः**। बुलाना—**आ+ह्वे** (**आह्वयति**)। भूखा—**क्षुधित** (वि.)। खानेको—**भक्षणार्थम्** (अ.)। पका हुआ—**पक्व**(वि.) कीमत—**मूल्यम्**। लाना—**आ+नी** (**आनयति**)। विश्रान्ति लेना—**वि+श्रम्** (**विश्राम्यति**)। लौटना—**नि+वृत्** (**निवर्तते**)।

१२ नष्ट होना—**नश्** (४ प. प.)। मूल—**मूलम्**। अवस्था—**दशा**। प्रार्थना करना—**प्र+अर्थ** (१० आ. प. **प्रार्थयते**)। कष्टप्रद—**कष्ट-**

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

मयी (दशा), **कष्टा** । हमपर दया करो—**अस्मासु दयां कुरु, अस्माकं दयस्व** । नहीं तो—**नो चेत्** (अ.) । आवश्यक—**आवश्यक** (वि.) ।

१३ चार लडके—**चत्वारः पुत्राः** । सबसे बडा—**ज्येष्ठ** (वि.) । उसने रामको युवराजपद देनेकी इच्छा की—**सः रामं युवराजपदे अभिषेक्तुम् ऐच्छत्** । भेजना—**वि + सृज्** (६ प. प.) । मृत्यु होना—**मृ** (६ आ. प. **म्रियते**) । मामा—**मातुलः** । लौटा लाना—**प्रति + आ + नी** । रामके पास—**रामं प्रति** । आना—**आगमनम्** । लौटना—**प्रत्यागमनम्** । बंधा गया—**बद्ध** (धा. वि.) । रखना—**स्थापय** ('स्था'का प्रेरणार्थक) । प्रतिनिधिके रूपमें—**प्रतिनिधित्वेन** ।

१४ बनाना (खडी करना)—**रच्** (१० उ. प.) । जल्दीसे—**सत्वरम्** (अ.) । दीन शब्द—**दीन वचनम्** । उसकी सहायता के लिए जाओ—**तस्य साहाय्यं कुरु** । तोडना—**उद् + लङ्** (१ आ. प. **उल्लङ्घते**) वीचमें—**अत्रान्तरे** । भिक्षुक के रूपमें—**भिक्षुरूपेण** । भगाना या हरण करना—**अप + हृ** (१ प. प)

१५ हररोज—**प्रतिदिनम्** (अ.) । पूर्ण करना—**पूर्** (१० उ. प.) । भाग्य—**दैवम्** । आलस—**आलस्यम्** । हानि होना—**अव + सद्** (१, ६ प. प. **अवसीदति**) । अति लोभ करना—**लुभ्** (४ प. प.) । पैदा होना—**उद् + पद्** (**उत्पद्यते**) । पापी मनुष्य—**पापः** । उदास—**उदासीन** (वि.) । सदा—**सर्वदा** ।

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

A.L. 21.4.1953 Hansraj

Mis 10·1A

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, .

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation,

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

d by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, .

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry

Digitized by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 Equipment Heritage Foundation, ...

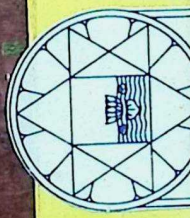

CC-0. In Public Domain Sri Aurobindo Library, Pondicherry